तत् त्वं पूषन् अपावृणु
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

हिंदी

कक्षा X
2025-26

विद्यार्थी सहायक सामग्री
Student Support Material

केन्द्रीय विद्यालय संगठन~Kendriya Vidyalaya Sangathan

<u>संदेश</u>

विद्यालयी शिक्षा में शैक्षिक उत्कृष्टता प्राप्त करना एवं नवाचार द्वारा उच्च–नवीन मानक स्थापित करना केन्द्रीय विद्यालय संगठन की नियमित कार्य प्रणाली का अविभाज्य अंग है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 एवं पी.एम. श्री विद्यालयों के निर्देशों का पालन करते हुए गतिविधि आधारित पठन-पाठन, अनुभवजन्य शिक्षण एवं कौशल विकास को समाहित कर, अपने विद्यालयों को हमने ज्ञान एवं खोज की अद्‌भुत प्रयोगशाला बना दिया है। माध्यमिक स्तर तक पहुँचकर हमारे विद्यार्थी सैद्धांतिक समझ के साथ-साथ, रचनात्मक-विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक चिंतन भी विकसित कर लेते हैं। यही कारण है कि वह बोर्ड कक्षाओं के दौरान विभिन्न प्रकार के मूल्यांकनों के लिए सहजता से तैयार रहते हैं। उनकी इस यात्रा में हमारा सतत योगदान एवं सहयोग आवश्यक है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के पांचों आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा संकलित यह विद्यार्थी सहायक-सामग्री इसी दिशा में एक आवश्यक कदम है। यह सहायक-सामाग्री कक्षा 9 से 12 के विद्यार्थियों के लिए सभी महत्वपूर्ण विषयों पर तैयार की गयी है। केन्द्रीय विद्यालय संगठन की विद्यार्थी सहायक-सामग्री अपनी गुणवत्ता एवं परीक्षा संबंधी सामग्री संकलन की विशेषज्ञता के लिए जानी जाती है और शिक्षा से जुड़े विभिन्न मंचों पर इसकी सराहना होती रही है। मुझे विश्वास है कि यह सहायक सामग्री विद्यार्थियों की सहयोगी बनकर निरंतर मार्गदर्शन करते हुए उन्हें सफलता के लक्ष्य तक पहुँचाएगी।

शुभाकांक्षा सहित।

निधि पांडे
आयुक्त, केन्द्रीय विद्यालय संगठन

PATRON

Smt. Nidhi Pandey, Commissioner, KVS

CO-PATRON

Dr. P. Devakumar, Additional Commissioner (Acad.), KVS (HQ)

CO-ORDINATOR

Ms. Chandana Mandal, Joint Commissioner (Training), KVS (HQ)

COVER DESION

KVS Publication Section

EDITORS:

1. Mr. B L Morodia, Director, ZIET Gwalior
2. Ms. Menaxi Jain, Director, ZIET Mysuru
3. Ms. Shaheeda Parveen, Director, ZIET Mumbai
4. Ms. Preeti Saxena, In-charge Director, ZIET Chandigarh
5. Mr. Birbal Dhinwa, In-charge Director, ZIET Bhubaneswar

CONTENT CREATORS:

प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक वर्ग (हिन्दी)

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, देहरादून संभाग , देहरादून

अनुक्रमणिका

क्रम सं.	पाठ्यक्रम	पाठ्यवस्तु	पृष्ठ संख्या
	खंड - क (अपठित)		
1	अपठित गद्यांश	अपठित	2
2	अपठित काव्यांश	अपठित	6
	खंड - ख (व्याकरण)		
3	वाक्य भेद (रचना के आधार पर)	व्याकरण	9
4	वाच्य	व्याकरण	13
5	पद-परिचय	व्याकरण	16
6	अलंकार	व्याकरण	19
	खंड - ग (काव्य)		
7	सूरदास	क्षितिज -2	23
8	राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद	क्षितिज -2	27
9	आत्मकथ्य	क्षितिज -2	30
10	उत्साह अट नहीं रही है	क्षितिज -2	33 35
11	यह दंतुरित मुसकान, फसल	क्षितिज -2	38 41
12	संगतकार	क्षितिज -2	44
	खंड - ग (गद्य)		
13	नेताजी का चश्मा	क्षितिज -2	47
14	बालगोबिन भगत	क्षितिज -2	51
15	लखनवी अंदाज	क्षितिज -2	58
16	एक कहानी यह भी	क्षितिज -2	65
17	नौबत खाने में इबादत	क्षितिज -2	70
18	संस्कृति	क्षितिज -2	77
	खंड - ग (पूरक पाठ्य पुस्तक)		
19	माता का आँचल	कृतिका -2	89
20	साना-साना हाथ जोड़ी.	कृतिका -2	87
21	मैंक्योंलिखताहूँ?	कृतिका -2	92
	खंड - घ (रचनात्मक लेखन)		
22	अनुच्छेद लेखन	लेखन	94
23	पत्र लेखन	लेखन	98
24	ई-मेल लेखन	लेखन	103
25	स्ववृत लेखन	लेखन	106
26	विज्ञापन लेखन	लेखन	109
27	संदेश लेखन	सृजनात्मक	111
28	प्रश्नपत्र ओर उत्तर अंक तालिका	अभ्यास	115

<u>अपठित बोध</u>

अपठित गद्यांश:
वह गद्यांश जो छात्र की पाठ्यपुस्तक में या पहले से नहीं पढ़ा गया हो, उसे अपठित गद्यांश कहते हैं।
अपठित गद्यांश क्या है?
अपठित का शाब्दिक अर्थ है जो कभी पढ़ा न गया हो। जिसका पाठ्यक्रम से कोई संबंध नहीं है। अपठित गद्यांश में गद्यांश से संबंधित विभिन्न प्रश्नों के उत्तर देने को कहा जाता है। इस विषय में पाठक से अपेक्षा की जाती है कि वह दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़े, उससे संबंधित प्रश्नों के उत्तर प्रस्तुत करें। अपठित गद्यांश के माध्यम से पाठक की व्यक्तिगत योग्यता, अभिव्यक्ति क्षमता का पता चलता है। गद्यांश किसी भी विषय पर हो सकता है चाहे वह कला, विज्ञान, राजनीति, साहित्य या अर्थशास्त्र हो।
अपठित गद्यांश को हल करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

- मूल गद्यांश को पूरी एकाग्रता से पढ़ना चाहिए। तीन-चार बार पढ़ने पर इसका अर्थ समझ में आ जाता है।
- शीर्षक के मूल भाव से यह पता चल जाता है कि गद्यांश किस विषय पर लिखा गया है।
- दिए गए प्रश्नों के उत्तर भी इसी गद्यांश में निहित हैं। आप इसे पढ़ें और अपनी भाषा में जवाब दें।
- लिखते समय वर्तनी की शुद्धता पर भी ध्यान देना चाहिए।
- शीर्षक सरल, संक्षिप्त और सारगर्भित होना चाहिए।

उदाहरण:

- एक लेख जो आप किसी पत्रिका में पढ़ते हैं, लेकिन जो आपके पाठ्यपुस्तक में नहीं दिया गया है।
- एक समाचार जो आप ऑनलाइन देखते हैं, लेकिन जो आपके पाठ्यपुस्तक में नहीं दिया गया है।
- किसी कविता का एक अंश जो आप किसी कविता संग्रह में पढ़ते हैं, लेकिन जो आपके पाठ्यपुस्तक में नहीं दिया गया है।

अपठित गद्यांश-1

निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए -
वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है यदि भारतवर्ष पर |नज़र दौड़ाकर देखें तो हम पाएंगे कि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रवेश हो गया है , कारखाने-बड़े उद्योग-बड़े , डाकखाने , अड्डे-हवाई , स्टेशन-बैंक रेलवे| आज भी कंप्यूटर का प्रार | किताब तथा रुपये गिनने तक की मशीनें कंप्यूटरीकृत हो गई हैं-व्यवसाय हिसाबंभिक प्रयोग है तथा आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का संकेत दे रहा है प्रश्न उठता है कि कंप्यूटर आज की | प , किन्तु इसके बिना आज की , कंप्यूटर जीवन की मूलभूत अनिवार्य वस्तु तो नहीं है -इसका उत्तर है ? जरूरत है सांसारिक गतिविधियों | दुनिया अधूरी जान पड़ती हैरिवहन और संचार उपकरणों आदि का ऐसा विस्तार हो गया है कि उन्हें सुचारु रूप से चलाना अत्यंत कठिन होता जा रहा है भर में यदि सौ लोगों के संपर्क में -पहले मनुष्य जीवन | दस लोगों से मिलता- पहले वह दिन में पाँच | हजार लोगों के संपर्क में आता है-तो आज वह दो , आता था था तो , आज | तो आज रातें भी व्यस्त रहती हैं , पहले वह दिन में काम करता था | सौ लोगों से मिलता है-आज पचास आकांक्षाएं बढ़ रही हैं तथा साधन बढ़ रहें , गतिविधियां बढ़ रही हैं , व्यापार बढ़ रहें हैं , व्यक्ति के संपर्क बढ़ रहे हैं इस अनियंत्रित गति को सुव्यवस् | हैंथा देने की समस्या आज की प्रमुख समस्या है कहते हैं आवश्यकता आविष्कार | | इस आवश्यकता ने अपने अनुसार निदान ढूंढ लिया है | की जननी है
कंप्यूटर एक ऐसी स्वचालित प्रणाली है हड़बड़ी में होने | जो कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्थता में बदल सकती है , वाली माभूलों के लिए कंप्यूटर रामबाण औषधि है क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णायक भूमिका हो या | पहले इन | कंप्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या हल कर सकता है , लंबी गणनाएं- करोड़ों की लंबी -लाखों

एक भूल से घबराकर और , कामों को करने वाले कर्मचारी हड़बड़ाकर काम करते थे अधिक गड़बड़ी करते थे |
| अब कंप्यूटर की सहायता से काफी सुविधा हो गई है | तनाव अधिक होता था , परिणामस्वरूप काम कम

? गद्यांश के अनुसार किस आवश्यकता ने कंप्यूटर में अपना निदान ढूंढ लिया है [क]

]I] अनियंत्रित कर्मचारियों को अनुशासित करने की

]ii] अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की

]iii] अधिक जागरण लाने की-जन , अधिक लोगों से जुड़-से-

]iv] अधिक अधिक कार्य कभी भी व कहीं भी करने की-से-

' [ख]वर्तमान युग कंप्यूटर का युग है - कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन करिए -

]I] क्योंकि कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना असंभवसी हो- गई है |

]ii] क्योंकि कंप्यूटर ने पूरे विश्व के लोगों को जोड़ दिया है |

]iii] क्योंकि कंप्यूटर जीवन की अनिवार्य मूलभूत वस्तु बन गया है |

]iv]क्योंकि कंप्यूटर मानव सभ्यता के सभी अंगों का अभिन्न अवयव बन चुका है |

1 [2] सही है 1 केवल [1]और 2 [3] सही है 2और 3,4 [4] सही है 3सही है

] कथन [ग]A| आज की दुनिया कंप्यूटर के बिना अधूरी है [

कारण]R] वर्तमान समय में सारी व्यवस्था | उपकरण और मशीने कम्प्यूटरीकृत है ,

कूट-]I] कथन [A] गलत है] किन्तु कारण ,R] सही है |

]ii] कथन]A] और कारण]R| दोनों गलत है [

]iii] कथन]A] कारण]R] दोनों सही है तथा कारण]R] कथन]A] की सही व्याख्या है|

]Iv] कथन]A] और कारण]R] दोनों सही हैं] परंतु कारण ,R] कथन]A] की सही व्याख्या नहीं है |

' [घ]मानवीय भूलों के लिए कंप्यूटर रामबाण औषधि है' | पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

? कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव क्यों होता था [ड़]

उत्तर -

] [क]ii] अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की

] [ख]I] केवल सही है 1

] [ग]iii] कथन]A] और कारण]R] दोनों सही हैं तथा कारण [R] कथन [Aकी सही व्याख्य [ा है |

मनुष्य द्वारा हड़बड़ी में होने वाली भूलों के लिए | कंप्यूटर की मानवीय भूलों को निर्णायक रूप से सुधार देता है [घ]
| किसी भी प्रकार अथवा बड़ी भूल को कंप्यूटर सुधार देता है | कंप्यूटर रामबाण औषधि है

]ड़ क्योंकि पहले इन कामों को करने वाले कर्मचारी , कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव इसलिए होता था [इसके परिणामस्वरूप काम कम और | एक भूल से घबराकर और अधिक गड़बड़ी करते थे , हड़बड़ाकर काम करते थे |तनाव अधिक होता था

अपठित - गद्यांश 2 -

पर्यावरण नैतिकता से अभिप्राय है वे विषय जो मनुष्य , निर्देश-सिद्धान्त और दिशा , और पर्यावरण के बीच की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को दर्शाते हैं ' , यह भी कहा गया है |पर्यावरण संकट मन और आत्मा के निकट की बाहरी अभिव्यक्ति है यदि हम | यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि हम कैसे सोचते हैं और कैसे कार्य करते हैं | मनुष्य इस धर ' सोचते हैं किती पर सर्वशक्तिमान और सर्वोच्च प्राणी है और मनुष्य प्रकृति का स्वामी है और अपनी इच्छा से उसका उपयोग कर सकता है अगर , दूसरी ओर | तो यह हमारी मानव केंद्रित विचारधारा को दर्शाता है , प्रकृति ने हमें एक सुंदर जीवन जीने के लिए सभी संसाधन प्रद ' हम सोचते हैं किान किए हैं और वह एक माँ की तरह हमारा पोषण करती है यह | पोषण करना चाहिए -तो हमें उसका सम्मान करना चाहिए और उसका पालन ,

मनुष्य प्रकृति का स्वामी है और वह , इस प्रकार मानव केंद्रित विचारधारा के अनुसार | पृथ्वी केंद्रित विचारधारा है इसे मनचाहे रूप में प्रयोग कर सकता है पृथ्वी , इसके विपरीत पृथ्वी और प्रकृति केंद्रित विचारधारा के अनुसार | इसलिए हमें पृथ्वी केवल एक ग् , पहले मत के अनुसार | हमें पृथ्वी का आदर करना चाहिए ;अंत | हमारी जननी है वैज्ञानिक तकनीक द्वारा प्रौद्योगिक का निरंतर विकास करना होगा और पर्यावरण के अपघटन को रोकना होगा , | ताकि एक स्वच्छ एवं स्वस्थ पर्यावरण और बेहतर भविष्य की नींव रखी जा सके
साम्राज्य अपने ढंग से पर्यावरण को संकट में -विश्व युद्ध आदि ने अपने , आधिपत्य के लिए संघर्ष , उपनिवेशवाद , आज फिर से आधुनिक प्रौद्योगिक | डाला है की सहायता से बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन के लिए प्रकृति के शोषण ने संपूर्ण विश्व में पर्यावरणीय संकट पैदा कर दिया है यह | जो घातक सिद्ध हो सकता है ,विवादास्पद है कि विकास आधारित प्रौद्योगिक वरदान है या विनाश का कारण |

[क] पर्यावरण नैतिकता से क्या अभिप्राय है ?

]I] वे विषय | जो मनुष्य और पर्यावरण के बीच की केवल क्रियाओं को दर्शाते हैं , निर्देश-सिद्धान्त और दिशा,
]ii] वे विषय | जो मनुष्य और पर्यावरण के बीच केवल प्रतिक्रियाओं को दर्शाते हैं , निर्देश-सिद्धान्त और दिशा ,
]iii] वे विषय सिद्धांत और ,दिशाजो मनुष्य और पर्यावरण के बीच की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को दर्शाते ,निर्देश- | है
]iv] वे विषय| जो मनुष्य और पर्यावरण के बीच तुलना को दर्शाते हैं , निर्देश-सिद्धान्त और दिशा ,

| निम्नलिखित कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए [ख]

मानव केंद्रित विचारधारा- में निहित है
]I] पृथ्वी पर वैज्ञानिक तकनीक द्वारा प्रौद्योगिकी का निरंतर विकास करना |
]ii] पर्यावरण के अपघटन को रोकना |
]iii] बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन करना |
]iv] मनुष्य द्वारा पृथ्वी का मनचाहे रूप से प्रयोग करना
विकल्प:- | सही है 4 और 3 [4] | सही है 3 और 2 [3] |सही है 2 और 1 [2] | सही है 1 केवल[1]

] - कथन [ग]a] आधुनिक प्रौद्योगिकी ने प्रकृति पर संकट पैदा कर दिया है |

कारण -औद्योगिक उत्पादन के लिए प्रकृति का शोषण किया जा रहा है |
कूट] कथन [1] -a] गलत है] किन्तु कारण ,r] सही है |
] कथन [2]a] और कारण]r] दोनों गलत है |
] कथन [3]a] और कारण]r] दोनों सही हैं तथा कारण]r] , कथन]a] की सही व्याख्या करता है |
] कथन [4]a] और कारण]r] दोनों सही हैं] परंतु कारण ,r]] कथन ,a]की सही व्याख्या नहीं करता है |

मानव केंद्रित विचारधारा क , गद्यांश के अनुसार [घ]्या है ?

[ड़] पृथ्वी हमारी जननी है - पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए |

उत्तर -

] [क]iii] वे विषयजो मनुष्य और पर्यावरण के बीच की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं को ,निर्देश-सिद्धांत और दिशा , | दर्शाते है
[ख] [ii] 1 और | सही है 2
] [ग]iii] कथन]a] और कारण]r] दोनों सही हैं तथा कारण]r] , कथन]a] की सही व्याख्या करता है |
[घमानव केंद्रित विचारधारा यह है कि मनुष्य प्रकृति का स्वामी है और वह इसे मनचाहे रूप , गद्यांश के अनुसार [| में प्रयोग कर सकता है

‘ [ड़]पृथ्वी हमारी जननी है - प्रस्तुत पंक्ति से आशय है कि पृथ्वी हमारी जन्म देने वाली माता के समान है वह | अत | माँ की तरह हमारा पोषण करती है: हमें भी पृथ्वी का सम्मान करना चाहिए स्वच्छ रखना चाहिए व सदैव , | पृथ्वी का आदर करना चाहिए

अपठित - गद्यांश -3

मनुष्य ने अपने स्वार्थ के लिए प्रकृति का दोहन कर प्राकृतिक संतुलन ही नहीं , बल्कि स्त्रियों के साथ अन्याय कर , लिंगानुपात में आई भारी गिरावट का मुख्य | पुरुष के लिंगानुपात को घटाने का अमानवीय कार्य भी किया है-स्त्री कारण कन्या भ्रूण हत्या है। गर्भस्थ शिशु के लिंग परीक्षण के पश्चात कन्या भ्रूण होने की स्थिति में उसे माँ के गर्भ में ही मार दिया जाता है क्योंकि ऐसी मान्यता है कि लड़कियां हमेशा उपभोक्ता होती हैं और लड़के उत्पादक होते हैं , जबकि लड़की की शादी , अभिभावक समझते हैं कि लड़का उनके लिए जीवन भर कमाएगा और उनका ध्यान रखेगा | होगी और वह ससुराल चली जाएगी - विदेशी आक्रमणों और समाज में पर्दा| प्रथा - सती , प्रथा जैसी कुप्रथाओं के कारण महिलाओं को शिक्षा से वंचित किया जाने लगा तथा धार्मिक और सामाजिक रूप से पुरुषों को अधिक महत्त्व दिया जाने लगा एवं महिलाओं को घर तक सीमित कर दिया गया है जिससे ,संतान के रूप में नर शिशु की कामना करने की गलत परंपरा समाज में विकसित हो गई इसका अन्य |महत्वपूर्ण कारण दहेज प्रथा भी है पहले के समय | पिता अपनी पुत्रियों की शादी में जरूरी-में मातासामान घरेलू चीज़ें दिया करते थे कुछ परिवार कुछ सोना और | चाँदी भी देते थे - परंतु धीरे , यह उसके भविष्य को सुरक्षित बनाने के उदेश्य से किया जाता था | धीरे यह एक रिवाज़ बन गया है चाहे उनको , उसे दुल्हन के परिवार को देना पड़ता है , अब दूल्हे का परिवार जो माँगता है | उसके लिए किसी सेक़र्ज़ा लेना पड़ जाए या अपना घर गिरवी रखना पड़ जाए लेकिन उन्हें लड़के वालों की मांग | | पूरी करनी पड़ती है

किसी भी देश की प्रगति तब तक संभव नहीं है जब तक वहाँ की महिलाओं को प्रगति के पर्याप्त अवसर न मिले , कन्या भ्रूण ? उसके विकास की कल्पना कैसे की जा सकती है ,जिस देश में महिलाओं का अभाव हो | हत्या को समाप्त करने में महिलाओं की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो सकती है इसके लिए महिला शिक्षा पर विशेष :अत | जो भारतीय समाज पर और अपने परिवार पर , क्योंकि शिक्षित महिला उस तरह का औजार है , ध्यान देना होगा अपने हुनर तथा ज्ञान से सकारात्मक प्रभाव डालतीहै |

भारतीय समाज में लिंगानुपात में हुए परिवर्तन का कारण है [क]

विकल्प:-]I] विदेशी आक्रमण]ii]कन्या भ्रूण हत्या]iii]सामाजिक कुप्रथाएं]iv]ये सभी

| निम्नलिखित कथन पढ़कर सही विकल्प का चयन कीजिए [ख]

संतान के रूप में नर शिशु की कामना करने की गलत परंपरा के कारणों में निहित है

1. महिलाओं को घर तक सीमित रखना .2दहेज प्रथा का प्रचलन होना
2. विदेशी आक्रमणों का होना .4प्रकृति का दोहन करना

कूट

]I] केवल] | सही है 1ii] 1और] | सही है 2iii] 2 और] | सही है 3iv] 3 और | सही है 4

] कथन [ग]a] समाज में महिलाओं की दयनीय स्थिति हो गई है |

कारण]r] महिलाओं को मानवीय अधिकारों से वंचित कर दिया गया |

कूट]I] कथन]a] गलत है] किन्तु कारण ,r] सही है |

]ii] कथन]a] और कारण]r] दोनों गलत हैं |

]iii]कथन]a] और कारण[r दोनों[सही हैं तथा कारण]r]कथन]a]की सही व्याख्या है |

]iv] कथन]a] और कारण[r] दोनों सही हैं] परंतु कारण ,r] ,कथन]a] की सही व्याख्या नहीं है |

? गद्यांश में देश की प्रगति का संबंध किससे बताया गया है [घ]
विदेशी आक्रमणों से महिलाओं की स्थिति पर क् [ड़]या प्रभाव पड़ा ?
उत्तर -

1-] [क]ii] कन्या भ्रूण हत्या

] [ख]ii]| सही है 2 और 1

] [ग]iii] कथन]a] और कारण[r दोनों[सही हैं तथा कारण]r]कथन]a]की सही व्याख्या है |

[घ [देश की प्रगति का संबंध महिलाओं को प्रगति के प्राप्त अवसर से है अर्थात जिस देश में महिलाओं को सम्मान | अधिकार व उन्नति के अवसर मिलते हैं वही देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होता है ,

विदेशी [ड़]आक्रमणों से महिलाओं की स्थिति पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा महिलाओं को |शिक्षा से वंचित किया जाने लगा तथा उन्हें घर तक सीमित कर दिया गया धार्मिक और सामाजिक रूप से पुरुषों को अधिक |महत्व दिया जाने लगा

अपठित काव्यांश

अपठित काव्यांश वह कविता या गीत है, जो पहले से न पढ़ा गया हो। किसी भी काव्यांश को बिना किसी की सहायता से पढ़ना और पढ़कर उसे समझने की प्रतिभा का विकास करना ही अपठित काव्यांश का लक्ष्य है।

सामान्य सुझाव-

सर्वप्रथम अपठित पद्यांश या काव्यांश को दो-तीन बार ध्यानपूर्वक पढ़ें।

सभी तत्सम तथा कठिन शब्दों को समझने का प्रयास करें।

प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के उचित या सही विकल्प को दिए गए विकल्पों में से चुनने का प्रयास करें।

शीर्षक चुनते समय सम्पूर्ण काव्यांश को ध्यान में रखकर ही काव्यांश के मूलभाव (केंद्रीय भाव) पर आधारित शीर्षक का दिए गए विकल्पों में से चयन करें।

1. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय एवं लघूत्तरीय प्रश्नों के उत्तर सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए। 7 अंक

"बहुत घुटन है बंद घरों में,
खुली हवा तो आने दो.
संशय की खिड़कियाँ खोल,
किरणों को मुसकाने दो।
ऊँचे-ऊँचे भवन उठ रहे,
पर आँगन का नाम नहीं,
चमक-दमक, आपा-धापी है,
पर जीवन का नाम नहीं,
लौट न जाए सूर्यद्वार से,
नया संदेशा लाने दो।
हर माँ अपना राम जोहती,
कटता क्यों वनवास नहीं,
मेहनत की सीता भी भूखी,
रुकता क्यों उपवास नहीं।
बाबा की सूनी आँखों में चुभता,
तिमिर भागने दो।

हर उदास राखी गुहारती,
भाई का वह प्यार कहाँ?
डरे-डरे रिश्ते भी कहते,
अपनों का संसार कहाँ?
गुमसुम गलियों को मिलने दो,
खुशबू तो बिखराने दो।"

(i) आज रिश्तों के डरे-डरे होने का कारण आप क्या मानते हैं? 1

(क) अपनेपन की कमी के कारण। (ख) आतंक व भय का माहौल होने के कारण।
(ग) भूख और बेकारी के कारण। (घ) पर्यावरण प्रदूषण के कारण।

(ii) 'तिमिर' शब्द का अर्थ काव्य पंक्ति के संदर्भ में लिखिए- 1

(क) अकेलापन (ख) उदासी (ग) दुःख (घ) बीमारी

(iii) 'संशय की खिड़कियाँ खोल' में कौन-सा अलंकार है? **2**

(iv) कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए- 1

कथन (A): सूर्य द्वार से ही लौट जाएगा।
कारण (R): ऊँचे भवन तथा आँगन न होने के कारण।
(क) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) गलत है। (ख) कथन (A) गलत है,किंतु कारण (R) सही है
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सहीहैं। (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनोंगलतहैं।

(v) कवि ने इन पंक्तियों के माध्यम से क्या संदेश दिया है? **2**

उत्तर (i) क) (ii) क) (iii) अनुप्रास (iv) ग (v) लोगो से मिले जुलें ।

2. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय एवं वस्तुपरक प्रश्नों के उत्तर लिखिए- 7 अंक

"कोलाहल हो या सन्नाटा
कविता सदा सृजन करती है
जब भी आँसू हुआ पराजित,
कविता सदा जंग लड़ती है
जब भी कर्त्ता हुआ अकर्ता
कविता ने जीना सिखलाया
यात्राएँ जब मौन हो गईं
कविता ने चलना सिखलाया
जब भी तम का ज़ुल्म बढ़ा है,
कविता नया सूर्य गढ़ती है,
जब गीतों की फसलें लुटीं
शीलहरण होता कलियों का,
तब-तब चैन लुटा गलियों का
अपने भी हो गए पराए
शब्दहीन जब हुई चेतना
यों झूठे अनुबंध हो गए
घर में ही वनवास हो रहा
यों गूंगे संबंध हो गए।"

(i) कविता को सृजनात्मक कहा गया है क्योंकि कविता 1

(क) हर परिस्थिति में सृजक की भूमिका निभाती है। (ख) गुणों की सराहना करती है।

(ग) मौन यात्रा कराती है। (घ) कवि का विश्वास दृढ़ करती है।

(ii) कविता जीना कब सिखाती है? 1

(क) जब कर्मठ अकर्मण्य हो जाता है। (ख) जब लोग मौन साधलेते हैं।

(ग) जब लोग हार जाते हैं। (घ) जब लोग संन्यास लेने की सोचने लगते हैं।

(iii) जब निराशा और अंधकार पाँव पसारता है तब प्रेरणा कहाँ से मिलती है? 2

(iv) कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए- 1

कथन (A): 'कविता सदा जंग लड़ती है।'

कारण (R): कविता संघर्ष की प्रेरणा देती है।

विकल्प :

(क) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) गलत है। (ख) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं। (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(v) 'परस्पर संबंधों में दूरियाँ बढ़ने लगीं' यह भाव किस पंक्ति में आया है? 2

उत्तर: i) क) ii) ग) iii) कविता से.....iv) ख v) अपने भी हो गए पराये

3. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय एवं वस्तुपरकप्रश्नों के उत्तर लिखिए- 7 अंक

"जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में एक सितारा था,
माना, वह बेहद प्यारा था,
वह डूब गया तो डूब गया।
अंबर के आनन को देखो,
कितने इसके तारे टूटे,
कितने इस के प्यारे छूटे,
जो छूट गए फिर कहाँ मिले;
पर बोलो टूटे तारों पर,
कब अंबर शोक मनाता है?
जो बीत गई सो बात गई।
जीवन में वह था एक कुसुम,
थे उस पर नित्य निछावर तुम,
वह सूख गया तो सूख गया;
मधुबन की छाती को देखो,
सूखी कितनी इसकी कलियाँ,
मुरझाई कितनी वल्लरियाँ,
जो मुरझाई फिर कहाँ खिली,
पर बोलो सूखे फूलों पर,
कब मधुवन शोर मचाता है?
जो बीत गई सो बात गई।

(i) आपके विचार से 'जीवन में एक सितारा' किसे माना गया होगा? 1

(क) ध्रुवतारे को। (ख) जो सबसे प्रिय हो। (ग) आँगन में खिले एक फूल को। (घ) इनमें से कोई नहीं।

(ii) टूटे तारों का शोक कौन नहीं मनाता है? 1

(क) आकाश (ख) बादल (ग) धरा (घ) समुद्र

(iii) 'मधुबन' किसका प्रतीकार्थ है? 2

(iv) कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए- 1

कथन (A): 'जो बीत गई सो बात गई ।'

कारण (R): तात्पर्य यह है कि बीती बातों पर दुःख नहीं मनाना चाहिए तथा बीते अनुभवों को भूलकर आगे बढ़ना चाहिए।

(क) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) गलत है। (ख) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है। (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(v) 'मधुबन की छाती को देखो सूखी कितनी इसकी कलियाँ' में कौन सा अलंकार है? 2

उत्तर : i) ख ii) क) iii) संसार का iv) ग v) श्लेष

व्यावहारिक व्याकरण

1. वाक्य भेद

वाक्य- शब्दों का वह व्यवस्थित समूह जिसका कुछ अर्थ निकलता हो, उसे वाक्य कहते हैं। जैसे-

(1) मोहन पुस्तक पढ़ता है।

(2) तुम अभी सो जाओ।

(3) शिक्षक ने समझाया कि भाषा अर्जित संपत्ति है।

वाक्य के भेद-

(1) अर्थ के आधार पर

(2) रचना के आधार पर

(1) अर्थ के आधार पर वाक्य के आठ भेद हैं। इनके विषय में आप कक्षा नौवीं में पढ़ चुके हैं।

(2) रचना के आधार पर वाक्य के तीन भेद हैं सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्र या मिश्रित वाक्य।

सरल वाक्य - जिस वाक्य में कर्ता की एक ही मुख्य क्रिया होती है उसे सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे-(1) लोकेन्द्र चित्र बनाता है। (2) पुष्पा विद्यालय जाएगी। (3) हमने खेल देखा।

इन वाक्यों में एक ही मुख्य क्रिया बनाता, जाएगी, देखा का प्रयोग है।

संयुक्त वाक्य- जब दो स्वतंत्र वाक्य समुच्चय बोधक शब्द [और, तथा, व, एवं, किन्तु, पर, परंतु, लेकिन, या, अथवा, इसलिए] से जुड़े होते हैं तो वह संयुक्त वाक्य कहलाता है। जैसे-

(1) मैं आज घर गया और वह शहर चला गया। (2) बच्चे विद्यालय में हैं किन्तु वे खेल रहे हैं। (3) वहाँ मोहन आयेगा या तो सोहन आयेगा। ये सभी वाक्य और, किन्तु, या के प्रयोग से जुड़े हैं।

मिश्र या मिश्रित वाक्य- जिस वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य हो और एक या अधिक आश्रित उपवाक्य हों उसे मिश्र या मिश्रित वाक्य कहते हैं। जैसे- (1) शिक्षक ने बताया कि भारत एक कृषि प्रधान देश है।

प्रधान उपवाक्य- शिक्षक ने बताया, आश्रित उपवाक्य भारत एक कृषि प्रधान देश है। 'कि' योजक पद है।

(2) वे लोग यहीं रुकेंगे जो आज शाम को आएँगे।

प्रधान उपवाक्य- लोग यहीं रुकेंगे व आश्रित उपवाक्य आज शाम को आएँगे। वे... जो योजक पद हैं।

(3) बच्चे वहाँ गए थे जहाँ ऊँचे मकान हैं।

प्रधान उपवाक्य बच्चे गए थे तथा आश्रित उपवाक्य ऊँचे मकान हैं। वहाँ... जहाँ योजक पद हैं।

<u>उपवाक्य-</u> वाक्य का वह भाग जिससे अधूरा अर्थ व्यक्त होता है तथा जिसमें उद्देश्य और विधेय भी होता है। उसे उपवाक्य कहते हैं। जैसे- मैं उसे खूब पहचानता हूँ जो कल घर आया था। इस उदाहरण में दो उपवाक्य हैं- एक, मैं उसे खूब पहचानता हूँ तथा दो, जो कल घर आया था।

<u>उपवाक्य दो तरह के हैं</u> (1) प्रधान उपवाक्य (2) आश्रित उपवाक्य

प्रधान उपवाक्य- वाक्य का वह अंश जो स्वतंत्र होता है और जिसमें मुख्य क्रिया होती है, वह प्रधान उपवाक्य कहलाता है। जैसे ऊपर के उदाहरण में, मैं उसे खूब पहचानता हूँ प्रधान उपवाक्य है।

आश्रित उपवाक्य- वाक्य का वह अंश जो प्रधान उपवाक्य पर निर्भर होता है और जिसमें क्रिया पूरक के रूप में होती है, वह आश्रित उपवाक्य कहलाता है। जैसे ऊपर के उदाहरण में, जो कल घर आया था आश्रित उपवाक्य है।

आश्रित उपवाक्य के पहले कि, क्योंकि, जब, जो, जिसे, जहाँ, जितना, जिसमें, जिसको इत्यादि से जुड़े होते हैं।

आश्रित उपवाक्य के तीन भेद हैं :

(1) संज्ञा आश्रित उपवाक्य (2) विशेषण आश्रित उपवाक्य (3) क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य।

जिन्हें संक्षेप में संज्ञा उपवाक्य, विशेषण उपवाक्य तथा क्रिया विशेषण उपवाक्य के नाम से जानते हैं।

वाक्य-परिवर्तन-

किसी वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में परिवर्तित करने की प्रक्रिया को वाक्य परिवर्तन कहते हैं।

(क) सरल या साधारण वाक्य से मिश्र वाक्य में परिवर्तन -

(ख) सरल वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन -

	सरल वाक्य	संयुक्त वाक्य
(i)	आप खाकर आराम करें।	आप खाना खाएँ और आराम करें।
(ii)	सूर्यास्त होने पर अंधकार छा गया।	सूर्यास्त हुआ और अंधकार छा गया।
(iii)	वह भोजन करके विद्यालय जाता है।	वह भोजन करता है और विद्यालय जाता है।
(iv)	बादल घिरकर भी न बरसे।	बादल घिरे परंतु वर्षा न हुई।
(v)	वह फल खरीदने के लिए बाज़ार गया।	वह बाज़ार गया और उसने फल खरीदे।
(vi)	रोहन कक्षा में रहकर भी नहीं पढ़ा।	रोहन कक्षा में रहा पर पढ़ा नहीं।
(vii)	रोहन बीमार होने के कारण घूमने नहीं गया।	रोहन बीमार था इसलिए वह घूमने नहीं गया।
(viii)	निर्धन को लूटने के अलावा उसने उसकी हत्या कर दी।	उसने न केवल निर्धन को लूटा अपितु उसकी हत्या भी कर दी।
(ix)	कठोर बनकर भी सहृदय रहो।	कठोर बनो परंतु सहृदय रहो।
(x)	निर्धन होने पर भी वह ईमानदार है।	वह निर्धन है, परंतु ईमानदार है।

(ग) मिश्रित वाक्य से संयुक्त वाक्य में परिवर्तन -

	मिश्रित वाक्य	संयुक्त वाक्य
(i)	यदि आप घर आएँ तो आपसे बात हो।	आप घर आइए और बात कीजिए।
(ii)	जब विद्यालय में पढ़ाई बंद हो गई, तब हम घर लौट आये।	विद्यालय में पढ़ाई बंद हो गई और हम घर लौट आये।
(iii)	मेरे पिता जी वे हैं जो कुरसी पर बैठे हैं।	वे मेरे पिता जी हैं और कुरसी पर बैठे हैं।
(iv)	जो तोता पिंजड़े में बंद है, वह फल खा रहा है।	तोता पिंजड़े में बंद है और फल खा रहा है।
(v)	जब मंत्री का भाषण समाप्त हो गया तब वे घर आ गये।	मंत्री का भाषण समाप्त हो गया और वे घर आ गये।
(vi)	मैंने जब उसे देखा तब वह हँसने लगा।	मैंने उसे देखा और वह हँस पड़ा।
(vii)	जब वर्षा शुरू हुई, तब मोहन आ गया।	वर्षा शुरू हुई और मोहन आ गया।
(viii)	जब मैं अकेला था, तब चार गुंडों ने मुझे पीटा।	मैं अकेला था और चार गुंडों ने मुझे पीटा।
(ix)	जैसे ही शेर दिखाई दिया, वैसे ही लोग डर गए।	शेर दिखाई दिया और लोग डर गए।

(घ) मिश्रित वाक्य से सरल वाक्य में परिवर्तन -

	मिश्रित वाक्य	सरल वाक्य
(i)	जब वर्षा होती है, मोर नाचने लगते हैं।	वर्षा होने पर मोर नाचने लगते हैं।
(ii)	राम ने कहा कि वह निर्दोष है।	राम ने खुद को निर्दोष घोषित किया।
(iii)	मुझे बताओ कि आपका जन्म कहाँ और कब हुआ था।	आप मुझे अपने जन्म का स्थान और समय बताओ।
(iv)	जिनकी आय कम हैं, उन्हें मितव्ययी होना चाहिए।	कम आय वालों को मितव्ययी होना चाहिए।
(v)	जब शिक्षक कक्षा में आए, तब उन्होंने पढ़ाना शुरू किया।	शिक्षक ने कक्षा में आकर पढ़ाना शुरू किया।
(vi)	जब मुसीबत आए तो साहस बनाए रखना।	मुसीबत आने पर भी साहस बनाए रखना चाहिए।
(vii)	जब मैं स्टेशन पर पहुँचा, गाड़ी जा चुकी थी।	मेरे स्टेशन पहुँचने से पहले गाड़ी जा चुकी थी।
(viii)	मेरा विचार है कि आज फ़िल्म देखने चलें।	मेरा विचार आज फ़िल्म देखने का है।

(ङ) संयुक्त वाक्य से मिश्रित वाक्य में परिवर्तन -

	संयुक्त वाक्य	मिश्रित वाक्य
(i)	मैं अच्छा खेला, किंतु हार गया।	यद्यपि मैं अच्छा खेला, फिर भी हार गया।
(ii)	पाठ समाप्त हुआ और घंटी बज गई।	जैसे ही पाठ समाप्त हुआ वैसे ही घंटी बज गई।
(iii)	बिजली जाते ही टी०वी० बंद हो गई।	जैसे ही बिजली गई वैसे ही टी०वी० बंद हो गई।
(iv)	वह मेहनती है, अत: वह पराजय स्वीकार नहीं करता।	वह ऐसा मेहनती है जो पराजय स्वीकार नहीं करता।
(v)	वह परिश्रमी था और सफल हुआ।	वह परिश्रमी था इसलिए सफल हुआ।
(vi)	राम ने कहानी सुनाई और करन रो पड़ा।	राम ने ऐसी कहानी सुनाई कि करन रो पड़ा।
(vii)	सूरज निकला और चिड़िया चहचहाने लगी।	जब सूरज निकला तब चिड़िया चहचहाने लगी।
(viii)	पुलिस ने चोर को देखा और उसे पकड़ लिया।	ज्यों ही पुलिस ने चोर को देखा, त्यों ही उसे पकड़ लिया।
(ix)	परीक्षाएँ समाप्त हुईं और हम घूमने चले गए।	जैसे ही परीक्षाएँ समाप्त हुईं वैसे ही हम घूमने चले गए।
(x)	घंटी बजी और छात्र बाहर आ गए।	जैसे ही घंटी बजी, वैसे ही छात्र बाहर आ गए।
(xi)	गाँव में एक कुआँ था और उसके चारों ओर फूलों की क यारियाँ थीं।	गाँव में एक ऐसा कुआँ था जिसके चारों ओर क्यारियाँ थीं।
(xii)	टीबी के मरीज ने दवा का पूरा कोर्स किया और स्वस्थ हो गया।	टीबी के जिस मरीज ने दवा का पूरा कोर्स किया था। वह स्वस्थ हो गया।
(xiii)	सुमन ने कुछ कहा और मैं मान गया।	जब सुमन ने कुछ कहा तब मैं मान गया।
(xiv)	वे निर्धन ज़रूर थे पर बहुत ही ईमानदार थे।	यद्यपि वे निर्धन थे तथापि बहुत ही ईमानदार थे।
(xv)	वर्षा समाप्त हुई और पेड़-पौधे धुले-धुले से नज़र आने लगे।	जब वर्षा समाप्त हुई तब पेड़-पौधे धुले-धुले से नज़र आने लगे।
(xvi)	मध्यांतर की घंटी बजी और छात्र अपने-अपने कमरे से बाहर आ गए।	जैसे ही मध्यांतर की घंटी बजी वैसे ही छात्र अपने-अपने कमरे से बाहर आ गए।
(xvii)	वर्षा हो रही थी अत: कार्यक्रम में अधिक लोग नहीं आ सके।	चूँकि वर्षा हो रही थी इसलिए कार्यक्रम में अधिक लोग नहीं आ सके।
(xviii)	आज शहरों में लोग बहुत धनवान हो गए हैं पर वे सुखी नहीं हैं।	यद्यपि आज शहरों में लोग बहुत धनवान हो गए हैं तथापि वे सुखी नहीं हैं।
(xix)	सूरज का उदय हुआ और अँधेरे की फ़ौज भागने लगी।	जैसे ही सूरज का उदय हुआ, वैसे ही अँधेरे की फ़ौज भागने लगी।

(xx)	बल्लेबाज ने ऊँचा शॉट मारा परंतु सीमा रेखा के पास कैच हो गया।	यद्यपि बल्लेबाज ने ऊँचा शॉट मारा तथापि सीमा रेखा के पास कैच हो गया।
(xxi)	जोरदार धमाका हुआ और लोगों में भगदड़ मच गई।	जैसे ही जोर का धमाका हुआ वैसे ही लोगों में भगदड़ मच गई।
(xxii)	आरक्षण कार्यालय बंद था अत: मैं आरक्षण नहीं करा सका।	चूँकि आरक्षण कार्यालय बंद था इसलिए मैं आरक्षण न करा सका।
(xxiii)	चाँद निकला और धरती दूधिया रोशनी में नहा उठी।	जैसे ही चाँद निकला वैसे ही धरती दूधिया रोशनी में नहा उठी।
(xxiv)	संगीत के कार्यक्रम में बिजली गई और लोगों में भगदड़ मच गई।	संगीत के कार्यक्रम में ज्यों ही बिजली गई त्यों ही लोगों में भगदड़ मच गई।
(xxv)	वह सबसे कमज़ोर था, फिर भी उसने सबसे ज़्यादा काम किया।	यद्यपि वह सबसे कमज़ोर था तथापि उसने सबसे ज़्यादा कार्य किया।
(xxvi)	आकाश में बादल छाए और जोरदार वर्षा होने लगी।	जब आकाश में बादल छाए तब जोरदार वर्षा होने लगी।
(xxvii)	उसने स्कूल जाते बच्चों को सड़क पार करते हुए देखा और कार रोक दी।	जैसे ही उसने स्कूल जाते बच्चों को सड़क पार करते हुए देखा, उसने कार रोक दी।

आओ देखें कितना सीखा

प्रश्नः1. निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और रचना के आधार पर उनका भेद लिखिए

1. प्रातः जल्दी उठो और एक घंटे नियमित रूप से व्यायाम करो।
2. मरीज दवाएँ लेने अस्पताल गया।
3. अध्यापक आए और कक्षा में शोर बंद हो गया।
4. परिश्रमी मजदूरों को सभी काम पर बुलाते हैं।
5. जो लोग धनवान होते हैं, उन्हें गरीबों की मदद करनी चाहिए।
6. जैसे ही मोहन आया श्याम ने आगे बढ़कर उसका स्वागत किया।
7. उसने अपना आपा खोया और कटुवचन बोलने लगा।
8. सवेरा होते ही पक्षियों के कलरव से आसमान गूंज उठा।
9. आँधी आई और धूल उड़ने लगी।
10. अपने अथक परिश्रम से उसने असंभव को भी संभव बना दिया।

उत्तरः

1. संयुक्त वाक्य 2. सरल वाक्य 3. संयुक्त वाक्य 4. सरल वाक्य 5. मिश्र वाक्य 6. मिश्र वाक्य
7. संयुक्त वाक्य 8. सरल वाक्य 9. संयुक्त वाक्य 10. सरल वाक्य

प्रश्नः 2. निम्नलिखित वाक्यों को मिश्र वाक्य में बदलिए -

1. मेरे घर पहुँचते ही आंधी आ गई।
2. पुस्तकें खरीदने के लिए वह बाज़ार गई।
3. दुकान पर सजी मिठाइयाँ देखकर बच्चे के मुँह में पानी आ गया।
4. निराला जी द्वारा रचित कविता सभी को पसंद आई।
5. गार्ड द्वारा हरी झंडी हिलाते ही गाड़ी चल पड़ी।
6. पानी का टैंकर आते ही लोगों में हलचल मच गई।
7. महात्मा जी का प्रभावपूर्ण प्रवचन सुनकर लोग नतमस्तक हो गए।
8. रोहित शर्मा की अच्छी बल्लेबाजी के कारण भारत मैच जीत गया।
9. मेरे स्टेशन पर पहुँचते ही बस चल पड़ी।
10. लाल कपड़ा देखते ही साँड़ भड़ककर गोपू के पीछे भागने लगा।
11. वह धन कमाने के लिए शहर गया।
12. धरती को हरा-भरा बनाए रखने के लिए लोग पेड़ लगाते हैं।
13. सैनिक देशवासियों के सुख-चैन के लिए अपने प्राणों की बाज़ी लगा देते हैं।
14. यही छात्र एक सौ मीटर की दौड़ में प्रथम आया था।
15. बूढ़ा व्यक्ति सड़क पार करते हुए मोटरसाइकिल से टकरा गया।

उत्तरः

1. जैसे ही मैं घर पहुँचा वैसे ही आँधी आ गई।
2. क्योंकि उसे पुस्तकें खरीदनी थी इसलिए वह बाज़ार गई।
3. जैसे ही बच्चे ने दुकान पर सजी मिठाइयाँ देखीं वैसे ही उसके मुँह में पानी आ गया।
4. जो कविता निराला जी द्वारा रचित है, वह सभी को पसंद आई। या
   वह कविता जो निराला जी द्वारा रचित है, सभी को पसंद आई।
5. ज्यों ही गार्ड ने हरी झंडी हिलाई, त्यों ही गाड़ी चल पड़ी।।
6. जैसे ही पानी का टैंकर आया वैसे ही लोगों में हलचल मच गई।
7. महात्मा जी का प्रवचन इतना प्रभावपूर्ण था कि लोग नतमस्तक हो गए।
8. चूँकि रोहित शर्मा ने अच्छी बल्लेबाजी की इसलिए भारत मैच जीत गया।
9. जैसे ही मैं स्टेशन पर पहुँचा वैसे ही बस चल पड़ी ।
10. ज्यों ही साँड़ ने लाल कपड़ा देखा त्यों ही वह भड़ककर गोपू के पीछे भागने लगा।
11. चूँकि उसे धन कमाना था इसलिए वह शहर गया।
12. क्योंकि धरती को हरा-भरा बनाना है इसलिए लोग पेड़ लगाते हैं।
13. जब सैनिक प्राणों की बाज़ी लगाते हैं तब देशवासी चैन से सोते हैं।
14. यह वह छात्र है जो एक सौ मीटर की दौड़ में प्रथम आया था।
15. वह बूढ़ा व्यक्ति जो सड़क पार कर रहा था, मोटरसाइकिल से टकरा गया।

2. वाच्य

वाच्य किसी वाक्य में क्रिया के जिस रूप से कर्ता, कर्म अथवा भाव की प्रधानता का पता चले वह वाच्य कहलाता है। जैसे (1) वह पुस्तक पढ़ता है। (2) उसके द्वारा या उससे पुस्तक पढ़ी जाती है। (3) उससे पढ़ा जाता है। इन उदाहरणों में पढ़ता है, पढ़ी जाती है, पढ़ा जाता है क्रिया के तीन अगल-अलग रूप हैं।

वाच्य के भेद:- वाच्य के तीन भेद हैं

(1) कर्तृवाच्य (2) कर्मवाच्य (3) भाववाच्य

कर्तृवाच्य- जब वाक्य में क्रिया, कर्ता के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है अर्थात कर्ता की प्रधानता होती है तब वहाँ कर्तृवाच्य होता है।

जैसे (1) चिड़िया आसमान में उड़ती है। (2) श्यामा चित्र बनाती थी। (3) वे सब कोलकाता जाएँगे। इन उदाहरणों में उड़ती है, बनाती थी और जाएँगे क्रियाएँ कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हैं।

कर्मवाच्य- जब वाक्य में क्रिया, कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है अर्थात कर्म की प्रधानता होती है तब वहाँ कर्मवाच्य होता है। जैसे (1) सोहन से गीत गाया जाता है। (2) श्यामा से चित्र बनाया जाता था। (3) उनसे कोलकाता जाया जाएगा।

इन उदाहरणों में गाया जाता है, बनाया जाता था और जाया जाएगा क्रियाएँ कर्ता के लिंग, वचन, पुरुष के अनुसार हैं।

भाववाच्य- जब वाक्य में क्रिया न तो कर्ता और न ही कर्म के लिंग, वचन और पुरुष के अनुसार होती है बल्कि भाव के अनुसार होती है अर्थात भाव की प्रधानता होती है तब वहाँ भाववाच्य होता है। जैसे (1) चिड़िया से उड़ा जाता है। (2) श्यामा से हँसा जाता था। (3) उनसे जाया जाएगा। इन उदाहरणों में उड़ा जाता है, हँसा जाता था और जाया जाएगा क्रियाएँ भाव के अनुसार पुल्लिंग, एकवचन, प्रथम पुरुष में हैं। विशेष- वाक्य में अकर्मक क्रिया होने पर सदैव भाववाच्य में ही क्रिया का रूप परिवर्तन होगा और सकर्मक क्रिया होने पर सदैव कर्मवाच्य में ही क्रिया का रूप परिवर्तन होगा।

1. ''मैं यह भाषा नहीं पढ़ सकूँगा।'' इस वाक्य को 'कर्मवाच्य' में बदलें-

(अ) मेरे द्वारा यह भाषा नहीं पढ़ी जा सकती। (ब) मुझसे यह भाषा नहीं पढ़ी जा सकेगी।

(स) इस भाषा को मेरे द्वारा पढ़ पाना मुश्किल है। (द) मैं यह भाषा नहीं पढ़ूंगा।

उत्तर: (ब)

2. निम्नलिखित वाक्य का वाच्य बताइए-

'भगवान हमारी रक्षा करते हैं।'

(अ) कर्मवाच्य (ब) भाववाच्य (स) कर्तृवाच्य (द) उपर्युक्त सभी

उत्तर: (स)

3. ''क्या तुमने खाना खा लिया है?'' इस वाक्य को 'कर्मवाच्य' में बदलें ?

(अ) क्या तुम्हारे द्वारा खाना खा लिया गया है? (ब) क्या तुमसे खाना खाया जाता है?

(स) खाने को तुमने खा लिया क्या? (द) क्या तुमने खाना खाया?

उत्तर: (अ)

4. निम्नलिखित वाक्य का वाच्य बताइए-

'नानी के द्वारा कहानी सुनाई गई।'

(अ) कर्तृवाच्य (ब) कर्मवाच्य (स) भाववाच्य (द) अन्य

उत्तर: (ब)

5. ''गायिका द्वारा गीत गाया जा रहा है?'' इस वाक्य को 'कर्तृवाच्य' में बदलें-

(अ) गीत को गायिका द्वारा गाया जा रहा है। (ब) गायिका ने गीत गाया।

(स) गायिका से गीत गाया जाता है।　　　　　　(द) गायिका गीत गा रही है।

उत्तर: (द)

6. निम्न वाक्य का वाच्य बताइए-

'अब मुझसे चला नहीं जाता।'

(अ) भाववाच्य　　(ब) कर्तृवाच्य　　(स) कर्मवाच्य　　(द) अन्य

उत्तर: (अ)

7. ''पक्षी से उड़ा जा रहा है ।'' इस वाक्य को 'कर्तृवाच्य' में बदलें-

(अ) पक्षी के द्वारा उड़ा जाता है।　　(ब) पक्षी उड़ रहा है।

(स) पक्षी उड़ता है।　　(द) उड़ने का कार्य पक्षी द्वारा किया जाता है।

उत्तर: (ब)

8. निम्नलिखित वाक्य को कर्तृवाच्य में बदलिए-

पुलिस के द्वारा डाकू पकड़ा गया।

(अ) पुलिस से डाकू पकड़ा गया।　　(ब) पुलिस को डाकू ने पकड़ा।

(स) पुलिस ने पकड़ा डाकू को।　　(द) पुलिस ने डाकू को पकड़ा।

उत्तर: (द)

9. ''रमेश के द्वारा सब्ज़ी खरीदी जा रही थी।'' इस वाक्य को 'कर्तृवाच्य' में बदलें-

(अ) रमेश सब्ज़ी खरीद रहा था।　　(ब) रमेश ने सब्ज़ी खरीदी।

(स) सब्ज़ी रमेश के द्वारा खरीदी गई।　　(द) रमेश सब्ज़ी खरीद रहा है।

उत्तर: (अ)

10. निम्नलिखित वाक्य को भाववाच्य में बदलिए-

'मैं अब चलन हीं सकता।'

(अ) मुझसे अब नहीं चला जाता।　　(ब) अब मैं और नहीं चल सकता।

(स) मैं नहीं चल सकता।　　(द) मेरे से चला नहीं जाता।

उत्तर: (अ)

11. भाववाच्य वाला वाक्य इनमें से कौन-सा है?

(अ) मालती खाना खाती है।　　(ब) रमेश खाना खा सकता है।

(स) हिमेश से दौड़ा नहीं जाता।　　(द) रक्षा दौड़ नहीं सकती।

उत्तर: (स)

12. निम्नलिखित वाक्य का वाच्य बताइए-

'पक्षी आकाश में उड़ते हैं।'

(अ) कर्तृवाच्य　　(ब) कर्मवाच्य　　(स) भाववाच्य　　(द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (अ)

13. कर्मवाच्य का उदाहरण वाक्य है -

(अ) राम खाना खाता है।　　(ब) धावकों से दौड़ा नहीं गया।

(स) किसानों द्वारा फसल काट ली गई है।　　(द) बच्चे घर जा रहे हैं।

उत्तर: (स)

14. 'मोहन से पढ़ा नहीं जाता है' वाक्य है-

(अ) भाववाच्य (ब) कर्तृवाच्य (स) कर्मवाच्य (द) उपर्युक्त में से कोई नहीं

उत्तर: (अ)

<u>सीबीएसई परीक्षा में पूछे गए प्रश्न-</u>

प्रश्न 1.मई महीने में शीला अग्रवाल को कॉलेज वालों ने नोटिस थमा दिया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

प्रश्न 2. उसके द्वारा गिने-चुने फ्रेम नेताजी की मूर्ति पर फिट कर दिए जाते हैं। (कर्तृवाच्य मेंब दलिए)

प्रश्न 3. मनुष्य ने सुई-धागे का आविष्कार किया। (भाववाच्य में बदलिए)

प्रश्न 4. भोर में लोगों से बालगोबिन भगत का गीत नहीं सुना गया। (वाच्य पहचान कर भेद बताइए)

प्रश्न.5 कर्तृवाच्य में किसकी प्रधानता होती है?

प्रश्न.6 बालगोबिनभगतकबीरकोसाहबमानतेथे। (कर्मवाच्यमेंबदलिए)

प्रश्न.7 जिस आदमी ने पहले-पहल आग का आविष्कार किया होगा, वह कितना बड़ा आविष्कर्ता होगा। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

प्रश्न.8 मन्नू घर की चारदीवारी के भीतर नहीं बैठ सकती थी। (भाववाच्य में बदलिए)

प्रश्न.9 कैप्टन द्वारा चश्मा बदल दिया जाता है। (वाच्य पहचान कर भेद बताइए)

प्रश्न.10 भाववाच्य में क्रिया सदैव किस प्रकार की होती है?

प्रश्न.11 शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। (कर्मवाच्य में बदलिए)

प्रश्न.12 उनके द्वारा कैप्टन की देशभक्ति का सम्मान किया गया। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

प्रश्न.13 बालगोबिन भगत ने पतोहू की शादी कराई। (वाच्य पहचान कर भेद बताइए)

प्रश्न.14 बालगोबिन भगत प्रभातियाँ गाते थे| (कर्मवाच्य में बदलिए)

प्रश्न.15 मूर्तिकार द्वारा प्रतिमा बनाई गई और चौराहे पर स्थापित की गई। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

प्रश्न.16 कैप्टन ने मूर्ति पर नया चश्मा लगा दिया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

प्रश्न.17 उन्होंने संगीत की साधना की। (भाववाच्य में बदलिए)

प्रश्न.18 नवाब साहब द्वारा खीरे पर मसाला छिडका गया। (वाच्य पहचान कर भेद बताइए)

प्रश्न.19 वाच्य के कितने भेद होते हैं?

प्रश्न.20 नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

3. पद-परिचय

पद- व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में प्रयोग किए गए शब्द को ही पद कहते हैं। जैसे- प्रमोद पत्र लिखेगा। इस वाक्य में प्रमोद, पत्र, लिखेगा कुल **तीन** पद हैं। वाक्य से स्वतंत्र होने पर ये सभी शब्द कहलाएँगे।

पद-परिचय- वाक्य में प्रयोग किए गए पदों को पहचानकर उनका व्याकरणिक परिचय देना ही पद-परिचय कहलाता है। जैसे ऊपर के उदाहरण में, प्रमोद व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुलिंग, एकवचन, प्रथम/अन्य पुरुष, कर्ता कारक है। पत्र जातिवाचक संज्ञा, अन्य पुरुष, एकवचन, कर्म कारक है। लिखेगा सकर्मक क्रिया, भविष्य काल, पुलिंग, एकवचन, प्रथम पुरुष, कर्तृवाच्य है।

किस पद में क्या बताना जरूरी है

1. संज्ञा में उपभेद, लिंग, वचन, पुरुष कारक और क्रिया के साथ संबंध।
2. सर्वनाम में उपभेद, लिंग, वचन, पुरुष, कारक और क्रिया के साथ संबंध।
3. विशेषण में उपभेद, लिंग, वचन और विशेष्य का विशेषण।
4. क्रिया में उपभेद (कर्म और काल के आधार पर), लिंग, वचन, पुरुष और वाच्य।

5. क्रिया विशेषण उपभेद, क्रिया सम्पन्न होने की दशा, क्रिया की विशेषता बताने वाला पद।
6. संबंधबोधक- भेद, जिन पदों से संबंध बनता हो।
7. समुच्चयबोधक- उपभेद, जिन पदों वाक्यों या उपवाक्यों को जोड़ता हो।
8. विस्मयादिबोधक उपभेद, जिस भाव का बोध कराता हो।

अन्य पद-

9. प्रविशेषण- पहचान और वह विशेषण जिसकी विशेषता बताता हो।
10. निपात पहचान और वह पद जिस पर ज़ोर देता हो।

<u>विशेष ध्यातव्य</u>

संज्ञा- व्यक्तिवाचक, जातिवाचक और भाववाचक ।

सर्वनाम- पुरुषवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, संबंधवाचक, प्रश्नवाचक और निजवाचक।

विशेषण- गुणवाचक, संख्यावाचक, परिमाणवाचक और सार्वनामिक।

क्रिया कर्म के आधार पर अकर्मक और सकर्मक। काल के आधार पर वर्तमान काल, भूतकाल और भविष्यकाल । बनावट (रचना) के आधार पर सामान्य क्रिया, संयुक्त क्रिया, पूर्वकालिक क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया और नामधातु क्रिया

क्रिया विशेषण- रीतिवाचक, स्थानवाचक, कालवाचक और परिमाणवाचक।

संबंधबोधक- (मुख्य रूप से) कालवाचक, स्थानवाचक, दिशावाचक, साधनवाचक और तुलनावाचक ।

समुच्चयबोधक- समानाधिकरण और व्यधिकरण।

विस्मयादिबोधक- (मुख्य रूप से) हर्षसूचक, शोकसूचक, घृणासूचक, आश्चर्यसूचक, भयसूचक और संबोधन सूचक।

<u>अभ्यास प्रश्न</u>

1.निम्नलिखित प्रश्नो में रेखांकित पदों के सही परिचय का चयन करे।

Q1. **<u>मुंशी प्रेमचंद</u>** ने गोदान के रचना की।

A) जातिवाचक संज्ञा   कर्ता कारक ,पुल्लिंग ,एकवचन ,B) व्यक्तिवाचक संज्ञाकर्म कारक ,पुल्लिंग ,एकवचन ,
C) व्यक्तिवाचक संज्ञाकर्ता कारक ,पुल्लिंग ,एकवचन , D) जातिवाचक संज्ञाकर्म कारक ,पुल्लिंग ,एकवचन ,

Q2. रेखा **<u>नित्य</u>** दौड़ने जाती है ।

A) गुणवाचक विशेषण' ,पुल्लिंग ,एकवचन ,दौड़ने जाता है क्रिया की विशेषता '
B) रीतिवाचक क्रिया विशेषण' ,पुल्लिंग ,एकवचन ,दौड़ने जाता है क्रिया की विशेषता '
C) अव्यय' ,स्थानवाचक क्रिया विशेषण ,दौड़ने जाती है क्रिया की विशेषता '
D) अव्यय' ,कालवाचक क्रिया विशेषण ,दौड़ने जाती है क्रिया की विशेषता '

Q3. बागो में फूल **<u>खिलते हैं।</u>**

A) सकर्मक क्रिया कर्तृ वाच्य ,वर्तमान काल ,पुल्लिंग ,बहुवचन ,
B) अकर्मक क्रिया कर्तृ वाच्य ,वर्तमान काल ,पुल्लिंग ,बहुवचन ,
C) सकर्मक क्रिया कर्तृ वाच्य ,वर्तमान काल ,पुल्लिंग ,एकवचन ,
D) अकर्मक क्रिया कर्तृ वाच्य ,वर्तमान काल ,स्त्रीलिंग ,एकवचन ,

Q4. '**<u>लाल</u>** गुलाब देखकर मन खुश हो गया।-'रेखांकित पद का परिचय है-

A) संख्यावाचक विशेषण' ,पुल्लिंग ,बहुवचन ,गुलाब विशेष्य का विशेष
B) गुणवाचक विशेषण' ,पुल्लिंग ,बहुवचन ,गुलाब विशेष्य का विशेष
C) परिमाणवाचक विशेषण' ,पुल्लिंग ,एकवचन ,गुलाब विशेष्य का विशेष
D) गुणवाचक विशेषण' ,स्त्रीलिंग ,बहुवचन ,गुलाब विशेष्य का विशेष

Q5. राधिका ने **<u>आपको</u>** बुलाया है।

A) प्रथम पुरुषवाचक सर्वनाम कर्म कारक ,एकवचन ,पुल्लिंग ,
B) निजवाचक सर्वनाम कर्ता कारक ,एकवचन ,स्त्रीलिंग/पुल्लिंग ,
C) मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कर्म कारक ,एकवचन ,पुल्लिंग/स्त्रीलिंग ,
D) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम ,स्त्रीलिंग कर्म कारक ,एकवचन ,पुल्लिंग/
Q6. **<u>रिया</u>** पटना जा रही है।
A) जातिवाचक संज्ञा कर्म कारक ,एकवचन ,स्त्रीलिंग ,
B) व्यक्तिवाचक संज्ञा कर्ता कारक ,एकवचन ,स्त्रीलिंग ,
C) भाववाचक संज्ञा करण कारक ,एकवचन ,पुल्लिंग ,
D) भाववाचक संज्ञा ,एकवचन ,स्त्रीलिंग , कर्म कारक
Q7. राखी से मैं कल यहीं **<u>मिला</u>** था।
A) क्रिया कर्तृवाच्य ,पुल्लिंग एकवचन ,पूर्ण भूतकाल ,अकर्मक ,
B) क्रिया कर्मवाच्य ,पुल्लिंग एकवचन ,पूर्ण भविष्यत काल ,सकर्मक ,
C) क्रिया कर्म वाच्य ,स्त्रीलिंग एकवचन ,वर्तमान काल ,अकर्मक ,
D) क्रिया भाववाच्य ,बहुवचन ,पुल ,भूतकाल ,अकर्मक ,
Q8. राकेश **<u>आठवीं</u>** कक्षा में पढ़ता है।
A) विशेषण विशेष्य 'कक्षा ,एकवचन ,स्त्रीलिंग ,आवृत्तिसूचक ,संख्यावाचक ,
B) विशेषण विशेष्य 'कक्षा ,एकवचन ,स्त्रीलिंग ,क्रमसूचक ,परिमाणवाचक ,
C) विशेषण 'कक्षा ,एकवचन ,स्त्रीलिंग ,क्रमसूचक ,संख्यावाचक ,विशेष्य
D) विशेषण' ,एकवचन ,स्त्रीलिंग ,क्रमसूचक ,निश्चयवाचक ,कक्षा विशेष्य '
Q9. बिल्ली गाडी **<u>के नीचे</u>** बैठी हैं।
A) अव्यय' ,संबंधबोधक ,गाडी से संबंध
B) अव्यय योजक ,
C) अव्यय बिल्ली और गाडी को जोड़ रहा है ,योजक ,
D) अव्यय क्रिया विशेषण ,
Q10. अभिषेक **<u>किसे</u>** देख रहा है?
A) सर्वनाम, कर्म कारक ,बहुवचन ,स्त्रीलिंग
B) सर्वनाम करण कारक ,एकवचन ,पुल्लिंग ,
C) सर्वनाम रककाकर्ता ,प्रश्नवाचक ,पुल्लिंग ,
D) सर्वनाम कर्म कारक ,एकवचन ,प्रश्नवाचक ,
Q11. घोड़ा **<u>तेज़</u>** दौड़ रहा है।
A) अव्यय ,ककालवाच क क्रिया वि
B) अव्यय रीतिवाचक ,क्रिया विशेषण' ,दौड़ना क्रिया की विशेषता '
C) अव्यय' ,स्थानवाचक क्रियाविशेषण ,दौड़ना क्रिया की विशेषता '
D) इनमें से कोई नहीं
Q12. **<u>गरीब</u>** मज़दूर बहुत परिश्रम कर रहा है।
A) विशेषण मजदूर-विशेष्य ,एकवचन ,पुल्लिंग ,गुणवाचक ,
B) संज्ञा बहुवचन ,पुल्लिंग ,संख्यावाचक ,
C) विशेषण , एकवचन ,पुल्लिंग ,जातिवाचक ,

D) इनमें से कोई नहीं

Q13. कल मेरे पापा दिल्ली **गए।**

A) क्रिया कर्मवाच्य ,भूतकाल ,पुल्लिंग ,एकवचन ,सकर्मक ,

B) क्रिया कर्तृवाच्य ,वर्तमानकाल ,स्त्रीलिंग ,बहुवचन ,सकर्मक ,

C) क्रिया कर्तृवाच्य , भविष्यत काल ,पुल्लिंग ,बहुवचन ,अकर्मक ,

D) क्रिया कर्तृवाच्य ,भूतकाल ,पुल्लिंग ,एकवचन ,अकर्मक ,

Q14. **दीपक** बाजार जा रहा है।

A) संज्ञा ,पुल्लिंग ,बहुवचन ,जातिवाचक ,संबंध कारक' ,जा रहा है क्रिया का कर्ता '

B) संज्ञा' ,कर्ता कारक ,पुल्लिंग ,एकवचन ,व्यक्तिवाचक ,जा रहा है क्रिया का कर्ता '

C) संज्ञा कर्म कारक ,पुल्लिंग ,एकवचन ,जातिवाचक ,

D) इनमें से कोई नहीं

Q15. **वाह!** कितना सुन्दर मोर है।

A) अव्यय शोक सूचक ,विस्मयादिबोधक ,

B) अव्यय शोक सूचक ,संबंध बोधक ,

C) क्रिया विशेषण मोर की विशेषता बता रहा ,काल वाचक ,

D) अव्यय हर्ष सूचक ,विस्मयादिबोधक ,

Q16. हमें राष्ट्रभक्तों का **सम्मान** करना चाहिए।

A) जातिवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग ,एक वचन ,

B) व्यक्तिवाचक संज्ञा पुल्लिंग ,बहुवचन ,

C) व्यक्तिवाचक संज्ञा स्त्रीलिंग ,एक वचन ,

D) संज्ञा पुल्लिंग ,एक वचन ,भाववाचक ,

Q17. **आजकल** ध्वनि प्रदूषण बहुत तेज़ी से फैल रहा है।

A) अव्यय कालवाचक ,क्रिया विशेषण ,

B) अव्यय रीतिवाचक ,क्रिया विशेषण ,

C) अव्यय कालवाचक ,क्रिया विशेषण ,

D) इनमें से कोई नहीं

Q18. गिलास में **थोड़ा** जूस है।

A) सर्वनाम पुल्लिंग ,बहुवचन ,अनिश्चयवाचक ,

B) विशेषण दूध-विशेष्य ,पुल्लिंग ,अनिश्चित परिमाण वाचक ,

C) सर्वनाम ,एक वचन ,निश्चयवाचक ,पुल्लिंग

D) सर्वनाम स्त्रीलिंग ,बहुवचन ,अनिश्चयवाचक ,

Q19. उसने **मेहनत** से सब कुछ हासिल किया।

A) भाववाचक संज्ञा संबंध कारक ,स्त्रीलिंग ,बहुवचन ,

B) व्यक्तिवाचक संज्ञा कर्म कारक ,पुल्लिंग ,एक वचन ,

C) जातिवाचक संज्ञा पुल्लि ,बहुवचन ,ंग कर्म कारक ,

D) भाववाचक संज्ञा करण कारक ,स्त्रीलिंग ,एक वचन ,

Q20. पद किसे कहते हैं ?

A) वर्णों के समूह को B) शब्दों के समूह को C) वाक्य में प्रयुक्त शब्द कोD) शब्दों के परिचय को

नोट: यह कार्य आपके अभ्यास हेतु दिया गया है जिससे आप पद परिचय को आसानी से समझ सकें ओर इसको हल कर सकें-क्योंकि सत्र 2024-25 में सी .बी. एस. ई. ने पद- परिचय का प्रारूप बदल दिया है । अब इसमें बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं आते हैं ।

4. अलंकार

अलंकार- 'अलंकार' शब्द का शाब्दिक अर्थ होता है 'आभूषण' यानी गहना। अलंकार शब्द 'अलम्' और 'कार' दो शब्दों के योग से बना है। 'अलम्' का अर्थ है 'शोभा' तथा 'कार' का अर्थ हैं 'करने वाला'। अर्थात् काव्य की शोभा (सौन्दर्य) बढ़ाने वाले शोभाकारक तत्वों को अलंकार कहते हैं।

जैसे-(1) बालकु बोलि बधौ नहिं तोही। केवल मुनि जड़ जानहि मोही।।

(2) प्रीति-नदी में पाऊँ न बोरयो, दृष्टि न रूप परागी।

काव्य का सौन्दर्य दो रूपों अर्थात शब्द एवं अर्थ की सुन्दरता में वृद्धि अथवा चमत्कार उत्पन्न करने वाले कारकों को अलंकार कहते हैं।

अलंकारों के प्रयोग से काव्य रुचिकर और पठनीय बनता है। भाषा की गुणवत्ता बढ़ जाती है और उसमें सजीवता आ जाती है। अभिव्यक्ति में सरसता और स्पष्टता आने से कविता संप्रेषणीय बन जाती है। जैसे आभूषण नारियों का श्रृंगार है, ठीक उसी प्रकार साहित्य में 'अलंकार' काव्य का श्रृंगार है।

अलंकार के भेद- अलंकार के मुख्यतः दो भेद हैं-

(1) शब्दालंकार (2) अर्थालंकार

शब्दालंकार- जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ शब्दालंकार होता है।

जैसे-(1) अवधि अधार आस आवन की, तन मन विथा सही।

(2) चारू चंद्र की चंचल किरणें खेल रहीं हैं जल-थल में।

शब्दालंकार के प्रकार शब्दालंकार के मुख्य रूप से तीन प्रकार हैं-

(1) अनुप्रास अलंकार (2) यमक अलंकार(3) श्लेष अलंकार

अनुप्रास अलंकार- काव्य में जहाँ एक ही वर्ण बार-बार दोहराया जाए अर्थात् वर्णों की आवृत्ति हो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

जैसे- (1) कल कानन कुंडल मोर पखा, उर पे बनमाल बिराजत है।

(2) भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्हीं। बिपुल बार महि देवन्ह दीन्हीं ।।

यमक अलंकार- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक से अधिक बार आए लेकिन उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों वहाँ यमक अलंकार होता है।

जैसे-(1) काली घटा का घमंड घटा, नभ मंडल तारक वृंद खिले।

(2) तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं।

श्लेष अलंकार- काव्य में जहाँ कोई शब्द एक ही बार आए लेकिन उसके अर्थ भिन्न-भिन्न हों वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

जैसे- (1) नर की अरु नलनीर की गति एकै करि जोए। जेतो नीचे ह्वै चलै तेतो ऊँचो होए।।

(2) रावन सिर सरोज बनचारी। चल रघुवीर शिलीमुख धारी ।।

अर्थालंकार- जहाँ काव्य में अर्थ के माध्यम से काव्य का सौन्दर्य बढ़ जाता है, वहाँ अर्थालंकार होता है।

जैसे- (1) चरण कमल बन्दौ हरि राई।

(2) कोटि कुलिस सम बचन तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ।।

अर्थालंकार के प्रकार अर्थालंकार के निम्नलिखित प्रकार हैं-

(1) उत्प्रेक्षा अलंकार (2) अतिशयोक्ति अलंकार (3) मानवीकरण अलंकार

<u>उत्प्रेक्षा अलंकार</u>- जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना या कल्पना व्यक्त की जाए, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इसमें मनु, मानो, मनहु, जनु, जानो, जनहु आदि शब्दों का प्रायः प्रयोग हुआ रहता है।

जैसे-(1) तुम्ह तौ काल हाँक जनु लावा। बार बार जैसे मोही लागि बोलावा ।।

(2) सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलोने गात।

मानहु नीलमणि शैल पर, आतप परयो प्रभात ।।

<u>अतिशयोक्ति अलंकार</u> - जहाँ किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर किया जाए कि वह लोक व्यवहार में असंभव लगे वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होता है।

जैसे- (1) हनुमान की पूँछ में लगन न पाई आग। लंका सारी जल गई गए निशाचर भाग ।।

(2) आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।

राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार ।।

<u>मानवीकरण अलंकार</u>- जहाँ काव्य में प्रकृति की वस्तुओं में मानवीय कार्य-व्यवहार दिखाया जाए वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।

जैसे- (1) मेघ आए बड़े बन-ठन के सँवर के।

(2) दिवसावसान का समय

मेघ आसमान से उतर रही है

वह संध्या सुंदरी परी-सी धीरे-धीरे

<u>अभ्यास-प्रश्न</u>

निम्नलिखित काव्य पंक्तियों में निहित अलंकारों के नाम लिखिए -

1) सेवक सचिव सुमंत बुलाए। 2) निरपख होइके जे भजे सोई संत सुजान। 3) या मुरली मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी। 4) पानी गए न उबरै मोती, मानुष, चून। 5) बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन। 6) कूड़ कपट काया का निकस्या। 7) कोटिक ए कलधौत के धाम। 8) तीन बेर खाती थी वे तीन बेर खाती है। 9) हाय फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की ढेरी थी। 10) धाए काम-धाम सब त्यागी। मनहु रंक निधि लूटन लागी।।

उत्तरः

1) अनुप्रास अलंकार 2) अनुप्रास अलंकार 3) श्लेष अलंकार 4) श्लेष अलंकार 5) अनुप्रास अलंकार
6) अनुप्रास अलंकार 7) अनुप्रास अलंकार 8) यमक अलंकार 9) उपमा अलंकार 10) उत्प्रेक्षा

अलंकार पर आधारित कुछ बहुविकल्पीयअभ्यास प्रश्न (MCQ)

प्रश्न 1 - 'मुदित महिपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत बुलाए' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 2 - 'चरण-कमल बन्दों हरि राई।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 3 - 'सपना-सपना समझ कर भूल न जाना' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 4 - 'नील गगन-सा शांत हृदय था सो रहा।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 5 - 'आगे नदियां पड़ी अपार घोडा कैसे उतरे पार। राणा ने सोचा इस पार तब तक चेतक था उस पार।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) अतिशयोक्ति अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 6 - 'फूल हँसे कलियाँ मुसकाई।' में कौन सा अलंकार है?

(i) मानवीकरण अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 7 - 'बंदौ गुरु पद पदुम परगा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 8 - 'मेघ आये बड़े बन-ठन के संवर के।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) मानवीकरण अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 9 - 'तीन बेर खाती थी वो तीन बेर खाती है।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) अतिश्योक्ति अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) यमक अलंकार

प्रश्न 10 - 'हाय फूल सी कोमल बच्ची, हुई राख की ढेरी थी।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 11 - 'मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अतिश्योक्ति अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 12 - 'धनुष उठाया ज्यों ही उसने, और चढ़ाया उस पर बाण। धरा-सिन्धु नभ काँपे सहसा, विकल हुए जीवों के प्राण।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अतिश्योक्ति अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 13 - 'मेघमय आसमान से उतर रही है संध्या सुन्दरी परी सी धीरे धीरे धीरे।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) मानवीकरण अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 14 - 'चारु चंद्र की चंचल किरणें खेल रही थी जल थल में' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 15 - 'मुख बाल रवि सम लाल होकर ज्वाला-सा हुआ बोधित।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 16 - 'माला फेरत जुग भया, मिटा न मनका फेर, कर का मनका डारि के मन का मनका फेर।' में कौन सा अलंकार है? (i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 17 - 'वन शारदी चंद्रिका-चादर ओढ़े।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 18 - 'चंचला स्नान कर आये, चन्द्रिका पर्व में जैसे। उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसे।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अतिश्योक्ति अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 19 - 'उषा सुनहरे तीर बरसाती, जय लक्ष्मी-सी उदित हुई।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) मानवीकरण अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

प्रश्न 20 - 'विमल वाणी ने वीणा ली ,कमल कोमल कर में सप्रीत।' में कौन सा अलंकार है?

(i) अनुप्रास अलंकार (ii) यमक अलंकार (iii) उपमा अलंकार (iv) रूपक अलंकार

उत्तर- 1. (i) अनुप्रास अलंकार 2. (iv) रूपक अलंकार 3. (ii) यमक अलंकार 4. (iii) उपमा अलंकार 5. (iii) अतिश्योक्ति अलंकार 6. (i) मानवीकरण अलंकार 7. (i) अनुप्रास अलंकार 8. (ii) मानवीकरण अलंकार 9. (iv) यमक अलंकार 10. (iii) उपमा अलंकार 11. (iv) रूपक अलंकार 12. (i) अतिश्योक्ति अलंकार 13. (iii) मानवीकरण अलंकार 14. (i) अनुप्रास अलंकार 15.(iii) उपमा अलंकार 16. (ii) यमक अलंकार 17. (iv) रूपक अलंकार 18. (i) अतिश्योक्ति अलंकार 19. (ii) मानवीकरण अलंकार 20. (i) अनुप्रास अलंकार

नोट: यह कार्य आपके अभ्यास हेतु दिया गया है जिससे आप अलंकार को आसानी से समझ सकें ओर इसको हल कर सकें-क्योकि सत्र 2024-25 में सी .बी. एस. ई.(CBSE) ने अलंकार का प्रारूप बदल दिया है । अब इसमें बहुविकल्पीय प्रश्न नहीं आते हैं ।

क्षितिज (भाग-2)

सूरदास के पद

पाठ का सारांश

सूरदास जी द्वारा रचित सूरसागर के भ्रमरगीत से लिया गया है। प्रस्तुत पद में सूरदास जी ने गोपियों एवं उद्धव के बीच हुए वार्तालाप का वर्णन किया है। जब श्री कृष्ण मथुरा वापस नहीं आते और उद्धव के द्वारा मथुरा यह संदेश भेज देते हैं कि वह वापस नहीं आ पाएँगे , तो गोपियाँ उद्धव को भाग्यशाली बताती हैं क्योंकि श्री कृष्ण के वापिस न आने पर जितना प्रभाव उन पर पड़ा है, उद्धव उससे कोसों दूर है।

पहले पद में गोपियों की यह शिकायत वाजिब लगती है कि यदि उद्धव कभी स्नेह के धागे से बँधे होते तो वे विरह की वेदना को अनुभूत अवश्य कर पाते। गोपियाँ उद्धव अर्थात श्री कृष्ण के मित्र से व्यंग्य करते हुए कह रही हैं कि वह बहुत भाग्यशाली है , जो अभी तक श्री कृष्ण के साथ रहते हुए भी उनके प्रेम के बंधन से अब तक अछूता है। गोपियाँ उद्धव की तुलना कमल के पत्तों व तेल के मटके के साथ करती हैं क्योंकि जिस प्रकार कमल के पत्ते हमेशा जल के अंदर ही रहते हैं , लेकिन उन पर जल के कारण कोई दाग दिखाई नहीं देता और जिस प्रकार तेल से भरी हुई मटकी पानी के मध्य में रहने पर भी उसमें रखा हुआ तेल पानी के प्रभाव से अप्रभावित रहता है , उसी प्रकार श्री कृष्ण के साथ रहने पर भी तुम्हारे ऊपर उनके प्रेम का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। यही कारण है कि गोपियाँ उद्धव को भाग्यशाली समझती हैं , जबकि वे खुद को अभागिन अबला नारी समझती हैं , जो श्रीकृष्ण के प्रेम में उलझ गई हैं , उनके मोहपाश में लिपट गई हैं। जब श्री कृष्ण मथुरा वापस नहीं आते और उद्धव के द्वारा मथुरा यह संदेश भेज देते हैं कि वह वापस नहीं आ पाएँगे , तो इस संदेश को सुनकर गोपियाँ टूट - सी गईं और उनकी विरह की व्यथा और बढ़ गई। दूसरे पद में गोपियों की यह स्वीकारोक्ति कि उनके मन कीअभिलाषाएँ मन में ही रह गईं , कृष्ण के प्रति उनके प्रेम की गहराई को अभिव्यक्त करती है। श्री कृष्ण के गोकुल छोड़ कर चले जाने के उपरांत , गोपियों के मन में स्थित श्री कृष्ण के प्रति प्रेम - भावना मन में ही रह गई है। वे उद्धव से शिकायत करती हैं कि अब वे अपनी यह व्यथा / यह पीड़ा किसे जाकर कहें ? उन्हें यह समझ नहीं आ रहा है। वे अब तक इसी कारण जी रहीं थी कि श्री कृष्ण जल्द ही वापिस आ जाएंगे और वे सिर्फ़ इसी आशा से अपने तन - मन की पीड़ा को सह रही थीं कि जब श्री कृष्ण वापस लौटेंगे , तो वे अपने प्रेम को कृष्ण के समक्ष व्यक्त करेंगी। सूरदास जी के इस पद में गोपियाँ उद्धव से यह कह रही हैं कि उनके हृदय में श्री कृष्ण के प्रति अटूट प्रेम है , जो कि किसी योग - संदेश द्वारा कम होने वाला नहीं है। बल्कि इससे उनका प्रेम और भी दृढ़ हो जाएगा। तीसरे पद में वे उद्धव की योग साधना को कड़वी ककड़ी जैसा बताकर अपने एकनिष्ठ प्रेम में दृढ़ विश्वास प्रकट करती हैं। गोपियाँ उद्धव से कहती हैं कि हमारे श्री कृष्ण तो हमारे लिए हारिल पक्षी की लकड़ी के समान हैं। जिस तरह हारिल पक्षी अपने पंजों में लकड़ी को बड़ी ही दृढ़ता से पकड़े रहता है , उसे कहीं भी गिरने नहीं देता , उसी प्रकार हमने भी मन , वचन और कर्म से नंद पुत्र श्री कृष्ण को अपने हृदय के प्रेम - रूपी पंजों से बड़ी ही दृढ़ता से पकड़ा हुआ है अर्थात दृढ़तापूर्वक अपने हृदय में बसाया हुआ है। हम तो जागते सोते , सपने में और दिन - रात कान्हा - कान्हा रटती रहती हैं। इसी के कारण हमें तो जोग का नाम सुनते ही ऐसा लगता है , जैसे मुँह में कड़वी ककड़ी चली गई हो। चौथे पद में गोपियाँ उद्धव को ताना मारती हैं कि श्री कृष्ण ने अब राजनीति पढ़ ली है। जिसके कारण वे और अधिक बुद्धिमान हो गए हैं और अंत में गोपियों द्वारा उद्धव को राजधर्म (प्रजा का हित) याद दिलाया जाना सूरदास की लोकधर्मिता को दर्शाता है।
गोपियाँ व्यंग्यपूर्वक उद्धव से कहती हैं कि श्री कृष्ण ने राजनीति का पाठ पढ़ लिया है। जो कि मधुकर अर्थात उद्धव के द्वारा सब समाचार प्राप्त कर लेते हैं और उन्हीं को माध्यम बनाकर संदेश भी भेज देते हैं। गोपियाँ कहती हैं कि

मथुरा जाते समय श्री कृष्ण उनका मन अपने साथ ले गए थे , जो अब उन्हें वापस चाहिए। वे तो दूसरों को अन्याय से बचाते हैं , फिर उन पर अन्याय क्यों कर रहे हैं ? सूरदास के शब्दों में गोपियाँ कहती हैं कि राजधर्म तो यही कहता है कि प्रजा के साथ अन्याय नहीं करना चाहिए अथवा न ही सताना चाहिए। इसलिए श्री कृष्ण को योग का संदेश वापस लेकर स्वयं दर्शन देने के लिए आना चाहिए।

<u>पाठ आधारित पद्यांश</u>

हमारैं हरि हारिल की लकरी।
मन क्रम बचन नंद- नंदन उर, यह दृढ़ करि पकरी।
जागत सोवत स्वप्न दिवस-निसि, कान्ह-कान्ह जकरी।
सुनत जोग लागत है ऐसौ, ज्यौं करुई ककरी।
सुतौ ब्याधि हमकौं लै आए, देखी सुनी न करी।
यह तौ' सूर' तिनहिं लै सौंपौ, जिनके मन चकरी।।

प्रश्न 1 उपर्युक्त पद में किसके मध्य संवाद हो रहा हैं?

क) सूरदास- गोपियाँ ख) गोपियाँ-उद्धव ग) उद्धव-कृष्ण घ)कृष्ण -गोपियाँ

प्रश्न 2 उपर्युक्त पद में' योग 'को क्या कहा है?

i) कडवी ककड़ी ii) ब्याधि iii) हारिल की लकड़ी

क) i ख ii ग) iii घ iऔर ii

प्रश्न 3 हारिल की लकड़ी किसे कहा गया है?

क (सूरदास ख (उद्धव ग(कृष्ण घ (गोपियाँ

प्रश्न 4 कथन - गोपियां योग की शिक्षा नहीं लेना चाहती |

कारण – गोपियों के हृदय में केवल श्रीकृष्ण ही बसे हुए हैं।

क) कथन सही है किंतु कारण गलत है|
ख) कथन गलत है किंतु कारण सही है|
ग) कथन और कारण दोनों सही है और कारण कथन की सही व्याख्या है |
घ) कथन और कारण दोनों सही है परंतु कारण /कथन की सही व्याख्या नहीं है

प्रश्न 5 योग का नाम सुनते ही गोपियों को कैसा लगता है?

1. कभी कड़वी ककड़ी के समान
2. हारिल की लकड़ी के समान
3. एक ऐसी बीमारी के समान जो पहले ना देखी ना सुनी
4. श्री कृष्ण के आने के समान

कूट

क) केवल कथन 1 सही है
ख) केवल कथन 1 और कथन 2 सही है
ग) केवल कथन 1 और कथन 3 सही है
घ) केवल कथन 1 और कथन 4 सही है

उत्तर– 1 ख उत्तर– 2 ग उत्तर– 3 ग उत्तर– 4 ग उत्तर - 5 ग

हरि हैं राजनीति पढ़ि आए ।
समुझी बात कहत मधुकर के , समाचार सब पाए ।
इक अति चतुर हुते पहिलैं ही , अब गुरु ग्रंथ पढ़ाए ।

बढ़ी बुद्धि जानी जो उनकी , जोग - सँदेस पठाए ।
ऊधौ भले लोग आगे के , पर हित डोलत धाए ।
अब अपनै मन फेर पाइहैं , चलत जु हुते चुराए ।
ते क्यौं अनीति करैं आपुन , जे और अनीति छुड़ाए ।
राज धरम तौ यहै ' सूर ' , जो प्रजा न जाहिं सताए ।

1) गोपियाँ किसके प्रेम में आसक्त हो गई है ?
क. संगीत के ख. कृष्ण के प्रेम में ग उद्धव के प्रेम में घ इनमें से कोई

2) श्री कृष्ण का योग संदेश कौन लेकर आया था
क सिपाही ख बलराम ग उद्धव घ ग्वाल बाल

3) पहले के लोग कैसे होते थे?
क परोपकारी ख. निडर ग.कृपालु घ .नास्तिक

4)हरि है राजनीति पढ़ि आए, इस कथन के पक्ष में कथनों को ध्यान से पढ़ें
1 श्री कृष्ण के प्रेम के स्थान पर योग संदेश भेजा ।2 बुद्धि चतुराई में कृष्ण कुशल हो गए।
3 गोपियों के मन को श्रीकृष्ण ने चुरा लिया था ।
उपुर्यक्त कथनों में कौन-सा कथन सही है /कौन-सा कथन गलत है?
कूट क. केवल 1 ख.केवल 2 ग.कथन 2 और 1 घ.कथन 1, 2, और 3

5) गोपियों के अनुसार सच्चा राजधर्म क्या है?
क .प्रजा को नहीं सताना ख .प्रजा के कष्टों का निवारण करना ग प्रजा के हित में कार्य करना
घ) उपर्युक्त सभी

उत्तर– 1 खउत्तर 2 -ख उत्तर 3 -क उत्तर– 4 गउत्तर 5 -घ

<u>पाठ आधारित - प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न-1. गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में क्या व्यंग्य निहित है?
उत्तर- गोपियों द्वारा उद्धव को भाग्यवान कहने में यह व्यंग्य निहित है कि उद्धव वास्तव में भाग्यवान न होकर अति भाग्यहीन हैं। वे कृष्णरूपी सौन्दर्य तथा प्रेम-रस के सागर के सान्निध्य में रहते हुए भी उस असीम आनंद से वंचित हैं। वे प्रेम बंधन में बंधने एवं मन के प्रेम में अनुरक्त होने की सुखद अनुभूति से पूर्णतया अपरिचित हैं।

प्रश्न-2. उद्धव के व्यवहार की तुलना किस-किस से की गई है?
उत्तर- गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना निम्नलिखित उदाहरणों से की है
(1) गोपियों ने उद्धव के व्यवहार की तुलना कमल के पत्ते से की है जो नदी के जल में रहते हुए भी जल की ऊपरी सतह पर ही रहता है। अर्थात् जल का प्रभाव उस पर नहीं पड़ता। श्री कृष्ण का सान्निध्य पाकर भी वह श्री कृष्ण के प्रभाव से मुक्त हैं।
(2) वह जल के मध्य रखे तेल के गागर (मटके) की भाँति हैं, जिस पर जल की एक बूँद भी टिक नहीं पाती। उद्धव पर श्री कृष्ण का प्रेम अपना प्रभाव नहीं छोड़ पाया है, जो ज्ञानियों की तरह व्यवहार कर रहे हैं।

प्रश्न-3. गोपियों ने किन-किन उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं?
उत्तर- गोपियों ने कमल के पत्ते, तेल की मटकी और प्रेम की नदी के उदाहरणों के माध्यम से उद्धव को उलाहने दिए हैं। उनका कहना है कि वे कृष्ण के साथ रहते हुए भी प्रेमरूपी नदी में उतरे ही नहीं, अर्थात साक्षात प्रेमस्वरूप श्रीकृष्ण के पास रहकर भी वे उनके प्रेम से वंचित हैं।

प्रश्न-4. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर- गोपियाँ कृष्ण के आगमन की आशा में दिन गिनती जा रही थीं। वे अपने तन-मन की व्यथा को चुपचाप सहती हुई कृष्ण के प्रेम रस में डूबी हुई थीं। कृष्ण को आना था परन्तु उन्हों ने योग का संदेश देने के लिए उद्धव को भेज दिया। विरह की अग्नि में जलती हुई गोपियों को जब उद्धव ने कृष्ण को भूल जाने और योग-साधना करने का उपदेश देना प्रारम्भ किया, तब गोपियों की विरह वेदना और भी बढ़ गयी। इस प्रकार उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरह अग्नि में घी का काम किया।

प्रश्न-5. 'मरजादा न लही' के माध्यम से कौन-सी मर्यादा न रहने की बात की जा रही है?

उत्तर- 'मरजादा न लही' के माध्यम से प्रेम की मर्यादा न रहने की बात की जा रही है। कृष्ण के मथुरा चले जाने पर गोपियों उनके वियोग में जल रही थीं। कृष्ण के आने पर ही उनकी विरह-वेदना मिट सकती थी, परन्तु कृष्ण ने स्वयं न आकर उद्धव को यह संदेश देकर भेज दिया की गोपियाँ कृष्ण का प्रेम भूलकर योग-साधना में लग जाएँ। प्रेम के बदले प्रेम का प्रतिदान ही प्रेम की मर्यादा है, लेकिन कृष्ण ने गोपियों की प्रेम रस के उत्तर मैं योग की शुष्क धारा भेज दी। इस प्रकार कृष्ण ने प्रेम की मर्यादा नहीं रखी। वापस लौटने का वचन देकर भी वे गोपियों से मिलने नहीं आए।

प्रश्न- 6. कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?

उत्तर- गोपियों ने कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को हारिल पक्षी के उदाहरण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। वे अपनों को हारिल पक्षी व श्रीकृष्ण को लकड़ी की भाँति बताया है। जिस प्रकार हारिल पक्षी सदैव अपने पंजे में कोई लकड़ी अथवा तिनका पकड़े रहता है, उसे किसी भी दशा में नहीं छोड़ता। उसी प्रकार गोपियों ने भी मन, कर्म और वचन से कृष्ण को अपने हृदय में दृढ़तापूर्वक बसा लिया है। वे जागते, सोते स्वप्नावस्था में, दिन-रात कृष्ण-कृष्ण की ही रट लगाती रहती हैं। साथ ही गोपियों ने अपनी तुलना उन चीटियों के साथ की है जो गुड़ (श्रीकृष्ण भक्ति) पर आसक्त होकर उससे चिपट जाती है और फिर स्वयं को छुड़ा न पाने के कारण वहीं प्राण त्याग देती है।

प्रश्न- 7. गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा कैसे लोगों को देने की बात कही है ?

उत्तर- गोपियों ने उद्धव से योग की शिक्षा ऐसे लोगों को देने की बात कही है जिनका मन चंचल है और इधर-उधर भटकता है। उद्धव अपने योग के संदेश में मन की एकाग्रता का उपदेश देतें हैं, परन्तु गोपियों का मन तो कृष्ण के अनन्य प्रेम में पहले से ही एकाग्र है। इस प्रकार योग-साधना का उपदेश उनके लिए निरर्थक है। योग की आवश्यकता तो उन्हें है जिनका मन स्थिर नहीं हो पाता, इसीलिये गोपियाँ चंचल मन वाले लोगों को योग का उपदेश देने की बात कहती हैं।

प्रश्न-8. प्रस्तुत पदों के आधार पर गोपियों का योग साधना के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट करें।

उत्तर- प्रस्तुत पदों में योग साधना के ज्ञान को निरर्थक बताया गया है। यह जान गोपियों के अनुसार अव्यावहारिक और अनुपयुक्त है। उनके अनुसार यह ज्ञान उनके लिए कड़वी ककड़ी के समान है जिसे निगलना बड़ा ही मुश्किल है। सूरदास जी गोपियों के माध्यम से आगे कहते हैं कि यह एक बीमारी है। वो भी ऐसा रोग जिसके बारे में तो उन्होंने पहले कभी न सुना है और न देखा है। इसलिए उन्हें इस ज्ञान की आवश्यकता नहीं है। उन्हें योग का आश्रय तभी लेना पड़ेगा जब उनका चित्त एकाग्र नहीं होगा। परन्तु कृष्णमय होकर यह योग शिक्षा तो उनके लिए अनुपयोगी है। उनके अनुसार कृष्ण के प्रति एकाग्र भाव से भक्ति करने वाले को योग की ज़रूरत नहीं होती।

प्रश्न-9. गोपियों के अनुसार राजा का धर्म क्या होना चाहिए ?

उत्तर- गोपियों के अनुसार राजा का धर्म उनकी प्रजा की हर तरह से रक्षा करना तथा नीति से राजधर्म का पालन करना होता है। एक राजा तभी अच्छा कहलाता है जब वह अनीति का साथ न देकर नीति का साथ दे।

प्रश्न-10. गोपियों को कृष्ण में ऐसे कौन से परिवर्तन दिखाई दिए जिनके कारण वे अपना मन वापस पा लेने की बात कहती हैं ?

उत्तर- गोपियों को लगता है कि कृष्ण ने अब राजनीति सीख ली है। उनकी बुद्धि पहले से भी अधिक चतुर हो गयी है। पहले वे प्रेम का बदला प्रेम से चुकाते थे, परंतु अब प्रेम की मर्यादा भूलकर योग का संदेश देने लगे हैं। कृष्ण पहले दूसरों के कल्याण के लिए समर्पित रहते थे, परंतु अब अपना भला ही देख रहे हैं। उन्होंने पहले दूसरों के अन्याय से लोगों को मुक्ति दिलाई है, परंतु अब नहीं। श्रीकृष्ण ने गोपियों से मिलने के बजाय योग की शिक्षा देने के लिए उद्धव को भेज दिया । श्रीकृष्ण के इस कदम से गोपियों का मन और भी आहत हुआ है। कृष्ण में आए इन्हीं परिवर्तनों को देखकर गोपियाँ स्वयं को श्रीकृष्ण के अनुराग से वापस लेना चाहती है।

राम-लक्ष्मण-परशुराम संवाद

सारांश

प्रस्तुत पाठ में दी गई चौपाइयाँ रामचरितमानस के बाल कांड से लिए गए अंश हैं। इसके कवि तुलसीदास जी हैं। इन चौपाइयों में वर्णन किया गया है कि श्री राम जी के द्वारा शिव धनुष तोड़े जाने के कारण जब परशुराम जी क्रोधित हो जाते हैं तब उन के क्रोध को देखकर जब जनक के दरबार में सभी लोग भयभीत हो गए तो श्री राम ने आगे बढ़कर परशुराम जी से कहा कि भगवान शिव के धनुष को तोड़ने वाला उनका ही कोई एक दास होगा। श्री राम के वचन सुनकर क्रोधित परशुराम जी उनसे बोले कि सेवक वह कहलाता है , जो सेवा का कार्य करता है। शत्रुता का काम करके तो लड़ाई ही मोल ली जाती है। जिसने भगवान शिवजी के इस धनुष को तोड़ा है , वह सहस्रबाहु के समान उनका शत्रु है। फिर वे राजसभा की तरफ देखते हुए कहते हैं कि जिसने भी शिव धनुष तोड़ा है वह व्यक्ति खुद बखुद इस समाज से अलग हो जाए , नहीं तो सभा में उपस्थित सभी राजा मारे जाएँगे। परशुराम जी के इन क्रोधपूर्ण वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी मुस्कुराए और परशुराम जी का अपमान करते हुए बोले कि बचपन में उन्होंने ऐसे छोटे - छोटे बहुत से धनुष तोड़ डाले थे , किंतु ऐसा क्रोध तो कभी किसी ने नहीं किया। लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातें सुनकर परशुराम जी क्रोधित स्वर में बोले कि मृत्यु के वश में होने से तुझे यह भी होश नहीं कि तू क्या बोल रहा है ?समस्त विश्व में विख्यात भगवान शिव का यह धनुष क्या तुझे बचपन में तोड़े हुए धनुषों के समान ही दिखाई देता है ? लक्ष्मण श्रीराम की ओर देखकर बोले कि इस धनुष के टूटने से क्या लाभ है तथा क्या हानि , यह बात मेरी समझ में नहीं आ रही है। श्री राम जी ने तो इसे केवल छुआ था , लेकिन यह धनुष तो छूते ही टूट गया । फिर इसमें श्री राम जी का क्या दोष है ? लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम जी का क्रोध और बढ़ गया और वह अपने फरसे की ओर देखकर बोले कि क्या लक्ष्मण जी उनके स्वभाव के विषय में नहीं जानते ? मैं केवल बालक समझकर तुम्हारा वध नहीं कर रहा हूँ। वे पूरे विश्व में क्षत्रिय कुल के घोर शत्रु के रूप में प्रसिद्ध हैं। उनका फरसा बहुत भयंकर है। कहने का तात्पर्य यह है कि परशुराम जी लक्ष्मण जी को समझाने का प्रयास कर रहे हैं कि उन्हें जब क्रोध आता है तो वे किसी बालक को भी मारने से नहीं हिचकिचाते। परशुराम जी के क्रोध से भरे वचनों को सुनकर लक्ष्मण जी बहुत ही अधिक कोमल वाणी में हँसकर उनसे बोले कि आप तो अपने आप को बहुत बड़ा योद्धा समझते हैं और बार - बार मुझे अपना फरसा दिखाते हैं। जनेऊ से तो वे एक भृगुवंशी ब्राहमण जान पड़ते हैं और इन्हें देखकर ही , जो कुछ भी उन्होंने कहा उसे लक्ष्मण जी सहन कर अपने क्रोध को रोक रहे हैं। साथ ही लक्ष्मण जी परशुराम जी के एक - एक वचन को करोड़ों वज्रों के समान कठोर बताते है। और कहते हैं कि उन्होंने व्यर्थ में ही फरसा और धनुष - बाण धारण किया हुआ है। लक्ष्मण जी की व्यंग्य भरी बातों को सुनकर परशुराम जी को और क्रोध आ गया और वह विश्वामित्र से बोले कि हे विश्वामित्र ! यह बालक (लक्ष्मण) बहुत कुबुद्धि और कुटिल लगता है। और यह काल (मृत्यु) के वश में होकर अपने ही कुल का घातक बन रहा है। यह सूर्यवंशी बालक चंद्रमा पर लगे हुए कलंक के समान है। अभी यह क्षणभर में काल का ग्रास हो जाएगा अर्थात् मैं क्षणभर में इसे मार डालूँगा। मैं अभी से यह बात कह रहा हूँ , बाद में मुझे दोष मत दीजिएगा। यदि तुम इस बालक को बचाना चाहते हो तो , इसे मेरे प्रताप , बल और क्रोध के बारे में बता कर अधिक बोलने से मना कर दीजिए। लक्ष्मण इतने पर भी

नहीं माने और परशुराम को क्रोध दिलाते हुए बोले कि आपका सुयश आपके रहते हुए दूसरा कौन वर्णन कर सकता है ? आप तो अपने ही मुँह से अपनी करनी और अपने विषय में अनेक बार अनेक प्रकार से वर्णन कर चुके हैं। यदि इतना सब कुछ कहने के बाद भी आपको संतोष नहीं हुआ हो , तो कुछ और कह दीजिए।
जो शूरवीर होते हैं वे व्यर्थ में अपनी बड़ाई नहीं करते , बल्कि युद्ध भूमि में अपनी वीरता को सिद्ध करते हैं। शत्रु को युद्ध में उपस्थित पाकर भी अपने प्रताप की व्यर्थ बातें करने वाला कायर ही हो सकता है। लक्ष्मण जी परशुराम जी के वचनों को सुनकर उन से बोले कि ऐसा लग रहा है मानो आप तो काल (यमराज) को आवाज़ लगाकर बार-बार मेरे लिए बुला रहे हो। लक्ष्मण जी के ऐसे कठोर वचन सुनते ही परशुराम जी का क्रोध और बढ़ गया। उन्होंने अपने भयानक फरसे को घुमाकर अपने हाथ में ले लिया और बोले अब उनको कोई दोष नहीं देगा। इतने कड़वे वचन बोलने वाला यह बालक मारे जाने योग्य है। परशुराम जी को क्रोधित होते देखकर विश्वामित्र जी उन्हें शांत कराते हुए बोले कि आप इसके अपराध को क्षमा कर दीजिए क्योंकि साधु लोग तो बालकों के गुण और दोष की गिनती नहीं करते हैं। तब परशुराम जी ने क्रोधित होते हुए कहा कि वे स्वयं दयारहित और क्रोधी हैं। फिर भी वे इसे बिना मारे छोड़ रहे हैं सिर्फ विश्वामित्र के प्रेम के कारण। नहीं तो इसे इस कठोर फरसे से काटकर थोड़े ही परिश्रम से गुरु के ऋण से मुक्त हो जाते। परशुराम जी के वचन सुनकर विश्वामित्र जी ने मन ही मन में हँसकर सोचा कि मुनि परशुराम जी को हरा - ही - हरा सूझ रहा है अर्थात् चारों ओर विजयी होने के कारण ये राम और लक्ष्मण को साधारण क्षत्रिय ही समझ रहे हैं। परशुराम जी अभी भी इनकी साहस , वीरता व क्षमता से अनभिज्ञ हैं। परशुराम जी के क्रोध से पूर्ण वचनों को सुन कर लक्ष्मण जी ने परशुराम जी से कहा कि उनके पराक्रम को कौन नहीं जानता। वह सारे संसार में प्रसिद्ध है। लक्ष्मण जी के कड़वे वचन सुनकर परशुराम जी ने अपना फरसा उठाया और लक्ष्मण पर आघात करने को दौड़ पड़े। सारी सभा हाय - हाय पुकारने लगी। इस पर लक्ष्मण जी बोले कि वे बार बार उन्हें फरसा दिखा रहे हैं। लगता है उनको कभी युद्ध के मैदान में वीर योद्धा नहीं मिले हैं, इसलिए वे अत्यधिक खुश हो रहे हैं। लक्ष्मण जी के ऐसे वचन सुनकर सभा में उपस्थित सभी लोग यह अनुचित है , यह अनुचित है ‘ कहकर पुकारने लगे। यह देखकर श्री राम जी ने लक्ष्मण जी को आँखों के इशारे से रोक दिया। लक्ष्मण जी के उत्तर परशुराम जी की क्रोधाग्नि में आहुति के सदृश कार्य कर रहे थे । इस क्रोधाग्नि को बढ़ते देख रघुवंशी सूर्य राम ने, लक्ष्मण के वचनों के विपरीत , जल के समान शांत करने वाले वचनों का प्रयोग करते हुए परशुराम का क्रोध शांत करने का प्रयास किया।

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा॥
आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही॥
सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई॥
सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा॥
सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥
सुनि मुनिबचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने॥
बहु धनुही तोरी लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस किन्हि गोसाईं॥
येही धनु पर ममता केहि हेतू। सुनी रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥
रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार्।
धनुही सम त्रिपुरारिधनु बिदित सकल संसार॥

1) शिवजी का धनुष तोड़ने वाले को परशुराम अपना क्या समझते थे?
क. पड़ोसी ख. दास ग. शत्रु घ .माली

2) सेवा का काम करने वाला कौन होता है ?
क. सेवक ख . चौकीदार ग. नौकर घ .माली

3) परशुराम जी के अनुसार लक्ष्मण किसके वशीभूत होकर बिना विचारे बोल रहे थे ?

क. काल ख. प्रेम ग.लोभ घ. मोह

4) निम्नलिखित कथन A तथा कारण R को ध्यानपूर्वक पढ़िए है उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए ।

कथन (A) सीता स्वयंवर के समय श्री राम द्वारा शिव धनुष तोड़े जाने पर परशुराम कुपित हैं ।

कारण (R) वे कहते हैं कि जिसने भी यह धनुष तोड़ा है वह मेरा शत्रु है ।

क . कथन (A) गलत है किंतु कारण (R)सही है।

ख .कथन (A) और कारण(R)दोनों ही गलत हैं ।

ग. कथन(A) सही है और कारण(R) कथन (A)की सही व्याख्या है।

घ .कथन(A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A)की सही व्याख्या नहीं है ।

5) शिव धनुष तोड़ने वालों को परशुराम ने किसके समान अपना शत्रु बताया ?

क .सहस्रबाहु के समान ख.लक्ष्मण के समान ग. शिव के समान घ. विष्णु के समान

उत्तर1 -ग उत्तर– 2 क उत्तर 3 -क उत्तर 4 -घ उत्तर 5 -क

पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने के लिए कौन-कौन से तर्क दिए?

उत्तर-परशुराम के क्रोध करने पर लक्ष्मण ने धनुष के टूट जाने पर निम्नलिखित तर्क दिए -

i. हमें तो यह असाधारण शिव धुनष साधारण धनुष की भाँति लगा ।

ii. श्री राम को तो ये धनुष, नए धनुष के समान लगा।

iii. श्री राम ने इसे तोड़ा नहीं बस उनके छूते ही धनुष स्वतः टूट गया।

iv. इस धनुष को तोड़ते हुए उन्होंने किसी लाभ व हानि के विषय में नहीं सोचा था।

v. उन्होंने ऐसे अनेक धनुषों को बालपन में यूँ ही तोड़ दिया था। इसलिए यही सोचकर उनसे यह कार्य हो गया।

प्रश्न 2. परशुराम के क्रोध करने पर राम और लक्ष्मण की जो प्रतिक्रियाएँ हुई उनके आधार पर दोनों के स्वभाव की विशेषताएँ अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- परशुराम के क्रोध करने पर श्री राम ने धीरज से काम लिया। उन्होंने नम्रतापूर्ण वचनों का सहारा लेकर परशुराम के क्रोध को शांत करने का प्रयास किया। परशुराम जी क्रोधी स्वभाव के थे। श्री राम उनके क्रोध पर शीतल जल के समान शब्दों व आचरण का आश्रय ले रहे थे। यही कारण था कि उन्होंने स्वयं को उनका सेवक बताया व उनसे अपने लिए आज्ञा करने का निवेदन किया। उनकी भाषा अत्यंत कोमल व मीठी थी और परशुराम के क्रोधित होने पर भी वह अपनी कोमलता को नहीं छोड़ते थे। इसके विपरीत लक्ष्मण परशुराम की भाँति ही क्रोधी स्वभाव के हैं। निडरता तो जैसे उनके स्वभाव में कूट-कूट कर भरी थी। इसलिए परशुराम का फरसा व क्रोध उनमें भय उत्पन्न नहीं कर पाता। लक्ष्मण परशुराम जी के साथ व्यंग्यपूर्ण वचनों का सहारा लेकर अपनी बात को उनके समक्ष प्रस्तुत करते हैं। तनिक भी इस बात की परवाह किए बिना कि परशुराम कहीं और क्रोधित न हो जाएँ। वे परशुराम के क्रोध को न्यायपूर्ण नहीं मानते। इसलिए परशुराम के अन्याय के विरोध में खड़े हो जाते हैं। जहाँ राम विनम, धैर्यवान, मृदुभाषी व बुद्धिमान व्यक्ति हैं वहीं दूसरी ओर लक्ष्मण निडर, साहसी, क्रोधी तथा अन्याय विरोधी स्वभाव के हैं। ये दोनों गुण इन्हें अपने-अपने स्थान पर उच्च स्थान प्राप्त करवाते हैं।

प्रश्न 3. लक्ष्मण और परशुराम के संवाद का जो अंश आपको सबसे अच्छा लगा उसे अपने शब्दों में संवाद शैली में लिखिए।

उत्तर- लक्ष्मण - हे मुनिः बचपन में हमने खेल-खेल में ऐसे बहुत से धनुष तोड़े हैं तब तो आप कभी क्रोधित नहीं हुए थे। फिर इस धनुष के टूटने पर इतना क्रोध क्यों कर रहे हैं? परशुराम अरे, राजपुत्र! तू काल के वश में आकर ऐसा बोल रहा है। यह शिव जी का धनुष है।

प्रश्न 4. परशुराम ने अपने विषय में सभा में क्या-क्या कहा, निम्न पठ्यांश के आधार पर लिखिए -

बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्वबिदित क्षत्रियकुल द्रोही ||
भुजबल भूमि भूप बिनु कीन्ही। बिपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ।।
सहसबाहुभुज छेदनिहारा। परसु बिलोकु महीपकुमारा ||
मातु पितहि जनि सोचबस करसि महीसकिसोर।
गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ||

उत्तर- परशुराम ने अपने विषय में ये कहा कि वे बाल ब्रह्मचारी हैं और क्रोधी स्वभाव के हैं। समस्त विश्व में क्षत्रिय कुल के विद्रोही के रुप में विख्यात हैं। वे आगे, बड़े अभिमान से अपने विषय में बताते हुए कहते हैं कि उन्होंने अनेकों बार पृथ्वी को क्षत्रियों से विहीन कर इस पृथ्वी को ब्राहमणों को दान में दिया है और अपने हाथ में धारण इस फरसे से सहस्त्रबाहु के बाहों को काट डाला है। इसलिए हे नरेश पुत्र! मेरे इस फरसे को भली भाँति देख ले। राजकुमार। तू क्यों अपने माता-पिता को सोचने पर विवश कर रहा है। मेरे इस फरसे की भयानकता गर्भ में पल रहे शिशुओं को भी नष्ट कर देती है।

प्रश्न 5 लक्ष्मण ने वीर योद्धा की क्या-क्या विशेषताएँ बताई?

उत्तर- लक्ष्मण ने वीर योद्धा की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई है -

i. वीर पुरुष स्वयं अपनी वीरता का बखान नहीं करते अपितु वीरता पूर्ण कार्य स्वयं वीरों का बखान करते हैं।

ii. वीर पुरुष स्वयं पर कभी अभिमान नहीं करते। वीरता का व्रत धारण करने वाले वीर पुरुष धैर्यवान और क्षोभरहित होते हैं।

III. वीर पुरुष किसी के विरुद्ध गलत शब्दों का प्रयोग नहीं करते अर्थात् दूसरों को सदैव समान रुप से आदर व सम्मान देते हैं।

iv. वीर पुरुष देवता, ब्राहमण, ईश्वर भक्त व गाय पर अपनी वीरता का प्रदर्शन नहीं करते हैं। उनसे हारना व उनको मारना वीर पुरुषों के लिए वीरता का प्रदर्शन न होकर पाप का भागीदार होना है।

v. वीर पुरुषों को चाहिए कि अन्याय के विरुद्ध हमेशा निडर भाव से खड़े रहे।

vi. किसी के ललकारने पर वीर पुरुष कभी पीछे कदम नहीं रखते अर्थात् वह यह नहीं देखते कि उनके आगे कौन है वह निडरता पूर्वक उसका जवाब देते हैं।

आत्मकथ्य

पाठ सार

मुंशी प्रेमचंद के संपादन में निकलने वाली उस समय की ‘ हंस ‘ पत्रिका के आत्मकथा के भाग के लिए अत्यंत प्रसिद्ध या मशहूर छायावादी कवि जयशंकर प्रसाद से भी आत्मकथा लिखने के लिए कहा गया। कवि को जब अपनी आत्मकथा लिखने का प्रस्ताव मिला , तब अतीत में घटी हुई सभी धटनाएँ एक - एक करके उनकी आँखों के सामने आने लगती हैं। जिस कारण कवि अपनी आत्मकथा नहीं सुनाना चाहते और वे कई तरह के तर्क देते हैं जिससे उन्हें अपनी आत्मकथा न सुनानी पड़े। इन्हीं तर्कों को इस काव्य में दर्शाया गया है। कवि जयशंकर प्रसाद भौंरे के माध्यम से अपनी कथा का उल्लेख करते हुए कहते हैं कि जिस तरह से एक भौंरा फूलों के आसपास गुंजार करते हुए मंड़राता फिरता है, ठीक उसी प्रकार आज कवि का मन रूपी भँवरा भी अतीत की यादों के आसपास गुनगुना कर गुंजार करते हुए न जाने अपनी कौन सी कहानी कहना चाह रहा है। कवि का जीवन रूपी वृक्ष जो कभी सुख व आनंद रुपी पत्तियों

से हरा भरा था। अब वो सभी पत्तियों मुरझा कर एक - एक करके गिर रही हैं। क्योंकि आज कवि के जीवन की परिस्थितियां बदल चुकी है। उनके जीवन में सुख की जगह दु:ख और निराशा ने ले ली है। हिंदी साहित्य रूपी इस विशाल विस्तार वाले आकाश में न जाने कितने महान् पुरुषों अर्थात लेखकों के जीवन का इतिहास उनकी आत्मकथा के रूप में मौजूद हैं। लोग इन महान लेखकों की आत्मकथा को पढ़कर उनकी कमियों का मजाक बनाते हैं। इस कड़वे सत्य को जानते हुए भी कि प्रत्येक व्यक्ति एक दूसरे की दुर्बलताओं और कमजोरियों का मजाक बनाने में लगा है। कवि अपने दोस्तों से पूछते हैं कि क्या तुम मेरी कहानी को सुनकर सुख प्राप्त कर सकोगे ? मेरा जीवन रूपी घड़ा एकदम खाली है , जिसमें कोई भाव नहीं है। कवि यहाँ पर कहते हैं कि जिस व्यक्ति का स्वभाव जितना ज्यादा सरल होता है उसको लोग उतना ही ज्यादा धोखा देते हैं। कवि अपने उन प्रपंची मित्रों की असलियत दुनिया के सामने ला कर, उनको शर्मिंदा नहीं करना चाहते। साथ ही साथ वे अपने निजी पलों को भी दुनिया के सामने नहीं बताना चाहते। कवि अपनी पत्नी के साथ बिताये गये मधुर पलों का जिक्र करते हुए कहते हैं कि चांदनी रातों में उन्होंने अपनी प्रेयसी (पत्नी) के साथ एकांत में खिलखिला कर हँसते हुए , उससे प्यार भरी मीठी बातें करते हुए , जो समय बिताया था। वही मधुर स्मृतियाँ ही तो अब उनके जीवन जीने का एक मात्र सहारा है। उन निजी क्षणों का वर्णन वे कैसे कर सकते हैं ? उन आनंद भरे पलों की बातों को वे दूसरों के साथ बांटना नहीं चाहते। कवि कहते हैं कि उनको जीवन में वह सुख कहाँ मिला ,जिसका वे स्वप्न देखा करते थे। जिस सुख की उन्होंने कल्पना की थी। वह सुख उनकी बाहों में आते - आते , अचानक धोखा देकर भाग गया। अर्थात कवि ने अपनी पत्नी के साथ सुखपूर्वक जीवन जीने की जो कल्पना की थी , वह उनकी मृत्यु के साथ ही खत्म हो गयी। और उनका सारा जीवन दुखों से भर गया। अपनी पत्नी की सुंदरता की तुलना कवि ने उदित होती सुबह से की है। कवि यहाँ तर्क दे रहे हैं कि अभी उनकी आत्मकथा लिखने का सही समय नहीं आया है क्योंकि उन्होंने अभी तक कोई बड़ी उपलब्धि हासिल नहीं की है और न ही वे अभी अपने दुखों को कुरेदना चाहते हैं। आज वे अपनी पत्नी की ही यादों का सहारा लेकर अपने जीवन के रास्ते की थकान दूर करते हैं अर्थात् उसी की यादें उनके थके हुए जीवन का सहारा बनीं । जो कवि को आत्मकथा लिखने को कह रहे हैं कवि उन सब से पूछ रहे हैं कि उनके जीवन की कहानी जानकर वे सब क्या करेंगे क्योंकि इस छोटे से जीवन में कवि ने अभी तक सुनाने लायक कोई बड़ी उपलब्धि हासिल नहीं की हैं, जो वे उन सब को सुना सके। कवि आगे कहते हैं कि यह ज्यादा बढ़िया रहेगा कि वे चुप रहकर, बड़ी शान्ति के साथ, अन्य लोगों की कहानियों या आत्मकथाओं को सुनें। कवि के अनुसार उनकी आत्मकथा में ऐसा कुछ भी ख़ास नहीं है या उन्होंने अभी तक ऐसी कोई उपलब्धि हासिल भी नहीं की है जिसे पढ़कर किसी को खुशी मिलेगी या जिसे पढ़ने में किसी की कोई रूचि हो। कवि यहाँ पर एक तर्क देते हुए कहते हैं कि वैसे भी अभी सही समय नहीं है अपने दु:ख भरे क्षणों को याद करने का क्योंकि उनका दु:ख इस समय शांत है। वह अभी थककर सोया है। कवि अपने दुखद क्षणों को भूलना चाहते है और इस समय वो अपने दुखद अतीत को कुछ समय के लिए भूले हैं। इसीलिए वो वापस अपने दुखद अतीत को कुरेद कर फिर से दुखी नहीं होना चाहते हैं।

मधुप गुन-गुना कर कह जाता, कौन कहानी यह अपनी,
मुरझाकर गिर रहीं पत्तियाँ, देखो कितनी आज घनी ।
इस गंभीर अनंत-नीलिमा में असंख्य जीवन-इतिहास,
यह लो, करते ही रहते हैं, अपना व्यंग्य-मलिन उपहास ।
तब भी कहते हो - कह डालूँ, दुर्बलता अपनी बीती,
तुम सुनकर सुख पाओगे, देखोगे- यह गागर रीती ।

1)इस काव्यांश में कवि के जीवन के किस पक्ष का वर्णन किया गया है?

क. वृद्धावस्था का   ख. बाल्यावस्था का   ग. सुखद पक्ष का   घ. दुखद पक्ष का

2) मधुप को किसका प्रतीक बताया गया है ?

क. स्वप्न का   ख. प्रेम का   ग. मन का   घ. दुख का

3) 'पत्तियों का मुरझाकर गिर जाना' किस ओर संकेत कर रहा है?

क. सुखों की ओर   ख. दुखों की ओर   ग. मृत्यु की ओर   घ. जीवन के आनंद की समाप्ति की ओर

4) 'गागर रीती' का प्रतीकार्थ क्या हैं ?

क. खाली मटका   ख. अपनी अज्ञानता   ग. अपशकुन   घ. अपनी अभावपूर्ण जिंदगी

5 कवि ने असंख्य जीवन इतिहास किसे कहा है?

क. मन में उत्पन्न विचार को   ख. खुशियों को   ग. दुखों को   घ. इनमें से कोई नहीं

उत्तर 1 -घ   उत्तर 2 -ग   उत्तर – 3 घ   उत्तर 4 -घ   उत्तर 5 -क

<u>पाठ आधारित प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. कवि आत्मकथा लिखने से क्यों बचना चाहते हैं ?

उत्तर- कवि आत्मकथा लिखने से बचना चाहते हैं क्योंकि जीवन में बहुत सारी पीड़ादायक घटनाएँ हुई हैं। अपनी सरलता के कारण उसने कई बार धोखा भी खाया है। कवि के पास मात्र कुछ सुनहरे क्षणों की स्मृतियाँ ही शेष हैं जिसके सहारे वह अपनी जीवन - यात्रा पूरी कर रहा है। उन यादों को उसने अपने अंतरमन में सँजोकर रखा है और उन्हें वह प्रकट करना नहीं चाहता है। कवि को लगता है कि उनकी आत्मकथा में ऐसा कुछ भी नहीं हैं जिसे महान और सुखद मानकर लोग आनंदित होंगें। इन्हीं कारणों से कवि लिखने से बचना चाहते हैं।

प्रश्न 2. आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में 'अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है ?

उत्तर- कवि कहता है कि उसके लिए आत्मकथा सुनाने का यह उचित समय नहीं है। कवि द्वारा ऐसा कहने का कारण है यह है कि कवि को अभी सुखों के के सिवाय और कोई उपलब्धि नहीं मिल सकी है। कवि का जीवन दुःख और अभावों से भरा रहा हैं। कवि को अपने जीवन में जो बाहरी पीड़ा मिली है, उसे वह चुपचाप अकेले ही सहता रहा है। जीवन के इस पड़ाव पर उसके जीवन के सभी दुःख तथा व्यथाएँ थककर सोई हुई हैअर्थात बहुत मुश्किल से कवि को अपनी पुरानी वेदना से मुक्ति मिली है। आत्मकथा लिखने के लिए कवि को अपने जीवन की उन सभी व्यथाओं को जगाना होगा और कवि को ऐसा प्रतीत होता है कि अभी उसके जीवन में ऐसी कोई उपलब्धि नहीं मिली है जिसे वह लोगों के सामने प्रेरणास्वरूप रख सके। इन्हीं कारणों से कवि अपनी आत्मकथा अभी नहीं लिखना चाहता।

प्रश्न 3. स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का क्या आशय है?

उत्तर- स्मृति को 'पाथेय' बनाने से कवि का आशय जीवनमार्ग के प्रेरणा से है। कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ। इसलिए कवि स्वयं को जीवन यात्रा से थका हुआ मानता है। जिस प्रकार 'पाथेय' यात्रा में यात्री को सहारा देता है, आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है ठीक उसी प्रकार स्वप्न में देखे हुए किंचित सुख की स्मृति भी कवि को जीवन मार्ग में आगे बढ़ने का सहारा देता है।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) मिला कहाँ वह सुख जिसका मैं स्वप्न देखकर जाग गया। आलिंगन में आते-आते मुसक्या कर जो भाग गया।

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि जिस प्रेम के कवि सपने देख रहे थे वो उन्हें कभी प्राप्त नहीं हुआ। कवि ने जिस सुख की कल्पना की थी वह उसे कभी प्राप्त न हुआ और उसका जीवन हमेशा उस सुख से वंचित ही रहा। इस दुनिया में सुख छलावा मात्र है। हम जिसे सुख समझते हैं वह अधिक समय तक नहीं रहता है, स्वप्न की तरह जल्दी ही समाप्त हो जाता है।

(ख) जिसके अरुण कपोलों की मतवाली सुंदर छाया में। अनुरागिनी उषा लेती थी निज सुहाग मधुमाया में।

उत्तर- कवि अपनी प्रेयसी के सौंदर्य का वर्णन करते हुए कहता है कि प्रेममयी भोर वेला भी अपनी मधुर लालिमा उसके गालों से लिया करती थी। कवि की प्रेमिका का मुख सौंदर्य ऊषाकालीन लालिमा से भी बढ़कर था।

प्रश्न 5. 'उज्ज्वल गाथा कैसे गाऊँ, मधुर चाँदनी रातों की' कथन के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
उत्तर उपर्युक्त पंक्तियों से कवि का आशय निजी प्रेम का उन मधुर और सुख-भरे क्षणों से है, जो कवि ने अपनी प्रेमिका के साथ व्यतीत किये थे। चाँदनी रातों में बिताए गए वे सुखदायक क्षण किसी उज्ज्वल गाथा की तरह ही पवित्र है जो कवि के लिए अपने अन्धकारमय जीवन में आगे बढ़ने का एकमात्र सहारा बनकर रह गया। इसीलिए कवि अपने जीवन की उन मधुर स्मृतियों को किसी से बाँटना नहीं चाहता बल्कि अपने तक ही सीमित रखना चाहता है।
प्रश्न 6. कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे कविता में किस रूप में अभिव्यक्त किया है ?
उत्तर- कवि ने जो सुख का स्वप्न देखा था उसे वह अपने प्रेमिका के रूप में व्यक्त किया है। यह प्रेमिका स्वप्न में कवि के पास आते-आते मुस्कराकर दूर चली जाती है और कवि को सुख से वंचित ही रहना पड़ता है। कवि कहता है की अपने जीवन में वह जो सुख का सपना देखा था,, वह उसे कभी प्राप्त नहीं हुआ।

उत्साह

प्रस्तुत कविता एक आह्वान गीत है। इसमें कवि बादल से घनघोर गर्जन के साथ बरसने की अपील कर रहे हैं। बादल बच्चों के काले घुंघराले बालों जैसे हैं। कवि बादल से बरसकर सबकी प्यास बुझाने और गरज कर सुखी बनाने का आग्रह कर रहे हैं। कवि बादल में नवजीवन प्रदान करने वाला बारिश तथा सबकुछ तहस-नहस कर देने वाला वज्रपात दोनों देखते हैं इसलिए वे बादल से अनुरोध करते हैं कि वह अपने कठोर वज्रशक्ति को अपने भीतर छुपाकर सब में नई स्फूर्ति और नया जीवन डालने के लिए मूसलाधार बारिश करे। आकाश में उमड़ते-घुमड़ते बादल को देखकर कवि को लगता है कि वे बेचैन से हैं तभी उन्हें याद आता है कि समस्त धरती भीषण गर्मी से परेशान है इसलिए आकाश की अनजान दिशा से आकर काले काले बादल पूरी तपती हुई धरती को शीतलता प्रदान करने के लिए बेचैन हो रहे हैं। कवि आग्रह करते हैं कि बादल खूब गरजे और बरसे और सारे धरती को तृप्त करें।

अट नहीं रही

प्रस्तुत कविता में कवि ने फागुन का मानवीकरण चित्र प्रस्तुत किया है। फागुन यानी फ़रवरी-मार्च के महीने में वसंत ऋतु का आगमन होता है। इस ऋतु में पुराने पत्ते झड़ जाते हैं और नए पत्ते आते हैं। रंग-बिरंगे फूलों की बहार छा जाती है और उनकी सुगंध से सारा वातावरण महक उठता है। कवि को ऐसा प्रतीत होता है मानो फागुन के सांस लेने पर सब जगह सुगंध फैल गयी हो। वे चाहकर भी अपनी आँखें इस प्राकृतिक सुंदरता से हटा नहीं सकते।
इस मौसम में बाग-बगीचों, वन-उपवनों के सभी पेड़-पौधे नए-नए पत्तों से लद गए हैं, कहीं लाल रंग के हैं तो कहीं हरे और डालियाँ अनगिनत फूलों से लद गई हैं जिससे कवि को ऐसा लग रहा है जैसे फागुन ने अपने गले में रंग-बिरंगे और सुगन्धित फूलों की माला पहन रखी हो। इस सर्वव्यापी सुंदरता का कवि को कहीं ओर-छोर नज़र में नहीं आ रहा है इसलिए कवि कहते हैं कि फागुन की सुंदरता अट नहीं रही है।
प्रश्न 1. कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?
उत्तर- कवि ने बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के लिए नहीं बल्कि 'गरजने' के लिए कहा है, क्योंकि 'गरजना' विद्रोह का प्रतीक है। कवि ने बादल के गरजने के माध्यम से कविता में नूतन विद्रोह का आह्वान किया है।
प्रश्न 2. कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?
उत्तर- यह एक आह्वान गीत है। कवि क्रांति लाने के लिए लोगों को उत्साहित करना चाहते हैं। बादल का गरजना लोगों के मन में उत्साह भर देता है इसलिए कविता का शीर्षक उत्साह रखा गया है।
प्रश्न 3. कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है ?
उत्तर- कविता में बादल निम्नलिखित अर्थों की ओर संकेत करता है -
i. जल बरसाने वाली शक्ति है।

ii. बादल पीड़ित-प्यासे जन की आकाँक्षा को पूरा करने वाला है।
iii. बादल कवि में उत्साह और संघर्ष भर कविता में नया जीवन लाने में सक्रिय है।
प्रश्न 4. शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। उत्साह कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद है, छाँटकर लिखें।
उत्तर-कविता की इन पंक्तियों में नाद-सौंदर्य मौजूद है -
1. "घेर घेर घोर गगन, धाराधर ओ!
2. ललित ललित, काले घुँघराले, बाल कल्पना के-से पाले
3. "विद्युत-छवि उर में"

उत्साह पाठ पर आधारित कुछ बहुविकल्पात्मक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - कवि, बादल रूपी कवि को क्यों बुला रहे हैं?
(क) लोगों की प्यास बुझाने के लिए (ख) लोगों को गर्मी में राहत देने के लिए
(ग) लोगों को फिर से जागृत करने के लिए (घ) उपरोक्त सभी
प्रश्न 2 - उत्साह कविता में "धराधर", किसके लिए प्रयुक्त हुआ है?
(क) बादलों के लिए (ख) धरती के लिए (ग) पेड़ो के लिए (घ) मिट्टी के लिए
प्रश्न 3 - "घेर घेर" में कौन सा अलंकार है?
(क) अनुप्रास अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार
प्रश्न 4 - छोटे बच्चों की कल्पनाओं की तरह आकाश में हर पल अपना रूप या आकार कौन बदल रहा हैं?
(क) हवा (ख) बादल (ग) सूरज (घ) गर्मी
प्रश्न 5 - "वज्र-छिपा है", में "वज्र" का क्या अर्थ हैं?
(क) बादलों से बरसने वाले ओले (ख) बादलों के बीच कड़कने वाली बिजली
(ग) बादलों से बरसने वाला तेज़ पानी (घ) बादलों से आने वाली गर्जन की आवाज़
प्रश्न 6 - पूरे आकाश पर छाये हुए घने काले बादल किस दिशा से आते हैं?
(क) अज्ञात दिशा से (ख) पूर्व दिशा से (ग) निश्चित दिशा से (घ) दक्षिण दिशा से
प्रश्न 7 - संसार के सभी लोग क्यों व्याकुल एवं परेशान है?
(क) तर्ज़ वर्षा के कारण (ख) भयंकर गर्मी के कारण (ग) कवि की कविताओं के कारण (घ) बादलों के कारण
प्रश्न 8 - कवि ने बादलों को गरज कर बरसने के लिए क्यों कहा?
(क) ताकि समाज में सुख और शांति फैल सके (ख) ताकि समाज में गर्मी का प्रकोप शांत हो सके
(ग) ताकि समाज में जोश और क्रांति फैल सके (घ) ताकि समाज में लोग एक दूसरे को समझ सके
प्रश्न 9 - उत्साह कविता में, कवि ने बादलों को किसका प्रतीक बताया है?
(क) नवचेतना का (ख) क्रांति का (ग) जागृति का (घ) उपरोक्त सभी
प्रश्न 10 - कवि के अनुसार नूतन कविता कैसी होनी चाहिए?
(क) संसार के लोगों में जोश भर देने वाली (ख) संसार के लोगों को शांति देने वाली
(ग) संसार में सुख-शांति देने वाली (घ) संसार में नया प्राण भरने वाली
उत्तर -1 (ग) लोगों को फिर से जागृत करने के लिए
उत्तर - 2 (क) बादलों के लिए
उत्तर -3 (घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार
उत्तर -4 (ख) बादल
उत्तर - 5 (ख) बादलों के बीच कड़कने वाली बिजली

उत्तर -6 (क) अज्ञात दिशा से

उत्तर - 7 (ख) भयंकर गर्मी के कारण

उत्तर -8 (ग) ताकि समाज में जोश और क्रांति फैल सके

उत्तर - 9 (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर -10 (क) संसार के लोगों में जोश भर देने वाली

प्रश्न :- दिए गए काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनिए ।

बादल , गरजो !
घेर घेर घोर गगन , धाराधर ओ !
ललित ललित , काले घुंघराले ,
बाल कल्पना के - से पाले ,
विद्युत छबि उर में , कवि नवजीवन वाले !
वज्र छिपा , नूतन कविता
फिर भर दो -
बादल गरजो !
विकल विकल , उन्मन थे उन्मन
विश्व के निदाघ के सकल जन ,
आए अज्ञात दिशा से अनंत के घन !
तप्त धरा , जल से फिर
शीतल कर दो
बादल , गरजो !

प्रश्न 1 - "घेर घेर घोर गगन" में कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार (ख) उत्प्रेक्षा अलंकार (ग) रूपक अलंकार (घ) पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार

प्रश्न 2 - कवि ने बादलों की तुलना किससे की है?

(क) कल्पनाओं (ख) बच्चों (ग) कवि (घ) समय

प्रश्न 3 - किसके जरिए कवि निराश , हताश लोगों के मन में एक नई आशा का संचार करने को कहता है?

(क) कल्पना (ख) प्रोत्साहन (ग) लेखन (घ) कविता

प्रश्न 4 - संसार के सभी लोग किसके कारण बेहाल है?

(क) अत्यधिक सर्दी (ख) अत्यधिक गर्मी (ग) अत्यधिक वर्षा (घ) अत्यधिक ठण्ड

प्रश्न 5 - बादलों को अज्ञात दिशा से आए हुए क्यों कहा गया है?

(क) क्योंकि बादलों के आने की एक निश्चित दिशा होती है।

(ख) क्योंकि बादलों के आने का कोई समय नहीं होता है।

(ग) क्योंकि बादलों के आने की कोई निश्चित दिशा नहीं होती है।

(घ) क्योंकि बादल अपनी मर्ज़ी के मालिक होते है।

उत्तर - 1 .(क) अनुप्रास अलंकार, **उत्तर** - 2 (ग) कवि, **उत्तर** -3 (घ) कविता, **उत्तर** -4 (ख) अत्यधिक गर्मी

उत्तर - (ग) क्योंकि बादलों के आने की कोई निश्चित दिशा नहीं होती हैं

<u>अट नहीं रही है</u>

प्रश्न 1. छायावाद की एक खास विशेषता है अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए।

उत्तर- कविता के निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है कि प्रस्तुत कविता में अन्तर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाया गया है :
कहीं साँस लेते हो,
घर घर भर देते हो,
उड़ने को नभ में तुम,
पर पर कर देते हो।
प्रश्न 2. कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?
उत्तर- फागुन का मौसम तथा दृश्य अत्यंत मनमोहक होता है। चारों तरफ का दृश्य अत्यंत स्वच्छ तथा हरा-भरा दिखाई दे रहा है। पेड़ों पर कहीं हरी तो कही लाल पत्तियाँ हैं, फूलों की मंद-मंद खुश्बू हृदय को मुग्ध कर लेती है। इसीलिए कवि की आँख फागुन की सुंदरता से हट नहीं रही है।
प्रश्न 3. प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है ?
उत्तर- प्रस्तुत कविता 'अट नहीं रही है' में कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी ने फागुन के सर्वव्यापक सौन्दर्य और मादक रूप के प्रभाव को दर्शाया है। पेड़-पौधे नए-नए पत्तों, फल और फूलों से अटे पड़े हैं, हवा सुगन्धित हो उठी है, प्रकृति के कण-कण में सौन्दर्य भर गया है। खेत-खलिहानों, बाग-बगीचों, जीव-जन्तुओं, पशु-पक्षियों एवं चौक-चौबारों में फागुन का उल्लास सहज ही दिखता है।
प्रश्न 4. फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है ?
उत्तर- फागुन में सर्वत्र मादकता मादकता छाई रहती है। प्राकृतिक शोभा अपने पूर्ण यौवन पर होती है। पेड़-पौधे नए पत्तों, फल और फूलों से लद जाते हैं, हवा सुगन्धित हो उठती है। आकाश साफ-स्वच्छ होता है। पक्षियों के समूह आकाश में विहार करते दिखाई देते हैं। बाग-बगीचों और पक्षियों में उल्लास भर जाता हैं। इस तरह फागुन का सौंदर्य बाकी ऋतुओं से भिन्न है।
प्रश्न 5. इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ बताएँ।
उत्तर- महाकवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जी छायावाद के प्रमुख कवि माने जाते हैं। छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ हैं- प्रकृति चित्रण और प्राकृतिक उपादानों का मानवीकरण।' उत्साह' और 'अट नहीं रही है दोनों ही कविताओं में प्राकृतिक उपादानों का चित्रण और मानवीकरण हुआ है। काव्य के दो पक्ष हुआ करते हैं-अनुभूति पक्ष और अभिव्यक्ति पक्ष अर्थात् भाव पक्ष और शिल्प पक्ष । इस दृष्टि से दोनों कविताएँ सराहय हैं। छायावाद की अन्य विशेषताएँ जैसे गेयता, प्रवाहमयता, अलंकार योजना और संगीतात्मकता आदि भी विद्यमान है। 'निराला' जी की भाषा एक ओर जहाँ संस्कृतनिष्ठ, सामासिक और आलंकारिक है तो वहीं दूसरी ओर ठेठ ग्रामीण शब्द का प्रयोग भी पठनीय है। अतुकांत शैली में रचित कविताओं में क्राँति का स्वर, मादकता एवम् मोहकता भरी है। भाषा सरल, सहज, सुबोध और प्रवाहमयी है।
प्रश्न :- दिए गए काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनिए ।
अट नहीं रही है
आभा फागुन की तन
सट नहीं रही है।
कहीं साँस लेते हो ,
घर - घर भर देते हो ,
उड़ने को नभ में तुम
पर - पर कर देते हो ,
आँख हटाता हूँ तो

हट नहीं रही है।
पत्तों से लदी डाल
कहीं हरी , कहीं लाल ,
कहीं पड़ी है उर में
मंद गंध पुष्प माल ,
पाट - पाट शोभा श्री
पट नहीं रही है।

प्रश्न 1 - अट नहीं रही है, कविता में किसका वर्णन किया गया है?

(क) चैत्र माह में आने वाली वसंत ऋतु का वर्णन
(ख) फागुन माह में आने वाली वसंत ऋतु का वर्णन
(ग) फागुन माह में आने वाली सावन ऋतु का वर्णन
(घ) चैत्र माह में आने वाली सावन ऋतु का वर्णन

प्रश्न 2 - कवि का मन किससे नज़र हटाने को नहीं करता?

(क) फागुन में होने वाली बादलों की गर्जना से
(ख) सावन की आभा अर्थात सुंदरता से
(ग) फागुन की आभा अर्थात सुंदरता से
(घ) प्रकृति की सुंदरता से

प्रश्न 3 - कवि ने वसंत ऋतु का वर्णन किस प्रकार किया है?

(क) वसंत ऋतु में हर ओर हरियाली और फूलों की खुशबू फैल जाती है
(ख) वसंत ऋतु में ऐसा लगता हैं मानो जैसे फागुन ख़ुद सांस ले रहा हो और सुगन्धित वातावरण से हर घर को महका रहा हो
(ग) वसंत ऋतु में ऐसा एहसास होता है जैसे फागुन माह आसमान में उड़ने के लिए अपने पंख फड़फड़ा रहे हो
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 - फागुन माह में प्रकृति में क्या परिवर्तन होता है?

(क) पेड़ों पर नए पत्ते निकल आते हैं , जो कई रंगों के होते हैं
(ख) कहीं - कहीं पर कुछ पेड़ों में लगता है कि भीनी-भीनी खुशबू देने वाले फूलों की माला लटकी हुई है
(ग) हर तरफ सुंदरता बिखरी पड़ी है और वह इतनी अधिक है कि धरा पर समा नहीं रही है
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - 'अट नहीं रही है', कविता की क्या विशेषता है?

(क) यह प्रकृति की सुंदरता को दिखती है।
(ख) इसमें फागुन माह का मानवीकरण किया गया है।
(ग) यह एक श्रृंगार रस प्रधान कविता है।
(घ) कवि ने अपनी कल्पनाओं को रचा है।

उत्तर - 1 .(ख) फागुन माह में आने वाली वसंत ऋतु का वर्णन
उत्तर -2. (ग) फागुन की आभा अर्थात सुंदरता से
उत्तर -3 (घ) उपरोक्त सभी
उत्तर - 4 (घ) उपरोक्त सभी
उत्तर -5 (ख) इसमें फागुन माह का मानवीकरण किया गया है

यह दंतुरित मुसकान

इस कविता में कवि ने नवजात शिशु कीमुसकान के सौंदर्य के बारे में बताया है। कवि कहते हैं कि शिशु की मुसकान इतनी मनमोहक और आकर्षक होती है कि किसी मृतक में भी जान डाल दे। खेलने के बाद धूल से भरा तुम्हारा शरीर देखकर ऐसा लगता है मानो कमल का फूल तालाब छोड़कर मेरी झोपड़ी में आकर खिल गया हों। तुम्हारे स्पर्श को पाकर पत्थर भी मानो पिघलकर जल हो गया हो यानी तुम्हारे जैसे शिशु का कोमल स्पर्श पाकर किसी भी पत्थर-हृदय व्यक्ति का दिल पिघल जाएगा। कवि कहते हैं कि उनका मन बांस और बबूल की भांति नीरस और ठूँठ हो गया था परन्तु तुम्हारे कोमलता का स्पर्श मात्र पड़ते ही हृदय भी शेफालिका के फूलों की भांति झड़ने लगा। कवि के हृदय में वात्सल्य की धारा बह निकली और वे अपने शिशु से कहते हैं कि तुमने मुझे आज से पूर्व नहीं देखा है इसलिए मुझे पहचान नहीं रहे। वे कहते हैं कि तुम्हे थकान से उबारने के लिए मैं अपनी आँखे फेर लेता हूँ ताकि तुम भी मुझे एकटक देखने के श्रम से बच सको। कवि कहते हैं कि क्या हुआ यदि तुम मुझे पहचान नहीं पाए। यदि आज तुम्हारी माँ न होती तो आज मैं तुम्हारी यह मुसकान भी ना देख पाता। वे अपनी पत्नी का आभार जताते हुए कहते है कि तुम्हारा मेरा क्या सम्बन्ध यह तुम इसलिए नहीं जानते क्योंकि मैं इधर उधर भटकता रहा, तुम्हारी ओर ध्यान ना दिया। तुम्हारी माँ ने ही सदा तुम्हें स्नेह-प्रेम दिया और देखभाल की। पर जब भी हम दोनों की निगाहें मिलती हैं तब तुम्हारी यह मुसकान मुझे आकर्षित कर लेती है।

प्रश्न 1. बच्चे की दंतुरित मुसकान का कवि के मन पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तरबच्चे की दंतुरित मुसकान को देखकर कवि का मन अत्यंत प्रसन्न हो उठा। प्रवास पर रहने के कारण वह शिशु -को पहली बार देखता है तो उसकी दंतुरित मुसकान पर मुग्ध हो जाता है। इससे कवि के मन की सारी निराशा और उदासी दूर हो जाती है।

प्रश्न 2. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

उत्तर- बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में बहुत अंतर होता है। बच्चे की मुसकान अत्यंत सरल, निश्छल, भोली और स्वार्थरहित होती है। इस मुसकान में स्वाभाविकता होती है। इसके विपरीत एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में स्वार्थपरता तथा बनावटीपन होता है। वह तभी मुसकराता है जब उसका स्वार्थ होता है। इसमें कुटिलता देखी जा सकती है जबकि बच्चे की मुसकान में सरलता दिखाई देती है।

प्रश्न 3. कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को किन-किन बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है?

उत्तर- कवि ने बच्चे की मुसकान के सौंदर्य को निम्नलिखित बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया है

कवि को लगता है कि कमल तालाब छोड़कर इसकी झोपड़ी में खिल गये हैं।

ऐसा लगता है जैसे पत्थर पिघलकर जलधारा के रूप में बह रहे हों।

बाँस या बबूल से शेफालिका के फूल झरने लगे हों।

प्रश्न 4. भाव स्पष्ट कीजिए

(क) छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात।

(ख) छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल बाँस था कि बबूल?

उत्तर- (क) 'छोड़कर तालाब मेरी झोंपड़ी में खिल रहे जलजात' का आशय यह है कि कवि को बच्चे का धूल धूसरित शरीर देखकर ऐसा लगता है जैसे कमल तालाब छोड़कर उसकी झोपड़ी में खिल गए हों अर्थात् बच्चे का रूप सौंदर्य कमल पुष्प के समान सुंदर है।

(ख) कम उम्र वाले शिशु जिनके दाँत निकल रहे होते हैं, उनकी मुसकान मनोहारी होती है। ऐसे बच्चों की निश्छल मुसकान देखकर उसका स्पर्श पाकर बाँस या बबूल से भी शेफालिका के फूल झड़ने लगते हैं अर्थात् कठोर हृदय वाला व्यक्ति भी सरस हो जाता है और मुसकराने लगता है।

यह दंतुरित मुसकान पाठ पर आधारित कुछ बहुविकल्पात्मक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - कवि किसकी मुसकान को "दंतुरित मुसकान" कहते हैं?

(क) 2 - 3 साल के बच्चे की

(ख) नन्हे बच्चे की

(ग) अपनी पत्नी की

(घ) बच्चे की माँ की

उत्तर - (ख) नन्हे बच्चे की

प्रश्न 2 - दंतुरित मुसकान वाला बच्चा लगभग कितनी उम्र तक का हो सकता हैं?

(क) 2 से 3 महीने तक का

(ख) 4 से 6 महीने तक का

(ग) 6 से 9 महीने तक का

(घ) 5 से 6 महीने तक का

उत्तर - (ग) 6 से 9 महीने तक का

प्रश्न 3 - कवि के अनुसार छोटे बच्चे की मनमोहक मुसकान किसमें जान डाल सकती हैं?

(क) मुर्दे में

(ख) कवि में

(ग) किसी कविता में

(घ) कठोर हृदय में

उत्तर - (क) मुर्दे में

प्रश्न 4 - छोटे से बच्चे की मुस्कराहट देखकर कवि का मन किस तरह खिल उठता हैं?

(क) गुलाब की तरह

(ख) फूलों की तरह

(ग) कमल की तरह

(घ) पंखुडियो की तरह

उत्तर - (ग) कमल की तरह

प्रश्न 5 - "पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण" , से कवि का क्या आशय हैं?

(क) उस छोटे से बच्चे के स्पर्श मात्र भर से ही कठोर से कठोर हृदय वाले व्यक्ति के दिल में भी कोमल भावनाएँ जन्म लेने लगेंगी

(ख) उस छोटे से बच्चे के स्पर्श मात्र भर से ही कठोर से कठोर पत्थर से भी जल निकलने लगेगा

(ग) उस छोटे से बच्चे के स्पर्श मात्र से कठोर से कठोर हृदय वाले व्यक्ति के दिल में कभी कोमल भावनाएँ जन्म नहीं लेगी

(घ) इनमें से कोई नहीं

उत्तर - (क) उस छोटे से बच्चे के स्पर्श मात्र भर से ही कठोर से कठोर हृदय वाले व्यक्ति के दिल में भी कोमल भावनाएँ जन्म लेने लगेंगी

प्रश्न 6 - किसके छू लेने भर से ही बांस या बबूल के पेड़ों से शेफालिका के फूल झड़ने लगेंगे?

(क) कवि की पत्नी के

(ख) कवि के

(ग) छोटे बच्चे के

(घ) कमल के फूल के

उत्तर - (ग) छोटे बच्चे के

प्रश्न 7 - बच्चा कवि को बिना पलकें झपकाए लगातार क्यों देखते जा रहा हैं?

(क) कवि को पहचान जाने के कारण

(ख) कवि को पहचान न पाने के कारण

(ग) कवि के अलग कपड़े पहनने के कारण

(घ) कवि को उसकी माँ से बात करने के कारण

उत्तर - (ख) कवि को पहचान न पाने के कारण

प्रश्न 8 - कवि किसको धन्यवाद देते हैं?

(क) बच्चे को

(ख) बच्चे की माँ को

(ग) बच्चे और उसकी माँ को

(घ) समाज को

उत्तर - (ग) बच्चे और उसकी माँ को

प्रश्न 9 - कवि ने "चिर प्रवासी या अतिथि " किसे कहा हैं?

(क) छोटे बच्चे को

(ख) अपनी पत्नी को

(ग) अपने मेहमानों को

(घ) अपने आप को

उत्तर - (घ) अपने आप को

प्रश्न 10 - नन्हा शिशु कवि को तिरछी नजरों से क्यों देख रहा है?

(क) अपरचित होने के कारण

(ख) गुस्सा होने के कारण

(ग) परचित होने के कारण

(घ) हमेशा मिलने के कारण

उत्तर - (क) अपरचित होने के कारण

प्रशन :- यह दंतुरित मुसकान पाठ पर आधारित काव्यांश -

1.तुम्हारी यह दंतुरित मुसकान
मृतक में भी डाल देगी जान
धूलि-धूसर तुम्हारे ये गात ....
छोड़कर तालाब मेरी झोपड़ी में खिल रहे , जलजात
परस पाकर तुम्हारा ही प्राण ,
पिघलकर जल बन गया होगा कठिन पाषाण
छू गया तुमसे कि झरने लग पड़े शेफालिका के फूल
बाँस था कि बबूल ?
तुम मुझे पाए नहीं पहचान?
देखते ही रहोगे अनिमेष !

थक गए हो ?
आँख लूँ मैं फेर?

प्रश्न 1 - कवि के अनुसार छोटे से बच्चे की मन को हरने वाली मुसकान क्या-क्या कर सकती है?

(क) जीवन की कठिन परिस्थितियों से निराश - हताश हो चुके व्यक्तियों और यहाँ तक कि बेजान व्यक्ति को भी जीवन जीने की प्रेरणा देती हैं

(ख) छोटे -छोटे दाँतों वाली मुसकान को कोई देख ले तो वह एक बार प्रसन्नता से खिल उठे। उसके भी मन में इस दुनिया की ओर आकर्षण जाग उठे

(ग) बच्चे की मधुर मुसकान देख कर पत्थर जैसे कठोर हृदय वाले मनुष्य का मन भी पिघलाकर अति कोमल हो जाता है

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 2 -किसको देखकर कवि का मन अथवा स्वभाव भी पिघल कर शेफालिका के फूलों की भाँति सरस और सुंदर हो गया है?

(क) बच्चे के सुन्दर मुख को देख कर
(ख) बच्चे की मधुर मुस्कराहट को देखकर
(ग) बच्चे और उसकी माँ को देखकर
(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (ख) बच्चे की मधुर मुस्कराहट को देखकर

प्रश्न 3 - बच्चा कवि को अपलक अर्थात बिना पलक झपकाए क्यों देख रहा है?

(क) क्योंकि बच्चा कवि को पहचान गया था।
(ख) क्योंकि कवि और बच्चे में अटूट सम्बन्ध था।
(ग) क्योंकि बच्चा पहली बार कवि को देख रहा था।
(घ) क्योंकि कवि बहुत बार बच्चे से मिल गया था।

उत्तर - (ग) क्योंकि बच्चा पहली बार कवि को देख रहा था।

प्रश्न 4 - 'धूलि-धूसर' में कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार
(ख) रूपक अलंकार
(ग) पुनःरुक्ति प्रकाश अलंकार
(घ) उपमा अलंकार

उत्तर - (क) अनुप्रास अलंकार

प्रश्न 5 - 'अनिमेष' का क्या अर्थ है?

(क) देख कर आना (ख) लगातार देखना (ग) अग्नि की तरह दिखना (घ) तिरछा देखना

उत्तर - (ख) लगातार देखना

<u>फसल</u>

कविता का सार

इस कविता में कवि ने फसल क्या है? साथ ही इसे पैदा करने में किनका योगदान रहता है? उसे स्पष्ट किया है। वे कहते हैं कि इसे पैदा करने में एक नदी या दो नदी का पानी नहीं होता बल्कि ढेर सारी नदियों के पानी का योगदान

होता है अर्थात जब सारी नदियों का पानी भाप बनकर उड़ जाता है तब सब बादल बनकर बरसते हैं जो कि फसल उपजाने में सहायक होता है। वे किसानों का महत्त्व स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि फसल तैयार करने में असंख्य लोगों के हाथों की मेहनत होती है। कवि बताते हैं कि हर मिटटी की अलग अलग विशेषता होती है, उनके रूप, गुण, रंग एक सामान नहीं होते। सबका योगदान फसल को तैयार करने में है। कवि ने बताया है कि फसल बहुत चीज़ों का सम्मिलित रूप है जैसे नदियों का पानी, हाथों की मेहनत, भिन्न मिट्टियों का गुण तथा सूर्य की किरणों का प्रभाव तथा मंद हवाओं का स्पर्श। इन सब के मिलने से ही हमारी फसल तैयार होती है।

<u>पाठ पर आधारित पद्यांश</u>

एक के नहीं ,
दो के नहीं ,
ढ़ेर सारी नदियों के पानी का जादू ;
एक के नहीं ,
दो के नहीं ,
लाख - लाख कोटि - कोटि हाथों के स्पर्श की गरिमा ;
एक की नहीं ,
दो की नहीं ,
हजार - हजार खेतों की मिट्टी का गुण धर्म ;
फसल क्या है ?
और तो कुछ नहीं है वह
नदियों के पानी का जादू है वह
हाथों के स्पर्श की महिमा है
भूरी - काली - संदली मिट्टी का गुण धर्म है
रूपांतर है सूरज की किरणों का
सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का !

<u>पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न -1' फसल 'कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

उत्तर- फसल कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहता है कि मानव और प्रकृति के सहयोग से ही सृजन संभव है। फसल का नाम सुनते ही लहलहाती फसल और श्रमिक का श्रम आंखों के समक्ष घूमने लगता है।

प्रश्न 2 भाव स्पष्ट कीजिए-

रूपांतरण है सूरज की किरणों का सिमटा हुआ संकोच है हवा की थिरकन का।

उत्तर- कवि कहना चाहता है कि यह फसल और कुछ नहीं सूरज की किरणों का बदला हुआ रूप है। फसलों की हरियाली सूरज की करने के प्रभाव के कारण ही आती है। फसलों को बढ़ाने में हवा की थिरकन का भी भरपूर योगदान है।

प्रश्न 3 कवि के अनुसार फसल क्या है?

उत्तर- कवि के अनुसार फसल पानी, मिट्टी,धूप, हवा और पानी का जादू समाया हुआ है। सूरज और हवा का प्रभाव है। इन सब के साथ किसानों और मजदूरों का श्रम सम्मिलित है।

कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - अच्छी फसल कैसे तैयार होती है?

उत्तर - एक या दो नहीं बल्कि अनेक नदियों का पानी अपना जादुई असर दिखाता है, तब जाकर फसल पैदा होती हैं।

एक नहीं दो नहीं बल्कि लाखों-करोड़ों हाथों के अथक परिश्रम का परिणाम से एक अच्छी फसल तैयार होती है। अर्थात हजारों खेतों पर दुनिया भर के लाखों-करोड़ों किसान दिन रात मेहनत करते हैं। अपनी फसल की देखभाल करते हैं। उसको समय-समय पर खाद, पानी और जरूरी पोषक तत्व देते हैं। तब जाकर कहीं फसल खेतों पर लहलहा उठती है। अच्छी फसल उगाने के लिए खेतों की मिट्टी अच्छी होनी चाहिए। इसीलिए एक या दो नहीं बल्कि हजारों खेतों की उपजाऊ मिट्टी के पोषक तत्व भी इन फसलों के अंदर छुपे हुए हैं क्योंकि मिट्टी की विशेषताएं भी फसलों की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।

प्रश्न 2 - फसल को तैयार होने में किन-किन चीज़ों की आवश्यकता होती है?

उत्तर - फसलों को अच्छी तरह से फलने फूलने के लिए किसान की मेहनत के साथ-साथ पानी भी आवश्यक है। साथ में मिट्टी की गुणवत्ता भी जरूरी है। क्योंकि मिट्टी की विशेषताओं के अनुसार ही फसल पैदा होती है। अलग-अलग तरह की मिट्टी में अलग-अलग तरह के पोषक तत्व व गुण पाए जाते हैं जिससे अनुसार अलग-अलग तरह की फसलों को पैदा किया जा सकता है। पौधों को बढ़ने के लिए सूरज की किरणें व कार्बन डाइऑक्साइड गैस भी आवश्यक है क्योंकि सूरज की रोशनी में ही ये पौधे मिट्टी से जरूरी पोषक तत्व , पानी व हवा से कार्बन डाइऑक्साइड गैस लेकर अपना भोजन बनाते हैं। जिसे प्रकाश संश्लेषण (Photosynthesis) कहा जाता हैं।

प्रश्न 3 - फसल क्या हैं ?

उत्तर - नदियों के पानी का जादू फसल के रूप दिखाई देता हैं क्योंकि बिना पानी के फसल का उगना नामुमकिन हैं। करोड़ों किसानों की दिन-रात की मेहनत का नतीजा फसल के रूप में मिलता हैं। भूरी, काली व खुशबूदार हल्की पीली मिट्टी यानि अलग-अलग प्रकार की मिट्टी के पोषक तत्व और सूरज की किरणें भी अपना रूप बदल कर इन फसलों के अंदर समाहित रहती हैं क्योंकि सूरज की रोशनी और हवा में उपस्थित कार्बन डाइऑक्साइड गैस को अवशोषित कर ही पौधे अपनी पत्तियों के दवारा भोजन बनाते हैं।

बहुविकल्पात्मक प्रश्नोत्तर -

प्रश्न 1 - "फसल" कविता हमें किसका महत्व समझती हैं?

(क) किसानों की मेहनत का

(ख) पानी के जादू का

(ग) कृषि (फसल) व प्रकृति का

(घ) मिट्टी की गुणवत्ता का

उत्तर - (ग) कृषि (फसल) व प्रकृति का

प्रश्न 2 - कवि के अनुसार फसल क्या है?

(क) करोड़ों किसानों की मेहनत का नतीजा

(ख) नदियों के पानी का जादू का नतीजा

(ग) मिट्टी, सूर्य की किरणें व हवा के मिलन का नतीजा

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 - कवि के अनुसार, फसल उगाने में कितनी नदियों का पानी अपना जादुई असर दिखाता है?

(क) लगभग दो नदियों का पानी

(ख) लगभग पाँच नदियों का पानी

(ग) अनेक नदियों का पानी

(घ) केवल एक नदी का पानी

उत्तर - (ग) अनेक नदियों का पानी

प्रश्न 4 - फसलें, किसके अमृत भरे पानी से सींचकर पुष्ट हुई हैं?
(क) नदियों के
(ख) नहरों के
(ग) कुएँ के
(घ) तालाबों के
उत्तर - (क) नदियों के
प्रश्न 5 - अच्छी फसल उगाने के लिए खेतों की मिट्टी कैसी होनी चाहिए?
(क) केवल अच्छी
(ख) अच्छी व गुणवत्तायुक्त
(ग) सिंचाई युक्त
(घ) लाल रंग की
उत्तर - (ख) अच्छी व गुणवत्तायुक्त
प्रश्न 6 - "संदली" शब्द का क्या अर्थ हैं?
(क) काली मिट्टी
(ख) उपजाऊ मिट्टी
(ग) साफ मिट्टी
(घ) खुशबूदार मिट्टी
उत्तर - (घ) खुशबूदार मिट्टी
प्रश्न 7 - कविता के अनुसार, फसल को थिरकना कौन सिखाता है?
(क) सूरज
(ख) हवा
(ग) मिट्टी
(घ) पानी
उत्तर - (ख) हवा
प्रश्न 8 - फसल उगाने के लिए क्या जरूरी हैं?
(क) खाद , पानी
(ख) अच्छी मिट्टी
(ग) सूर्य की रोशनी
(घ) उपरोक्त सभी
उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

संगतकार

पाठ का सार

इस कविता में कवि ने गायन में मुख्य गायक का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के महत्त्व का प्रतिपादन किया है। यह कविता मुख्य संगीतकार का साथ देने वाले संगतकार की भूमिका के ईद - गिर्द घूमती है। जब मुख्य गायक किसी संगीत सभा में अपना कोई गीत प्रस्तुत कर रहा होता है तो उसकी भारी व गंभीर आवाज़ के साथ ही हमें संगतकार (मुख्य गायक का साथ देने वाला सह गायक) की आवाज़ सुनाई देती है। वह आवाज़ हल्की - हल्की मगर सुंदर और मधुर सुनाई देती है। कवि उस संगतकार की आवाज़ सुन कर अंदाजा लगा रहे हैं कि यह संगतकार मुख्य

गायक का छोटा भाई भी हो सकता है या मुख्य गायक का कोई शिष्य भी हो सकता है या फिर संगीत सीखने के लिए पैदल चलकर मुख्य गायक के पास आने वाला कोई उनका दूर का रिश्तेदार भी हो सकता है। और सबसे खास बात यह हैं कि यह संगतकार जब से गायक ने गाना शुरू किया है तब से उसका साथ देना आया है। यानी शुरू से ही वह संगतकार मुख्य गायक की आवाज़ में अपनी आवाज़ मिलाकर उसके संगीत को और प्रभावशाली बनाता आया है। कवि संगतकार के उस हुनर के बारे में वर्णन करते है , जब मुख्य संगीतकार अपनी ही धुन में खो जाता है और अपने सुरों से भटकने लग जाता है , तब संगतकार ही अपनी खूबियों का प्रदर्शन करते हुए सब कुछ संभाल लेता है। कभी - कभी मुख्य गायक किसी गाने का अंतरा गाने में इतना मगन (तल्लीन) हो जाता हैं कि वह अपने सुरों से ही भटक जाता हैं। यानि असली सुरों को ही भूल जाता हैं। और अपने ही गीत या ताल में लगने वाले स्वरों के उच्चारण को भूल जाता है। वह संगीत के उस मोड़ पर आ जाता है जहाँ अंत निकट हो। ऐसी स्थिति में संगतकार , जो हमेशा मुख्य सुरों को पकड़े रहता है। वही उस समय सही सरगम को दुबारा पकड़ने में मुख्य गायक की मदद कर उसे उस विकट स्थिति से बाहर लाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि संगतकार हमेशा मूल स्वरों को ही दोहराता रहता हैं। जब मुख्य गायक गीत गाते हुए सुरों की दुनिया में खो जाता हैं और अंतरे के सुर - तान की बारीकियों में उलझकर बिखरने लगता हैं व मुख्य सुरों को भूल जाता हैं । तब वह संगतकार के गाने को सुनकर वापस मुख्य सुर से जुड़ जाता हैं। अर्थात संगतकार , सुर से भटके हुए मुख्य गायक को वापस सुर पकड़ने में मदद करता हैं। कवि आगे कहते हैं कि उस समय ऐसा लगता है मानो वह संगतकार मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान संमेटते हुए उसके साथ आगे बढ़ रहा है। उस समय उस मुख्य गायक को अपना बचपन याद आ जाता है जब वह नया - नया गाना सीखता था या नौसिखिया था। और उसका गुरु उसको सुरों से भटकने न दे कर सही सुरों पर बने रहने में उसकी मदद करता था। कवि संगतकार की उन और अधिक बातों की ओर हमारा ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं जिनके बारे में हम अनजान हैं। कवि बताना चाहते हैं कि संगतकार हर मुश्किल घडी में मुख्य गायक का साथ देता है और उसे हर मुसीबत से बाहर निकालता है। जब कभी मुख्य गायक संगीत शास्त्र से संबंधित विधा का प्रयोग करके ऊंचे स्वर में गाता है तो उसका गला बैठने लगता है। उससे सुर सँभलते नहीं हैं। तब गायक को ऐसा लगने लगता है जैसे कि अब उससे आगे गाया नहीं जाएगा। उसके भीतर निराशा छाने लगती है। उसका मनोबल खत्म होने लगता है। उसकी आवाज़ कांपने लगती हैं जिससे उसके मन की निराशा व हताशा प्रकट होने लगती है। उस समय मुख्य गायक का हौसला बढ़ाने वाला व उसके अंदर उत्साह जगाने वाला संगतकार का मधुर स्वर सुनाई देता हैं। जब भी संगतकार मुख्य गायक के स्वर में अपना स्वर मिलाता है यानी उसके साथ गाना गाता है तो उसकी आवाज़ में एक संकोच साफ सुनाई देता है। और उसकी हमेशा यही कोशिश रहती है कि उसकी आवाज़ मुख्य गायक की आवाज़ से धीमी रहे। अर्थात उसका स्वर भूल कर भी मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा न हो जाए इसका ध्यान वह बहुत अच्छे से रखता है। लेकिन हमें इसे संगतकार की कमजोरी या असफलता नहीं माननी चाहिए क्योंकि वह मुख्य गायक के प्रति अपना सम्मान प्रकट करने के लिए ऐसा करता है। कहने का तात्पर्य यह है कि अपना स्वर ऊँचा कर वह मुख्य गायक के सम्मान को ठेस नहीं पहुँचाना चाहता है। संगतकार जान - बूझकर अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा नहीं होने देते हैं। यह संगतकार द्वारा अपनी प्रतिभा का त्याग है जो योग्यता और सामर्थ्य होने पर भी मुख्य गायक की सफलता में बाधक नहीं बनता है और मानवता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

1. गायक जब अंतरे की जटिल तानों के जंगल में
खो चुका होता है
या अपने ही सरगम को लाँघकर
चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में
तब संगतकार ही स्थायी को संभाले रहता है
जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान

जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन

जब वह नौसिखिया था

प्रश्न 1 - 'जटिल तानों के जंगल में' पंक्ति में कौन सा अलंकार है?

(क) अनुप्रास अलंकार

(ख) रूपक अलंकार

(ग) उत्प्रेक्षा अलंकार

(घ) पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार

प्रश्न 2 - जब मुख्य गायक अपने सुरों से भटक जाता है तो सुर पकड़ने में उसकी सहायता कौन करता है?

(क) संगतकार

(ख) तबलावादक

(ग) संगीतकार

(घ) लेखक

प्रश्न 3 - संगतकार हमेशा किन स्वरों को ही दोहराता रहता हैं?

(क) सरल

(ख) निम्न

(ग) उच्च

(घ) मूल

प्रश्न 4 - संगतकार हमेशा मुख्य गायक के लिए किसकी तरह कार्य करता है?

(क) एक शिष्य की तरह

(ख) एक मार्गदर्शक की तरह

(ग) एक गुरु की तरह

(घ) एक साथी की तरह

प्रश्न 5 - मुख्य गायक को अपने बचपन की कौन सी यादें आती है?

(क) कि वह नया-नया गाना सीखता था

(ख) वह भी कभी नौसिखिया था

(ग) उसका गुरु उसको सुरों से भटकने न दे कर सही सुरों पर बने रहने में उसकी मदद करता था

(घ) वह भी कभी संगतकार की तरह कार्य करता था

उत्तर - (ख) रूपक अलंकार

उत्तर - (क) संगतकार

उत्तर - (घ) मूल

उत्तर - (ख) एक मार्गदर्शक की तरह

उत्तर - (ग) उसका गुरु उसको सुरों से भटकने न दे कर सही सुरों पर बने रहने में उसकी मदद करता था

<u>पाठ पर आधारित प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और किन-किन क्षेत्रों में दिखाई देते हैं?

उत्तर- संगतकार जैसे व्यक्ति संगीत के अलावा और भी बहुत से क्षेत्रों में होते हैं

- खेल में जीत का श्रेय कैप्टन को मिलता है जबकि विजेता बनाने में कई खिलाड़ियों का योगदान होता है। इसके अलावा उनके कोच और अन्य अनेक लोगों का योगदान होता है।

- राजनीति के क्षेत्र में चुनाव में जीत केवल उम्मीदवार विशेष की होती है, परंतु उसे विजयी बनाने में छोटे नेताओं के अलावा चुनावी चंदा देने वाले, प्रचार करने वाले जैसे बहुतों का योगदान होता है।
- सिनेमा के क्षेत्र में फ़िल्म को सफल बनाने में अगणित लोगों का योगदान होता है।
- शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षाफल बढ़ने का श्रेय अधिकारियों को मिलता है पर उसके लिए अध्यापकगण एवं अन्य कर्मचारियों का अमूल्य योगदान होता है।
- किसी युद्ध को जीतने में सेनापति के अलावा बहुत से वीरों का योगदान होता है।

प्रश्न 2. संगतकार किन-किन रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं?

उत्तर- संगतकार विभिन्न रूपों में मुख्य गायक-गायिकाओं की मदद करते हैं; जैसे

- वे मुख्य गायक की भारी आवाज़ में अपनी सुंदर और कमज़ोर आवाज़ की गूंज मिलाकर गायन को प्रभावपूर्ण बना देते
- गायक जब अंतरे के जटिल जंगल में खो जाते हैं तो संगतकार ही स्थायी को सँभाले रखकर उनकी मदद करते हैं।
- तारसप्तक गाते समय संगतकार उसके स्वर में स्वर मिलाकर उसे अकेले होने का अहसास नहीं होने देते हैं।
- संगतकार मुख्य गायक के स्वर से अपना स्वर ऊँचा न करके उसकी सफलता में बाधक नहीं बनते हैं।

प्रश्न 3. भाव स्पष्ट कीजिए

और उसकी आवाज़ में जो एक हिचक साफ़ सुनाई देती है।
या अपने स्वर को ऊँचा न उठाने की जो कोशिश है।
उसे विफलता नहीं।
उसकी मनुष्यता समझा जाना चाहिए।

उत्तर- उपर्युक्त पंक्तियों का भाव यह है कि संगतकार जान-बूझकर अपने स्वर को मुख्य गायक के स्वर से ऊँचा नहीं होने देते हैं। यह संगतकार द्वारा अपनी प्रतिभा का त्याग है जो योग्यता और सामर्थ्य होने पर भी मुख्य गायक की सफलता में बाधक नहीं बनता है और मानवता का अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करता है।

प्रश्न 4. कभी-कभी तारसप्तक की ऊँचाई पर पहुँचकर मुख्य गायक का स्वर बिखरता नज़र आता है उस समय संगतकार उसे बिखरने से बचा लेता है। इस कथन के आलोक में संगतकार की विशेष भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- तारसप्तक गाते समय स्वरों के उतार-चढ़ाव में जब मुख्य गायक की आवाज़ बैठने लगती है और उसकी आवाज़ कुछ गिरती हुई महसूस होती है तब संगतकार मुख्य गायक के स्वर में स्वर मिलाकर उसे सहारा देते हैं तथा उसको स्वर बिखरने से पहले ही सँभाल लेते हैं और उसके गायन की सफलता को विफलता में नहीं बदलने देते हैं। इस प्रकार मुख्य गायक की सफलता में संगतकार की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

प्रश्न 5. सफलता के चरम शिखर पर पहुँचने के दौरान यदि व्यक्ति लड़खड़ाता है तब उसे सहयोगी किस तरह सँभालते हैं?

उत्तर- सफलता के शीर्ष पर पहुँचकर जब कोई व्यक्ति अचानक लड़खड़ा जाता है तो उसके सहयोगी उसे साहस एवं हौंसला बनाए रखने के लिए प्रेरित करते हैं। वे तन-मन से ही नहीं, आवश्यकता होने पर धन से भीउसकी सहायता करते हैं। वे उसे उसकी कमियों के प्रति सचेत करते हैं तथा दुबारा सफलता के शीर्ष पर पहुँचाने में मदद करते हैं।

गद्य - खंड

<u>नेताजी का चश्मा</u>

हालदार साहब को हर पन्द्रहवें दिन कम्पनी के काम से एक छोटे कस्बे से गुजरना पड़ता था। उस कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का कारखाना, दो ओपन सिनेमा घर तथा एक नगरपालिका थी। नगरपालिका थी तो कुछ ना कुछ करती रहती थी, कभी सड़के पक्की करवाने का काम तो कभी शौचालय बनवा

दिया,तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। एक बार नगरपालिका के एक उत्साही अधिकारी ने मुख्य बाज़ार के चैराहे पर सुभाषचन्द्र बोस की संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी। चूँकि बजट ज्यादा नहीं था इसलिए मूर्ति बनाने का काम कस्बे के इकलौते हाई स्कूल के शिक्षक को सौंपा गया। मूर्ति सुन्दर बनी थी बस एक चीज़ की कमी थी, नेताजी की आँखों पर चश्मा नहीं था। एक सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया। जब हालदार साहब आए तो उन्होंने सोचा वाह भई! यह आईडिया ठीक है। मूर्ति पत्थर की पर चश्मा रियल। दूसरी बार जब हालदार साहब आये तो उन्हें मूर्ति पर तार का फ्रेम वाले गोल चश्मा लगा था। तीसरी बार फिर उन्होंने नया चश्मा पाया। इस बार वे पानवाले से पूछ बैठे कि नेताजी का चश्मा हरदम बदल कैसे जाता है। पानवाले ने बताया कि यह काम कैप्टन चश्मेवाला करता है। हालदार साहब को समझते देर न लगी कि बिना चश्मे वाली मूर्ति कैप्टन को खराब लगती होगी इसलिए अपने उपलब्ध फ्रेम में से एक को वह नेताजी के मूर्ति पर फिट कर देता होगा। जब कोई ग्राहक वैसे ही फ्रेम की मांग करता जैसा मूर्ति पर लगा है तो वह उसे मूर्ति से उतारकर ग्राहक को दे देता और मूर्ति पर नया फ्रेम लगा देता चूँकि मूर्ति बनाने वाला मास्टर चश्मा भूल गया।

हालदार साहब ने पानवाले से जानना चाहा कि कैप्टेन चश्मेवाला नेताजी का साथी है या आजाद हिन्द फ़ौज का कोई भूतपूर्व सिपाही? पानवाले बोला कि वह लंगड़ा क्या फ़ौज में जाएगा, वह पागल है इसलिए ऐसा करता है। हालदार साहब को एक देशभक्त का मजाक बनते देखना अच्छा नहीं लगा। कैप्टेन को देखकर उन्हें आश्चर्य हआ चूँकि वह एक बूढ़ा मरियल- लंगड़ा सा आदमी था जिसके सिर पर गांधी टोपी तथा चश्मा था, उसके एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे में एक बांस में टंगे ढेरों चश्मे थे। वह उसका वास्तविक नाम जानना चाहते थे परन्तु पानवाले ने इससे ज्यादा बताने से मना कर दिया।

दो साल के भीतर हालदार साहब ने नेताजी की मूर्ति पर कई चश्मे लगते हुए देखे। एक बार जब हालदार साहब कस्बे से गुजरे तो मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं था। पूछने पर पता चला की कैप्टेन मर गया, उन्हें बहुत दुःख हुआ। पंद्रह दिन बाद कस्बे से गुजरे तो सोचा की वहाँ नहीं रुकेंगे, पान भी नहीं खाएंगे, मूर्ति की ओर देखेंगे भी नहीं। परन्तु आदत से मजबूर हालदार साहब की नजर चौराहे पर आते ही आँखे मूर्ति की ओर उठ गयीं। वे जीप से उतरे और मूर्ति के सामने जाकर खड़े हो गए। मूर्ति की आँखों पर सरकंडे से बना हुआ छोटा सा चश्मा रखा था, जैसा बच्चे बना लेते हैं। यह देखकर हालदार साहब की आँखे नम हो गयीं।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए-

हालदार साहब को यह सब कुछ बड़ा विचित्र और कौतुकभरा लग रहा था। इन्हीं खयालों में खोए - खोए पान के पैसे चुकाकर , चश्मेवाले की देश - भक्ति के समक्ष नतमस्तक होते हुए वह जीप की तरफ चले , फिर रुके , पीछे मुड़े और पानवाले के पास जाकर पूछा , क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है ? या आज़ाद हिन्द फौज का भूतपूर्व सिपाही ? पानवाला नया पान खा रहा था। पान पकड़े अपने हाथ को मुँह से डेढ़ इंच दूर रोककर उसने हालदार साहब को ध्यान से देखा , फिर अपनी लाल - काली बत्तीसी दिखाई और मुसकराकर बोला - नहीं साब ! वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल ! वो देखो , वो आ रहा है। आप उसी से बात कर लो। फोटो - वोटो छपवा दो उसका कहीं।

हालदार साहब को पानवाले द्वारा एक देशभक्त का इस तरह मज़ाक उड़ाया जाना अच्छा नहीं लगा। मुड़कर देखा तो अवाक रह गए। एक बेहद बूढ़ा मरियल - सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी - सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत - से चश्मे लिए अभी - अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। तो इस बेचारे की दुकान भी नहीं! फेरी लगाता है ! हालदार साहब चक्कर में पड़ गए। पूछना चाहते थे , इसे कैप्टन क्यों कहते हैं ? क्या यही इसका वास्तविक नाम है ? लेकिन पानवाले ने साफ बता दिया था कि अब वह इस बारे में और बात करने को तैयार नहीं।

प्रश्न 1 - हालदार साहब किसके समक्ष नतमस्तक थे?
(क) पानवाले की देश-भक्ति के समक्ष
(ख) चश्मेवाले के समक्ष
(ग) चश्मेवाले की देश-भक्ति के समक्ष
(घ) कस्बे के लोगों की देश-भक्ति के समक्ष
प्रश्न 2 - चश्मेवाले के बारे में पानवाले के पास जाकर हालदार साहब ने क्या पूछा?
(क) क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है
(ख) क्या कैप्टन चश्मेवाला आजाद हिन्द फौज का भूतपूर्व सिपाही
(ग) क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है ? या आजाद हिन्द फौज का भूतपूर्व सिपाही
(घ) केवल (ख)
प्रश्न 3 - 'वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में। पागल है पागल' किसका कथन है?
(क) पानवाले का
(ख) कैप्टन चश्मेवाले का
(ग) हालदार साहब का
(घ) नेता जी का
प्रश्न 4 - कैप्टन चश्मेवाले का हुलिया कैसा था?
(क) एक लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए था
(ख) एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा था
(ग) एक हाथ में एक छोटी-सी संदूकची और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए था
(घ) उपरोक्त सभी
प्रश्न 5 - हालदार साहब सब कुछ जान कर क्या पूछना चाहते थे?
(क) पानवाला चश्मेवाले को पागल क्यों कहता है
(ख) चश्मेवाले को कैप्टन क्यों कहते हैं
(ग) चश्मे वाले से कौन चश्मे खरीदता है
(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर

उत्तर - (ग) चश्मेवाले की देश-भक्ति के समक्ष
उत्तर - (ग) क्या कैप्टन चश्मेवाला नेताजी का साथी है ? या आजाद हिन्द फौज का भूतपूर्व सिपाही
उत्तर - (क) पानवाले का
उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी
उत्तर - (ख) चश्मेवाले को कैप्टन क्यों कहते हैं

प्रश्नोत्तर

<u>पाठ आधारित प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. फौज में ना होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे ?
उत्तर-सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि उसके अंदर देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। वह स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने वाले सेनानियों का भरपूर सम्मान करता था। वह

नेताजी की मूर्ति को बार-बार चश्मा पहना कर देश के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा प्रकट करता था। देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना उसके हृदय में किसी भी फ़ौजी से कम नहीं थी।

प्रश्न 2 आशय स्पष्ट कीजिए -

क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-ज़िंदगी सब कुछ न्योछावर करने वालों पर भी हँसती है और अपने स्वार्थ के मौके तलाशती है?

उत्तर-हालदार साहब बार-बार सोचते रहे कि उस कौम का भविष्य कैसा होगा जो उन लोगों की हँसी उड़ाती है जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ त्याग कर देते हैं। साथ ही वह ऐसे अवसर तलाशती रहती है, जिसमें उसकी स्वार्थ की पूर्ति हो सके, चाहे उसके लिए उन्हें अपनी नैतिकता को भी तिलांजलि क्यों न देनी पड़े। अर्थात आज हमारे समाज में स्वार्थ पूर्ति के लिए अपना ईमान तक बेच दिया जाता है। यहाँ देशभक्ति को मूर्खता समझा जाता है।

प्रश्न 3. पानवाले का परिचय दीजिए।

उत्तर-सड़क के चौराहे के किनारे एक पान की दुकान में एक पान वाला बैठा है। वह काला तथा मोटा है, उसके सिर पर गिने-चुने बाल ही बचे हैं। वह एक तरफ ग्राहक के लिए पान बना रहा है, वहीं दूसरी ओर उसका मुँह पान से भरा है। पान खाने के कारण उसके होंठ लाल तथा कहीं-कहीं काले पड़ गए हैं। उसने अपने कंधे पर एक कपड़ा रखा हुआ है जिससे रह-रहकर अपना चेहरा साफ़ करता है।

प्रश्न 4. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में। पागल है पागल !"

कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

उत्तर-कैप्टन के बारे में हालदार साहब द्वारा पूछे जाने पर पानवाले ने टिप्पणी की कि वो लँगड़ा फ़ौज में क्या जाएगा, वह तो पागल है। पानवाले द्वारा ऐसी टिप्पणी करना उचित नहीं था। कैप्टन शारीरिक रूप से अक्षम था जिसके लिए वह फौज में नहीं जा सकता था परंतु उसके हृदय में जो अपार देशभक्ति की भावना थी, वह किसी फौजी से कम नहीं थी। कैप्टन अपने कार्यों से जो असीम देशप्रेम प्रकट करता था उसी कारण पानवाला उसे पागल कहता था। ऐसा कहना पानवाले की स्वार्थपरता की भावना को दर्शाता है, जो सर्वथा अनुचित है। वास्तव में तो पागलपन की हद तक देश के प्रति त्याग व समर्पण की भावना रखनेवाला व्यक्ति श्रद्धा का पात्र है, उपहास का नहीं।

प्रश्न 5. जब तक हालदर साहब ने कैप्टन को नहीं देखा था तो उनके मन मस्तिष्क पर कैप्टन की कैसी छवि थी? अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर- हालदार साहब ने जब तक कैप्टन को नहीं देखा था तब तक उनके मन मस्तिष्क पर कैप्टन की एक भारी-भरकम मज़बूत शरीर वाली रौबदार छवि रही होगी। उन्हें लगता था फौज में होने के कारण लोग उन्हें कैप्टन कहते हैं।

प्रश्न 6 - कस्बे की नगरपालिका क्या काम करती है?

उत्तर - लेखक कहते हैं कि जहाँ नगरपालिका होती है वहाँ पर कुछ-न-कुछ काम भी करती रहती हैं। उस कस्बे में भी कोई-न-कोई काम चला ही रहता था। कभी वहाँ कोई सड़क पक्की करवा दी जा रही होती थी, कभी कुछ पेशाबघर बनवा दिए जाते थे, कभी कबूतरों के लिए घर बनवा देते थे तो कभी कवि सभाएँ करवा दी जाती थी। कस्बे की उसी नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार ‘ शहर ’ के मुख्य बाजार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की मूर्ति लगवा दी थी।

प्रश्न 7 - मूर्ति पर असली चश्मे को पहनाने पर हालदार साहब नागरिकों की देश-भक्ति की सराहना क्यों कर रहे हैं?

उत्तर - मूर्ति पर असली चश्मे को पहनाने पर हालदार साहब नागरिकों की देश-भक्ति की सराहना कर रहे हैं क्योंकि वह मूर्ति कोई आम मूर्ति नहीं थी बल्कि नेता जी सुभाष चंद्र बोस जी की थी और उस पर एक बहुत ही बड़ी कमी थी

कि उस मूर्ति पर मूर्तिकार चश्मा बनाना भूल गया था जो कहीं न कहीं नेता जी का अपमान स्वरूप देखा जा सकता है क्योंकि नेता जी ने आज़ादी की लड़ाई में अपना सर्वस्व त्याग दिया था और उनकी छवि को उनके ही सादृश्य प्रस्तुत करना हर देशवासी का कर्तव्य है और कस्बे के नागरिकों ने भी अपने इसी कर्तव्य का निर्वाह करने की कोशिश की थी अतः हालदार साहब इस घटना को देश भक्ति से जोड़ कर देख रहे हैं।

प्रश्न 8 - दूसरी बार जब हालदार साहब को किसी काम से कस्बे से गुज़रना था तो उन्हें नेता जी सुभाष चंद्र जी की मूर्ति में क्या अलग दिखाई दिया?

उत्तर - दूसरी बार जब हालदार साहब को किसी काम से कस्बे से गुज़रना था तो उन्हें नेता जी सुभाष चंद्र जी की मूर्ति में कुछ अलग दिखाई दिया। कहने का तात्पर्य यह है कि हवलदार साहब को दूसरी बार में नेता जी की मूर्ति में कुछ परिवर्तन लगा। जब हवलदार साहब ने मूर्ति को ध्यान से देखा तो उन्होंने पाया कि आज मूर्ति पर लगा चश्मा दूसरा था। जब पहली बार उन्होंने मूर्ति को देखा था तब मूर्ति पर मोटे फ्रेम वाला चार कोनों वाला चश्मा था , अब तार के फ्रेम वाला गोल चश्मा था।

प्रश्न 9 - कैप्टन चश्मे वाले को देख कर हालदार साहब क्यों चौंक गए?

उत्तर - कैप्टन चश्मे वाले को देख कर हालदार साहब चौंक गए क्योंकि उसका व्यक्तित्व ऐसा था। एक हद से ज्यादा बूढ़ा कमजोर-सा लँगड़ा आदमी सिर पर गांधी टोपी और आँखों पर काला चश्मा लगाए एक हाथ में एक छोटी-सा लकड़ी का संदूक और दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे बहुत-से चश्मे लिए अभी-अभी एक गली से निकला था और अब एक बंद दुकान के सहारे अपना बाँस टिका रहा था। उसे देख कर हवलदार साहब को बहुत बुरा लगा और वे सोचने लगे कि इस बेचारे की दुकान भी नहीं है ! फेरी लगाता है ! हालदार साहब अब और भी ज्यादा सोच में पड़ गए।

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1 - कस्बे में कितने स्कूल थे?

(क) तीन

(ख) दो

(ग) चार

(घ) केवल एक

प्रश्न 2 - नेताजी की मूर्ति किसने बनवाई?

(क) मोतीलाल जी ने

(ख) कस्बे के एकलौते ड्रॉइंग मास्टर ने

(ग) नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने

(घ) कस्बे के प्रसिद्ध मूर्तिकार ने

प्रश्न 3 - सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा किस वस्तु से बनी थी और कितनी ऊँची थी?

(क) संगमरमर की बनी थी जो 2 फुट ऊँची थी।

(ख) संगमरमर की बनी थी जो 6 फुट ऊँची थी।

(ग) संगमरमर की बनी थी जो 3 फुट ऊँची थी।

(घ) संगमरमर की बनी थी जो ढ़ाई फुट ऊँची थी।

प्रश्न 4 - नगरपालिका ने ड्राइंग मास्टर मोतीलाल से मूर्ति क्यों बनवाई?

(क) कस्बे में मूर्तिकार न होने के कारण

(ख) नगरपालिका के पास बजट कम होने के कारण

(ग) ज्यादा दिलचस्पी न होने के कारण

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - हालदार साहब को नेताजी की मूर्ति को देखकर क्या याद आता था?
(क) "तुम मुझे खून दो , मैं तुम्हें आजादी दूंगा" जैसे जोश भरे नारे
(ख) "दिल्ली चलो" जैसे जोश भरे नारे
(ग) "तुम मुझे खून दो , मैं तुम्हें आजादी दूंगा" और "दिल्ली चलो" जैसे जोश भरे नारे
(घ) नेता जी की जीवन यात्रा
प्रश्न 6 - हालदार साहब उस कस्बे में क्यों रुकते थे?
(क) नेता जी का चश्मा ढूंढने के लिए
(ख) नेता जी की मूर्ति देखने के लिए
(ग) नेता जी से मिलने के लिए
(घ) पान खाने के लिए
प्रश्न 7 - हालदार साहब पहली बार कस्बे से गुजरने पर मूर्ति को देखकर क्यों चौक पड़े?
(क) नेताजी की मूर्ति को देखकर
(ख) नेताजी का चश्मा देखकर
(ग) नेताजी की मूर्ति पर असली चश्मा देखकर
(घ) पान की दुकान देखकर
प्रश्न 8 - नेताजी की आँखों पर असली चश्मा किसने लगाया?
(क) पान वाले ने
(ख) कैप्टन चश्मे वाले ने
(ग) कस्बे के लोगों ने
(घ) छोटे बच्चों ने
प्रश्न 9 - हवलदार साहब को क्या अच्छा नहीं लगा?
(क) पानवाले द्वारा नेता जी का मजाक उड़ाना
(ख) पानवाले द्वारा कस्बे का मजाक उड़ाना
(ग) पानवाले द्वारा चश्मे वाले कैप्टन का मजाक उड़ाना
(घ) पानवाले द्वारा नेता जी की मूर्ति का मजाक उड़ाना
प्रश्न 10 - चश्मे वाले के प्रति पान वाले के मन में कैसी भावना थी?
(क) उपेक्षा की भावना
(ख) अपेक्षा की भावना
(ग) क्रोध की भावना
(घ) प्रेम की भावना
उत्तर - 1. (ख) दो
उत्तर - 2. (ग) नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने
उत्तर - 3 (क) संगमरमर की बनी थी जो 2 फुट ऊँची थी
उत्तर - 4 (ख) नगरपालिका के पास बजट कम होने के कारण
उत्तर - 5 (ग) "तुम मुझे खून दो , मैं तुम्हें आजादी दूंगा" और "दिल्ली चलो" जैसे जोश भरे नारे
उत्तर - 6 (घ) पान खाने के लिए
उत्तर - 7 (ग) नेताजी की मूर्ति पर असली चश्मा देखकर
उत्तर - 8 (ख) कैप्टन चश्मे वाले ने

उत्तर - 9 (ग) पानवाले द्वारा चश्मे वाले कैप्टन का मजाक उड़ाना
उत्तर -10 (क) उपेक्षा की भावना

बालगोबिन भगत

बालगोबिन भगत मंझोले कद के गोर-चिट्टे आदमी थे। उनकी उम्र साठ वर्ष से उपर थी और बाल पक गए थे। वे लम्बी दाढ़ी नहीं रखते थे और कपड़े बिल्कुल कम पहनते थे। कमर में लंगोटी पहनते और सिर पर कबीरपंथियों की सी कनफटी टोपी। सर्दियों में ऊपर से कम्बल ओढ़ लेते। वे गृहस्थ होते हुई भी सही मायनों में साधू थे। माथे पर रामानंदी चन्दन का टीका और गले में तुलसी की जड़ों की बेडौल माला पहने रहते। उनका एक बेटा और पतोहू थे। वे कबीर को साहब मानते थे। किसी दूसरे की चीज़ नहीं छूते और न बिना वजह झगड़ा करते। उनके पास खेती बाड़ी थी तथा साफ़-सुथरा मकान था। खेत से जो भी उपज होती, उसे पहले सिर पर लादकर कबीरपंथी मठ ले जाते और प्रसाद स्वरुप जो भी मिलता उसी से गुजर बसर करते।
वे कबीर के पद का बहुत मधुर गायन करते। आषाढ़ के दिनों में जब समूचा गाँव खेतों में काम कर रहा होता तब बालगोबिन पूरा शरीर कीचड़ में लपेटे खेत में रोपनी करते हुए अपने मधुर गानों को गाते। भादो की अंधियारी में उनकी खँजड़ी बजती थी, जब सारा संसार सोया होता तब उनका संगीत जागता था। कार्तिक मास में उनकी प्रभातियाँ शुरू हो जातीं। वे पहले सुबह नदी-स्नान को जाते और लौटकर पोखर के ऊँचे भिंडे पर अपनी खँजड़ी लेकर बैठ जाते और अपना गाना शुरू कर देते। गर्मियों में अपने घर के आँगन में आसन जमा बैठते। उनकी संगीत साधना का चरमोत्कर्ष तब देखा गया जिस दिन उनका इकलौता बेटा मरा। बड़े शौक से उन्होंने अपने बेटे की शादी करवाई थी, बहू भी बड़ी सुशील थी। उन्होंने मरे हुए बेटे को आँगन में चटाई पर लिटाकर एक सफ़ेद कपड़े से ढक रखा था तथा उसपर कुछ फूल बिखरा पड़ा था। सामने बालगोबिन ज़मीन पर आसन जमाये गीत गाये जा रहे थे और बहू को रोने के बजाये उत्सव मनाने को कह रहे थे चूँकि उनके अनुसार आत्मा परमात्मा पास चली गयी है, ये आनंद की बात है। उन्होंने बेटे की चिता को आग भी बहू से दिलवाई। जैसे ही श्राद्ध की अवधि पूरी हुई, बहू के भाई को बुलाकर उसके दूसरा विवाह करने का आदेश दिया। बहू जाना नहीं चाहती थी, साथ रह उनकी सेवा करना चाहती थी परन्तु बालगोबिन के आगे उनकी एक ना चली उन्होंने दलील दी अगर वो नहीं गयी तो वे घर छोड़कर चले जाएंगे।
बालगोबिन भगत की मृत्यु भी उनके अनुरूप ही हुई। वे हर वर्ष गंगा स्नान को जाते। गंगा तीस कोस दूर पड़ती थी फिर भी वे पैदल ही जाते। घर से खाकर निकलते तथा वापस आकर खाते थे, बाकी दिन उपवास पर। किन्तु अब उनका शरीर बूढ़ा हो चुका था। इस बार लौटे तो तबीयत ख़राब हो चुकी थी किन्तु वी नेम-व्रत छोड़ने वाले ना थे, वही पुरानी दिनचर्या शुरू कर दी, लोगों ने मन किया परन्तु वे टस से मस ना हुए। एक दिन संध्या में गाना गाया परन्तु भोर में किसी ने गीत नहीं सुना, जाकर देखा तो पता चला बालगोबिन भगत नहीं रहे।

प्रश्नः- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

1.आसाढ़ की रिमझिम है। समूचा गाँव खेतों में उतर पड़ा है। कहीं हल चल रहे हैं ; कहीं रोपनी हो रही है। धान के पानी - भरे खेतों में बच्चे उछल रहे हैं। औरतें कलेवा लेकर मेंड पर बैठी हैं। आसमान बादल से घिरा ; धूप का नाम नहीं। ठंडी पुरवाई चल रही। ऐसे ही समय आपके कानों में एक स्वर - तरंग झंकार - सी कर उठी। यह क्या है - यह कौन है ! यह पूछना न पड़ेगा। बालगोबिन भगत समूचा शरीर कीचड़ में लिथड़े , अपने खेत में रोपनी कर रहे हैं। उनकी अँगुली एक - एक धान के पौधे को , पंक्तिबद्ध , खेत में बिठा रही है। उनका कंठ एक - एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को ऊपर , स्वर्ग की ओर भेज रहा है और कुछ को इस पृथ्वी की मिट्टी पर खड़े लोगों के कानों की ओर ! बच्चे खेलते हुए झूम उठते हैं ; मेंड़ पर खड़ी औरतों के होंठ काँप उठते हैं , वे गुनगुनाने लगती हैं ; हलवाहों के पैर ताल से उठने लगते हैं ; रोपनी करने वालों की अँगुलियाँ एक अजीब क्रम से चलने लगती हैं ! बालगोबिन भगत का यह संगीत है या जादू ! भादो की वह अंधेरी अधरतिया। अभी, थोड़ी ही देर पहले मूसलधार

वर्षा खत्म हुई है। बादलों की गरज , बिजली की तड़प में आपने कुछ नहीं सुना हो , किन्तु अब झिल्ली की झंकार या दादुरों की टर्र-टर्र बालगोबिन भगत के संगीत को अपने कोलाहल में डुबो नहीं सकतीं।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष उस दिन देखा गया जिस दिन उनका बेटा मरा। इकलौता बेटा था वह ! कुछ सुस्त और बोदा-सा था , किन्तु इसी कारण बालगोबिन भगत उसे और भी मानते। उनकी समझ में ऐसे आदमियों पर ही ज्यादा नज़र रखनी चाहिए या प्यार करना चाहिए , क्योंकि ये निगरानी और मुहब्बत के ज्यादा हकदार होते हैं। बड़ी साध से उसकी शादी कराई थी , पतोहू बड़ी ही सुभग और सुशील मिली थी। घर की पूरी प्रबंधिका बनकर भगत को बहुत कुछ दुनियादारी से निवृत्त कर दिया था उसने। उनका बेटा बीमार है , इसकी खबर रखने की लोगों को कहाँ फुरसत ! किन्तु मौत तो अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है। हमने सुना , बालगोबिन भगत का बेटा मर गया। कुतूहलवश उनके घर गया। देखकर दंग रह गया। बेटे को आँगन में एक चटाई पर लिटाकर एक सफेद कपड़े से ढाँक रखा है। वह कुछ फूल तो हमेशा ही रोपते रहते , उन फूलों में से कुछ तोड़कर उस पर बिखरा दिए हैं ; फूल और तुलसीदल भी। सिरहाने एक चिराग जला रखा है। और , उसके सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे हैं ! वही पुराना स्वर , वही पुरानी तल्लीनता। घर में पतोहू रो रही है जिसे गाँव की स्त्रियाँ चुप कराने की कोशिश कर रही हैं। किन्तु , बालगोबिन भगत गाए जा रहे हैं ! हाँ , गाते - गाते कभी - कभी पतोहू के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। आत्मा परमात्मा के पास चली गई , विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली , भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात ? मैं कभी - कभी सोचता , यह पागल तो नहीं हो गए। किन्तु नहीं , वह जो कुछ कह रहे थे उसमें उनका विश्वास बोल रहा था - वह चरम विश्वास जो हमेशा ही मृत्यु पर विजयी होता आया है।

प्रश्न 1 - बालगोबिन भगत की संगीत-साधना का चरम उत्कर्ष किस दिन देखा गया?

(क) आषाढ़ मास में

(ख) जिस दिन उनके बेटे की मृत्यु हुई।

(ग) जिस दिन वे ठण्ड में भी गाना गाए जा रहे थे।

(घ) जिस दिन वे लगातार सुबह से शाम तक गाना गा रहे थे।

प्रश्न 2 - कौन अपनी ओर सबका ध्यान खींचकर ही रहती है?

(क) ठण्ड

(ख) साधना

(ग) संगीत

(घ) मौत

प्रश्न 3 - बालगोबिन भगत किसके सामने ज़मीन पर ही आसन जमाए गीत गाए चले जा रहे थे?

(क) अपने पड़ोसियों की सभा के सामने

(ख) अपने बेटे की लाश के सिरहाने बैठ कर

(ग) अपने परिवार के सामने

(घ) बरगद के पेड़ के सामने

प्रश्न 4 - बालगोबिन भगत गाते-गाते कभी-कभी किसके नज़दीक जा कर उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कह रहे थे?

(क) अपनी पत्नी

(ख) गाँव की स्त्रियों

(ग) अपनी बेटी

(घ) पतोहू

प्रश्न 5 - बालगोबिन भगत अपनी पतोहू को क्या कह कर तसल्ली दे रहे थे?

(क) जो होता है अच्छे के लिए होता है. परमात्मा किसी का बुरा नहीं करते

(ख) आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात ?

(ग) आत्मा को एक न एक दिन परमात्मा के पास जाना ही होता है, दुःख की कोई बात नहीं

(घ) उपरोक्त सभी

<u>उत्तर</u>

उत्तर -1 (ख) जिस दिन उनके बेटे की मृत्यु हुई

उत्तर - 2 (घ) मौत

उत्तर -3(ख) अपने बेटे की लाश के सिरहाने बैठ कर

उत्तर - 4 (घ) पतोहू

उत्तर -5 (ख) आत्मा परमात्मा के पास चली गई, विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली, भला इससे बढ़कर आनंद की कौन बात ?

प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. गृहस्थ होते हुए भी बालगोबिन भगत अपनी किन चारित्रिक विशेषताओं के कारण साधु जाने जाते हैं?

उत्तर- बालगोबिन भगत गृहस्थ थे फिर भी उनकी बहुत सारी विशेषताएं उनको साधु बनती है :-

i. कबीर के आदर्शों पर चलते थे, उन्हीं के गीत गाते थे ।

II. कभी झूठ नहीं बोलते थे, खरा व्यवहार रखते थे ।

iii. किसी से भी दो-टूक बात करने में संकोच नहीं करते, न किसी से झगड़ा करते थे ।

iv. किसी की चीज़ नहीं छूते थे न ही बिना पूछे व्यवहार में लाते थे ।

v. जो कुछ खेत में पैदा होता, सिर पर लादकर पहले उसे कबीरपंथी मठ में ले जाते, वहाँ से जो कुछ भी भेंट स्वरुप मिलता था उसे प्रसाद स्वरुप घर ले जाते थे ।

vi. उनमें लालच बिल्कुल भी नहीं था ।

प्रश्न 2. भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाओं को किस प्रकार प्रकट किया?

उत्तर- बेटे की मृत्यु पर भगत ने पुत्र के शरीर को एक चटाई पर लिटा दिया, उसे सफेद चादर से ढक दिया तथा वे कबीर के भक्ति गीत गाकर अपनी भावनाएँ व्यक्त करने लगे। भगत ने अपने पुत्रवधू से कहा कि यह रोने का नहीं बल्कि उत्सव मनाने का समय है। विरहिणी आत्मा अपने प्रियतम परमात्मा के पास चली गई है। उन दोनों के मिलन से बड़ा आनंद और कुछ नहीं हो सकता । इस प्रकार भगत ने शरीर की नश्वरता और आत्मा की अमरता का भाव व्यक्त किया।

प्रश्न 3. बालगोबिन भगत की दिनचर्या से लोगो को इतनी हैरान क्यों होती थी?

उत्तर- बालगोबिन भगत की दिनचर्या लोगों के अचरज का कारण इसलिए बन गई थी क्योंकि वे जीवन के सिद्धांतों और आदर्शों का अत्यंत गहराई से पालन करते हुए उन्हें अपनेआचरण में उतारते थे। वृद्ध होते हुए भी उनकी स्फूर्ति में कोई कमी नहीं थी। सर्दी के मौसम में भी, भरे बादलों वाले भादों की आधी रात में भी वे भोर में सबसे पहले उठकर गाँव से दो मील दूर स्थित गंगा स्नान करने जाते थे, खेतों में अकेले ही खेती करते तथा गीत गाते रहते। विपरीत परिस्थिति होने के बाद भी उनकी दिनचर्या में कोई परिवर्तन नहीं आता था। एक वृद्ध में अपने कार्य के प्रति इतनी सजगता को देखकर लोग दंग रह जाते थे।

प्रश्न 4. धान की रोपाई के समय समूचे माहौल को भगत की स्वर लहरियाँ किस तरह चमत्कृत कर देती थीं ? उस माहौल का शब्द- चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर- आषाढ़ की रिमझिम फुहारों के बीच खेतों में धान की रोपाई चल रही थी। बादल से घिरे आसमान में, ठंडी हवाओं के चलने के समय अचानक खेतों में से किसी के मीठे स्वर गाते हुए सुनाई देते हैं। बालगोबिन भगत के कंठ से निकला मधुर संगीत वहाँ खेतों में काम कर रहे लोगों के मन में झंकार उत्पन्न करने लगा। स्वर के आरोह के साथ एक-एक शब्द जैसे स्वर्ग की ओर भेजा जा रहा हो। उनकी मधुर वाणी को सुनते ही लोग झूमने लगते हैं, स्त्रियाँ स्वयं को रोक नहीं पाती है तथा अपने आप उनके होंठ काँपकर गुनगुनाते लगते हैं। हलवाहों के पैर गीत के ताल के साथ उठने लगे। रोपाई करने वाले लोगों की उँगलियाँ गीत की स्वरलहरी के अनुरूप एक विशेष क्रम से चलने लगीं बालगोबिन भगत के गाने से संपूर्ण सृष्टि मिठास में खो जाती है।

प्रश्न 5. अपने शब्दों में बताएं कि भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के क्या कारण हो सकते हैं?

उत्तर- भगत की कबीर पर अगाध श्रद्धा के निम्नलिखित कारण रहे होंगे -

i. कबीर का आडम्बरों से रहित सादा जीवन

ii. सामाजिक कुरीतियों का अत्यंत विरोध करना

iii. कामनाओं से रहित कर्मयोग का आचरण

iv. ईश्वर के प्रति अनन्य प्रेम

v. भक्ति से परिपूर्ण मधुर गीतों की रचना

vi. आदर्शों को व्यवहार में उतरना

प्रश्न 6 - बालगोबिन भगत अपने पुत्र की पत्नी को तसल्ली देने के लिए क्या कहते हैं?

उत्तर - गाते - गाते कभी -

कभी पुत्र की पत्नी के नज़दीक भी जाते और उसे रोने के बदले उत्सव मनाने को कहते। और अपनी बहु को सम झाते हुए कहते कि आत्मा परमात्मा के पास चली गई , विरहिनी अपने प्रेमी से जा मिली , भला इससे बढ़कर आनंद की कौन ही बात हो सकती है ?

प्रश्न 7 -

बालगोबिन भगत की बहु अपने मायके क्यों नहीं जाना चाहती थी और भगत ने क्या कहकर उसे विवश किया?

उत्तर -

जैसे ही पितरों अथवा मृत व्यक्तियों के लिए किया जाने वाला धार्मिक कर्मकांड , पिंडदान, अन्नदान आदि का समय पूरा हुआ , वैसे ही अपनी बहु के भाई को बुलाकर उसे उसके साथ कर दिया , और यह आदेश दिया कि इसकी दूस री शादी कर देना। किन्तु उनकी बहू रो -

रोकर कहती रही कि वह चली जाएगी तो बुढ़ापे में कौन बाल गोबिन भगत के लिए भोजन बनाएगा , यदि कभी बी मार पड़े , तो कौन एक चुल्लू पानी भी देगा ? वह बाल गोबिन भगत के पैर पड़ती रही कि वह उसे अपने चरणों से अलग न करे ! लेकिन भगत का निर्णय अटल था। उन्होंने अपनी बहस का अंत करते हुए कहा कि वह चली जाए , नहीं तो वे ही इस घर को छोड़कर चले जाएंगे। अब इस तरह की बात के आगे बेचारी की क्या चलती ? कहने का तात्पर्य यह है कि न चाहते हुए भी बाल गोबिन भगत की बहुको उन्हें बुढ़ापे में अकेले छोड़ कर जाना पड़ा।

प्रश्न 8 - भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले क्यों नहीं छोड़ना चाहती थी ?

उत्तर - भगत की पुत्रवधू उन्हें इसलिए अकेला नहीं छोड़ना चाहती थी क्योंकि भगत के इकलौते पुत्र और उसके पति की मृत्यु के बाद भगत अकेले पड़ गए थे। स्वयं भगत वृद्धावस्था में हैं। वे नेम - धर्म का पालन करने वाले इंसान हैं , जो अपने स्वास्थ्य की तनिक भी चिंता नहीं करते हैं। वह वृद्धावस्था में अकेले पड़े भगत की सेवा करना चाहती थी और उनकी सेवा करके अपना जीवन बिताना चाहती थी।

प्रश्न 9 - भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस तरह व्यक्त कीं ?

उत्तर - भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर औरों की तरह शोक और मातम नहीं मानाया। वे मृत बेटे के सामने बैठकर

मस्ती और तल्लीनता में कबीर के पद गाते रहे। वे मृत्यु को आत्मा - परमात्मा का मिलन मानकर इससे दुखी होने के बजाय खुश होने का समय मान रहे थे। वे अपनी पुत्रवधू को भी आनंदोत्सव मनाने के लिए कहते जा रहे थे।

प्रश्न 10 - भगत के व्यक्तित्व और उनकी वेशभूषा का अपने शब्दों में चित्र प्रस्तुत कीजिए।

उत्तर - बालगोबिन भगत साठ वर्ष से अधिक उम्र वाले गोरे - चिट्टे इंसान थे। उनके बाल सफ़ेद हो चुके थे। उनका चेहरा सफ़ेद बालों से जगमगाता रहता था। कपड़ों के नाम पर उनके शरीर पर एक लँगोटी और सिर पर कनफटी टोपी धारण करते थे और गले में तुलसी की बेडौल माला पहने रहते थे। उनके माथे पर रामानंदी टीका सुशोभित होता था। सर्दियों में वे काली कमली ओढ़े रहते थे।

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1 - बालगोबिन भगत लगभग कितने वर्ष के थे?

(क) 50 वर्ष (ख) 60 वर्ष (ग) 48 वर्ष (घ) 65 वर्ष

उत्तर - (ख) 60 वर्ष

प्रश्न 2 - बालगोबिन भगत गले में कौन सी माला पहनते थे?

(क) तुलसी के पत्तों से बनी हुई माला

(ख) तुलसी के तने से बनी हुई माला

(ग) तुलसी की जड़ों से बनी हुई माला

(घ) तुलसी की बनी हुई माला

उत्तर - (ग) तुलसी की जड़ों से बनी हुई माला

प्रश्न 3 - भगतजी "कबीरदासजी" को क्या मानते थे?

(क) आराध्य

(ख) मार्गदर्शक

(ग) गुरु

(घ) साहब

उत्तर - (घ) साहब

प्रश्न 4 - लेखक के अनुसार , बालगोबिन भगत का लोगों के प्रति व्यवहार कैसा था?

(क) वो दो टूक बात कहते थे

(ख) बिना पूछे किसी की चीज को व्यवहार में भी नहीं लाते थे

(ग) न झूठ बोलते और न खामखाह किसी से झगड़ा मोल लेते थे

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - बालगोबिन भगत पाठ में लेखक ने "रोपनी" किसे कहा है?

(क) धान की रोपाई को

(ख) जौ की रोपाई को

(ग) मक्के की रोपाई को

(घ) चावल की रोपाई को

उत्तर - (क) धान की रोपाई को

प्रश्न 6 - भगतजी अपने खेतों में किस चीज की खेती करते थे?

(क) जौ की

(ख) मक्के की

(ग) धान की
(घ) चावल की
उत्तर - (ग) धान की
प्रश्न 7 - भगतजी गाना गाते समय क्या बजाया करते थे?
(क) खंजड़ी
(ख) ढोलक
(ग) बाँसुरी
(घ) चिमटा
उत्तर - (क) खंजड़ी
प्रश्न 8 - बालगोबिन भगत के गीतों को सुनकर सभी लोग क्या करते थे?
(क) मजाक बनाते थे
(ख) नाचने लगते थे
(ग) झूम उठते थे
(घ) गुस्सा करते थे
उत्तर - (ग) झूम उठते थे
प्रश्न 9 - बालगोबिन भगत द्वारा कौन अधिक "निगरानी और मोहब्बत" के ज्यादा हकदार होते है?
(क) कमजोर और असहाय व्यक्ति
(ख) बुद्धिमान व्यक्ति
(ग) ताकतवर व्यक्ति
(घ) समझदार व्यक्ति
उत्तर - (क) कमजोर और असहाय व्यक्ति
प्रश्न 10 - भगतजी अपने बेटे का खास ख्याल क्यों रखते थे?
(क) क्योंकि वह मानसिक रूप से कमजोर था।
(ख) क्योंकि वह सुस्त था।
(ग) क्योंकि वह बोदा था।
(घ) उपरोक्त सभी।
उत्तर - (घ) उपरोक्त सभी

लखनवी अंदाज

पाठ का सारांश

लेखक को पास में ही कहीं जाना था। लेखक ने यह सोचकर सेकंड क्लास का टिकट लिया की उसमे भीड़ कम होती है, वे आराम से खिड़की से प्राकृतिक दृश्य देखते हुए किसी नए कहानी के बारे में सोच सकेंगे। पैसेंजर ट्रेन खुलने को थी। लेखक दौड़कर एक डिब्बे में चढ़े परन्तु अनुमान के विपरीत उन्हें डिब्बा खाली नहीं मिला। डिब्बे में पहले से ही लखनऊ की नबाबी नस्ल के एक सज्जन पालथी मारे बैठे थे, उनके सामने दो ताजे चिकने खीरे तौलिये पर रखे थे। लेखक का अचानक चढ़ जाना उस सज्जन को अच्छा नहीं लगा। उन्होंने लेखक से मिलने में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। लेखक को लगा शायद नवाब ने सेकंड क्लास का टिकट इसलिए लिया है ताकि वे अकेले यात्रा कर सकें परन्तु अब उन्हें ये बिल्कुल अच्छा नहीं लग रहा था की कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे। उन्होंने शायद खीरा भी अकेले सफर में वक़्त काटने के लिए खरीदा होगा परन्तु अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे

खाए। नबाब साहब खिड़की से बाहर देख रहे थे परन्तु लगातार कनखियों से लेखक की ओर देख रहे थे। अचानक ही नबाब साहब ने लेखक को सम्बोधित करते हुए खीरे का लुत्फ़ उठाने को कहा परन्तु लेखक ने शुक्रिया करते हुए मना कर दिया। नबाब ने बहुत ढंग से खीरे को धोकर छीले, काटे और उसमे जीरा, नमक-मिर्च बुरककर तौलिये पर सजाते हुए पुनः लेखक से खाने को कहा किन्तु वे एक बार मना कर चुके थे इसलिए आत्मसम्मान बनाये रखने के लिए दूसरी बार पेट खराब होने का बहाना बनाया। लेखक ने मन ही मन सोचा कि मियाँ रईस बनते हैं लेकिन लोगों की नजर से बच सकने के ख्याल में अपनी असलियत पर उत्तर आयें हैं। नबाब साहब खीरे की एक फॉक को उठाकर होठों तक ले गए, उसको सूँघा। खीरे की स्वाद का आनंद में उनकी पलकें मूँद गयीं। मुंह में आये पानी का घूँट गले से उतर गया, तब नबाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। इसी प्रकार एक-एक करके फॉक को उठाकर सूंघते और फेंकते गए। सारे फाँको को फेकने के बाद उन्होंने तौलिये से हाथ और होठों को पोछा। फिर गर्व से लेखक की ओर देखा और इस नायब इस्तेमाल से थककर लेट गए। लेखक ने सोचा की खीरा इस्तेमाल करने से क्या पेट भर सकता है तभी नबाब साहब ने डकार ले ली और बोले खीरा होता है लजीज पर पेट पर बोझ डाल देता है। यह सुनकर लेखक ने सोचा की जब खीरे के गंध से पेट भर जाने की डकार आ जाती है तो बिना विचार, घटना और पात्रों के इच्छा मात्र से नई कहानी बन सकती है।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

1 -

ठाली बैठे , कल्पना करते रहने की पुरानी आदत है। नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का अनुमान करने लगे। संभव है , नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफ़ायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो और अब गवारा न हो कि शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे। ... अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ?

हम कनखियों से नवाब साहब की ओर देख रहे थे। नवाब साहब कुछ देर गाड़ी की खिड़की से बाहर देखकर स्थिति पर गौर करते रहे।

' ओह ' , नवाब साहब ने सहसा हमें संबोधन किया , ' आदाब - अर्ज़ ' , जनाब , खीरे का शौक फरमाएँगे ?

नवाब साहब का सहसा भाव - परिवर्तन अच्छा नहीं लगा। भाँप लिया , आप शराफत का गुमान बनाए रखने के लिए हमें भी मामूली लोगों की हरकत में लथेड़ लेना चाहते हैं। जवाब दिया , ' शुक्रिया , किबला शौक फरमाएँ। ' नवाब साहब ने फिर एक पल खिड़की से बाहर देखकर गौर किया और दृढ़ निश्चय से खीरों के नीचे रखा तौलिया झाड़कर सामने बिछा लिया। सीट के नीचे से लोटा उठाकर दोनों खीरों को खिड़की से बाहर धोया और तौलिए से पोंछ लिया। जेब से चाकू निकाला। दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला। फिर खीरों को बहुत एहतियात से छीलकर फाँकों को करीने से तौलिए पर सजाते गए।

प्रश्न 1 - खाली बैठे रहने पर लेखक की क्या आदत है?

(क) दिन भर सोए रहने की

(ख) कल्पना करते रहने की पुरानी आदत

(ग) सभी को परेशान करने की

(घ) कुछ-न-कुछ लिखते रहने की

प्रश्न 2 - लेखक नवाब साहब की असुविधा और संकोच के कारण का क्या अनुमान करने लगे?

(क) संभव है , नवाब साहब ने बिलकुल अकेले यात्रा कर सकने के अनुमान में किफायत के विचार से सेकंड क्लास का टिकट खरीद लिया हो

(ख) नवाब साहब को गवारा न हो कि शहर का कोई सफेदपोश उन्हें मँझले दर्जे में सफर करता देखे

(ग) नवाब साहब ने अकेले सफर का वक्त काटने के लिए ही खीरे खरीदे होंगे और अब किसी सफेदपोश के सामने खीरा कैसे खाएँ?

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 - लेखक कैसे नवाब साहब की ओर देख रहे थे?

(क) कनखियों से

(ख) गौर से

(ग) बिलकुल सीधे

(घ) ऊपर से नीचे

प्रश्न 4 - नवाब साहब ने लेखक से क्या पूछा?

(क) जनाब , आप कहाँ से आए हैं

(ख) जनाब , आप किसे ढूंढ रहे हैं

(ग) जनाब , खीरे का शौक फरमाएँगे

(घ) जनाब , क्या आप गलत डिब्बे में आ गए हैं

प्रश्न 5 - नवाब साहब का खीरे को खाने के लिए काटने का तरीका कैसा था?

(क) नवाब साहब ने सीट के नीचे से लोटा उठाकर दोनों खीरों को खिड़की से बाहर धोया और तौलिए से पोंछ लिया

(ख) नवाब साहब ने जेब से चाकू निकाला। दोनों खीरों के सिर काटे और उन्हें गोदकर झाग निकाला

(ग) नवाब साहब ने खीरों को बहुत एहतियात से छीलकर फाँकों को करीने से तौलिए पर सजाते गए

(घ) उपरोक्त सभी

उत्तर -1. (ख) कल्पना करते रहने की पुरानी आदत

उत्तर -2. (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर -3. (क) कनखियों से

उत्तर -4. (ग) जनाब , खीरे का शौक फरमाएँगे

उत्तर -5. (घ) उपरोक्त सभी

2 -

लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले खीरे के इस्तेमाल का तरीका जानते हैं। ग्राहक के लिए जीरा - मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया भी हाज़िर कर देते हैं। नवाब साहब ने बहुत करीने से खीरे की फाँकों पर जीरा - मिला नमक और लाल मिर्च की सुर्खी बुरक दी। उनकी प्रत्येक भाव - भंगिमा और जबड़ों के स्फुरण से स्पष्ट था कि उस प्रक्रिया में उनका मुख खीरे के रसास्वादन की कल्पना से प्लावित हो रहा था।

हम कनखियों से देखकर सोच रहे थे , मियाँ रईस बनते हैं , लेकिन लोगों की नज़रों से बच सकने के खयाल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं।

नवाब साहब ने फिर एक बार हमारी ओर देख लिया , ‘ वल्लाह , शौक कीजिए , लखनऊ का बालम खीरा है ! ’ खीरे की एक फाँक उठाकर होंठों तक ले गए। फाँक को सूँघा। स्वाद के आनंद में पलकें मुँद गईं। मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया। तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। नवाब साहब खीरे की फाँकों को नाक के पास ले जाकर , वासना से रसास्वादन कर खिड़की के बाहर फेंकते गए। नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पोंछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से हमारी ओर देख लिया , मानो कह रहे हों - यह है खानदानी रईसों का तरीका। नवाब साहब खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से थककर लेट गए। हमें तसलीम में सिर खम कर लेना पड़ा - यह है खानदानी तहज़ीब , नफ़ासत और नज़ाकत !

प्रश्न 1 - लखनऊ स्टेशन पर खीरा बेचने वाले के खीरे के इस्तेमाल का तरीका क्या है?

(क) ग्राहक के लिए जीरा-मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया भी हाज़िर कर देते हैं

(ख) ग्राहक के लिए नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया हाज़िर कर देते हैं

(ग) ग्राहक के लिए जीरा-मिला नमक की पुड़िया हाज़िर कर देते हैं

(घ) ग्राहक के लिए पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया हाज़िर कर देते हैं

प्रश्न 2 - लेखक कनखियों से देखकर नवाब साहब के बारे में क्या सोच रहे थे?

(क) मियाँ रईस बनते हैं , लेकिन शौक खीरा खाने का रखते हैं।

(ख) मियाँ रईस बनते हैं , लेकिन लोगों से बात करने का कोई सलीका नहीं।

(ग) मियाँ रईस बनते हैं , लेकिन लोगों की नज़रों से बच सकने के खयाल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं।

(घ) मियाँ रईस बनते हैं , लेकिन लोगों की नज़रों से बच कर सेकण्ड क्लास में सफ़र कर रहे हैं।

प्रश्न 3 - नवाब साहन खीरे की एक फाँक को उठाकर होंठों तक लेने, फाँक को सूँघने, स्वाद के आनंद में मुँह में भर आने पर खीरे की फाँक के साथ क्या करते थे?

(क) तब नवाब साहब ने फाँक को खा लिया।

(ख) तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया।

(ग) तब नवाब साहब ने फाँक को लेखक को दे दिया।

(घ) तब नवाब साहब ने फाँक को वापिस तौलिए पर रख दिया।

प्रश्न 4 - नवाब साहब ने खीरे की सब फाँकों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से हाथ और होंठ पोंछ लिए और गर्व से गुलाबी आँखों से लेखक की ओर देख लिया , ऐसा कर वे क्या कहना चाह रहे थे?

(क) यह है खानदानी रईसों का तरीका

(ख) यह है रईसों द्वारा खाने का तरीका

(ग) यह है खानदानी लोगों का दिखावा करने का तरीका

(घ) यह है रईसों के दिखावे का तरीका

प्रश्न 5 - नवाब साहब क्यों थककर लेट गए?

(कसमझा कर-लेखक को समझा (

(खसफ़र की तैयारी और इस्तेमाल से (

(गकरते-लेखक से बात करते (

(घखीरे की तैयारी और इस्तेमाल से (

<u>उत्तर</u>

उत्तर -1. (क) ग्राहक के लिए जीरा-मिला नमक और पिसी हुई लाल मिर्च की पुड़िया भी हाज़िर कर देते हैं

उत्तर -2. (ग) मियाँ रईस बनते हैं , लेकिन लोगों की नज़रों से बच सकने के खयाल में अपनी असलियत पर उतर आए हैं

उत्तर -3. (ख) तब नवाब साहब ने फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया

उत्तर - 4.(क) यह है खानदानी रईसों का तरीका

उत्तर -5. (घ) खीरे की तैयारी और इस्तेमाल से

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. लेखक को नवाब साहब के किन हाव-भावों से महसूस हुआ कि वे उनसे बातचीत करने के लिए तनिक भी उत्सुक नहीं हैं?

उत्तर- भीड़ से बचकर यात्रा करने के उद्देश्य से जब लेखक सेकंड क्लास के डिब्बे में चढ़ा तो देखा उसमें एक नवाब साहब पहले से बैठे थे। लेखक को देखकर

- नवाब साहब के चिंतन में व्यवधान पड़ा, जिससे उनके चेहरे पर व्यवधान के भाव उभर आए।
- नवाब साहब की आँखों में असंतोष का भाव उभर आया।
- उन्होंने लेखक से बातचीत करने की पहल नहीं की।
- लेखक की ओर देखने के बजाय वे खिड़की से बाहर देखते रहे।
- कुछ देर बाद वे डिब्बे की स्थिति को देखने लगे।

इन हाव-भावों को देखकर लेखक ने जान लिया कि नवाब साहब उनसे बातचीत करने के इच्छुक नहीं हैं।

प्रश्न 2. नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंततः सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर- नवाब साहब ने यत्नपूर्वक खीरा काटकर नमक-मिर्च छिड़का और सूँघकर खिड़की से बाहर फेंक दिया। उनका ऐसा करना उनकी नवाबी ठसक दिखाता है। वे लोगों के कार्य व्यवहार से हटकर अलग कार्य करके अपनी नवाबी दिखाने की कोशिश करते हैं। उनका ऐसा करना उनके अमीर स्वभाव और नवाबीपन दिखाने की प्रकृति या स्वभाव को इंगित करता है।

प्रश्न 3. बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है। यशपाल के इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं?

उत्तर- लेखक का मानना है कि बिना विचार, घटना और पात्रों के भी क्या कहानी लिखी जा सकती है अर्थात विचार, घटना और पात्र के बिना कहानी नहीं लिखी जा सकती है। मैं लेखक के इन विचारों से पूर्णतया सहमत हूँ। वास्तव में कहानी किसी घटना विशेष का वर्णन ही तो है। इसका कारण क्या था, कब घटी, परिणाम क्या रहा तथा इस घटना से कौन-कौन प्रभावित हुए आदि का वर्णन ही कहानी है। अतः किसी कहानी के लिए विचार, घटना और पात्र बहुत ही आवश्यक हैं।

प्रश्न 4. आप इस निबंध को और क्या नाम देना चाहेंगे?

उत्तर- मैं इस निबंध को दूसरा नाम देना चाहूँगा-'रस्सी जल गई पर ऐंठन न गई' या नवाबी दिखावा। इसका कारण यह कि नवाब साहब की नवाबी तो कब की छिन चुकी थी पर उनमें अभी नवाबों वाली ठसक और दिखावे की प्रवृत्ति थी।

प्रश्न 5- दूसरी बार खीरा खाने के बारे में पूछने पर लेखक ने क्या बहाना बना कर मना किया?

उत्तर - नवाब साहब ने एक बार लेखक की ओर देख लिया और फिर उनसे एक बार खीरा खाने के लिए पूछ लिया , और साथ - ही - साथ उन खीरों की खासियत बताते हुए कहते हैं कि वे खीरे लखनऊ के सबसे प्रिय खीरें हैं। लेखक बताते हैं कि नमक - मिर्च छिड़क दिए जाने से उन ताज़े खीरे के पानी से भरे लम्बे - लम्बे टुकड़ों को देख कर उनके मुँह में पानी ज़रूर आ रहा था , लेकिन लेखक पहले ही इनकार कर चुके थे , जिस कारण लेखक ने अपना आत्मसम्मान बचाना ही उचित समझा , और उन्होंने नवाब साहब का शुक्रिया करते हुए उत्तर दिया कि इस वक्त उन्हें खीरे खाने की इच्छा महसूस नहीं हो रही है , और साथ ही साथ लेखक ने अपनी पाचन शक्ति कमज़ोर होने का बहाना बनाते हुए नवाब साहब को ही खीरे खाने को कहा।

प्रश्न 6 - नवाब साहब ने खीरे के टुकड़ों के साथ क्या किया?

उत्तर - नवाब साहब ने खीरे के एक टुकड़े को उठाया और अपने होंठों तक ले गए , फिर उस टुकड़े को सूँघा , उस खीरे के स्वाद की कल्पना की ख़ुशी में लेखक की पलकें बंद हो गई अर्थात नवाब साहब केवल खीरे को सूँघ कर उसके स्वाद का अंदाजा लगा रहे थे। खीरे के स्वाद के अंदाज़े से नवाब साहब के मुँह में भर आए पानी का घूँट उनके गले से नीचे उतर गया। यह सब करने के बाद नवाब साहब ने खीरे के टुकड़े को बिना खाए ही खिड़की से बाहर छोड़

दिया। नवाब साहब ने खीरे के हर एक टुकड़े को नाक के पास ले जाकर , अपनी कल्पना में ही खीरे के रस का स्वाद ले कर खीरे के हर टुकड़े को खिड़की के बाहर फेंकते गए। लेखक बताते हैं कि नवाब साहब ने खीरे के सभी टुकड़ों को खिड़की के बाहर फेंककर तौलिए से अपने हाथ और होंठ पोंछ लिए।

प्रश्न 7 - लेखक ने सेकंड क्लास का टिकट क्यों लिया?

उत्तर - लेखक बताते हैं कि आराम से अगर लोकल ट्रेन के सेकंड क्लास में जाना हो तो उसके लिए कीमत भी अधिक लगती है। लेखक को बहुत दूर तो जाना नहीं था। लेकिन लेखक ने टिकट सेकंड क्लास का ही ले लिया ताकि वे अपनी नयी कहानी के संबंध में सोच सके और खिड़की से प्राकृतिक दृश्य का नज़ारा भी ले सकें , इसलिए भीड़ से बचकर , शोरगुल से रहित ऐसा स्थान जहाँ कोई न हो , लेखक ने चुना।

प्रश्न 8- सेकंड क्लास के डिब्बे में लेखक के अंदाज़े के विपरीत क्या घटा?

उत्तर - लेखक जिस लोकल ट्रेन से जाना चाहता था , किसी कारण थोड़ी देरी होने के कारण लेखक से वह गाड़ी छूट रही थी। सेकंड क्लास के एक छोटे डिब्बे को खाली समझकर , लेखक ज़रा दौड़कर उसमें चढ़ गए। लेखक ने अंदाज़ा लगाया था कि लोकल ट्रेन का वह सेकंड क्लास का छोटा डिब्बा खाली होगा परन्तु लेखक के अंदाज़े के विपरीत वह डिब्बा खाली नहीं था। उस डिब्बे के एक बर्थ पर लखनऊ के नवाबी परिवार से सम्बन्ध रखने वाले एक सफेद कपड़े पहने हुए सज्जन व्यक्ति बहुत सुविधा से पालथी मार कर बैठे हुए थे।

प्रश्न 9- सेकंड क्लास में बैठे उन सज्जन की नाराज़गी का लेखक क्या अंदाजा लगाते हैं?

उत्तर - उन सज्जन ने अपने सामने दो ताज़े-चिकने खीरे तौलिए पर रखे हुए थे। लेखक के उस डिब्बे में अचानक से कूद जाने के कारण उन सज्जन की आँखों में जो गहराई से सोचने का भाव या कहा जा सकता है कि उसके ध्यान में बाधा या अड़चन पड़ गई थी , जिस कारण उन सज्जन की नाराज़गी साफ़ दिखाई दे रही थी। लेखक उन सज्जन की नाराज़गी को देख कर सोचने लगे कि , हो सकता है , वे सज्जन भी किसी कहानी के लिए कुछ सोच रहे हों या ऐसा भी हो सकता है कि लेखक ने उन सज्जन को खीरे - जैसी तुच्छ वस्तु का शौक करते देख लिया था और इसी हिचकिचाहट के कारण वे नाराज़गी में हों।

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1 - लखनवी अंदाज़ पाठ के अनुसार नवाबों की प्रमुख विशेषता क्या है?

(क) खीरे को किसी दूसरे के साथ न बाँटना

(ख) खीरे को तुच्छ वस्तु समझना

(ग) अपने आप को दूसरे से बेहतर व श्रेष्ठ समझना है

(घ) अकेले ही सफ़र करना

प्रश्न 2 - लेखक ने लोकल ट्रेन (मुफस्सिल) के सेकंड क्लास का महंगा टिकट क्यों खरीदा?

(क) लोकल ट्रेन (मुफस्सिल) के सेकंड क्लास का आनंद लेने के लिए

(ख) भीड़ से बचने व एकांत में किसी नई कहानी के बारे में सोचने के लिए

(ग) भीड़ से बचने के लिए

(घ) एकांत में किसी नई कहानी के बारे में सोचने के लिए

प्रश्न 3 - लेखक कौन से डिब्बे को खाली समझकर उसमें चढ़ गए थे?

(क) सेकंड क्लास

(ख) फर्स्ट क्लास

(ग) फोर्थ क्लास

(घ) थर्ड क्लास

प्रश्न 4 - लेखक सेकंड क्लास के डिब्बे को खाली समझकर चढ़े थे, वहाँ पहले से कौन बैठा था?
(क) एक लखनवी मंत्री
(ख) लेखक का मित्र
(ग) एक लखनवी नवाब
(घ) सफ़ेदपोश व्यक्ति

प्रश्न 5 - "सफ़ेदपोश" का क्या अर्थ है?
(क) जिसने सफेद पोशाक पहनी हो।
(ख) भद्रपुरुष
(ग) जो सफेद कपड़े बेचता है।
(घ) वकील

प्रश्न 6 - लेखक की पुरानी आदत कौन सी थी?
(क) जब लेखक खाली बैठे होते तो वो अनेक प्रकार की कविताएँ रचने लग जाते थे।
(ख) जब लेखक खाली बैठे होते तो वो अनेक प्रकार की कहानियां लिखने लग जाते थे।
(ग) जब लेखक खाली बैठे होते तो वो कहीं घूमने चले जाते थे।
(घ) जब लेखक खाली बैठे होते तो वो अनेक प्रकार की कल्पनाएं करने लग जाते थे।

प्रश्न 7 - लेखक के अनुसार नवाब साहब द्वारा सेकंड क्लास में यात्रा करने के क्या कारण हो सकते हैं?
(क) नवाबी शान का दिखावा करना
(ख) भीड़ से राहत पाना
(ग) शांति व सुकून से यात्रा करना
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8 - लखनवी नवाब ने खीरे किसके ऊपर रखे हुए थे?
(क) एक प्लेट के (ख) एक तौलिए के (ग) एक रुमाल के (घ) एक कटोरी के

प्रश्न 9 - लेखक को देखकर नवाब साहब क्यों खुश नहीं हुए?
(क) क्योंकि उन्हें लगा कि उन्हें अपना खीरा बाँटना पड़ेगा।
(ख) क्योंकि उन्हें लगा कि उन्हें अपनी सीट लेखक को देनी पड़ेगी।
(ग) क्योंकि वे अपने परिवार का इन्तजार कर रहे थे।
(घ) क्योंकि उन्हें अपना एकांत भंग होता हुआ दिखाई दिया।

उत्तर -1. (ग) अपने आप को दूसरे से बेहतर व श्रेष्ठ समझना है
उत्तर -2 (ख) भीड़ से बचने व एकांत में किसी नई कहानी के बारे में सोचने के लिए
उत्तर -3 (क) सेकंड क्लास
उत्तर - 4(ग) एक लखनवी नवाब
उत्तर -5 (ख) भद्रपुरुष
उत्तर -6 (घ) जब लेखक खाली बैठे होते तो वो अनेक प्रकार की कल्पनाएं करने लग जाते थे
उत्तर -7 (घ) उपरोक्त सभी
उत्तर -8 (ख) एक तौलिए के
उत्तर - 9 (घ) क्योंकि उन्हें अपना एकांत भंग होता हुआ दिखाई दिया

एक कहानी यह भी

प्रस्तुत पाठ में लेखिका ने अपने जीवन के महत्वपूर्ण तथ्यों को उभारा है। लेखिका का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव हुआ था परन्तु उनकी यादें अजमेर के ब्रह्मपुरी मोहल्ले के एक-दो मंजिला मकान में पिता की बिगड़ी हुई मनःस्थिति से शुरू हुई। आरम्भ में लेखिका के पिता इंदौर में रहते थे, वहाँ संपन्न तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। काँग्रेस से जुड़े होने के साथ वे समाज सेवा से भी जुड़े थे परन्तु किसी के द्वारा धोखा दिए जाने पर वे आर्थिक मुसीबत में फँस गए और अजमेर आ गए। अपने जमाने के अलग तरह के अंग्रेजी-हिंदी शब्दकोष को पूरा करने बाद भी जब उन्हें धन नहीं मिला तो सकरात्मकता घटती चली गयी। वे बेहद क्रोधी, जिद्दी और शक्की हो गए, जब तब वे अपना गुस्सा लेखिका की बिन पढ़ी माँ पर उतारने के साथ-साथ अपने बच्चों पर भी उतारने लगे। पाँच भाई-बहनों में लेखिका सबसे छोटी थीं। कम उम्र में उनकी बड़ी बहन की शादी होने के कारण लेखिका के पास ज्यादा उनकी यादें नहीं थीं। लेखिका काली थीं तथा उनकी बड़ी बहन सुशीला के गोरी होने के कारण पिता हमेशा उनकी तुलना लेखिका से किया करते तथा उन्हें नीचा दिखाते। इस हीनता की भावना ने उनमें विशेष बनने की लगन उत्पन्न की परन्तु लेखकीय उपलब्धियाँ मिलने पर भी वह इससे उबार नहीं पाई। बड़ी बहन के विवाह तथा भाइयों के पढ़ने के लिए बाहर जाने पर पिता का ध्यान लेखिका पर केंद्रित हुआ। पिता ने उन्हें रसोई में समय ख़राब न कर देश दुनिया का हाल जानने के लिए प्रेरित किया। घर में जब कभी विभिन्न राजनीतिक पार्टियों के जमावड़े होते और बहस होती तो लेखिका के पिता उन्हें उस बहस में बिठाते जिससे उनके अंदर देशभक्ति की भावना जगी।

सन 1945 में सावित्री गर्ल्स कॉलेज के प्रथम वर्ष में हिंदी प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने लेखिका में न केवल हिंदी साहित्य के प्रति रूचि जगाई बल्कि साहित्य के सच को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित भी किया। सन 1946-1947 के दिनों में लेखिका ने घर से बाहर निकलकर देशसेवा में सक्रिय भूमिका निभायी। हड़तालों, जुलूसों व भाषणों में भाग लेने से छात्राएँ भी प्रभावित होकर कॉलेजों का बहिष्कार करने लगीं। प्रिंसिपल ने कॉलेज से निकाल जाने से पहले पिता को बुलाकर शिकायत की तो वे क्रोधित होने के बजाय लेखिका के नेतृत्व शक्ति को देखकर गद्गद हो गए। एक बार जब पिता ने अजमेर के व्यस्त चौराहे पर बेटी के भाषण की बात अपने दक़ियानूसी मित्र से सुनी जिसने उन्हें मान-मर्यादा का लिहाज करने को कहा तो उनके पिता गुस्सा हो गए परन्तु रात को जब यही बात उनके एक और अभिन्न मित्र ने लेखिका की बड़ाई करते हुए कहा जिससे लेखिका के पिता ने गौरवान्वित महसूस किया।

सन 1947 के मई महीने में कॉलेज ने लेखिका समेत दो-तीन छात्राओं का प्रवेश थर्ड ईयर में हुड़दंग की कारण निषिद्ध कर दिया परन्तु लेखिका और उनके मित्रों ने बाहर भी इतना हुड़दंग मचाया कि आखिर उन्हें प्रवेश लेना ही पड़ा। यह ख़ुशी लेखिका को उतना खुश न कर पायी जितना आजादी की ख़ुशी ने दी। उन्होंने इसे शताब्दी की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया है।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

1. पाँच भाई-बहिनों में सबसे छोटी मैं। सबसे बड़ी बहिन की शादी के समय मैं शायद सात साल की थी और उसकी एक धुँधली - सी याद ही मेरे मन में है , लेकिन अपने से दो साल बड़ी बहिन सुशीला और मैंने घर के बड़े से आँगन में बचपन के सारे खेल खेले - सतोलिया , लँगड़ी - टाँग , पकड़म - पकड़ाई , काली-टीलो ... तो कमरों में गुड्डे - गुड़ियों के ब्याह भी रचाए , पास - पड़ोस की सहेलियों के साथ। यों खेलने को हमने भाइयों के साथ गिल्ली - डंडा भी खेला और पतंग उड़ाने , काँच पीसकर माँजा सूतने का काम भी किया , लेकिन उनकी गतिविधियों का दायरा घर के बाहर ही अधिक रहता था और हमारी सीमा थी घर। हाँ , इतना ज़रूर था कि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं इसलिए मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी नहीं थी, बल्कि कुछ घर तो परिवार का हिस्सा ही थे। आज तो मुझे बड़ी शिद्दत के साथ यह महसूस होता है कि अपनी ज़िदगी खुद जीने के इस आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को हमारे इस परंपरागत ‘पड़ोस-कल्चर’ से विच्छिन्न करके हमें कितना संकुचित , असहाय और असुरक्षित बना दिया है।

प्रश्न 1 - अपनी बड़ी बहन की शादी में लेखिका कितने साल की थी?

(क) छः

(ख) सात

(ग) पाँच

(घ) चार

प्रश्न 2 - बड़ी बहिन सुशीला और लेखिका ने घर के बड़े से आँगन में बचपन के कौन से खेल खेले?

(क) सतोलिया , लँगड़ी - टाँग

(ख) पकड़म - पकड़ाई

(ग) काली - टीलो

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 3 - भाइयों के साथ गिल्ली - डंडा और पतंग उड़ाने , काँच पीसकर माँजा सूतने जैसे खेलों की सीमा लेखिका के लिए कहाँ तक थी?

(क) केवल घर तक

(ख) घर के बाहर तक

(ग) पड़ोसियों के घर तक

(घ) घर की छत तक

प्रश्न 4 - मोहल्ले के किसी भी घर में जाने पर कोई पाबंदी क्यों नहीं थी?

(क) क्योंकि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त थीं

(ख) क्योंकि उस ज़माने में घर में दीवारें ही नहीं होती थीं

(ग) क्योंकि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं

(घ) क्योंकि उस ज़माने में घर की दीवारें किसी भी घर में जाती थी

प्रश्न 5 - अपनी ज़िंदगी खुद जीने के आधुनिक दबाव ने महानगरों के फ़्लैट में रहने वालों को किस परंपरागत कल्चर को विच्छिन्न कर दिया है?

(क) सांस्कृतिक-कल्चर को

(ख) मिलनसार-कल्चर को

(ग) रूढ़िवादी-कल्चर को

(घ) पड़ोस-कल्चर को

उत्तर - 1 (ख) सात

उत्तर - 2 (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर -3 (क) केवल घर तक

उत्तर -4 (ग) क्योंकि उस ज़माने में घर की दीवारें घर तक ही समाप्त नहीं हो जाती थीं बल्कि पूरे मोहल्ले तक फैली रहती थीं

उत्तर - 5 (घ) पड़ोस-कल्चर को

2. घर में आए दिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों के जमावड़े होते थे और जमकर बहसें होती थीं। बहस करना पिता जी का प्रिय शगल था। चाय - पानी या नाश्ता देने जाती तो पिता जी मुझे भी वहीं बैठने को कहते। वे चाहते थे कि मैं भी वहीं बैठूँ , सुनूँ और जानूँ कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है। देश में हो भी तो कितना कुछ रहा था।

सन् ' 42 के आंदोलन के बाद से तो सारा देश जैसे खौल रहा था , लेकिन विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ , उनके आपसी विरोध या मतभेदों की तो मुझे दूर - दूर तक कोई समझ नहीं थी। हाँ , क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण , उनकी कुर्बानियों से ज़रूर मन आक्रांत रहता था। सो दसवीं कक्षा तक आलम यह था कि बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी और बिना चुनाव किए , बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी। लेकिन सन् ' 45 में जैसे ही दसवीं पास करके मैं ' फर्स्ट इयर ' में आई , हिंदी की प्राध्यापिका शीला अग्रवाल से परिचय हुआ। सावित्री गर्ल्स हाई स्कूल ... जहाँ मैंने ककहरा सीखा , एक साल पहले ही कॉलिज बना था और वे इसी साल नियुक्त हुई थीं , उन्होंने बाकायदा साहित्य की दुनिया में प्रवेश करवाया।

प्रश्न 1 - लेखिका के घर में आए दिन किसके जमावड़े होते थे?

(क) सांस्कृतिक पार्टियों के

(ख) राजनैतिक पार्टियों के

(ग) पारिवारिक पार्टियों के

(घ) सहपाठियों के

प्रश्न 2 - लेखिका के पिता क्या चाहते थे?

(क) कि लेखिका यह जाने कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है

(ख) कि लेखिका राजनैतिक पार्टियों में हिस्सा लें

(ग) कि लेखिका अपने पिता के पास बैठे, उन्हें सुने और जाने

(घ) कि लेखिका घर के सारे काम - काज करना सीख जाए

प्रश्न 3 - लेखिका को किसकी समझ नहीं थी?

(क) सन् ' 42 के आंदोलन की

(ख) विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की

(ग) क्रांतिकारियों और देशभक्त शहीदों के रोमानी आकर्षण , उनकी कुर्बानियों की

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 - लेखिका दसवीं कक्षा तक क्या करती थी?

(क) बिना किसी खास समझ के घर में होने वाली बहसें सुनती थी

(ख) बिना चुनाव किए , बिना लेखक की अहमियत से परिचित हुए किताबें पढ़ती थी

(ग) केवल (क)

(घ) (क) और (ख) दोनों

प्रश्न 5 - लेखिका को साहित्य की दुनिया में किसने प्रवेश करवाया?

(क) प्राध्यापिका शीला अग्रवाल

(ख) प्राध्यापिका वीणा अग्रवाल

(ग) प्राध्यापिका शीना अग्रवाल

(घ) प्राध्यापिका सीला अग्रवाल

उत्तर - 1. (ख) राजनैतिक पार्टियों के

उत्तर - 2 (क) कि लेखिका यह जाने कि देश में चारों ओर क्या कुछ हो रहा है

उत्तर - 3 (ख) विभिन्न राजनैतिक पार्टियों की नीतियाँ, उनके आपसी विरोध या मतभेदों की

उत्तर - 4 (घ) (क) और (ख) दोनों

उत्तर -5 (क) प्राध्यापिका शीला अग्रवाल

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?

उत्तर- लेखिका के व्यक्तित्व पर मुख्यतया दो लोगों का प्रभाव पड़ा, जिन्होंने उसके व्यक्तित्व को गहराई तक प्रभावित किया। ये दोनों लोग हैं-

पिता का प्रभाव - लेखिका के जीवन पर पिताजी का ऐसा प्रभाव पड़ा कि वे हीन भावना से ग्रसित हो गई। इसी के परिमाण स्वरुप उनमें आत्मविश्वास की भी कमी हो गई थी।पिता के द्वारा ही उनमें देश प्रेम की भावना का भी निर्माण हुआ था।

प्राध्यापिका शीला अग्रवाल का प्रभाव- शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने एक ओर लेखिका के खोए आत्मविश्वास को पुन: लौटाया तो दूसरी ओर देशप्रेम की अंकुरित भावना को उचित माहौल प्रदान किया। जिसके फलस्वरूप लेखिका खुलकर स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने लगी।

प्रश्न 2. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तर- लेखिका के पिता का मानना था कि रसोई के काम में लग जाने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने - खाने तक ही सीमित रह जाती हैं और अपनी सही प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पातीं। इसप्रकार प्रतिभा को भट्टी में झोंकने वाली जगह होने के कारण ही वे रसोई को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित करते थे।

प्रश्न 3. वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिको को ने अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?

उत्तर- लेखिका राजनैतिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर भाग ले रही थी। इस कारण लेखिका के कॉलेज की प्रिंसिपल ने उसके पिता के पास पत्र भेजा जिसमें अनुशासनात्मक कार्यवाही करने की बात लिखी थी। यह पढ़कर पिता जी गुस्से में आ गए। कॉलेज की प्रिंसिपल ने जब बताया कि मन्नू के एक इशारे पर लड़कियाँ बाहर आ जाती हैं और नारे लगाती हुई प्रदर्शन करने लगती हैं तो पिता जी ने कहा कि यह तो देश की माँग है। वे हर्ष से गदगद होकर जब यही बात लेखिका की माँ को बता रहे थे तो इस बात पर लेखिका को विश्वास नहीं हो पाया।

प्रश्न 4. लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- लेखिका और उसके पिता के विचारों में कुछ समानता के साथ-साथ असमानता भी थी। लेखिका के पिता में विशिष्ट बनने और बनाने की चाह थी पर वे चाहते थे कि यह सब घर की चारदीवारी में रहकर हो, जो संभव नहीं था। वे नहीं चाहते। थे कि लेखिका सड़कों पर लड़कों के साथ हाथ उठा-उठाकर नारे लगाए, जुलूस निकालकर हड़ताल करे। दूसरी ओर लेखिका को अपनी घर की चारदीवारी तक सीमित आज़ादी पसंद नहीं थी। यही दोनों के मध्य टकराव का कारण था।

प्रश्न 5. इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।

उत्तर- स्वाधीनता आंदोलन के समय (सन् 1942 से 1947 तक) देश में देशप्रेम एवं देशभक्ति की भावना अपने चरम पर थी। आज़ादी पाने के लिए जगह-जगह हड़तालें, प्रदर्शन, जुलूस, प्रभात फेरियाँ निकाली जा रही थीं। इस आंदोलन के प्रभाव से मन्नू भी अछूती नहीं थी। वह सड़क के चौराहे पर हाथ उठा-उठाकर भाषण देतीं, हड़तालें करवाती तथा अंग्रेजों के विरुद्ध विरोध प्रकट करने के लिए दुकानें बंद करवाती। इस तरह लेखिका इस आंदोलन में सक्रिय भागीदारी निभा रही थी।

(बहुविकल्पीय प्रश्न)

प्रश्न 1 - जिस मकान में लेखिका बचपन में रहती थीं वह कितना मंज़िला मकान था?

(क) एक - मंज़िला (ख) तीन - मंज़िला (ग) दो - मंज़िला (घ) चार - मंज़िला

प्रश्न 2 - लेखिका ने अपने पिता जी के कमरे को साम्राज्य क्यों बताया है?

(क) क्योंकि लेखिका के पिता जी पूरे घर को अपने अधीन रखते थे
(ख) क्योंकि लेखिका का घर बहुत बड़ा था
(ग) क्योंकि लेखिका के घर में बहुत से लोग रहते थे
(घ) क्योंकि लेखिका के पिता किसी राजा की तरह व्यवहार करते थे

प्रश्न 3 - लेखिका के अनुसार उनके पिता जी कहाँ खुशहाल जिंदगी जी रहे थे?

(क) मद्रास (ख) इंदौर (ग) अजमेर (घ) जैसलमेर

प्रश्न 4 - किस कारण लेखिका के पिता इंदौर से अजमेर आ गए थे?

(क) आर्थिक झटके के कारण (ख) राजनीतिक झटके के कारण
(ग) स्वाभाविक झटके के कारण (घ) मानसिक झटके के कारण

प्रश्न 5 - लेखिका के पिता जी ने अकेले के बल - बूते और हौसले से किस अधूरे काम को आगे बढ़ाना शुरू किया?

(क) विषय पर आधारित कठिन शब्दार्थ के
(ख) विषय पर आधारित अंग्रेज़ी - हिंदी शब्दकोश के
(ग) विषय पर आधारित अंग्रेज़ी शब्दकोश के
(घ) विषय पर आधारित हिंदी शब्दकोश के

प्रश्न 6 - अपनी गिरती आर्थिक स्थिति के कारण और सफलता से असफलता की ओर खिसकने के कारण आए गुस्से को लेखिका के पिता किस पर निकाला करते थे?

(क) लेखिका पर (ख) अपनी पत्नी पर (ग) अपने बच्चों पर (घ) रिश्तेदारों पर

प्रश्न 7 - अचेतन मन में किसी पर्त के नीचे अब भी कोई हीन-भावना दबी हुई है जिसके चलते लेखिका को किस पर भरोसा नहीं हो पाता है?

(क) अपनी किसी भी कविता पर
(ख) अपनी किसी भी लेख पर
(ग) अपनी किसी भी उपलब्धि पर
(घ) अपनी किसी भी विशेषता पर

प्रश्न 8 - लेखिका अपनी माँ के धैर्य , शांति और सब्र की तुलना किससे करती हैं?

(क) धरती से
(ख) पिता जी से
(ग) अपने आप से
(घ) पानी से

प्रश्न 9 - लेखिका अपनी माँ की किन विशेषताओं को अपने व्यवहार में शामिल नहीं कर सकीं?

(क) उनका त्याग
(ख) उनकी सहनशीलता
(ग) उनकी क्षमाशीलता
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 10 - लेखिका अपने पाँच भाई - बहिनों में किस नंबर पर थी?

(क) दूसरे
(ख) तीसरे
(ग) सबसे छोटी
(घ) सबसे बड़ी

उत्तर

उत्तर - 1 (ग) दो - मंज़िला

उत्तर - 2 (क) क्योंकि लेखिका के पिता जी पूरे घर को अपने अधीन रखते थे

उत्तर - 3 (ग) अजमेर

उत्तर - 4 (क) आर्थिक झटके के कारण

उत्तर - 5 (ख) विषय पर आधारित अंग्रेज़ी - हिंदी शब्दकोश के

उत्तर - 6 (ख) अपनी पत्नी पर

उत्तर - 7 (ग) अपनी किसी भी उपलब्धि पर

उत्तर - 8 (क) धरती से

उत्तर - 9 (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर -10 (ग) सबसे छोटी

नौबतखाने में इबादत

अम्मीरुद्दीन उर्फ़ बिस्मिल्ला खाँ का जन्म बिहार में डुमराँव के एक संगीत प्रेमी परिवार में हुआ। इनके बड़े भाई का नाम शम्सुद्दीन था जो उम्र में उनसे तीन वर्ष बड़े थे। इनके परदादा उस्ताद सलार हुसैन खाँ डुमराँव के निवासी थे। इनके पिता का नाम पैग़म्बरबख़्श खाँ तथा माँ मिट्ठन थीं। पाँच-छह वर्ष होने पर वे डुमराँव छोड़कर अपने ननिहाल काशी आ गए। वहाँ उनके मामा सादिक हुसैन और अलीबक्श तथा नाना रहते थे जो की जाने माने शहनाईवादक थे। वे लोग बाला जी के मंदिर की ड्योढ़ी पर शहनाई बजाकर अपनी दिनचर्या का आरम्भ करते थे। वे विभिन्न रियासतों के दरबार में बजाने का काम करते थे।

ननिहाल में 14 साल की उम्र से ही बिस्मिल्ला खाँ ने बाला जी के मंदिर में रियाज़ करना शुरू कर दिया। उन्होंने वहाँ जाने का ऐसा रास्ता चुना जहाँ उन्हें रसूलन और बतूलन बाई की गीत सुनाई देती जिससे उन्हें ख़ुशी मिलती। अपने साक्षात्कारों में भी इन्होनें स्वीकार किया की बचपन में इनलोगों ने इनका संगीत के प्रति प्रेम पैदा करने में भूमिका निभायी। भले ही वैदिक इतिहास में शहनाई का जिक्र ना मिलता हो परन्तु मंगल कार्यों में इसका उपयोग प्रतिष्ठित करता है अर्थात यह मंगल ध्वनि का सम्पूरक है। बिस्मिल्ला खाँ ने अस्सी वर्ष के हो जाने के बावज़ूद हमेशा पाँचो वक्त वाली नमाज में शहनाई के सच्चे सुर को पाने की प्रार्थना में बिताया। मुहर्रम के दसों दिन बिस्मिल्ला खाँ अपने पूरे खानदान के साथ ना तो शहनाई बजाते थे और ना ही किसी कार्यक्रम में भाग लेते। आठवीं तारीख को वे शहनाई बजाते और दालमंडी से फातमान की आठ किलोमीटर की दूरी तक भींगी आँखों से नौहा बजाकर निकलते हुए सबकी आँखों को भिगो देते।

फुरसत के समय वे उस्ताद और अब्बाजान को काम याद कर अपनी पसंद की सुलोचना गीताबाली जैसी अभिनेत्रियों की देखी फिल्मों को याद करते थे। वे अपनी बचपन की घटनाओं को याद करते कि कैसे वे छुपकर नाना को शहनाई बजाते हुए सुनाता तथा बाद में उनकी 'मीठी शहनाई' को ढूंढने के लिए एक-एक कर शहनाई को फेंकते और कभी मामा की शहनाई पर पत्थर पटककर दाद देते। बचपन के समय वे फिल्मों के बड़े शौक़ीन थे, उस समय थर्ड क्लास का टिकट छः पैसे का मिलता था जिसे पूरा करने के लिए वो दो पैसे मामा से, दो पैसे मौसी से और दो पैसे नाना से लेते थे फिर बाद में घंटों लाइन में लगकर टिकट खरीदते थे। बाद में वे अपनी पसंदीदा अभिनेत्री सुलोचना की फिल्मों को देखने के लिए वे बालाजी मंदिर पर शहनाई बजाकर कमाई करते। वे सुलोचना की कोई फिल्म ना छोड़ते तथा कुलसुम की देसी घी वाली दुकान पर कचौड़ी खाना ना भूलते।

काशी के संगीत आयोजन में वे अवश्य भाग लेते। यह आयोजन कई वर्षों से संकटमोचन मंदिर में हनुमान जयंती के अवसर हो रहा था जिसमे शास्त्रीय और उपशास्त्रीय गायन-वादन की सभा होती है। बिस्मिल्ला खाँ जब काशी के बाहर

भी रहते तब भी वो विश्वनाथ और बालाजी मंदिर की तरफ मुँह करके बैठते और अपनी शहनाई भी उस तरफ घुमा दिया करते। गंगा, काशी और शहनाई उनका जीवन थे। काशी का स्थान सदा से ही विशिष्ट रहा है, यह संस्कृति की पाठशाला है। बिस्मिल्ला खाँ के शहनाई के धुनों की दुनिया दीवानी हो जाती थी।

सन 2000 के बाद पक्का महाल से मलाई-बर्फ वालों के जाने से, देसी घी तथा कचौड़ी-जलेबी में पहले जैसा स्वाद ना होने के कारण उन्हें इनकी कमी खलती। वे नए गायकों और वादकों में घटती आस्था और रियाज़ों का महत्व के प्रति चिंतित थे। बिस्मिल्ला खाँ हमेशा से दो कौमों की एकता और भाईचारे के साथ रहने की प्रेरणा देते रहे। नब्बे वर्ष की उम्र में 21 अगस्त 2006 को उन्होने दुनिया से विदा ली । वे भारतरत्न, अनेकों विश्वविद्यालय की मानद उपाधियों व संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार तथा पद्मविभूषण जैसे पुरस्कारों से जाने नहीं जाएँगे बल्कि अपने अजेय संगीतयात्रा के नायक के रूप में पहचाने जाएँगे।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

वैदिक इतिहास में शहनाई का कोई उल्लेख नहीं मिलता। इसे संगीत शास्त्रांतर्गत ‘ सुषिर - वाद्यों ’ में गिना जाता है। अरब देश में फूँककर बजाए जाने वाले वाद्य जिसमें नाड़ी होती है , को ‘ नय ’ बोलते हैं। शहनाई को ‘ शाहेनय ’ अर्थात् ‘ सुषिर वाद्यों में शाह ’ की उपाधि् दी गई है। सोलहवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में तानसेन के द्वारा रची बंदिश, जो संगीत राग कल्पद्रुम से प्राप्त होती है , में शहनाई , मुरली , वंशी , शृंगी एवं मुरछंग आदि का वर्णन आया है। अवधी पारंपरिक लोकगीतों एवं चैती में शहनाई का उल्लेख बार - बार मिलता है। मंगल का परिवेश प्रतिष्ठित करने वाला यह वाद्य इन जगहों पर मांगलिक विधि् - विधानों के अवसर पर ही प्रयुक्त हुआ है। दक्षिण भारत के मंगल वाद्य ‘ नागस्वरम् ’ की तरह शहनाई , प्रभाती की मंगलध्वनि का संपूरक है। शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज़ इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सज़दे , इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज़ के बाद सज़दे में गिड़गिड़ाते हैं - ‘ मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ। ’

प्रश्न 1 - शहनाई को शास्त्रांतर्गत किस वाद्यों में गिना जाता है?

(क) सुषिर-वाद्यों

(ख) सुमिर-वाद्यों

(ग) कर्ण-वाद्यों

(घ) शिषिर-वाद्यों

प्रश्न 2 - प्रभाती क्या है?

(क) एक प्रकार का वाद्य जो प्रातःकाल बजाया जाता है।

(ख) एक प्रकार का संगीत जो प्रातःकाल समाप्ति पर गाया जाता है।

(ग) एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है।

(घ) एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल समाप्ति पर गाया जाता है।

प्रश्न 3 - शहनाई के मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब कितने बरस से सुर माँग रहे हैं?

(क) सत्तर बरस से

(ख) अटठ्ठासी बरस से

(ग) नवासी बरस से

(घ) अस्सी बरस से

प्रश्न 4 - बिस्मिल्ला खाँ साहब की अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज़ किसमें खर्च हो जाती है?

(क) शान्ति को पाने की प्रार्थना में

(ख) सुर को पाने की प्रार्थना में

(ग) यश को पाने की प्रार्थना में

(घ) शहनाई को पाने की प्रार्थना में

प्रश्न 5 - बिस्मिल्ला खाँ साहब नमाज़ के बाद सज़दे में क्या गिड़गिड़ाते हैं?

(क) मेरे मालिक एक सुर बख्श दे।

(ख) मेरे मालिक सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।

(ग) मेरे मालिक एक सुर में आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।

(घ) मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।

उत्तर - 1 (क) सुषिर-वाद्यों

उत्तर - 2 (ग) एक प्रकार का गीत जो प्रातःकाल गाया जाता है।

उत्तर- 3 (घ) अस्सी बरस से

उत्तर - (ख) सुर को पाने की प्रार्थना में।

उत्तर - (घ) मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आए।

2.अमीरुद्दीन तब सिर्फ चार साल का रहा होगा। छुपकर नाना को शहनाई बजाते हुए सुनता था , रियाज़ के बाद जब अपनी जगह से उठकर चले जाएँ तब जाकर ढेरों छोटी - बड़ी शहनाइयों की भीड़ से अपने नाना वाली शहनाई ढूँढ़ता और एक - एक शहनाई को फ़ेंक कर खारिज़ करता जाता , सोचता - ' लगता है मीठी वाली शहनाई दादा कहीं और रखते हैं। ' जब मामू अलीबख्श खाँ (जो उस्ताद भी थे) शहनाई बजाते हुए सम पर आएँ , तब धड़ से एक पत्थर ज़मीन पर मारता था। सम पर आने की तमीज़ उन्हें बचपन में ही आ गई थी , मगर बच्चे को यह नहीं मालूम था कि दाद वाह करके दी जाती है , सिर हिलाकर दी जाती है , पत्थर पटक कर नहीं। और बचपन के समय फिल्मों के बुखार के बारे में तो पूछना ही क्या ? उस समय थर्ड क्लास के लिए छः पैसे का टिकट मिलता था। अमीरुद्दीन दो पैसे मामू से , दो पैसे मौसी से और दो पैसे नानी से लेता था फिर घंटों लाइन में लगकर टिकट हासिल करता था। इधर सुलोचना की नयी फ़िल्म सिनेमाहाल में आई और उधर अमीरुद्दीन अपनी कमाई लेकर चला फ़िल्म देखने जो बालाजी मंदिर पर रोज़ शहनाई बजाने से उसे मिलती थी। एक अठन्नी मेहनताना। उस पर यह शौक ज़बरदस्त कि सुलोचना की कोई नयी फ़िल्म न छूटे और कुलसुम की देशी घी वाली दुकान। वहाँ की संगीतमय कचौड़ी। संगीतमय कचौड़ी इस तरह क्योंकि कुलसुम जब कलकलाते घी में कचौड़ी डालती थी , उस समय छन्न से उठने वाली आवाज़ में उन्हें सारे आरोह - अवरोह दिख जाते थे।

प्रश्न 1 - छोटा अमीरुद्दीन छुपकर किसको शहनाई बजाते हुए सुनता था?

(क) नाना को

(ख) मामा को

(ग) चाचा को

(घ) पिता को

प्रश्न 2 - मेहनताना का क्या अर्थ है?

(क) मेहनती व्यक्ति

(ख) परिश्रम

(ग) पारिश्रमिक

(घ) मज़दूर

प्रश्न 3 - छोटे अमरुद्दीन को जब अपने नाना की तरह अच्छे से शहनाई बजानी नहीं आती थी तो वह क्या सोचता था?
(क) लगता है मीठी वाली शहनाई कहीं खो गई है।
(ख) लगता है मीठी वाली शहनाई दादा कहीं और रखते हैं।
(ग) लगता है मीठी वाली शहनाई दादा ने मामा को दे दी हैं।
(घ) लगता है मीठी वाली शहनाई टूट गई हैं।
प्रश्न 4 - छोटे अमरुद्दीन किस तरह अपने मामा की शहनाई बजाने पर दाद देते थे?
(क) वाह करके
(ख) सिर हिलाकर
(ग) पत्थर पटक कर
(घ) उपरोक्त सभी
प्रश्न 5 - कचौड़ी को बिस्मिल्ला खाँ ने 'संगीतमय कचौड़ी' क्यों कहा है?
(क) क्योंकि बिस्मिल्ला खाँ संगीत सुनते हुए कचौड़ी खाया करते थे।
(ख) क्योंकि कुलसुम जब कलकलाते घी में कचौड़ी डालती थी, उस समय छन्न से उठने वाली आवाज़ में उन्हें सारे आरोह - अवरोह दिख जाते थे।
(ग) क्योंकि बिस्मिल्ला खाँ कलकलाते घी में कचौड़ी डालते थे तो कचौड़ी भी मानो संगीत गुनगुनाती थी।
(घ) क्योंकि बिस्मिल्ला खाँ को कलकलाते घी में कचौड़ी डालते हुए शहनाई बजाना पसंद था।
उत्तर - 1 (क) नाना को
उत्तर - 2 (ग) पारिश्रमिक
उत्तर - 3 (ख) लगता है मीठी वाली शहनाई दादा कहीं और रखते हैं
उत्तर - 4 (ग) पत्थर पटक कर
उत्तर - 5 (ख) क्योंकि कुलसुम जब कलकलाते घी में कचौड़ी डालती थी, उस समय छन्न से उठने वाली आवाज़ में उन्हें सारे आरोह - अवरोह दिख जाते थे ।

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?
उत्तर- शहनाई की दुनिया में डुमराँव को याद किए जाने के मुख्यतया दो कारण हैं
- शहनाई बजाने में जिस रीड का प्रयोग किया है वह डुमराँव में ही सोन नदी के किनारे मिलती है। इस रीड के बिना शहनाई बजना मुश्किल है।
- शहनाई की मंगल ध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ की जन्मस्थली डुमराँव ही है।

प्रश्न 2. बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक क्यों कहा गया है?
उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ को शहनाई की मंगल ध्वनि का नायक इसलिए कहा गया है क्योंकि शहनाई की ध्वनि मंगलदायी मानी जाती है। इसका वादन मांगलिक अवसरों पर किया जाता है। बिस्मिल्ला खाँ अस्सी बरस से भी अधिक समय तक शहनाई बजाते रहे। उनकी गणना भारत के सर्वश्रेष्ठ शहनाई वादक के रूप में की जाती है। उन्होंने शहनाई को भारत ही नहीं विश्व में लोकप्रिय बनाया।

प्रश्न 3. सुषिर-वाद्यों से क्या अभिप्राय है? शहनाई को 'सुषिर वाद्यों में शाह' की उपाधि क्यों दी गई होगी?
उत्तर- सुषिर वाद्यों से अभिप्राय उन वाद्यों से है जिनमें सूराख होते हैं और जिनमें फूँक मारकर बजाया जाता है। शहनाई, बाँसुरी, श्रृंगी आदि सुषिर वाद्य के अंतर्गत आते हैं।

इन सुषिर वाद्यों में शहनाई सबसे सुरीली और कर्ण प्रिय आवाज़ वाली होती है, इसलिए उसे 'सुषिर वाद्यों में शाह की उपाधि दी गई।

प्रश्न 4. आशय स्पष्ट कीजिए

(क) 'फटा सुर न बख्शे। लुंगिया का क्या है, आज फटी है, तो कल सी जाएगी।

(ख) 'मेरे मालिक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।'

उत्तर- **(क)** बिस्मिल्ला खाँ को दुनिया उनकी शहनाई के कारण जानती है, लुंगी के कारण नहीं। वे खुदा से हमेशा सुरों का वरदान माँगते रहे हैं। उन्हें लगता है कि अभी वे सुरों को बरतने के मामले में पूर्ण नहीं हो पाए हैं। यदि खुदा ने उन्हें ऐसा सुर और कला न दी होती तो वे प्रसिद्ध न हो पाते। फटे सुर को ठीक करना असंभव है पर फटे कपड़े आज नहीं तो कल सिल ही जाएँगे।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ महान कलाकार हैं। उन्हें अभिमान छू भी न गया है। सफलता के शिखर पर पहुँचने के बाद भी वे खुदा से ऐसा सुर माँगते हैं जिसे सुनकर लोग आनंदित हो उठे। इस आनंद से उनका रोम-रोम भीग जाए और उनकी आँखों से आनंद के आँसू बह निकले।

प्रश्न 5. काशी में हो रहे कौन-से परिवर्तन बिस्मिल्ला खाँ को व्यथित करते थे?

उत्तर- समय के साथ-साथ काशी में अनेक परिवर्तन हो रहे हैं जो बिस्मिल्ला खाँ को दुखी करते हैं, जैसे
पक्का महाल से मलाई बरफ़ वाले गायब हो रहे हैं।

- कुलसुम की कचौड़ियाँ और जलेबियाँ अब नहीं मिलती हैं।
- संगीत और साहित्य के प्रति लोगों में वैसा मान-सम्मान नहीं रहा।
- गायकों के मन में संगतकारों के प्रति सम्मान भाव नहीं रहा।
- हिंदू-मुसलमानों में सांप्रदायिक सद्भाव में कमी आ गई है।

प्रश्न 6. पाठ में आए किन प्रसंगों के आधार पर आप कह सकते हैं कि

(क) बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) वे वास्तविक अर्थों में एक सच्चे इनसान थे।

उत्तर- (क) बिस्मिल्ला खाँ अपने धर्म अर्थात् मुस्लिम धर्म के प्रति समर्पित इनसान थे। वे नमाज़ पढ़ते, सजदा करते और खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगते थे। इसके अलावा वे हज़रत इमाम हुसैन की शहादत पर दस दिनों तक शोक प्रकट करते थे तथा आठ किलोमीटर पैदल चलते हुए रोते हुए नौहा बजाया करते थे। इसी तरह वे काशी में रहते हुए गंगामैया, बालाजी और बाबा विश्वनाथ के प्रति असीम आस्था रखते थे। वे हनुमान जयंती के अवसर पर आयोजित शास्त्रीय गायन में भी उपस्थित रहते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे।

(ख) बिस्मिल्ला खाँ हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक थे। उन्हें धार्मिक कट्टरता छू भी न गई थी। वे खुदा और हज़रत इमाम हुसैन के प्रति जैसी आस्था एवं श्रद्धा रखते थे। वैसी ही श्रद्धा एवं आस्था गंगामैया, बालाजी, बाबा विश्वनाथ के प्रति भी रखते थे। वे काशी की गंगा-जमुनी संस्कृति में विश्वास रखते थे। इन प्रसंगों के आधार पर हम कह सकते हैं कि बिस्मिल्ला खाँ सच्चे इनसान थे।

प्रश्न 7. बिस्मिल्ला खाँ के जीवन से जुड़ी उन घटनाओं और व्यक्तियों का उल्लेख करें जिन्होंने उनकी संगीत साधना को समृद्ध किया?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ की संगीत साधना को समृद्ध करने वाले व्यक्ति और घटनाएँ निम्नलिखित हैं-

- बिस्मिल्ला खाँ अपने नाना को बचपन से मीठी शहनाई बजाते देखा करते थे। उनके चले जाने के बाद बालक अमीरुद्दीन उसी शहनाई को ढूँढ़ता।

- अपने मामूजान के सम पर आने पर अमीरुद्दीन पत्थर ज़मीन पर मारकर दाद दिया करता था।
- वे रसूलनबाई और बतूलनबाई का गायन सुनकर इतने प्रभावित हुए कि संगीत सीखने की दिशा में दृढ़ कदम उठा लिया।
- वे कुलसुम हलवाइन के कचौड़ियाँ तलने में संगीत की अनुभूति करते थे।

प्रश्न 8. बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?

उत्तर- बिस्मिल्ला खाँ के व्यक्तित्व की अनेक विशेषताएँ हैं, जिनसे मैं बहुत प्रभावित हुआ। इन विशेषताओं में प्रमुख हैं-

- सादाजीवन उच्च विचार : बिस्मिल्ला खाँ अत्यंत सादा जीवन जीते थे। वे लुंगी पहने ही आगंतुकों से मिलने चले आते थे, परंतु उनके विचार अत्यंत उच्च थे।
- निरभिमानी : सफलता की चोटी पर पहुँचने के बाद भी बिस्मिल्ला खाँ को अभिमान छू भी न गया था। इसके बाद भी खुदा से सच्चे सुर की नेमत माँगते रहते थे।
- धार्मिक सदभाव : बिस्मिल्ला खाँ अपने धर्म के प्रति समर्पित होकर नमाज़ अदा करते थे और हजरत इमाम हुसैन के बलिदान के प्रति दस दिन का शोक मनाते थे तो गंगा मइया, बाबा विश्वनाथ और बालाजी के प्रति भी असीम आस्था रखते थे।
- परिश्रमशील स्वभाव : बिस्मिल्ला खाँ अपने जीवन के अस्सी बरस पूरे करने के बाद भी रियाज़ करते थे और संगीत साधना के प्रति समर्पित रहते थे।
- सीखने की ललक : बिस्मिल्ला खाँ की एक विशेषता यह भी है कि उनमें सीखने की एक ललक थी। वे शहनाई के सर्वश्रेष्ठ कलाकार होने पर भी खुद को पूर्ण नहीं मानते थे। वे हमेशा सीखने के लिए लालायित रहते थे।

प्रश्न 1 - काशी का एक प्रसिद्ध घाट जो मान्यतानुसार पाँच नदियों का संगमस्थान है उसे किस नाम से जाना जाता है?

(क) पंचनदी

(ख) पंचगंगा

(ग) पंचसंगम

(घ) पंचनध्य

प्रश्न 2 - अमीरुद्दीन के मामा के घर का वश परपरागत या पैतृक काम क्या था?

(क) पूजा-पाठ करना

(ख) संगीत बजाना

(ग) शहनाई बजाना

(घ) मंदिर की सफाई करना

प्रश्न 3 - अमीरुद्दीन का परिवार कैसा था?

(क) मुस्लिम परिवार

(ख) तबला वादक परिवार

(ग) शहनाई प्रेमी परिवार

(घ) संगीत प्रेमी परिवार

प्रश्न 4 - शहनाई और डुमराँव के एक - दूसरे के लिए उपयोगी होने का क्या कारण दिया है?

(क) शहनाई बजाने वाले सबसे बड़े उस्ताद डुमराँव में की मुख्यतः सोन नदी के किनारे पर रहते हैं।

(ख) शहनाई बजाने के लिए जिस रीड का प्रयोग होता है वह डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है।

(ग) शहनाई बजाने के लिए जिस धातु का प्रयोग होता है वह डुमराँव में ही पाई जाती है।

(घ) शहनाई बजाने के लिए जिस लकड़ी का प्रयोग होता है वह डुमराँव के जंगलों में पाई जाती है।

प्रश्न 5 - अमीरुद्दीन को हम किस नाम से जानते हैं?

(क) उस्ताद मिट्ठन खाँ

(ख) उस्ताद पैगंबरबख्श खाँ

(ग) उस्ताद सलार हुसैन खाँ

(घ) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

प्रश्न 6 - बिस्मिल्ला खाँ के अनुसार किसके द्वारा उन्हें संगीत का आरंभिक ज्ञान प्राप्त हुआ है?

(क) उस्ताद सलार हुसैन खाँ के द्वारा

(ख) रसूलनबाई और बतूलनबाई के द्वारा

(ग) उस्ताद पैगंबरबख्श खाँ के द्वारा

(घ) उस्ताद मिट्ठन खाँ के द्वारा

प्रश्न 7 - सुषिर-वाद्यों का क्या अर्थ है?

(क) संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता है

(ख) संगीत में वह यंत्र जो हाथो के जोर से बजता है

(ग) संगीत में वह यंत्र जो पैरों के जोर से बजता है

(घ) संगीत में वह यंत्र जो आवाज़ के जोर से बजता है

प्रश्न 8 - शहनाई को किसकी उपाधि् दी गई है?

(क) सुधीर वाद्यों में शाह

(ख) सुमीर वाद्यों में शाह

(ग) सुषिर वाद्यों में शाह

(घ) सभी वाद्यों में शाह

प्रश्न 9 - शहनाई को किन अवसरों पर बजाय जाता है?

(क) केवल संगीत अवसरों पर

(ख) केवल शुभ कार्य या कल्याण अवसरों पर

(ग) केवल आध्यात्मिक अवसरों पर

(घ) केवल सांस्कृतिक अवसरों पर

प्रश्न 10 - बिस्मिल्ला खाँ ने अपनी पूरी जिंदगी में ईश्वर से क्या माँगा?

(क) अपने जीवन की समृद्धि

(ख) अपने परिवार की समृद्धि

(ग) अपनी शहनाई की समृद्धि

(घ) अपने संगीत की समृद्धि

उत्तर - 1 (ख) पंचगंगा

- **उत्तर** - 2 (ग) शहनाई बजाना
- **उत्तर** - 3 (घ) संगीत प्रेमी परिवार
- **उत्तर** - 4 (ख) शहनाई बजाने के लिए जिस रीड का प्रयोग होता है वह डुमराँव में मुख्यतः सोन नदी के किनारों पर पाई जाती है
- **उत्तर - 5** (घ) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ

- **उत्तर** - 6 (ख) रसूलनबाई और बतूलनबाई के द्वारा
- **उत्तर** - 7 (क) संगीत में वह यंत्र जो वायु के जोर से बजता है
- **उत्तर** - 8 (ग) सुषिर वाद्यों में शाह
- **उत्तर** - 9 (ख) केवल शुभ कार्य या कल्याण अवसरों पर
- **उत्तर** -10 (घ) अपने संगीत की समृद्धि

<u>संस्कृति</u>

लेखक कहते हैं की सभ्यता और संस्कृति दो ऐसे शब्द हैं जिनका उपयोग अधिक होता है परन्तु समझ में कम आता है। इनके साथ विशेषण लगा देने से इन्हे समझना और भी कठिन हो जाता है। कभी-कभी दोनों को एक समझ लिया जाता है तो कभी अलग। आखिर ये दोनों एक हैं या अलग। लेखक समझाने का प्रयास करते हुए आग और सुई-धागे के आविष्कार का उदाहरण देते हैं। वह उनके आविष्कर्ता की बात कहकर व्यक्ति विशेष की योग्यता, प्रवृत्ति और प्रेरणा को व्यक्ति विशेष की संस्कृति कहता है जिसके बल पर आविष्कार किया गया।

लेखक संस्कृति और सभ्यता में अंतर स्थापित करने के लिए आग और सुई-धागे के आविष्कार से जुड़ी प्रारंभिक प्रयत्नशीलता और बाद में हुई उन्नति के उदाहरण देते हैं। वे कहते हैं लोहे के टुकड़े को घिसकर छेद बनाना और धागा पिरोकर दो अलग-अलग टुकड़ों को जोड़ने की सोच ही संस्कृति है। इन खोजों को आधार बनाकर आगे जो इन क्षेत्रों में विकास हुआ वह सभ्यता कहलाता है। अपनी बुद्धि के आधार पर नए निश्चित तथ्य को खोज आने वाली पीढ़ी को सौंपने वाला संस्कृत होता है जबकि उसी तथ्य को आधार बनाकर आगे बढ़ने वाला सभ्यता का विकास करने वाला होता है। भौतिक विज्ञान के सभी विद्यार्थी जानते हैं की न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया इसलिए वह संस्कृत कहलाया परन्तु वह और अनेक बातों को नहीं जान पाया। आज के विद्यार्थी उन बातों को भी जानते है लेकिन हम इन्हे अधिक सभ्य भले ही कहे परन्तु संस्कृत नहीं कह सकते।

प्रश्न:- निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तरों से विकल्प छाँटकर लिखिए|

जिस योग्यता , प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई - धागे का आविष्कार हुआ , वह है व्यक्ति विशेष की संस्कृति ; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ , जो चीज़ उसने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसका नाम है सभ्यता।

जिस व्यक्ति में पहली चीज़ , जितनी अधिक व जैसी परिष्कृत मात्र में होगी , वह व्यक्ति उतना ही अधिक व वैसा ही परिष्कृत आविष्कर्ता होगा।

एक संस्कृत व्यक्ति किसी नयी चीज़ की खोज करता है ; किन्तु उसकी संतान को वह अपने पूर्वज से अनायास ही प्राप्त हो जाती है। जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया , वह व्यक्ति ही वास्तविक संस्कृत व्यक्ति है और उसकी संतान जिसे अपने पूर्वज से वह वस्तु अनायास ही प्राप्त हो गई है, वह अपने पूर्वज की भाँति सभ्य भले ही बन जाए , संस्कृत नहीं कहला सकता। एक आधुनिक उदाहरण लें। न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया। वह संस्कृत मानव था। आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही ; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा। ऐसा होने पर भी हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सके ; पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते।

प्रश्न 1 - जिस योग्यता , प्रवृत्ति अथवा प्रेरणा के बल पर आग का व सुई - धागे का आविष्कार हुआ , वह क्या है?

(क) व्यक्ति विशेष की सभ्यता

(ख) व्यक्ति विशेष की संस्कृति

(ग) व्यक्ति विशेष की बुद्धि
(घ) व्यक्ति विशेष की सामर्थ्यता

प्रश्न 2 - संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ , जो चीज़ व्यक्ति ने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की, उसको क्या कहा जाता है?

(क) सुसंस्कृत आविष्कार
(ख) आविष्कार
(ग) सभ्यता
(घ) सभ्यता पूर्ण आविष्कार

प्रश्न 3 - वास्तविक संस्कृत व्यक्ति किसे कहा जाता है?

(क) जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया
(ख) जिस व्यक्ति ने अपनी संस्कृति को बचाने का भरसक प्रयास किया
(ग) जिस व्यक्ति के आविष्कार का फायदा उसकी संताने सदियों तक उठाए
(घ) जिस व्यक्ति ने समाज की भलाई के लिए कोई कार्य किया

प्रश्न 4 - न्यूटन ने किसका आविष्कार किया?

(क) आत्माकर्षण के सिद्धांत का
(ख) संघर्ष के सिद्धांत का
(ग) अणु के वर्गीकरण के सिद्धांत का
(घ) गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का

प्रश्न 5 - हम आज के भौतिक विज्ञान के विद्यार्थी को न्यूटन की अपेक्षा अधिक सभ्य भले ही कह सके ; पर न्यूटन जितना संस्कृत नहीं कह सकते। क्यों?

(क) क्योंकि आज के युग का भौतिक विज्ञान का विद्यार्थी न्यूटन के गुरुत्वाकर्षण से तो परिचित है ही ; लेकिन उसके साथ उसे और भी अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त है जिनसे शायद न्यूटन अपरिचित ही रहा
(ख) क्योंकि न्यूटन संस्कृत मानव था
(ग) क्योंकि न्यूटन ने अपनी बुद्धि व विवेक से गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया था।
(घ) उपरोक्त सभी

<u>उत्तर</u>

उत्तर - 1 (ख) व्यक्ति विशेष की संस्कृति
उत्तर - 2 (ग) सभ्यता
उत्तर - 3 (क) जिस व्यक्ति की बुद्धि ने अथवा उसके विवेक ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया
उत्तर - 4 (घ) गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का
उत्तर -5 (ग) क्योंकि न्यूटन ने अपनी बुद्धि व् विवेक से गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत का आविष्कार किया था

2 -

संसार के मज़दूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए कार्ल मार्क्स ने अपना सारा जीवन दुख में बिता दिया। और इन सबसे बढ़कर आज नहीं , आज से ढाई हज़ार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ ने अपना घर केवल इसलिए त्याग दिया कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती - कटती मानवता सुख से रह सके।

हमारी समझ में मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई - धागे का आविष्कार कराती है ; वह भी संस्कृति है जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है , वह भी है ; और जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है , वह भी संस्कृति है।

और सभ्यता ? सभ्यता है संस्कृति का परिणाम। हमारे खाने - पीने के तरीके , हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके , हमारे गमना - गमन के साधन , हमारे परस्पर कट मरने के तरीके ; सब हमारी सभ्यता हैं। मानव की जो योग्यता उससे आत्म - विनाश के साधनों का आविष्कार कराती है , हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति ? और जिन साधनों के बल पर वह दिन - रात आत्म - विनाश में जुटा हुआ है , उन्हें हम उसकी सभ्यता समझें या असभ्यता ?
संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा तो वह असंस्कृति होकर ही रहेगी और ऐसी संस्कृति का अवश्यंभावी परिणाम असभ्यता के अतिरिक्त दूसरा क्या होगा?
संस्कृति के नाम से जिस कूड़े - करकट के ढेर का बोध होता है , वह न संस्कृति है न रक्षणीय वस्तु। क्षण - क्षण परिवर्तन होने वाले संसार में किसी भी चीज़ को पकड़कर बैठा नहीं जा सकता। मानव ने जब - जब प्रज्ञा और मैत्री भाव से किसी नए तथ्य का दर्शन किया है तो उसने कोई वस्तु नहीं देखी है , जिसकी रक्षा के लिए दलबंदियों की ज़रूरत है।

प्रश्न 1 - कार्ल मार्क्स ने किसके लिए अपना सारा जीवन दुख में बिता दिया?
(क) संसार के मरीजों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए
(ख) संसार के पुरुषों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए
(ग) संसार के मज़दूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए
(घ) संसार के किसानों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए

प्रश्न 2 - सिद्धार्थ ने अपना घर किसलिए त्याग दिया?
(क) कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके
(ख) कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत संसार को समाप्त किया जा सके
(ग) कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत व्यक्तियों को संसार से मुक्त कराया जा सके
(घ) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न 3 - संस्कृति क्या है?
(क) जो योग्यता आग व सुई-धागे का आविष्कार कराती है
(ख) जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है
(ग) जो योग्यता किसी महामानव से सर्वस्व त्याग कराती है
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 4 - सभ्यता क्या है?
(क) संस्कृति का परिणाम
(ख) हमारे खाने-पीने के तरीके, हमारे ओढ़ने पहनने के तरीके
(ग) हमारे गमना-गमन के साधन, हमारे परस्पर कट मरने के तरीके
(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 5 - असंस्कृति कब होकर रहेगी?
(क) संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा
(ख) संस्कृति का यदि आविष्कार से नाता टूट जाएगा
(ग) संस्कृति का यदि संसार से नाता टूट जाएगा
(घ) संस्कृति का यदि व्यक्तियों से नाता टूट जाएगा

उत्तर - 1 (ग) संसार के मज़दूरों को सुखी देखने का स्वप्न देखते हुए
उत्तर - 2 (क) कि किसी तरह तृष्णा के वशीभूत लड़ती-कटती मानवता सुख से रह सके
उत्तर - 3 (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर 4 (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - 5 (क) संस्कृति का यदि कल्याण की भावना से नाता टूट जाएगा-

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. लेखक की दृष्टि में 'सभ्यता' और 'संस्कृति' की सही समझ अब तक क्यों नहीं बन पाई है?

उत्तर- लेखक की दृष्टि में सभ्यता और संस्कृति शब्दों की सही समझ अब तक इसलिए नहीं बन पाई। क्योंकि लोग सभ्यता और संस्कृति शब्दों का प्रयोग तो खूब करते हैं पर वे इनके अर्थ के बारे में भ्रमित रहते हैं। वे इनके अर्थ को जाने-समझे बिना मनमाने ढंग से इनका प्रयोग करते हैं। इन शब्दों के साथ भौतिक और आध्यात्मिक विशेषण लगाकर इन्हें और भी भ्रामक बना देते हैं। ऐसी स्थिति में लोग इनका अर्थ अपने-अपने विवेक से लगा लेते हैं। इससे स्पष्ट है कि इन शब्दों के सही अर्थ की समझ अब तक नहीं बन पाई है।

प्रश्न 2. आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज क्यों मानी जाती है? इस खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत क्या रहे होंगे?

उत्तर- आग की खोज एक बहुत बड़ी खोज इसलिए मानी जाती है क्योंकि इससे मनुष्य की जीवन शैली और खानपाने में बहुत बदलाव आया। दूसरे मनुष्य के पेट की ज्वाला अधिक सुविधाजनक ढंग से शांत होने लगी। इससे उसका भोजन स्वादिष्ट बन गया तथा उसे सरदी भगाने का साधन मिल गया। इसके अलावा प्रकाश और आग का भय दिखाने से जंगली जानवरों के खतरे में कमी आई। आग ने मनुष्य के सभ्य बनने का मार्ग भी प्रशस्त किया। इसकी खोज के पीछे रही प्रेरणा के मुख्य स्रोत पेट की ज्वाला, सरदी से मुक्ति, प्रकाश की चाहत तथा जंगली जानवरों के खतरे में कमी लाने की चाहत रही होगी।

प्रश्न 3. वास्तविक अर्थों में 'संस्कृत व्यक्ति' किसे कहा जा सकता है?

उत्तर- वास्तविक अर्थों में संस्कृत व्यक्ति उसे कहा जा सकता है जो अपना पेट भरा होने तथा तन ढंका होने पर भी निठल्ला नहीं बैठता है। वह अपने विवेक और बुधि से किसी नए तथ्य का दर्शन करता है और समाज को अत्यंत उपयोगी आविष्कार देकर उसकी सभ्यता का मार्ग प्रशस्त करता है। उदाहरणार्थ न्यूटन संस्कृत व्यक्ति था जिसने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की। इसी तरह सिद्धार्थ ने मानवता को सुखी देखने के लिए अपनी सुख-सुविधा छोड़कर जंगल की ओर चले गए।

प्रश्न 4. न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे कौन से तर्क दिए गए हैं? न्यूटन द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों एवं ज्ञान की कई दूसरी बारीकियों को जानने वाले लोग भी न्यूटन की तरह संस्कृत नहीं कहला सकते, क्यों?

उत्तर- न्यूटन को संस्कृत मानव कहने के पीछे यह तर्क दिया गया है कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत संबंधी नए तथ्य का दर्शन किया और इस सिद्धांत की खोज किया। नई चीज़ की खोज करने के कारण न्यूटन संस्कृत मानव था।

कुछ लोग जो न्यूटन के पीढ़ी के हैं वे न्यूटन के सिद्धांत को जानने के अलावा अन्य बहुत-सी उन बातों का ज्ञान रखते हैं जिनसे न्यूटन सर्वथा अनभिज्ञ था, परंतु उन्हें संस्कृत मानव इसलिए नहीं कहा जा सकता है क्योंकि उन्होंने न्यूटन की भाँति किसी नए तथ्य का आविष्कार नहीं किया। ऐसे लोगों को संस्कृत मानव नहीं बल्कि सभ्य मानव कहा जा सकता है।

प्रश्न 5. किन महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ होगा?

उत्तर- सुई-धागे का आविष्कार जिन दो महत्त्वपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए किया गया वे हैं-

- अपने शरीर को शीत और उष्ण मौसम से सुरक्षित रखने के लिए कपड़े सिलने हेतु।
- मनुष्य द्वारा सुंदर दिखने की चाह में अपने शरीर को सजाने के लिए क्योंकि इससे पूर्व वह छाल एवं पेड़ के पत्तों से यह कार्य किया करता था।

प्रश्न 6."मानव संस्कृति एक अविभाज्य वस्तु है।" किन्हीं दो प्रसंगों का उल्लेख कीजिए जब
(क) मानव संस्कृति को विभाजित करने की चेष्टाएँ की गईं।
(ख) जब मानव संस्कृति ने अपने एक होने का प्रमाण दिया।
उत्तर- (क) समय-समय ऐसी कुचेष्टाएँ की गईं जब मानव-संस्कृति को धर्म और संप्रदाय में बाँटने का प्रयास किया गया। कुछ असामाजिक तत्व तथा धर्म के तथाकथित ठेकेदारों ने हिंदू-मुस्लिम सांप्रदायिकता का जहर फैलाने का प्रयासकर मानव संस्कृति को बाँटने की कुचेष्टा की। इन लोगों ने अपने भाषणों द्वारा दोनों वर्गों को भड़काने का प्रयास किया। इनके त्योहारों पर भी एक-दूसरे को उकसाकर धार्मिक भावनाएँ भड़काने का प्रयास किया। वे मस्जिद के सामने बाजा बजाने और ताजिए के निकलते समय पीपल की डाल कटने पर संस्कृति खतरे में पड़ने की बात कहकर मानव संस्कृति विभाजित करने का प्रयास करते रहे।
(ख) मानव-संस्कृति के मूल में कल्याण की भावना निहित है। इस संस्कृति में अकल्याणकारी तत्वों के लिए स्थान नहीं है। समय-समय पर लोगों ने अपने कार्यों से इसका प्रमाण भी दिया; जैसे

1. भूखे व्यक्ति को लोग अपने हिस्से को भोजन खिला देते हैं।
2. बीमार बच्चे को अपनी गोद में लिए माँ सारी रात गुजार देती है।
3. कार्ल मार्क्स ने आजीवन मजदूरों के हित के लिए संघर्ष किया।
4. लेनिन ने अपनी डेस्क की ब्रेड भूखों को खिला दिया।
5. सिद्धार्थ मानव को सुखी देखने के लिए राजा के सारे सुख छोड़कर ज्ञान प्राप्ति हेतु जंगल की ओर चले गए।

प्रश्न 7. आशय स्पष्ट कीजिए
(क) मानव की जो योग्यता उससे आत्मविनाश के साधनों का आविष्कार कराती है, हम उसे उसकी संस्कृति कहें या असंस्कृति?
उत्तर- संस्कृति का कल्याण की भावना से गहरा नाता है। इसे कल्याण से अलग कर नहीं देखा जा सकता है। यह भावना मनुष्य को मानवता हेतु उपयोगी तथ्यों का आविष्कार करने के लिए प्रेरित करती है। ऐसे में कोई व्यक्ति जब आत्मविनाश के साधनों की खोज करता है और उससे आत्मविनाश करता है तब यह असंस्कृति बन जाती है। ऐसी संस्कृति में जब कल्याण की भावना नहीं होती है तब वह असंस्कृति का रूप ले लेती है।
प्रश्न 8 संस्कृति और सभ्यता को परिभाषित कीजिए?
उत्तर - जिस योग्यता , क्षमता या बुद्धिमानी से , अथवा जिस स्वभाव , आदत या आचार - व्यवहार के कारण अथवा जिस प्रेरणा या उमंग के बल पर आग का व सुई - धागे का आविष्कार हुआ है , वह किसी व्यक्ति विशेष की संस्कृति कही जाती है ; और उस संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ , अथवा जो चीज़ उस व्यक्ति ने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की है , उसका नाम है सभ्यता। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी व्यक्ति की योग्यता , स्वभाव या आचार - व्यवहार को उसकी संस्कृति कहा जाता है और उस योग्यता , स्वभाव अथवा आचार - व्यवहार के द्वारा जो सर्व कल्याण को ध्यान में रखते हुए आविष्कार किया जाता है वह सभ्यता कहा जाता है।
(बहुविकल्पीय प्रश्न)
प्रश्न 1 - किन शब्दों का उपयोग सबसे अधिक होता है ?
(क) सभ्यता और संस्कृति
(ख) मानवता और कल्याण
(ग) आज़ादी और क्रान्ति
(घ) बुद्धि और विवेक
प्रश्न 2 - किसके आविष्कार के बाद मनुष्य अधिक सरल जीवन जी पाया और अधिक सभ्य भी बन पाया?
(क) सुई के आविष्कार के बाद

(ख) कपड़े के आविष्कार के बाद

(ग) आग के आविष्कार के बाद

(घ) हथियार के आविष्कार के बाद

प्रश्न 3 - किसी चीज़ के आविष्कार के लिए क्या अहम भूमिका निभाती है?

(क) व्यक्ति विशेष की बुद्धि और विवेक अथवा योग्यता

(ख) केवल किसी चीज़ के बारे में सोचना

(ग) व्यक्ति विशेष की बुद्धि

(घ) व्यक्ति विशेष की योग्यता

प्रश्न 4 - किसी व्यक्ति विशेष की संस्कृति क्या कही जाती है?

(क) जिस योग्यता, क्षमता या बुद्धिमानी से कोई आविष्कार हुआ है।

(ख) जिस स्वभाव, आदत या आचार-व्यवहार के कारण कोई अविष्कार हुआ है।

(ग) जिस प्रेरणा या उमंग के बल पर कोई आविष्कार हुआ है।

(घ) उपरोक्त सभी।

प्रश्न 5 - सभ्यता क्या है?

(क) योग्यता , स्वभाव अथवा आचार - व्यवहार के द्वारा जो सर्व कल्याण को ध्यान में रखते हुए आविष्कार किया जाता है

(ख) संस्कृति द्वारा जो आविष्कार हुआ

(ग) जो चीज़ किसी व्यक्ति ने अपने तथा दूसरों के लिए आविष्कृत की है

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 6 - कौन सा व्यक्ति वास्तविक या यथार्थ संस्कृत व्यक्ति है?

(क) जिस व्यक्ति की बुद्धि ने किसी भी नए तथ्य का दर्शन किया

(ख) जिस व्यक्ति के विवेक अथवा अच्छे-बुरे की परख ने किसी भी नए तथ्य का आविष्कार किया

(ग) केवल (क)

(घ) (क) और (ख) दोनों

प्रश्न 7 - संस्कृति क्या है?

(क) मानव संस्कृति की जो योग्यता आग व सुई-धागे का आविष्कार कराती है।

(ख) जो योग्यता तारों की जानकारी कराती है।

(ग) जो योग्यता किसी महामानव से सब कुछ अर्थात सारी धन-संपत्ति, अमूल्य निधि या पदार्थ का त्याग कराती है।

(घ) उपरोक्त सभी

प्रश्न 8 - असंस्कृति क्या है?

(क) संस्कृति का कल्याण की भावना से जुड़ना

(ख) संस्कृति का सर्वकल्याण की भावना से नाता जुड़ना

(ग) संस्कृति का कल्याण की भावना से नाता टूट जाना

(घ) केवल (क)

प्रश्न 9 - संस्कृति के नाम पर किसी भी वस्तु को संरक्षित कर के नहीं रखा जा सकता क्यों?

(क) क्योंकि हर पल बदलने वाले इस संसार में किसी भी चीज़ को पकड़कर बैठा नहीं जा सकता।

(ख) क्योंकि हर पल बदलने वाले इस संसार में समय भी बदलता रहता है।

(ग) क्योंकि हर पल बदलने वाले इस संसार में व्यक्ति की भावना भी बदलती है।

(घ) क्योंकि हर पल बदलने वाले इस संसार में कोई किसी का समय पर साथ नहीं देता।

प्रश्न 10 - किसी भी हथियार या दल-बल की आवश्यकता किसे नहीं होती?

(क) जिस तथ्य का आविष्कार विशेष लोगों के कल्याण के लिए किया गया हो उसे सुरक्षित रखने के लिए

(ख) जिस तथ्य का आविष्कार अपनी पीढ़ी के कल्याण के लिए किया गया हो उसे सुरक्षित रखने के लिए

(ग) जिस तथ्य का आविष्कार सभी के कल्याण के लिए किया गया हो उसे सुरक्षित रखने के लिए

(घ) जिस तथ्य का आविष्कार दुश्मनों के अकल्याण के लिए किया गया हो उसे सुरक्षित रखने के लिए

उत्तर

उत्तर - 1 (क) सभ्यता और संस्कृति

उत्तर - 2 (ग) आग के आविष्कार के बाद

उत्तर -3 (क) व्यक्ति विशेष की बुद्धि और विवेक अथवा योग्यता

उत्तर - 4 (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - 5 (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - 6 (घ) (क) और (ख) दोनों

उत्तर - 7 (घ) उपरोक्त सभी

उत्तर - 8 (ग) संस्कृति का कल्याण की भावना से नाता टूट जाना

उत्तर - 9 (क) क्योंकि हर पल बदलने वाले इस संसार में किसी भी चीज़ को पकड़कर बैठा नहीं जा सकता

उत्तर - 10 (ग) जिस तथ्य का आविष्कार सभी के कल्याण के लिए किया गया हो उसे सुरक्षित रखने के लिए

कृतिका

माता का अंचल

शिवपूजन सहाय के बचपन का नाम "तारकेश्वरनाथ" था मगर घर में उन्हें उनके पिता जी "भोलानाथ" कहकर पुकारा करते थे। भोलानाथ भी अपने पिता को "बाबूजी" व माता को "मइयाँ " कहा करते थे। बचपन में भोलानाथ का ज़्यादातर समय अपने मित्रों के साथ मस्ती में व अपने पिता के सान्निध्य में ही गुज़रता था। बाबूजी लेखक को अपने साथ ही सुलाते, अपने साथ ही जल्दी सुबह उठाकर स्नान करते और अपने साथ ही भगवान की पूजा अर्चना कराते थे।

जब लेखक के बाबूजी उनको तिलक लगाने लगते तो लेखक उन्हें बहुत परेशान करते थे परन्तु जब थोड़ा प्यार और डाँट से बाबूजी तिलक लगा देते तो लेखक पुरे बम-भोला लगते थे जिस कारण बाबूजी लेखक को भोलानाथ पुकारते थे। जब भी भोलानाथ के बाबूजी रामायण का पाठ करते , तब भोलानाथ उनके बगल में बैठ कर अपने चेहरे का प्रतिबिंबआइने में देख कर खूब खुश होते। पर जैसे ही उनके बाबूजी की नजर उन पर पड़ती तो , वो थोड़ा शर्माकर और मुस्कुरा कर आईना नीचे रख देते थे। उनकी इस बात पर उनके बाबूजी भी मुस्कुरा उठते थे।

पूजा अर्चना करने के बाद भोलानाथ के बाबूजी एक मोटी कॉपी पर हज़ार बार राम-नाम लिखते थे। फिर पाँच-सौ बार छोटे-छोटे कागजों पर राम नाम लिख कागज की उन पर्चियों को छोटी -छोटी आटे की गोलियों में रखकर गंगा जी में मछलियों को खिलाने जाते थे। लेखक भी अपने बाबूजी के कंधे पर बैठकर गंगा जी के पास जाते और फिर उन आटे की गोलियां को मछलियों को खिला देते थे।

उसके बाद वो अपने बाबूजी के रास्ते में खूब सारी मस्ती कर साथ घर आकर खाना खाते। भोलानाथ की माँ जिद्द करके उन्हें अनेक पक्षियों के नाम से निवाले बनाकर बड़े प्यार से खिलाती थी। भोलानाथ की माँ भोलानाथ को बहुत लाड -प्यार करती थी। वह कभी उन्हें अपनी बाहों में भर कर खूब प्यार करती , तो कभी उन्हें जबरदस्ती पकड़ कर

उनके सिर पर सरसों के तेल से मालिश करती। उस वक्त भोलानाथ बहुत छोटे थे। इसलिए वह बात-बात पर रोने लगते। इस पर बाबूजी भोलानाथ की माँ से नाराज हो जाते थे। लेकिन भोलानाथ की माँ उनके बालों को अच्छे से चोटी गूँथकर उसमें फूलदार लट्टू लगा देती थी और साथ में भोलानाथ को रंगीन कुर्ता व टोपी पहना देती थी जिससे लेखक "कन्हैया" जैसे दिखाई देते थे।

भोलानाथ अपने हमउम्र दोस्तों के साथ तरह-तरह के नाटक करते थे। कभी चबूतरे का एक कोना ही उनका नाटक घर बन जाता तो, कभी बाबूजी की नहाने वाली चौकी ही रंगमंच बन जाती।और उसी रंगमंच पर सरकंडे के खंभों पर कागज की चादर बनाकर उनमें मिट्टी या अन्य चीजों से बनी मिठाइयों की दुकान लग जाती जिसमें लड्डू , बताशे , जलेबियाँ आदि सजा दिये जाते थे और फिर जस्ते के छोटे-छोटे टुकड़ों के बने पैसों से बच्चे आपस में भी खरीदार और दुकानदार बन कर उन मिठाइयों को खरीदने व बेचने का नाटक करते थे। भोलानाथ के बाबूजी भी कभी-कभी वहाँ से असली के पैसों से खरीदारी कर लेते थे।

ऐसे ही नाटक में कभी घरोंदा बना दिया जाता था जिसमें घर के सामान सजा कर रख दिए जाते थे। तो कभी-कभी बच्चे बारात का भी जुलूस निकालते थे जिसमें तंबूरा और शहनाई भी बजाई जाती थी। दुल्हन को भी विदा कर लाया जाता था। कभी-कभी बाबूजी दुल्हन का घूंघट उठा कर देख लेते तो , सब बच्चे शर्माकर हंसते हुए वहाँ से भाग जाते थे। बाबूजी भी बच्चों के खेलों में भाग लेकर उनका आनंद उठाते थे।

आम की फसल के दौरान आँधी चलने से बहुत से आम गिर जाते थे। बच्चे उन आमों को उठाने भागा करते थे। एक दिन सारे बच्चे आम के बाग़ में खेल रहे थे। तभी बड़ी जोर से आंधी आई। बादलों से पूरा आकाश ढक गया और देखते ही देखते खूब जम कर बारिश होने लगी। काफी देर बाद बारिश बंद हुई तो बाग के आसपास बिच्छू निकल आए जिन्हें देखकर सारे बच्चे डर के मारे भागने लगे। संयोगवश रास्ते में उन्हें मूसन तिवारी मिल गए। भोलानाथ के एक दोस्त बैजू ने उन्हें चिढ़ा दिया। फिर क्या था बैजू की देखा देखी सारे बच्चे मूसन तिवारी को चिढ़ाने लगे। मूसन तिवारी ने सभी बच्चों को वहाँ से भगा दिया और सीधे उनकी शिकायत करने पाठशाला चले गए। पाठशाला में लेखक और लेखक के साथियों की शिकायत गुरु जी से कर दी। गुरु जी ने सभी बच्चों को स्कूल में पकड़ लाने का आदेश दिया। सभी को पकड़कर स्कूल पहुँचाया गया। दोस्तों के साथ भोलानाथ को भी जमकर मार पड़ी। जब बाबूजी को इस बात की खबर पहुँची तो , वो दौड़े-दौड़े पाठशाला आए। जैसे ही भोलानाथ ने अपने बाबूजी को देखा तो वो दौड़कर बाबूजी की गोद में चढ़ गए और रोते-रोते बाबूजी का कंधा अपने आँसुओं से भिगो दिया। गुरूजी की विनती कर बाबूजी भोलानाथ को घर ले आये।

भोलानाथ काफी देर तक बाबूजी की गोद में भी रोते रहे लेकिन जैसे ही रास्ते में उन्होंने अपनी मित्र मंडली को देखा तो वो अपना रोना भूलकर मित्र मंडली में शामिल होने की ज़िद्द करने लगे। मित्र मंडली उस समय चिड़ियों को पकड़ने की कोशिश कर रही थी। चिड़ियाँ तो उनके हाथ नहीं आयी। पर उन्होंने एक चूहे के बिल में पानी डालना शुरू कर दिया। उस बिल से चूहा तो नहीं निकला लेकिन साँप जरूर निकल आया। साँप को देखते ही सारे बच्चे डर के मारे भागने लगे। भोलानाथ भी डर के मारे भागे और गिरते-पड़ते जैसे-तैसे घर पहुंचे। लहूलुहान शरीर लिए जैसे ही घर में घुसे सामने बाबूजी बैठ कर हुक्का पी रहे थे। उन्होंने भोलानाथ को आवाज़ लगाई परन्तु आज भोलानाथ सीधे अंदर अपनी मां की गोद में जाकर छुप गए। भोलानाथ को ऐसा डरा हुआ देखकर माँ का भी रोना निकल गया। उन्होंने भोलानाथ के जख्मों की पट्टी की और उससे उसके डर का कारण पूछने लगी। बाबूजी ने भोलानाथ को अपनी गोद में लेना चाहा लेखिन डरे व घबराए हुए भोलानाथ को उस समय पिता के मजबूत बांहों के सहारे व दुलार के बजाय अपनी माँ का आँचल ज्यादा सुरक्षित व महफ़ूज़ लगने लगा।

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. प्रस्तुत पाठ के आधार पर यह कहा जा सकता है कि बच्चे का अपने पिता से अधिक जुड़ाव था, फिर भी विपदा के समय वह पिता के पास न जाकर माँ की शरण लेता है। आपकी समझ से इसकी क्या वजह हो सकती है?

उत्तर- यह बात सच है कि बच्चे (लेखक) को अपने पिता से अधिक लगाव था। उसके पिता उसका लालन-पालन ही नहीं करते थे, उसके संग दोस्तों जैसा व्यवहार भी करते थे। परंतु विपदा के समय उसे लाड़ की जरूरत थी, अत्यधिक ममता और माँ की गोदी की जरूरत थी। उसे अपनी माँ से जितनी कोमलता मिल सकती थी, उतनी पिता से नहीं। यही कारण है कि संकट में बच्चे को माँ या नानी याद आती है, बाप या नाना नहीं। माँ का लाड़ घाव को भरने वाले मरहम का काम करता है।

प्रश्न 2. आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?

उत्तर- शिशु अपनी स्वाभाविक आदत के अनुसार अपनी उम्र के बच्चों के साथ खेलने में रुचि लेता है। उनके साथ खेलना अच्छा लगता है। अपनी उम्र के साथ जिस रुचि से खेलता है वह रुचि बड़ों के साथ नहीं होती है। दूसरा कारण मनोवैज्ञानिक भी है-बच्चे को अपने साथियों के बीच सिसकने या रोने में हीनता का अनुभव होता है। यही कारण है कि भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना भूल जाता है।

प्रश्न 3. भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री आपके खेल और खेलने की सामग्री से किस प्रकार भिन्न है?

उत्तर- भोलानाथ और उसके साथियों के खेल और खेलने की सामग्री से हमारे खेल और खेल सामग्रियों में कल्पना से अधिक अंतर आ गया है। भोलानाथ के समय में परिवार से लेकर दूर पड़ोस तक आत्मीय संबंध थे, जिससे खेलने की स्वच्छंदता थी। बाहरी घटनाओं-अपहरण आदि का भय नहीं था। खेल की सामग्रियाँ बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित थीं। घर की अनुपयोगी वस्तु ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थी, जिससे किसी प्रकार ही हानि की संभावना नहीं थी। धूल- मिट्टी से खेलने में पूर्ण आनंद की अनुभूति होती थी। न कोई रोक, न कोई डर, न किसी का निर्देशन । जो था वह सब सामूहिक बुद्धि की उपज थी।

आज भोलानाथ के समय से सर्वथा भिन्न खेल और खेल सामग्री और ऊपर से बड़ों का निर्देशन और सुरक्षा हर समय सिर पर हावी रहता है। आज खेल सामग्री स्वनिर्मित न होकर बाज़ार से खरीदी हुई होती है। खेलने की समय-सीमा भी तय कर दी जाती है। अतः स्वच्छंदता नहीं होती है। धूल-मिट्टी से बच्चों का परिचय ही नहीं होता है।

प्रश्न 4. पाठ में आए ऐसे प्रसंगों का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गए हों?

उत्तर- पाठ का सबसे रोमांचक प्रसंग वह है जब एक साँप सब बच्चों के पीछे पड़ जाता है। तब वे बच्चे किस प्रकार गिरते-पड़ते भागते हैं और माँ की गोद में छिपकर सहारा लेते हैं-यह प्रसंग पाठक के हृदय को भीतर तक हिला देता है। | इस पाठ में गुदगुदाने वाले प्रसंग भी अनेक हैं। विशेष रूप से बच्चे के पिता का मित्रतापूर्वक बच्चों के खेल में शामिल होना मन को छू लेता है। जैसे ही बच्चे भोज, शादी या खेती का खेल खेलते हैं, बच्चे का पिता बच्चा बनकर उनमें शामिल हो जाता है। पिता का इस प्रकार बच्चा बन जाना बहुत सुखद अनुभव है जो सभी पाठकों को गुदगुदा देता है।

प्रश्न 5. इस उपन्यास के अंश में तीस के दशक की ग्राम्य संस्कृति का चित्रण है। आज की ग्रामीण संस्कृति में आपको किस तरह के परिवर्तन दिखाई देते हैं।

उत्तर- आज की ग्रामीण संस्कृति को देखकर और इस उपन्यास के अंश को पढ़कर ऐसा लगता है कि कैसी अच्छी रही होगी वह समूह-संस्कृति, जो आत्मीय स्नेह और समूह में रहने का बोध कराती थी। आज ऐसे दृश्य दिखाई नहीं देते हैं। पुरुषों की सामूहिक-कार्य प्रणाली भी समाप्त हो गई है। अतः ग्रामीण संस्कृति में आए परिवर्तन के कारण वे दृश्य नहीं दिखाई देते हैं जो तीस के दशक में रहे होंगे-

1. आज घर सिमट गए हैं। घरों के आगे चबूतरों का प्रचलन समाप्त हो गया है।
2. आज परिवारों में एकल संस्कृति ने जन्म ले लिया, जिससे समूह में बच्चे अब दिखाई नहीं देते।
3. आज बच्चों के खेलने की सामग्री और खेल बदल चुके हैं। खेल खर्चीले हो गए हैं। जो परिवार खर्च नहीं कर पाते हैं वे बच्चों को हीनभावना से बचाने के लिए समूह में जाने से रोकते हैं।-

4. आज की नई संस्कृति बच्चों को धूलमिट्टी से बचना चाहती है।-
5. घरों के बाहर पर्याप्त मैदान भी नहीं रहे, लोग स्वयं डिब्बों जैसे घरों में रहने लगे हैं।

प्रश्न 6. यहाँ माता-पिता का बच्चे के प्रति जो वात्सल्य व्यक्त हुआ है उसे अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- पिता का अपने साथ शिशु को नहला-धुलाकर पूजा में बैठा लेना, माथे पर तिलक लगाना फिर कंधे पर बैठाकर गंगा तक ले जाना और लौटते समय पेड़ पर बैठाकर झूला झुलाना कितना मनोहारी दृश्य उत्पन्न करता है।
पिता के साथ कुश्ती लड़ना, बच्चे के गालों का चुम्मा लेना, बच्चे के द्वारा मूँछे पकड़ने पर बनावटी रोना रोने का नाटक और शिशु को हँस पड़ना अत्यंत जीवंत लगता है।
माँ के द्वारा गोरस-भात, तोता-मैना आदि के नाम पर खिलाना, उबटना, शिशु का श्रृंगार करना और शिशु का सिसकना, बच्चों की टोली को देख सिसकना बंद कर विविध प्रकार के खेल खेलना और मूसन तिवारी को चिढ़ाना आदि अद्भुत दृश्य उकेरे गए हैं। ये सभी दृश्य अपने शैशव की याद दिलाते हैं।

प्रश्न 7. माता का अँचल शीर्षक की उपयुक्तता बताते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।

उत्तर- इस पाठ के लिए माता का अँचल' शीर्षक उपयुक्त नहीं है। इसमें लेखक के शैशव की तीन विशेषताओं का वर्णन हुआ है-

1. बच्चे का पिता के साथ लगाव
2. शैशव की मस्त क्रीड़ाएँ।
3. माँ का वात्सल्य
4. 'माता का अँचल' इन तीनों में से केवल अंतिम को ही व्यक्त करता है। अतयह एकांगी और अधूरा शीर्षक है। : इसका अन्य शीर्षक हो सकता है
5. मेरा शैशव
6. कोई लौटा दे मेरे रस!भरे दिन-

प्रश्न 8. बच्चे माता-पिता के प्रति अपने प्रेम को कैसे अभिव्यक्त करते हैं?

उत्तर- शिशु की ज़िद्द में भी प्रेम का प्रकटीकरण है।

1. शिशु और मातापिता के-सान्निध्य में यह स्पष्ट करना कठिन होता है कि मातापिता का स्नेह शिशु के प्रति है -पिता के प्रति दोनों एक ही प्रेम के सम्पूरक होते हैं।-या शिशु का माता
2. शिशु की मुस्कराहट, शिशु को उनकी गोद में जाने की ललक, उनके साथ विविधक्रीड़ाएँ करके अपने प्रेम का प्रकटीकरण करते हैं।
3. मातापिता के प्रति शिशु के -पिता की गोद में जाने के लिए मचलना उसका प्रेम ही होता है। इस प्रकार माता-प्रेम को शब्दों में व्यक्त करना कठिन होता है।

प्रश्न 9. इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

उत्तर- हमारा बचपन इस पाठ में वर्णित बचपन से पूरी तरह भिन्न है। हमें अपने पिता का ऐसा लाड़ नहीं मिला। मेरे पिता प्रायः अपने काम में व्यस्त रहते हैं। प्रायः वे रात को थककर ऑफिस से आते हैं। वे आते ही खा-पीकर सो जाते हैं। वे मुझसे प्यार-भरी कुछ बातें जरूर करते हैं। मेरे लिए मिठाई, चाकलेट, खिलौने भी ले आते हैं। कभी-कभी स्कूटर पर बिठाकर घुमा भी आते हैं, किंतु मेरे खेलों में इस तरह रुचि नहीं लेते। वे हमें नंग-धडंग तो रहने ही नहीं देते। उन्हें मानो मुझे कपड़े से ढकने और सजाने का बेहद शौक है। मुझे बचपन में ए-एप्पल, सी-कैट रटाई गई। हर किसी को नमस्ते करनी सिखाई गई। दो ढाई साल की उम्र में मुझे स्कूल भेजने का प्रबंध किया गया। तीन साल के बाद मेरे जीवन से मस्ती गायब हो गई। मुझे मेरी मैडम, स्कूल-ड्रेस और स्कूल के काम की चिंता सताने लगी। तब से लेकर आज तक मैं 90% अंक लेने के चक्कर में अपनी मस्ती को अपने ही पाँवों के नीचे रौंदता चला आ रहा हूँ।

मुझे हो-हुल्लड़ करने का तो कभी मौका ही नहीं मिला। शायद मेरा बचपन बुढ़ापे में आए? या शायद मैं अपने बच्चों या पोतों के साथ खेल कर सकूँ ।

<u>साना-साना हाथ जोड़ि</u>

लेखिका के गैंगटॉक शहर में पहुँचने के बाद लेखिका के सुहावने सफ़र की शुरुआत होती है। लेखिका गैंगटॉक शहर को "मेहनतकश बादशाहों का शहर" कहती हैं। क्योंकि यहाँ के लोग बहुत अधिक कठिनाई व मेहनत कर अपना जीवन व्यतीत करते हैं। जब लेखिका टिमटिमाते हजारों तारों से भरे आसमान को देखती हैं तो उन जादू भरे क्षणों में खो जाती हैं। वहाँ सुबह लेखिका ने एक नेपाली युवती द्वारा सिखाई गई प्रार्थना "साना साना हाथ जोड़ी , गर्दहू प्रार्थना। हाम्रो जीवन तिम्रो कौसेली" यानि "छोटे-छोटे हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रही हूँ कि मेरा सारा जीवन अच्छाइयों को समर्पित हो" भी की। लेखिका यूमथांग की ओर चलने से पहले हिमालय की तीसरी सबसे बड़ी चोटी कंचनजंघा को देखना चाहती थी इसलिए वह अपनी बालकनी में जाती है क्योंकि वहाँ से कंचनजंघा की चोटी दिखाई देती थी। परन्तु उस समय बादल और धुंध होने के कारण उन्हें कंचनजंघा की चोटी तो नहीं दिखाई देती है, लेकिन उनको सामने बगीचे में खिले हुए ढेर-सारे फूलों को देखकर उनको बहुत खुशी होती है। उसके बाद लेखिका गैंगटॉक शहर से 149 किलोमीटर दूर यूमथांग यानी घाटियों को देखने अपने गाइड जितेन नार्गे व सहेली मणि के साथ यात्रा शुरू करती है। रास्ते में लेखिका को बौद्ध धर्मावलंबियों द्वारा लगाई गई सफेद पताकाएँ दिखी जिन पर मंत्र लिखे होते हैं। ये पताकाएँ किसी ध्वज की तरह फहराती रहती हैं , जो शांति और अहिंसा का प्रतीक होती हैं। लेखिका ने जब इन पताकाओं के बारे अपने गाइड जितेन से पूछा तो उसने बताया कि जब भी किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु होती है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए शहर से दूर किसी पवित्र स्थान पर 108 पताकाएँ फहरा दी जाती है। नार्गे ने यह भी बताया कि किसी शुभ अवसर या नए कार्य की शुरुआत करने पर सफेद की जगह रंगीन पताकाएँ फहरा दी जाती हैं। यहाँ से थोड़ी दूरी पर स्थित "कवी लोंग स्टॉक " जगह के बारे में नार्गे ने बताया कि यहाँ"गाइड" फिल्म की शूटिंग हुई थी। आगे बढ़ते हुए जब लेखिका ने एक कुटिया के अंदर "प्रेयर व्हील यानी धर्म चक्र" को घूमते हुए देखा तो उसके बारे में जानने के लिए उत्सुक हुई और अपने गाइड से इसके बारे में पूछा। तब नार्गे ने बताया कि प्रेयर व्हील एक धर्म चक्र है। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं। यह सुनकर लेखिका को एहसास हुआ कि चाहे पहाड़ हो या मैदान हो या कोई भी जगह हो , इस देश की आत्मा एक जैसी ही है।

जैसे-जैसे लेखिका अपनी यात्रा में आगे बढ़ रही थी पहाड़ की ऊँचाई भी बढ़ने लगी। ऊँचाई के कारण बाजार , लोग , बस्तियाँ सब पीछे छूटने लगे। अब लेखिका को हिमालय पल-पल बदलता हुआ नजर आ रहा था। क्योंकि लेखिका को अब हिमालय के खूबसूरत प्राकृतिक नजारे, आसमान छूते पर्वतशिखर, ऊंचाई से झर-झर गिरते जलप्रपात, नीचे पूरे वेग से बहती चांदी की तरह चमकती तीस्ता नदी को देखकर अंदर ही अंदर अत्यंत ख़ुशी महसूस हो रही थी।

आगे लेखिका की जीप "सेवेन सिस्टर्स वॉटरफॉल" पर रूक गई। उस पानी को अपनी अंजुलि में भर कर लेखिका को ऐसा लग रहा था जैसे उसने संकल्प कर अपने अंदर की सारी बुराइयों व दुष्ट वासनाओं को इस झरने के निर्मल धारा में बहा दिया हों। यह सब लेखिका के मन व आत्मा को शांति देने वाला था। लेखिका को पर्वत , झरने , घाटियों , वादियों के ऐसे दुर्लभ नज़ारे पहली बार देखने को मिल रहे थे और उन्हें सभी कुछ बेहद खूबसूरत लग रहा था।

जब लेखिका ने सफ़र के दौरान कुछ पहाड़ी औरतों को कुदाल और हथौड़ी से पत्थर तोड़ते हुए देखा तो लेखिका उन्हें देख कर अचंभित हो गई। कुछ महिलाओं की पीठ में बड़ी सी टोकरियाँ थी जिनमें उनके छोटे बच्चे बैठे थे। इस दृश्य में लेखिका ने मातृत्व साधना और श्रम साधना का एक मिश्रित रूप देखा। लेखिका को पता चला कि ये महिलाएं पहाड़ी रास्तों को चौड़ा करने का काम कर रही है और यह बहुत ही खतरनाक काम होता है क्योंकि कई बार इस काम

में मजदूरों की मौत भी हो जाती हैं। यह सब देखकर लेखिका मन मन सोचने लगी कि "कितना कम लेकर ये लोग, समाज को कितना अधिक वापस कर देते हैं"।

थोड़ा सा और ऊंचाई पर चलने के बाद लेखिका ने देखा कि सात-आठ साल के बच्चे अपने स्कूल से घर लौट रहे हैं। ये बच्चे रोज 3 से 4 किलोमीटर टेढ़े- मेढ़े पहाड़ी रास्तों से पैदल चलकर अपने स्कूल पहुँचते हैं। और साथ-ही-साथ शाम को घर आकर अपनी माँओं के साथ मवेशियों को चराने जंगल जाते हैं और जंगल से भारी भारी लकड़ी के गट्ठर सिर पर लाद कर घर लाते हैं। शाम के समय लेखिका ने देखा कि कुछ पहाड़ी औरतें गायों को चरा कर वापस अपने घर लौट रही थी। जब लेखिका की जीप चाय के बागानों से गुजरने लगी तो लेखिका ने देखा कि कुछ सिक्किम परिधान पहने कुछ युवतियाँ बागानों से चाय की पत्तियाँ तोड़ रही थी। लायुंग में लोगों की आजीविका का मुख्य साधन पहाड़ी आलू , धान की खेती और शराब ही है। असल में लेखिका यहाँ बर्फ देखने आई थी लेकिन उन्हें वहाँ कहीं भी बर्फ नहीं दिखाई दी। इसका कारण बताते हुए एक स्थानीय युवक ने लेखिका को बताया कि प्रदूषण के कारण अब यहाँ बर्फबारी बहुत कम होती है। लेखिका को अगर बर्फ देखनी है तो उन्हें कटाओ जाना पड़ेगा जिसे भारत का स्विट्जरलैंड भी कहा जाता है। कटाओ में प्राकृतिक सौंदर्य अभी भी पूरी तरह से बरकरार था क्योंकि यह पर्यटक स्थल के रूप में अभी उतना विकसित नहीं हुआ था। कटाओ में लेखिका को बर्फ से ढके पहाड़ चांदी की तरह लग रहे थे। जिन्हें देखकर लेखिका बहुत ही आनंदित महसूस कर रही थी। जहाँ एक ओर कटाओ में लोग बर्फ के साथ फोटो खिंचवा रहे थे। वहीं दूसरी ओर लेखिका तो इस नजारे को अपनी आंखों में भर लेना चाहती थी।

थोड़ा आगे चलने पर लेखिका को कुछ फौजी छावनियाँ दिखी। जब लेखिका ने एक फौजी से पूछा कि "आप इस कड़कड़ाती ठंड में यहाँ कैसे रहते हैं। तब फौजी ने बड़े हँसते हुए जवाब दिया कि "आप चैन से इसीलिए सोते हैं क्योंकि हम यहाँ पहरा देते हैं"। उस फौजी की बात सुनकर लेखिका सोचने को मजबूर हो गई कि जब इस कड़कड़ाती ठंड में वे थोड़ी देर भी ठहर नहीं पा रहे हैं तो ये फौजी कैसे अपनी ड्यूटी निभाते होंगे। यह सोचकर लेखिका का सिर फौजियों के लिए सम्मान से झुक गया। चलते चलते लेखिका को चिप्स बेचती एक सिक्क्मी युवती दिखी। जब लेखिका ने उस युवती से पूछा कि क्या वह सिक्किमी है तो उस युवती ने जवाब दिया कि नहीं , वह इंडियन है। यह सुनकर लेखिका को बहुत अच्छा लगा। सिक्किम के लोग भारत का हिस्सा बनकर काफी खुश हैं। थोड़ा आगे चलने पर नार्गे ने लेखिका को गुरु नानक के फुटप्रिंट वाला पत्थर भी दिखाया। नार्गे ने बताया कि ऐसा माना जाता है कि इस जगह पर गुरु नानकजी की थाली से थोड़े से चावल छिटक कर गिर गए थे। और जहाँ-जहाँ वो चावल छिटक कर गिरे। वहाँ-वहाँ अब चावल की खेती होती है। वहाँ से करीब 3 किलोमीटर आगे चलने के बाद वो खेदुम पहुंचे। खेदुम लगभग 1 किलोमीटर का क्षेत्र था। नार्गे ने बताया कि इस स्थान पर देवी-देवताओं का निवास है। यहाँ कोई गंदगी नहीं फैलाता है। जो भी गंदगी फैलाता है वह मर जाता है। लेखिका के पूछने पर गाइड ने कारण बताया कि पहाड़ी लोग पहाड़ , नदी , झरने इन सब की पूजा करते हैं। वे इन्हें गंदा नहीं कर सकते। लेखिका के कहने पर कि "तभी गैंगटॉक शहर इतना सुंदर है"। नार्गे ने लेखिका को कहा "मैडम गैंगटॉक नहीं गंतोक कहिए। जिसका अर्थ होता है पहाड़"।

गाइड ने लेखिका को यह भी बताया कि सिक्किम के भारत में मिलने के कई वर्षों बाद भारतीय आर्मी के एक कप्तान शेखर दत्ता ने इसे पर्यटन स्थल (टूरिस्ट स्पॉट) बनाने का निर्णय लिया। इसके बाद से ही सिक्किम में पहाड़ों को काटकर रास्ते बनाए जा रहे हैं और नए-नए पर्यटन स्थलों की खोज जारी है। लेखिका ने मन ही मन सोचा कि इंसान की इसी असमाप्त खोज का नाम ही तो सौंदर्य है.....।

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका को किस तरह सम्मोहित कर रहा था?

उत्तर- झिलमिलाते सितारों की रोशनी में नहाया गंतोक लेखिका के मन में सम्मोहन जगा रहा था। इस सुंदरता ने उस

पर ऐसा जादू-सा कर दिया था कि उसे सब कुछ ठहरा हुआ-सा और अर्थहीन-सा लग रहा था। उसके भीतर-बाहर जैसे एक शून्य-सा व्याप्त हो गया था।

प्रश्न 2. गंतोक को 'मेहनकश बादशाहों का शहर' क्यों कहा गया?

उत्तर- गंतोक एक ऐसा पर्वतीय स्थल है जिसे वहाँ के मेहनतकश लोगों ने अपनी मेहनत से सुरम्य बना दिया है। वहाँ सुबह, शाम, रात सब कुछ सुंदर प्रतीत होता है। यहाँ के निवासी भरपूर परिश्रम करते हैं, इसीलिए गंतोक को मेहनतकश बादशाहों का शहर कहा गया है।

प्रश्न 3. कभी श्वेत तो कभी रंगीन पताकाओं का फहराना किन अलग-अलग अवसरों की ओर संकेत करता है?

उत्तर- श्वेत पताकाएँ किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु पर फहराई जाती हैं। किसी बुद्धिस्ट की मृत्यु हो जाए तो उसकी आत्मा की शांति के लिए नगर से बाहर किसी वीरान स्थान पर मंत्र लिखी एक सौ आठ पताकाएँ फहराई जाती हैं, जिन्हें उतारा नहीं जाता। वे धीरे-धीरे अपने-आप नष्ट हो जाती हैं।

किसी शुभ कार्य को आरंभ करने पर रंगीन पताकाएँ फहराई जाती हैं।

प्रश्न 4. जितेन नार्गे ने लेखिका को सिक्किम की प्रकृति, वहाँ की भौगोलिक स्थिति एवं जनजीवन के बारे में क्या महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ दीं, लिखिए।

उत्तर- जितेन ने लेखिका को एक अच्छे गाइड की तरह सिक्किम की मनोहारी प्राकृतिक छटा, सिक्किम की भौगोलिक स्थिति और वहाँ के जनजीवन की जानकारियाँ इस प्रकार दीं-

1. सिक्किम में गंतोक से लेकर यूमथांग तक तरह-तरह के फूल हैं। फूलों से लदी वादियाँ हैं।
2. शांत और अहिंसा के मंत्र लिखी ये श्वेत पताकाएँ जब यहाँ किसी बुद्ध के अनुयायी की मौत होती है तो लगाई जाती हैं। ये 108 होती हैं।
3. रंगीन पताकाएँ किस नए कार्य के शुरू होने पर लगाई जाती हैं।
4. कवी-लोंग-स्टॉक-यहाँ 'गाइड' फिल्म की शूटिंग हुई थी।
5. यह धर्मचक्र है अर्थात् प्रेअर व्हील। इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।
6. यह पहाड़ी इलाका है। यहाँ कोई भी चिकना-चर्बीला आदमी नहीं मिलता है।
7. नार्गे ने उत्साहित होकर 'कटाओ' के बारे में बताया कि 'कटाओ हिंदुस्तान का स्विट्जरलैंड है।"
8. यूमथांग की घाटियों के बारे में बताया कि बस पंद्रह दिनों में ही देखिएगा पूरी घाटी फूलों से इस कदर भर जाएगी कि लगेगा फूलों की सेज रखी हो।

प्रश्न 5. लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक-सी क्यों दिखाई दी?

उत्तर- लोंग स्टॉक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका ने उसके बारे में पूछा तो पता चला कि यह धर्म-चक्र है। इसे घुमाने पर सारे पाप धुल जाते हैं। जितेन की यह बात सुनकर लेखिका को ध्यान आया कि पूरे भारत की आत्मा एक ही है। मैदानी क्षेत्रों में गंगा के विषय में भी ऐसी ही धारणा है। उसे लगा कि पूरे भारत की आत्मा एक-सी है। सारी वैज्ञानिक प्रगति के बावजूद उनकी आस्थाएँ, विश्वास, अंध-विश्वास और पाप-पुण्य की अवधारणाएँ एक-सी हैं।

प्रश्न 6. जितने नार्गे की गाइड की भूमिका के बारे में विचार करते हुए लिखिए कि एक कुशल गाइड में क्या गुण होते हैं?

उत्तर- जितेन नार्गे लेखिका का ड्राइवर कम गाइड था। वह नेपाल से कुछ दिन पहले आया था जिसे नेपाल और सिक्किम की अच्छी जानकारी थी। क्षेत्र-से सुपरिचित था। वह ड्राइवर के साथ-साथ गाइड का कार्य कर रहा था। उसमें प्रायः गाइड के वे सभी गुण विद्यमान थे जो अपेक्षित होते हैं-

1. एक कुशल गाईड में उस स्थान की भौगोलिक, प्राकृतिक और सामाजिक जानकारी होनी चाहिए, वह नार्गे में सम्यक रूप से थी।

2. गाइड के साथ-साथ नार्गे ड्राइवर भी था अतः कहाँ रुकना है? यह निर्णय वह स्वयं ही करने में समर्थ थी। उसे कुछ सलाह देने की आवश्यकता नहीं होती थी।
3. गाइड में सैलानियों को प्रभावित करने की रोचक शैली होनी चाहिए जो उसमें थी। वह अपनी वाक्पटुता से लेखिका को प्रभावित करता था; जैसे-"मैडम, यह धर्म चक्र है-प्रेअर व्हील, इसको घुमाने से सारे पाप धुल जाते हैं।"
4. एक सुयोग्य गाइड क्षेत्र के जन-जीवन की गतिविधियों की भी जानकारी रखता है और संवेदनशील भी होता है।
5. वह पर्यटकों में इतना घुल-मिल जाता है कि स्वयं गाने के साथ नाच उठता है। और सैलानी भी नाच उठते हैं। इस तरह आत्मीय संबंध बना लेता है।
6. कुशल गाईड वाक्पटु होता है। वह अपनी वाक्पटुता से पर्यटन स्थलों के प्रति जिज्ञासा बनाए रखता है। पताकाओं के बारे में महत्त्वपूर्ण जानकारी देकर नार्गे उस स्थान के महत्व को बढ़ा देता है।

प्रश्न 7. इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका ने हिमालय के जिन-जिन रूपों का चित्र खींचा है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- इस यात्रा-वृत्तांत में लेखिका ने हिमालय के पल-पल परिवर्तित होते रूप को देखा। ज्यों-ज्यों ऊँचाई पर चढ़ते जाएँ हिमालय विशाल से विशालतर होता चला जाता है। छोटी-छोटी पहाड़ियाँ विशाल पर्वतों में बदलने लगती हैं। घाटियाँ गहराती-गहराती पाताल नापने लगती हैं। वादियाँ चौड़ी होने लगती हैं, जिनके बीच रंग-बिरंगे फूल मुसकराते हुए नज़र आते हैं। चारों ओर प्राकृतिक सुषमा बिखरी नज़र आती है। जल-प्रपात जलधारा बनकर पत्थरों के बीच बलखाती-सी निकलती है। तो मन को मोह लेती है। हिमालय कहीं हरियाली के कारण चटक हरे रंग की मोटी चादर-सा नजर आता है, कहीं पीलापन लिए नज़र आता है। कहीं पलास्टर उखड़ी दीवार की तरह पथरीला नजर आता है।

प्रश्न 8. प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर लेखिका को कैसी अनुभूति होती है?

उत्तर- लेखिका प्रकृति के उस अनंत और विराट स्वरूप को देखकर एकदम मौन, किसी ऋषि की तरह शांत होकर वह सारे परिदृश्य को अपने भीतर समेट लेना चाहती थी। वह रोमांचित थी, पुलकित थी।

उसे आदिम युग की अभिशप्त राजकुमारी-सी नीचे बिखरे भारी-भरकम पत्थरों पर झरने के संगीत के साथ आत्मा का संगीत सुनने जैसा आभास हो रहा था। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे देश और काल की सरहदों से दूर बहती धारा बन बहने लगी हो। भीतर की सारी तामसिकताएँ और दुष्ट वासनाएँ इस निर्मल धारा में बह गई हों। उसका मन हुआ कि अनंत समय तक ऐसे ही बहती रहे और इस झरने की पुकार सुनती रहे।

प्रकृति के इस सौंदर्य को देखकर लेखिका को पहली बार अहसास हुआ कि यही चलायमान सौंदर्य जीवन का आनंद है।

प्रश्न 9. प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को कौन-कौन से दृश्य झकझोर गए?

उत्तर- प्राकृतिक सौंदर्य के अलौकिक आनंद में डूबी लेखिका को सड़क बनाने के लिए पत्थर तोड़ती, सुंदर कोमलांगी पहाड़ी औरतों का दृश्य झकझोर गया। उसने देखा कि उस अद्‌वितीय सौंदर्य से निरपेक्ष कुछ पहाडी औरतें पत्थरों पर बैठी पत्थर तोड़ रही थीं। उनके हाथों में कुदाल और हथौड़े थे और कइयों की पीठ पर डोको (बड़ी टोकरी) में उनके बच्चे भी बँधे थे। यह विचार उसके मन को बार-बार झकझोर रहीं था कि नदी, फूलों, वादियों और झरनों के ऐसे स्वर्गिक सौंदर्य के बीच भूख, मौत, दैन्य और जिजीविषा के बीच जंग जारी है।

प्रश्न 10. सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव करवाने में किन-किन लोगों का योगदान होता है, उल्लेख करें।

उत्तर- सैलानियों को प्रकृति की अलौकिक छटा का अनुभव कराने में निम्न लोगों का योगदान , सराहनीय होता है-

1. वे सरकारी लोग जो व्यवस्था में संलग्न होते हैं।
2. वहाँ के स्थानीय गाइड जो उस क्षेत्र की सर्वथा जानकारी रखते हैं।
3. वहाँ के स्थानीय लोग जो सैलानियों के साथ रुचि से बातें करते हैं।

4. वे सहयोगी यात्री जो यात्रा में मस्ती भरा माहौल बनाए रखते हैं और कभी निराश नहीं होते हैं। उत्साह से भरपूर होते हैं।

प्रश्न 11."कितना कम लेकर ये समाज को कितना अधिक वापस लौटा देती हैं।" इस कथन के आधार पर स्पष्ट करें कि आम जनता की देश की आर्थिक प्रगति में क्या भूमिका है?

उत्तर- किसी देश की आमजनता देश की आर्थिक प्रगति में बहुत अधिक अप्रत्यक्ष योगदान देती है। आम जनता के इस वर्ग में मज़दूर ड्राइवर, बोझ उठाने वाले, फेरीवाले, कृषि कार्यों से जुड़े लोग आते हैं। अपनी यूमथांग की यात्रा में लेखिका ने देखा कि पहाड़ी मजदूर औरतें पत्थर तोड़कर पर्यटकों के आवागमन के लिए रास्ते बना रही हैं। इससे यहाँ पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होगी जिसका सीधा-सा असर देश की प्रगति पर पड़ेगा। इसी प्रकार कृषि कार्यों में शामिल मजदूर, किसान फ़सल उगाकर राष्ट्र की प्रगति में अपना बहुमूल्य योगदान देते हैं।

प्रश्न 12. आज की पीढ़ी द्वारा प्रकृति के साथ किस तरह का खिलवाड़ किया जा रहा है। इसे रोकने में आपकी क्या भूमिका होनी चाहिए।

उत्तर- प्रकृति के साथ खिलवाड़ करने के क्रम में आज पहाड़ों पर प्रकृति की शोभा को नष्ट किया जा रहा है। वृक्षों को काटकर पर्वतों को नंगा किया जा रहा है। शुद्ध, पवित्र नदियों को विविध प्रकार से प्रदूषित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी जा रही है। नगरों का, फैक्टरियों का गंदा पानी पवित्र नदियों में छोड़ा जा रहा है। सुख-सुविधा के नाम पर पॉलिथिन का अधिक प्रयोग और वाहनों के द्वारा प्रतिदिन छोड़ा धुंआ पर्यावरण के संतुलन को बिगाड़ रहा है। इस तरह प्रकृति का गुस्सा बढ़ रहा है, मौसम में परिवर्तन आ रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं।

प्रकृति के साथ खिलवाड़ को रोकने में हम निम्न प्रकार से सहयोग दे सकते हैं-

1. वर्तमान में खड़े वृक्षों को न काटें और न काटने दें।
2. यथासंभव वृक्षारोपण करें और दूसरों को वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।
3. वाहनों का प्रयोग यथासंभव कम करें। सब्ज़ीलाने और व्यर्थ सड़कों पर घूमने के लिए वाहनों का उपयोग न करें।
4. पॉलीथिन, अवशिष्ट पदार्थों तथा नालियों के गंदे पानी को नदियों में न जाने दें।

प्रश्न 13. प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कमी का जिक्र किया गया है? प्रदूषण के और कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आए हैं, लिखें।

उत्तर- लेखिका को उम्मीद थी कि उसे लायुग में बर्फ देखने को मिल जाएगी, लेकिन एक सिक्कमी युवक ने बताया कि प्रदूषण के कारण स्नोफॉल कम हो गया है; अतः उन्हें 500 मीटर ऊपर कटाओ' में ही बर्फ देखने को मिल सकेगी। प्रदूषण के कारण पर्यावरण में अनेक परिवर्तन आ रहे हैं। स्नोफॉल की कमी के कारण नदियों में जल-प्रवाह की मात्रा कम होती जा रही है। परिणामस्वरूप पीने योग्य जल की कमी सामने आ रही है। प्रदूषण के कारण ही वायु प्रदूषित हो रही है। महानगरों में साँस लेने के लिए ताजा हवा का मिलना भी मुश्किल हो रहा है। साँस संबंधी रोगों के साथ-साथ कैंसर तथा उच्च रक्तचाप की बीमारियाँ बढ़ रही हैं। ध्वनि प्रदूषण मानसिक अस्थिरता, बहरेपन तथा अनिद्रा जैसे रोगों का कारण बन रहा है।

प्रश्न 14.'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए?

उत्तर- 'कटाओ' को अपनी स्वच्छता और सुंदरता के कारण हिंदुस्तान का स्विट्जरलैंड कहा जाता है या उससे भी अधिक सुंदर। यह सुंदरता आज इसलिए विद्यमान है कि यहाँ कोई दुकान आदि नहीं है। यदि यहाँ भी दुकानें खुल जाएँ, व्यवसायीकरण हो जाए तो इस स्थान की सुंदरता जाती रहेगी, इसलिए कटाओं में दुकान का न होना उसके लिए वरदान है।

मनुष्य सुंदरता को देखकर प्रसन्न होता है तो मनुष्य ही सुंदरता को बिगाड़ता है। अपनी जिम्मेदारी और कर्तव्य का पालन न कर प्रयुक्त चीजों के अवशिष्ट को जहाँ-तहाँ फेंक सौंदर्य को ठेस पहुँचाए बिना नहीं रहता है। 'कटाओ' में दुकान न होने से व्यवसायीकरण नहीं हुआ है जिससे आने-जाने वाले लोगों की संख्या सीमित रहती है, जिससे यहाँ की सुंदरता बची है। जैसे दुकानें आदि खुल जाने से अन्य पवित्र स्थानों की सुंदरता जाती रही है वैसे ही कटाओ की सुंदरता भी मटमैली हो जाएगी।

प्रश्न 15. प्रकृति ने जल संचय की व्यवस्था किस प्रकार की है?

उत्तर- प्रकृति ने जल-संचय की बड़ी अद्भुत व्यवस्था की है। प्रकृति सर्दियों में पर्वत शिखरों पर बर्फ के रूप में गिरकर जल का भंडारण करती है। हिम-मंडित पर्वत-शिखर एक प्रकार के जल-स्तंभ हैं, जो गर्मियों में जलधारा बनकर करोड़ों कंठों की प्यास बुझाते हैं। नदियों के रूप में बहती यह जलधारा अपने किनारे बसे नगर-गाँवों में जल-संसाधन के रूप में तथा नहरों के द्वारा एक विस्तृत क्षेत्र में सिंचाई करती हैं और अंततः सागर में जाकर मिल जाती हैं। सागर से जलवाष्प बादल के रूप में उड़ते हैं, जो मैदानी क्षेत्रों में वर्षा तथा पर्वतीय क्षेत्रों में बर्फ के रूप में बरसते हैं। इस प्रकार 'जल-चक्र' द्वारा प्रकृति ने जल-संचयन तथा वितरण की व्यवस्था की है।

<u>मैं क्यों लिखता हूँ</u>

'मैं क्यों लिखता हूँ' पाठ में लेखक ने अपने लिखने के कारणों के साथ-साथ एक लेखक के प्रेरणा-स्रोतों पर भी प्रकाश डाला है। लेखक के अनुसार लिखे बिना लिखने के कारणों को नहीं जाना जा सकता। वह अपनी आंतरिक व्याकुलता से मुक्ति पाने तथा तटस्थ होकर उसे देखने और पहचानने के लिए लिखता है।

प्रायः प्रत्येक रचनाकार की आत्मानुभूति ही उसे लेखन कार्य के लिए प्रेरित करती है, किंतु कुछ बाहरी दबाव भी होते हैं। ये बाहरी दबाव भी कई बार रचनाकार को लिखने के लिए बाध्य करते हैं। इन बाहरी दबावों में संपादकों का आग्रह, प्रकाशक का तकाज़ा तथा आर्थिक आवश्यकता आदि प्रमुख हैं। लेखक का मत है कि वह बाहरी दबावों से कम प्रभावित होता है। उसे तो उसकी भीतरी विवशता ही लिखने की ओर प्रेरित करती है। उसका मानना है कि प्रत्यक्ष अनुभव से अनुभूति गहरी चीज है।

एक रचनाकार को अनुभव सामने घटित घटना को देखकर होता है, किंतु अनुभूति संवेदना और कल्पना के द्वारा उस सत्य को भी ग्रहण कर लेती है जो रचनाकार के सामने घटित नहीं हुआ। फिर वह सत्य आत्मा के सामने ज्वलंत प्रकाश में आ जाता है और रचनाकार उसका वर्णन करता है।

लेखक बताता है कि उसके द्वारा लिखी 'हिरोशिमा' नामक कविता भी ऐसी ही है। एक बार जब वह जापान गया, तो वहाँ हिरोशिमा में उसने देखा कि एक पत्थर बुरी तरह झुलसा हुआ है और उस पर एक व्यक्ति की लंबी उजली छाया है। विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण उसे रेडियोधर्मी प्रभावों की जानकारी थी। उसे देखकर उसने अनुमान लगाया कि जब हिरोशिमा पर अणु-बम गिराया गया होगा, तो उस समय वह व्यक्ति इस पत्थर के पास खड़ा होगा। अणु-बम के प्रभाव से वह भाप बनकर उड़ गया, किंतु उसकी छाया उस पत्थर पर ही रह गई।

लेखक को उस झुलसे हुए पत्थर ने झकझोर कर रख दिया। वह हिरोशिमा पर गिराए गए अणु-बम की भयानकता की कल्पना करके बहुत दुखी हुआ। उस समय उसे ऐसे लगा, मानो वह उस दु:खद घटना के समय वहाँ मौजूद रहा हो। इस त्रासदी से उसके भीतर जो व्याकुलता पैदा हुई, उसी का परिणाम उसके द्वारा हिरोशिमा पर लिखी कविता थी। लेखक कहता है कि यह कविता 'हिरोशिमा' जैसी भी हो, वह उसकी अनुभूति से पैदा हुई थी। यही उसके लिए महत्त्वपूर्ण था।

<u>प्रश्नोत्तर</u>

प्रश्न 1. लेखक के अनुसार प्रत्यक्ष अनुभव की अपेक्षा अनुभूति उनके लेखन में कहीं अधिक मदद करती है, क्यों?

उत्तर- लेखक की मान्यता है कि सच्चा लेखन भीतरी विवशता से पैदा होता है। यह विवशता मन के अंदर से उपजी

अनुभूति से जागती है, बाहर की घटनाओं को देखकर नहीं जागती। जब तक कवि का हृदय किसी अनुभव के कारण पूरी तरह संवेदित नहीं होता और उसमें अभिव्यक्त होने की पीड़ा नहीं अकुलाती, तब तक वह कुछ लिख नहीं पाता।

प्रश्न 2. लेखक ने अपने आपको हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता कब और किस तरह महसूस किया?

उत्तर- लेखक हिरोशिमा के बम विस्फोट के परिणामों को अखबारों में पढ़ चुका था। जापान जाकर उसने हिरोशिमा के अस्पतालों में आहत लोगों को भी देखा था। अणु-बम के प्रभाव को प्रत्यक्ष देखा था, और देखकर भी अनुभूति न हुई इसलिए भोक्ता नहीं बन सका। फिर एक दिन वहीं सड़क पर घूमते हुए एक जले हुए पत्थर पर एक लंबी उजली छाया देखी। उसे देखकर विज्ञान का छात्र रहा लेखक सोचने लगा कि विस्फोट के समय कोई वहाँ खड़ा रहा होगा और विस्फोट से बिखरे हुए रेडियोधर्मी पदार्थ की किरणें उसमें रुद्ध हो गई होंगी और जो आसपास से आगे बढ़ गईं पत्थर को झुलसा दिया, अवरुद्ध किरणों ने आदमी को भाप बनाकर उड़ा दिया होगा। इस प्रकार समूची ट्रेजडी जैसे पत्थर पर लिखी गई है।

इस प्रकार लेखक हिरोशिमा के विस्फोट का भोक्ता बन गया।

प्रश्न 3. मैं क्यों लिखता हूँ? के आधार पर बताइए कि-

1. लेखक को कौन-सी बातें लिखने के लिए प्रेरित करती हैं?
2. किसीरचनाकार के प्रेरणा स्रोत किसी दूसरे को कुछ भी रचने के लिए किस तरह उत्साहित कर सकते हैं?

उत्तर- लेखक को यह जानने की प्रेरणा लिखने के लिए प्रेरित करती है कि वह आखिर लिखता क्यों है। यह उसकी पहली प्रेरणा है। स्पष्ट रूप से समझना हो तो लेखक दो कारणों से लिखता है-

1. भीतरी विवशता से। कभी-कभी कवि के मन में ऐसी अनुभूति जाग उठती है कि वह उसे अभिव्यक्त करने के लिए व्याकुल हो उठता है।
2. कभी-कभी वह संपादकों के आग्रह से, प्रकाशक के तकाजों से तथा आर्थिक लाभ के लिए भी लिखता है। परंतु दूसरा कारण उसके लिए जरूरी नहीं है। पहला कारण अर्थात् मन की व्याकुलता ही उसके लेखन का मूल कारण बनती है।

प्रश्न 4. कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति/स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दबाव भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दबाव कौन-कौन से हो सकते हैं?

उत्तर- कुछ रचनाकारों की रचनाओं में स्वयं की अनुभूति से उत्पन्न विचार होते हैं और कुछ अनुभवों से प्राप्त विचारों को लिखा जाता है। इसके साथ ऐसे कारण (बाह्य दबाव) भी उपस्थित हो जाते हैं जिससे लेखक लिखने के लिए प्रेरित हो उठता है। ये बाह्य-दबाव हैं-

1. सामाजिक परिस्थितियाँ
2. आर्थिक लाभ की आकांक्षा
3. प्रकाशकों और संपादकों का पुनः-पुनः का आग्रह
4. विशिष्ट के पक्ष में विचारों को प्रस्तुत करने का दबाव

कलाकार अपने दर्शकों, आयोजकों, श्रोताओं की माँग पर कला-प्रदर्शन करते हैं। कई उम्रदराज अभिनेताओं को बड़े-बड़े निर्माता-निर्देशक अभिनय करने का आग्रह न करें तो शायद अब वे आराम करना चाहें। इसी प्रकार कई गायक व गायिकाएँ भी 50 वर्ष से गाते-गाते थक चुकी होंगी, अब फिल्म-निर्माता, संगीतकार और प्रशंसक ही उन्हें गाने के लिए बाध्य करते होंगे।

प्रश्न 6. हिरोशिमा पर लिखी कविता लेखक के अंतः व बाह्य दोनों दबाव का परिणाम है, यह आप कैसे कह सकते हैं?

उत्तर- हिरोशिमा पर लिखी कविता हृदय की अनुभूति प्रस्फुटित होती हुई भावों और शब्दों में जीवंत हो उठी है। कवि ने हिरोशिमा के भयंकर रूप को देखा था, आहत लोगों को देखा था। उसे देखकर लेखक के मन में उनके प्रति

सहानुभूति तो उत्पन्न हुई होगी। किंतु उनकी व्यक्तिगत त्रासदी नहीं बनी। जब पत्थर पर मनुष्य की काली छाया को देखा तो उन्हें अपने हृदय से अणु-बम के विस्फोट का प्रतिरूप त्रासदी बनकर मन में समाने लगा। वही त्रासदी जीवंत होकर कविता में परिवर्तित हो गई। इस तरह हिरोशिमा पर लिखी कविता अंतः दबाव का परिणाम थी।
बाह्य दबाव मात्र इतना हो सकता कि जापान से लौटने पर लेखक ने अभी तक कुछ नहीं लिखा? वह इससे प्रभावित हुआ होगा और कविता लिख दी होगी।

<u>अनुच्छेदलेखन</u>

अनुच्छेद लेखन के समय निम्नलिखित बातों का ध्यानर खना चाहिए-

1. अनुच्छेद सामान्यत: 120 शब्दों में लिखा जाना चाहिए |
2. अनुच्छेद में मुख्य विषय पर ही ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए |
3. अनुच्छेद में विषय की प्रस्तुति प्रभावपूर्ण होना चाहिए |
4. अनुच्छेद में भाषा की शुद्धता तथा शब्दों के चयन पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए |
5. अनुच्छेद में विषय के सभी प्रमुख बिन्दुओं का समावेश किया जाना चाहिए |

मातृभाषा के प्रति अभिरुचि

संकेत बिंदु - मातृभाषा से तात्पर्य, घटती रुचि के कारण, रुचि कैसे बढ़े

जन्म लेने के पश्चा त्मानव जो प्रथम भाषा सीखता है, उसे उसकी मातृभाषा कहते हैं | जिस भाषा में माँ बोलती है, विचार करती है वही उस बच्चे की मातृभाषा होगी | मातृभाषा शिशु की सामाजिक एवं भाषाई पहचान होती है | सभी संस्कार एवं व्यवहार हम इसी के माध्यम से प्राप्त करते हैं | इसी भाषा के माध्यम से हम अपनी संस्कृति से जुड़कर उसे आगे बढ़ाते हैं |
आज मातृभाषा के प्रति हमारी अभिरुचि घटती जा रही है | हम अपनी मातृभाषा से दूर होते जा रहे हैं | अंग्रेजी का बढ़ता प्रभाव, शहरीकरण, आदि इसके प्रमुख कारण हो सकते हैं | यह सत्य है कि हम जितनी अधिक भाषाएँ सीखेंगे वे हमारे व्यक्तितत्व के विकास में सहायक सिद्ध होंगी किन्तु इसका अभिप्राय यह नहीं है कि हम अपनी मातृभाषा, अपनी सांस्कृतिक धरोहर से दूरी बना लें | हम जिस राज्य या प्रान्त से हैं वहाँ की बोली हमें अवश्य आनी चाहिए | आज हम अपनी भाषा के सुंदर लोकगीत, दोहे और छंद भूलते जा रहे हैं |
परिवारों में मातृभाषा का प्रयोग मातृभाषा के प्रतिरुचि उत्पन्न कर सकती है | हम सोशल मीडिया व डिजिटल मंचों पर भी मातृभाषा का प्रयोग कर सकते हैं | हमें अपनी भारतीय संस्कृति की अनूठी विशेषता विविधता में एकता को चरितार्थ करते हुए अपनी सांस्कृतिक धरोहर, अपनी मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए | उसे सहेजकर रखना चाहिए| महात्मा गांधीजी ने भी कहा था कि “मातृभाषा यदि शिक्षा का माध्यम नहीं होगी तो बच्चे रटने को मजबूर हो जाएँगे जिससे उनकी सृजनात्मकता समाप्त हो जाएगी |”
मातृभाषा के महत्त्व को समझते हुए यूनेस्को ने 17 नवम्बर 1999 को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाने की स्वीकृति दी थी | इसी कारण विश्व भर में 21 फरवरी को अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है | हमें भी इसके संरक्षण के लिए सामूहिक प्रयास करना चाहिए |

साइबर युग, साइबर ठगी : सावधानियाँ एवं सुरक्षा उपाय

संकेत बिंदु - बढ़ते ऑनलाइन कार्य, साइबर ठगी की बढ़ती घटनाएँ, सावधानियाँ, इससे बचने के उपाय

कंप्यूटर या इंटरनेट का उपयोग करके किये गए अपराध साइबर अपराध की श्रेणी में आते हैं | तकनीकी प्रगति के साथ कंप्यूटर और इंटरनेट का प्रयोग बढ़ता गया | आजकल सामाजिक नेट्वर्किंग, ऑनलाइन खरीद, जानकारी प्राप्त

करना, गेम खेलना, ऑनलाइन पढ़ाई और नौकरियों की तलाश करना आदि के अत्यधिक प्रयोग के साथ साइबर अपराध भी तेज़ी से बढ़ रहे हैं | इसमें शामिल लोगों को हैकर के नाम से जाना जाता है | आजकल कुछ ऐसी वेबसाइट बनाई गई हैं , जहाँ पर कुछ लालच देकर किसी चीज को खरीदने के लिए ऑफर देते हैं और फिर आपका एटीएम या मोबाइल नम्बर माँगा जाता है, इस प्रकार हम साइबर क्राइम का शिकार हो जाते हैं | यह अपराध व्यक्तियों द्वारा न केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए बल्कि किसी व्यक्ति ,संस्था या राष्ट्र को नुकसान पहुँचाने के उद्देश्य से भी किये जाते हैं | साइबर अपराध के अंतर्गत आर्थिक हानि, गोपनीय जानकारी चुराना, साइबर आतंकवाद, ऑनलाइन उत्पीड़न नशीली दवाओं की तस्करी भी शामिल है |
साइबर अपराध के भयावह कार्यों से सुरक्षित रहने के लिए हमें मज़बूत पासवर्ड का उपयोग करना चाहिए | अपने डिवाइस को नवीनतम सुरक्षा सॉफ्टवेयर से अपडेटर खना चाहिए | इसके अलावा सार्वजनिक नेटवर्क पर संवेदनशील जानकारी साझा करने से बचें और अपने ईमेल और सोशल मीडिया प्रोफाइल को सुरक्षित रखने के लिए गोपनीयता सेटिंग का उपयोग करें |

सिनेमा और युवा पीढ़ी

संकेत बिंदु- युवा पीढ़ी पर सकारात्मक प्रभाब, युवा पीढ़ी पर नकारात्मक प्रभाव, उद्देश्य प्रधान सिनेमा की आवश्यकता

सिनेमा और युवा पीढ़ी के बीच गहरा सम्बन्ध है | सिनेमा युवाओं के मनोरंजन, ज्ञान और सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के लिए महत्त्वपूर्ण माध्यम है | सिनेमा के बहुत सारे प्रभाव हैं, जिनसे युवा पीढ़ी सबसे अधिक प्रभावित होती है | सिनेमा एक तरफ जहाँ हमारे जीवन पर अच्छा प्रभाव डालता है, वहीँ दूसरी ओर इसका बुरा प्रभाव भी होता है | ऐसी फ़िल्में जिनमें शिक्षाप्रद सामग्री शामिल होती है, को देखने से युवाओं का ज्ञान बढता है और उन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है | फ़िल्में युवा पीढ़ी के लिए मनोरंजन के रूप में भी सहायक सिद्ध होती हैं | वहीं दूसरी ओर अत्यधिक सिनेमा देखना युवाओं के लिए समय की बर्बादी बन जाता है | कई युवाओं को फिल्मों की लत लग जाती है और वे अपना कीमती समय पढ़ाई के स्थान पर फ़िल्में देखने में नष्ट कर देते हैं | आजकल ऐसी फ़िल्में प्रदर्शित हो रही हैं, जो अपना दुष्प्रभाव सीधा दर्शक पर छोड़ती हैं, जिनमें नए- नए फैशन दर्शकों को दिखाए जाते हैं | फिल्मों में दिखाए गए चोरी, डकैती, साइबर क्राइम आदि से युवा पीढ़ी पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है | फिल्मों ने हमारे सामाजिक जीवन को विकृत कर दिया है | इनमें सुधार लाने के लिए सामाजिक उद्देश्य प्रधान फिल्मों के निर्माण की आवश्यकता है | फिल्मों में मनोरंजन के साथ-साथ मार्गदर्शन भी होना चाहिए | युवाओं को भी सिनेमा के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रभावों को समझाना चाहिए | उन्हें फिल्मों के चयन में सावधानी बरतनी चाहिए | उन्हें सिनेमा को केवल मनोरंजन के रूप में नहीं, बल्कि ज्ञान जागरूकता और सामाजिक विकास के साधन के रूप में भी देखना चाहिए |

ई-कचरा

संकेत बिंदु- ई-कचरे तात्पर्य, ई-कचरे की समस्याएं, ई-कचरे का निपटान

ई- कचरा ऐसे इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद हैं जो अवांछित हैं, काम नहीं कर रहे हैं और जिनका उपयोगी जीवन समाप्त हो चुका है| यह आधुनिक समय की गंभीर समस्या है | वर्तमान समय में विज्ञान के फलस्वरूप, आज नित नए-नए उन्नत तकनीक वाले इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों का उत्पादन हो रहा है | जैसे ही बाज़ार में उन्नत तकनीक वाला उत्पाद आता है, वैसे ही पुराने यंत्र बेकार पड़ जाते हैं | इसका परिणाम आज आप सभी के सामने है कि आज कंप्यूटर, लेपटॉप, मोबाइल फोन, टीवी आदि के रूप में ई-कचरा बढ़ता जा रहा है | एक अनुमान के
अनुसारएकवर्षमेंसम्पूर्णविश्वमेंलगभग 50 मिलियनटनई-कचराउत्पन्नहोताहै | यहअत्यंतचिंताकाविषयहैकिई-कचरे का

निपटान उस दर से नहीं हो पा रहा है, जितनी तेज़ी से उत्पन्न हो रहा है | ई- कचरे को खुले में डालने या जलाने से पर्यावरण के लिए गंभीर समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं, क्योंकि इन यंत्रों में आर्सेनिक, कोबाल्ट, मरकरी, लिथियम, लेड आदि हानिकारक अवयव होते हैं | ई-कचरे की बढ़ती मात्रा को देखते हुए भारत सरकार ने अक्टूबर 2016 में ई-कचरा प्रबंधन नियम बनाया था | इन नियमों का मकसद ई-कचरे के प्रबंधन से जुड़े नियमों को तय करना और इन से होने वाले पर्यावरण और स्वास्थ्य के नुकसान को कम करना था | अब समय आ गया है कि ई-कचरे का उचित निपटान और पुन: चक्रण पर ध्यान दिया जाए अन्यथा जल्दी ही पूरी दुनिया इस समस्या से जूझेगी | इसे 3 Rs (कम करना, पुन: उपयोग करना, पुन:चक्रण करना) से नियंत्रित किया जा सकता है |

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत

संकेत बिंदु- निराशा मानव के लिए अभिशाप, बलवती आशाएं और उत्साह के अनुकूल परिणाम, बलवती आशा से ही संकल्प दृढ़ होते हैं

मनुष्य का जीवन संघर्षों, कठिनाइयों और परीक्षाओं से भरा होता है। हर व्यक्ति अपने जीवन में कभी न कभी असफलता, दुख और निराशा का सामना करता है। ऐसे समय में जो व्यक्ति हिम्मत हार बैठता है, वह जीवन की दौड़ में पिछड़ जाता है। जब कि जो व्यक्ति अपने मन को मजबूत बनाए रखता है, वही सफल होता है। इसलिए कहा गया है – "मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।"

निराशा मनुष्य की सबसे बड़ी शत्रु होती है। यह उसके आत्मबल और आत्म विश्वास को कमज़ोर कर देती है। निराश व्यक्ति अपने लक्ष्य से भटक जाता है और उसके भीतर किसी भी कार्य को करने की इच्छा समाप्त हो जाती है। निराशा जीवन में एक अंधकार की तरह होती है, जो व्यक्ति की सारी योग्यताओं को ढकलेती है। इतिहास साक्षी है कि जो भी महापुरुष सफल हुए हैं, उन्होंने कभी निराशा को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया। जीवन में आशा और उत्साह का बहुत बड़ा महत्त्व है। आशावान व्यक्ति हमेशा सकारात्मक सोच रखता है और कठिनाइयों का डटकर सामना करता है। उत्साह से परिपूर्ण मनुष्य असंभव कार्यों को भी संभव बना लेता है। उसकी सकारात्मक सोच और प्रयास ही उसे सफलता के शिखर तक पहुँचाते हैं।

जब किसी के मन में प्रबल आशा होती है, तभी उसके भीतर दृढ़ संकल्प भी उत्पन्न होता है। वही संकल्प मनुष्य को लक्ष्य तक पहुँचने की प्रेरणा और शक्ति प्रदान करता है।

अतः हमें कभी भी निराश नहीं होना चाहिए। यदि हम अपने मन को मजबूत रखें, आशावान और उत्साही रहें, तो कोई भी कठिनाई हमारे मार्ग में बाधा नहीं बन सकती। सच्चे मन और पूरी लगन से किया गया प्रयास अवश्य सफल होता है। यही जीवन का सबसे बड़ा सत्य है।

शारीरिक शिक्षा और योग

संकेत बिंदु- शारीरिक शिक्षा का अर्थ एवं महत्त्व, शारीरिक शिक्षा और योग, प्रभाव एवं अच्छे परिणाम

मनुष्य के सर्वांगीण विकास के लिए मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और शारीरिक विकास का संतुलन अत्यंत आवश्यक होता है। आधुनिक युग में जहाँ तकनीकी प्रगति और प्रतिस्पर्धा ने जीवन को तीव्र बना दिया है, वहीं इसके दुष्परिणाम के रूप में जीवन शैली संबंधी रोग, तनाव, अवसाद जैसी समस्याएँ भी बढ़ती जा रही हैं। ऐसे समय में शारीरिक शिक्षा और योग एक ऐसा माध्यम बनकर उभरे हैं जो व्यक्ति को न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रखते हैं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक रूप से भी संतुलन प्रदान करते हैं |

शारीरिक शिक्षा का सामान्य अर्थ है–शरीर को स्वस्थ, सशक्त और सक्षम बनाए रखने हेतु किए जाने वाले विविध शारीरिक क्रिया कलापों का अभ्यास। यह केवल शरीर को सक्रिय रखने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण का आधार भी है।

शारीरिक शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति में आत्म-नियंत्रण, नेतृत्व क्षमता और टीमभावना जैसे महत्वपूर्ण गुण विकसित होते हैं। शारीरिक शिक्षा और योग एक-दूसरे के पूरक हैं। जहाँ शारीरिक शिक्षा बाह्य बल, सहन शक्ति और सक्रियता पर बल देती है, वहीं योग आंतरिक शांति, मानसिक संतुलन और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रदान करता है। योग के अंतर्गत विभिन्न आसनों, प्राणायाम और ध्यान की विधियों का अभ्यास व्यक्ति को न केवल शारीरिक रूप से स्वस्थ रखता है, बल्कि मानसिक तनाव, चिंता, क्रोध से भी मुक्ति दिलाता है । जब शारीरिक शिक्षा के कार्यक्रमों में योग को सम्मिलित किया जाता है, तो यह एक समग्र और संतुलित विकास सुनिश्चित करता है। इससे विद्यार्थियों और युवाओं को एक ऐसी जीवन शैली मिलती है जो दीर्घकालिक रूप से उपयोगी और प्रभावी होती है।

डिजिटल जगत में समाचार पत्रों का स्थान

संकेत बिंदु- प्रिंट मीडिया की उपयोगिता, समाचार पत्रों का डिजिटल रूप में उपलब्ध होना, बुजुर्ग व्यक्तियों, ग्रामीण इलाकों इत्यादि के लिए प्रिंट का महत्त्व, प्रिंट डिजिटल दोनों का सामर्थ्य

डिजिटल जगत में प्रिंट मीडिया एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा सूचनाओं की जानकारी को लिखित या चित्रों के माध्यम से प्रकाशित किया जाता है और एक स्थान से दूसरे स्थान ले जाया जाता है | जैसे - समाचार पत्र, पत्रिकाएँ आदि |

आज लोगों के बीच डिजिटल समाचार- पत्र, पत्रिकाएँ लोकप्रिय हो रही हैं | डिजिटल मीडिया लेखकों की तुलना में रिपोर्टर विषयों और समाचारों को अधिक गहराई से कवर करते हैं | इसके विपरीत प्रिंट मीडिया में समाचार पत्र महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इसलिए इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए | सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रिंट मीडिया बेहतर सामग्री और गुणवत्ता प्रदान कर सकता है | ग्रामीण इलाकों में बुजुर्ग व्यक्ति डिजिटल तकनीकों से कम परिचित होते हैं इसलिए प्रिंट मीडिया के माध्यम से सरल और सुलभ तरीके से समाचार पत्र प्राप्त कर सकते हैं | प्रिंट समाचार- पत्र ज्यादातर स्थानीय घटनाओं पर बल देते हैं जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में लोंगों को अपने आस-पास हो रही घटनाओं की अधिक जानकारी मिल जाती है |

ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर विशेष भाषाएँ बोली जाती हैं और प्रिंट मीडिया इसको ध्यान में रखकर उचित समाचार पहुंचाता है | गाँवों में तकनीकी समस्याएँ होती हैं जिसमें प्रिंट मीडिया एक सुरक्षित और उपयोगी साधन है | इसके विपरीत डिजिटल का अपना महत्त्व है डिजिटल मीडिया से सूचना त्वरित पहुँचती है जो लोगों को अपडेट रखने में मदद करती है |

ग्लोबल वार्मिंग और जन-जीवन

संकेत बिंदु- ग्लोबल वार्मिंग का अभिप्राय, ग्लोबल वार्मिंग के कारण, ग्लोबल वार्मिंग से हानियाँ, बचाव के उपाय

ग्लोबल वार्मिंग से तात्पर्य पृथ्वी के औसत तापमान में वृद्धि से है, जो मुख्यतः मानवीय गतिविधियों के कारण होती है | इसका प्रमुख कारण पर्यावरण में ग्रीनहाउस गैसों जैसे- मीथेन, कार्बनडाई-ऑक्साइड की मात्रा बढ़ना है जिसके कारण इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्व के लिए संकट उपस्थित हो गया है | फ्रिज, ए.सी और जीवाश्म ईंधन के अत्यधिक प्रयोग से कार्बनडाई-ऑक्साइड का स्तर बढ़ जाता है | इसके अलावा खनन, वनों की कटाई, डीज़ल तेल, खतरनाक रसायनों को जलाना, प्लास्टिक का अत्यधिक उपयोग जैसी गतिविधियाँ ग्लोबल वार्मिंग के प्रमुख कारण हैं| ग्लोबल वार्मिंग से हमें जलवायु परिवर्तन, चक्रवात, बाढ़, सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ रहा है | ओज़ोन परत को नुकसान पहुँचाना, ग्लेशियरों का पिघलना जैसी कई समस्याएँ उत्पन्न हो गईं हैं | बर्फीले पहाड़ पिघलकर समुद्र में मिलते जा रहे हैं जिसके कारण समुद्र का जलस्तर बढ़ता जा रहा है और पृथ्वी का संतुलन बिगड़ रहा है | ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए जन साधारण और सरकार दोनों को मिलकर प्रयास करना चाहिए | प्लास्टिक का उपयोग कम करना, औद्योगिक कचरे को नियंत्रित करना , हवा में हानिकारक गैसों के निस्तारण पर

रोक, वनों की कटाई रोककर वृक्षारोपण को प्रोत्साहित करना , नवीकरणीय ऊर्जा का इस्तेमाल, जैविक खेती अपनाना जैसी उपाय द्वारा इस पर रोक लगाया जा सकता है |

सड़क सुरक्षा : जीवन रक्षा

संकेत बिंदु- सुरक्षा से जुड़े कुछ नियम, सड़क सुरक्षा के नियमों की अनदेखी से होनी वाली हानियाँ, इन्हें अपनाने से लाभ

सभी सड़क सुरक्षा उपायों के प्रयोग द्वारा सड़क हादसों की रोकथाम और बचाव है -सड़क सुरक्षा | सभी लोगों के लिए उनके पूरे जीवन भर सड़क उपायों का अनुसरण करना बहुत ही अच्छा और सुरक्षितहै | सभी को गाड़ी चलाते समय या पैदल चलते वक्त दूसरों का सम्मान करना चाहिए और उनकी सुरक्षा का ध्यान रखना चाहिए | सडक किनारे हादसों, चोट और मृत्यु को टालने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण पहलुओं में से एक है सड़क पर लोगों की सुरक्षा | दिनों-दिन सड़क पर गाड़ी चलाना असुरक्षित बनता जा रहा है | कई बार लोग लम्बे समय तक अपने निजी वाहनों को बिना किसी नियमित रख-रखाव और मरम्मत के रखते हैं, इसलिए यह बहुत ज़रूरी है कि समय से मरम्मत के साथ वाहनों की ठीक ढंग से कार्य करने की स्थिति के प्रति आश्वस्त रहें | ये केवल वाहन के जीवन को ही नहीं बढ़ाता अपितु हादसों को घटाने में भी सहायता करता है |

एक महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में स्कूल में सड़क सुरक्षा उपायों को जरूर जोड़ना चाहिए जिससे वाहन चलाने से पहले अपने शुरुआती समय में ही विद्यार्थियों को इसके बारे में पूरी जानकारी प्राप्त हो सके | वाहनों के संचालन और उचित सड़क सुरक्षा उपायों के बारे में गलत जानकारी के बारे में ज़्यादातर सड़क हादसे होते हैं |

सभी सड़क समस्याओं से बचने के लिए निम्न दिए गए सभी सड़क सुरक्षा उपाय बहुत मदद करते हैं | सड़क सुरक्षा के कुछ प्रभावकारी उपाय हैं जैसे - वाहन के बारे में मूल जानकारी, मौसम और सड़क के हालात के अनुसार रक्षात्मक चालन, वाहनलाइट और हॉर्न का प्रयोग, सीट पेटी का पहनना, वाहन शीशा का सही प्रयोग, अधिक गति से बचना, रोडलाइट को समझाना, सड़क पर दूसरे वाहनों से दूरी बनाए रखना आदि|

<u>अभ्यास कार्य</u>

1 .शिक्षक- शिक्षार्थी के संबंध :

संकेत बिंदु : प्राचीन भारत में गुरु शिष्य सम्बन्ध, वर्तमान युग में गुरु शिष्य के सम्बन्ध आया अंतर, हमारा कर्तव्य

2 . वृक्षारोपण का महत्व :

संकेत बिंदु :वृक्षारोपण का अर्थ, वृक्षारोपण क्यों, हमारा दायित्व

3 .इंटरनेट की दुनिया:

संकेत बिंदु :इंटरनेट का तात्पर्य, सूचना का मुख्य साधन, लाभ तथा हानि

4 . आधुनिक जीवन :

संकेत बिंदु :आवश्यकताओं में वृद्धि, अशांति, क्या करें ओर क्या न करें

5 . पहला सुख निरोगी काया

संकेत बिंदु :आशय, व्यायाम और स्वस्थ, समाज को लाभ, बुजुर्गों के प्रति वर्तमान स्थिति के कारण, बतौर समुदाय हमारी जवाब देहीआपके द्वारा बदलाव के कुछ सुझाव

<u>पत्र लेखन</u>

पत्र लेखन क्या है?

पत्र लेखन एक प्रकार का संचार का साधन है, जिसमे हम अपने विचारों या किसी प्रकार की जानकारी को कागज तथा पेन के माध्यम से दूसरे व्यक्ति के पास भेजते हैं।

पत्र के प्रकार

पत्र लेखन वैसे तो बहुत प्रकार का होता है लेकिन सीबीएसई बोर्ड परीक्षा में दो प्रकार के पत्र लेखन संबंधित प्रश्न आते हैं- **(1) औपचारिकपत्र (2) अनौपचारिक पत्र**

औपचारिक पत्र

ये पत्र ए कनिश्चित पैटर्न और औपचारिकता का पालन करते हैं। उन्हें पूरी तरह से प्रोफेशनल लहजे में लिखा जाता है, और सीधे संबंधित मुद्दों को संबोधित किया जाता है। किसी भी प्रकार का व्यावसायिक पत्र या अधिकारियों को लिखा गया पत्र इस श्रेणी में आता है।

नीचेसूचीमेंविभिनऔपचारिकपत्रोंकेनामहैं-

1. आवेदन पत्र 2. शिकायती पत्र 3. संपादक को पत्र 4. नौकरी सम्बन्धी पत्र. 5 बैंक अधिकारी को पत्र
6. कार्यालयी पत्र 7. अवकाश हेतु प्रार्थना पत्र 8. सामान का ऑर्डर करने हेतु पत्र 9. जिलाधिकारी को पत्र

अनौपचारिक पत्र

ये व्यक्तिगत पत्र हैं। उन्हें किसी निर्धारित पैटर्न या किसी औपचारिकता का पालन करने की आवश्यकता नहीं है। इनमें व्यक्तिगत जानकारी होती है या ये लिखित बातचीत होती है। अनौपचारिक पत्र आम तौर पर दोस्तों, परिचितों, रिश्तेदारों आदि को लिखे जाते हैं।

नीचे विभिन्न अनौपचारिक पत्रों के नाम हैं -

1. माता पिता को पत्र 2. भाई या बहन को पत्र 3. मित्र को पत्र 4. संबंधी (चाचा या मामा इत्यादि) को पत्र
5. पड़ोसी को पत्र

पत्र लेखन के उदाहरण

अनौपचारिक पत्र

1.आप श्रेयस राजपूत या श्रेयसी सिंह है। आप छात्रावास में रहते हैं। आपको अपने पिताजी से पता चला है कि आपकी माताजी पूरे परिवार का तो ध्यान रखती हैं किंतु अपने स्वास्थ्य की अक्सर अनदेखी कर देती हैं माताजी को समझाते हुए लगभग 100 शब्दों का एक पत्र लिखिए।

होस्टल गेट 5
दिल्ली यूनिवर्सिटी,
दिल्ली
दिनांक: 05/07/2025
आदरणीय माता जी,
चरणस्पर्श!

मैं यहाँ हॉस्टल में कुशलतापूर्वक रह रहा हूँ और मेरा स्वास्थ्य भी बढ़िया है। आशा करता हूँ कि आप भी वहाँ सकुशल होंगी तथा घर में सभी का स्वास्थ्य बढ़िया होगा।

अभी हाल ही में घर में पापा के द्वारा पता चला कि आप अपने स्वास्थ्य का बिल्कुल भी ख्याल नहीं रखती हैं मां ऐसे कैसे चलेगा क्योंकि आप ही पूरे घर का आधार हैं अगर आप ही अच्छी ना रहेंगी तो घर कैसे चलेगा और घर में सब कैसे स्वस्थ रहेंगे। अतः मैं आशा करता हूँ कि आप मेरी सलाह पर ध्यान दोगे और अपने स्वास्थ्य का ख्याल रखोगे।

आपका आज्ञाकारी बेटा,
श्रेयस

छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखकर प्रातः काल नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करने के लिए प्रेरित कीजिए।

होस्टल गेट 2
सरदार पटेल यूनिवर्सिटी,
मेरठ
दिनांक: 15/03/2025

प्रिय राजीव
सदा खुश रहो!

मैं यहाँ हॉस्टल में कुशलतापूर्वक रह रहा हूँ और मेरा स्वास्थ्य भी बढ़िया है। आशा करता हूँ कि तुम भी अपने हॉस्टल में अच्छे होंगे तथा तुम्हारा स्वास्थ्य बढ़िया होगा।

अभी हाल ही में घर में मम्मी के द्वारा पता चला कि तुम पढ़ाई के तनाव के बीच अपने स्वास्थ्य का बिल्कुल भी ध्यान नहीं दे रहे हो और आधी रात तक पढ़ने के लिए अधिक मात्रा में जंक फूड और कॉफी का सेवन कर रहे हो। इससे न सिर्फ तुम्हारा शारीरिक स्वास्थ्य गड़बड़ होगा बल्कि तुम्हारे मानसिक स्वास्थ्य पर भी असर पड़ेगा क्योंकि इतनी अधिक मात्रा में तनाव लेने से तुम्हारे दिमाग पर गंभीर असर पड़ेगा और ऊपर से अगर तुम 7 या 8 घंटा की नींद नहीं लोगे तो यह तनाव तुम्हारे दिमाग को धीरे-धीरे कमज़ोर कर देगा। अतः अपने मानसिक स्वास्थ्य तथा शारीरिक स्वास्थ्य को तंदुरुस्त रखने हेतु तुम नियमित रूप से प्रातः काल उठकर कुछ योग तथा प्राणायाम का अभ्यास करो।

यह अभ्यास ज्यादा से ज्यादा तुम्हारा 20 मिनट लेंगे तथा तुम एक स्वस्थ जिंदगी जी पाओगे। इन प्राणायाम तथा योग से तुम भविष्य में होने वाली सभी बीमारियों से बचे रहोगे।

मैं आशा करता हूं कि तुम मेरी सलाह पर ध्यान दोगे।

तुम्हारा बड़ा भाई
रौनक सिंह

<u>अनौपचारिक पत्रों के लिए प्रश्न:</u>

1. अपने मित्र को अपने जन्मदिन की पार्टी में आमंत्रित करने के लिए पत्र लिखिए।
2. अपने छोटे भाई को परीक्षा में सफलता पाने के लिए शुभकामना संदेश देते हुए पत्र लिखें |
3. आपका नाम रोहन और रोशनी है। आप अपने विद्यालय की तरफ से किसी बड़े शहर की शैक्षणिक यात्रा पर गए हैं। यात्रा से लौटकर उसकी जानकारी देते हुए अपनी बड़ी बहन को पत्र लिखिए।
4. आपके विद्यालय में वाद- विवाद प्रतियोगिता में अपने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है। अपनी इस उल्लेखनीय उपलब्धि का समस्त विवरण अपने मित्र को पत्र लिखकर प्रस्तुत कीजिए ।
5. छात्रावास में रहने वाले अपने छोटे भाई को पत्र लिखकर प्रात: काल नियमित रूप से योग एवं प्राणायाम करने का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करते हुए पत्र लिखिए ।

<u>औपचारिक पत्र</u>

अपने क्षेत्र में सार्वजनिक पुस्तकालय खुलवाने की आवश्यकता समझने हेतु दिल्ली के शिक्षा मंत्री के नाम एक पत्र लिखिए।

सेवा में,
श्रीमान शिक्षा मंत्री जी,

दिल्ली सरकार
नई दिल्ली।
दिनांक: 07/05/2025
विषय: सार्वजनिक पुरस्कार खुलवाने हेतु पत्र।
आदरणीय महोदय,
मैं दिल्ली शहर के सोनी कस्बे का निवासी हूँ। यह एक बेहद ही पिछड़ा हुआ इलाका है तथा इस कस्बे की अधिकांश जनता बेहद ही गरीब तथा अशिक्षित है। इस कस्बे में जो बच्चे पढ़ने भी जाते हैं तो वह धन की कमी के कारण पढ़ाई की सामग्री नहीं खरीद पाते हैं इसीलिए वह अच्छी पढ़ाई से वंचित रह जाते हैं।
अतः मैं आपको यह पत्र लिखकर आपसे यह विनती करता हूं कि आप सोनी कस्बे में एक सार्वजनिक पुस्तकालय खुलवाने की कृपा करें।
धन्यवाद सहित
भवदीय,
गौरव
आपका नाम निहाल सिंह / निहारिका है आपके मोहल्ले के पार्क में कुछ अराजक तत्व आकर बैठ जाते है जिनके कारण बच्चों,बुजुर्गों व महिलाओं को समस्या का सामना करना पड़ रहा है प्रशासन का इस और ध्यान आकर्षित करने के लिए क्षेत्रीय समाचारपत्र के संपादक के नाम पत्र लिखिए |
प्रेषक
निहाल सिंह
नेहरू कॉलोनी,
देहरादून - 248001
दिनांक: 28 अप्रैल 2025
सेवा में,
संपादक महोदय,
अमर उजाला,
देहरादून।
विषय: पार्क में अराजक तत्वों की उपस्थिति के संबंध में ध्यान आकर्षित करने हेतु पत्र।
मान्यवर,
सविनय निवेदन है कि मैं नेहरू कॉलोनी, देहरादून का निवासी हूँ। मैं आपके प्रतिष्ठित समाचार पत्र के माध्यम से संबंधित अधिकारियों का ध्यान हमारे क्षेत्र के पार्क की गंभीर समस्या की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ।
इन दिनों पार्क में कुछ अराजक तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है। वे दिनभर बेवजह बैठकर शोरगुल करते हैं, गंदगी फैलाते हैं और आने-जाने वालों पर फब्तियाँ कसते हैं। इस कारण न तो बच्चे पार्क में निर्भय होकर खेल पाते हैं और न ही महिलाएँ अथवा बुजुर्ग वहाँ स्वतंत्रता से घूमने जा पाते हैं।
यह स्थिति दिन-प्रतिदिन और भी विकट होती जा रही है, जिससे स्थानीय निवासियों में भय और असुविधा का वातावरण बन गया है।
हम सभी क्षेत्रवासी अपेक्षा करते हैं कि प्रशासन शीघ्र ही इस समस्या का संज्ञान लें और पार्क में नियमित पुलिस गश्त तथा आवश्यक सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करें, जिससे पार्क की मूल भावना - मनोरंजन और विश्राम - पुनः बहाल हो सके।

आपसे निवेदन है कि कृपया इस विषय को अपने लोकप्रिय समाचार पत्र में स्थान देकर संबंधित अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करें।

सधन्यवाद।

भवदीय,

(निहाल सिंह)

नेहरू कॉलोनी, देहरादून

आपका नाम विनीत /विनीता है आपके मोहल्ले में नालियाँ खुली हैं जिनके कारण मच्छरों और बदबू की समस्या पैदा हो रही है इस समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए नगर निगम आयुक्त को शिकायती पत्र लिखिए |

प्रेषक:

विनीत सिंह

जगदम्बा कॉलोनी,

देहरादून - 248001

दिनांक: 28 अप्रैल 2025

सेवा में,

आयुक्त महोदय,

नगर निगम,

देहरादून।

विषय:गली में खुली नालियों से उत्पन्न दुर्गंध एवं डेंगू के खतरे के संबंध में शिकायत।

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि मैं जगदम्बा कॉलोनी, देहरादून का निवासी हूँ। हमारे क्षेत्र की गलियों में नालियाँ खुली हुई हैं, जिनकी नियमित सफाई नहीं हो रही है। परिणामस्वरूप वहाँ से भयंकर दुर्गंध फैल रही है और मच्छरों का प्रकोप दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। इससे डेंगू जैसी गंभीर बीमारियों का खतरा मंडरा रहा है।

स्थानीय निवासियों के लिए घरों से बाहर निकलना भी कठिन हो गया है। बच्चे और वृद्धजन विशेष रूप से प्रभावित हो रहे हैं। यदि समय रहते उचित कदम नहीं उठाए गए, तो स्थिति और भी भयावह हो सकती है।

आपसे अनुरोध है कि कृपया जल्द-से-जल्द नालियों को ढकवाने, नियमित सफाई करवाने और मच्छर रोधी दवाओं का छिड़काव कराने की व्यवस्था करवाई जाए, ताकि क्षेत्रवासियों को राहत मिल सके।

सधन्यवाद।

भवदीय,

विनीत सिंह

<u>अभ्यास प्रश्न</u>

औपचारिक पत्रों के लिए प्रश्न:

1. अपने विद्यालय के प्रधानाचार्य को वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता में भाग लेने की अनुमति हेतु पत्र लिखिए।
2. जिला अधिकारी को अपने क्षेत्र में सड़क की खराब स्थिति को सुधारने के लिए पत्र लिखिए।
3. पुस्तकालयाध्यक्ष को पुस्तकालय में नई किताबें उपलब्ध कराने के लिए निवेदन पत्र लिखिए।
4. बिजली विभाग के अधीक्षण अभियंता को क्षेत्र में लगातार बिजली कटौती की समस्या के समाधान हेतु पत्र लिखिए।

5. कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में अपराध बनने लगे हैं जिससे आप चिंतित हैं इन अपराधों की रोकथाम के लिए थाना अध्यक्ष को लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए
6. आपके क्षेत्र में डेंगू फैल रहा है स्वास्थ्य अधिकारी को पत्र लिखकर उपयुक्त चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध कराने के लिए लगभग 100 शब्दों में प्रार्थना पत्र लिखिए।
7. अपने क्षेत्र की नालियों तथा सड़कों की समुचित सफाई न होने पर स्वास्थ्य अधिकारी को एक पत्र लगभग 80 से 100 शब्दों में लिखिए।
8. आपकी कक्षा में एक नए अध्यापक पढ़ाने आए हैं जो कि बहुत अच्छा पढ़ाते हैं। उनके विषय में परिचयात्मक सूचना देते हुए अपने मित्र को लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए।

ई-मेल लेखन

ई मेल- काअर्थ होता है इलेक्ट्रॉनिक मेल। इंटरनेट के माध्यम से, हम अल्प समय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं और प्रदान कर सकते हैं। आज की दुनिया में, ईमेल- संचार का सबसे सामान्य रूप है। आज शायद ही कोई कंप्यूटर उपयोगकर्ता होगा, जो ईमेल लेखन में इलेक्ट्रॉनिक संचार प्रणाली पर संद-मेल का उपयोग न करता हो। ई-ेश लिखना, भेजना, संग्रह करना और प्राप्त करना शामिल है।

ईल लिखते समय ध्यान रखने योग्य बातें-

ई: मेल का विषय स्पष्ट होना चाहिए- - ईमेल को लिखते समय उसका विषय स्पष्ट रखा जाना चाहिए क्योंकि जिस - मेल लिख रहे हैं या जो मेल में लिखा हुआ है-कार्य के लिए आप ई, उसके बारे में विषय में ही पता लग जाए अथवा ई मेल किस बारे में है-, इसकी जानकारी विषय से ही हो जानी चाहिए। आपकी ई मेल का विषय आकर्षक- होगा तो मेल प्राप्त करने वाले व्यक्ति को आपके काम की गंभीरता के बारे में पता चलेगा।

ईमेल पता लिखें- : - आप किसी संस्था या किसी कंपनी के लिए काम कर रहे हैं तो उस कंपनी के ईमेल पते का - प्रयोग करें। किसी भी कंपनी के लिए या कोई भी औपचारिक कार्य के लिए औपचारिक ईमेल का ही प्रयोग करें व - इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि मेल करते समय आप अपनी संस्था या कंपनी के नाम का ही प्रयोग करें जिससे मेल प्राप्त करने वाले व्यक्ति को समझ में आ सके कि मेल किसके द्वारा भेजा गया है।

शार्ट फॉर्म लिखने से बचें : - जब भी आप कोई औपचारिक ई (शॉर्ट फॉर्म) मेल लिख रहे हैं तो अल्प शब्दों को- मेल पढ़ने वाले पर आपका गलत प्रभाव-लिखने से बचना चाहिए क्योंकि अल्प शब्द ई भी डाल सकता है। अल्प शब्दों का प्रयोग करने से ईमेल पढ़ने वाले को लग सकता है कि आप कार्य को लेकर ज्यादा गंभीर नहीं है या फिर - आप के द्वारा लिखे गए अल्प शब्दों का वह गलत मतलब भी समझ सकता है।

उदाहरण के लिए : - आप लिखना Please Find Attachment चाहते हैं उसे PFA मत लिखिए।

सन्देश को एडिट करें : - मेल भेजते समय अपनी ईमेल में गलती की संभावना -मेल को अवश्य एडिट करें इससे ई- | कम हो जाती है व्यापारिक मेल में इन बातों का विशेष ध्यान रखा जाता है| यदि आप औपचारिक ईमेल लिख रहे - हैं तो ध्यान रहे कि कोई भी व्याकरण से सम्बंधित गलती ना हो।

ईमेल का उपयोग-

i) ई-मेल के माध्यम से हम किसी भी समय किसी भी व्यक्ति से संपर्क कर सकते हैं, और वह मेल पढ़ सकता है और अपनी सुविधानुसार प्रतिक्रिया दे सकता है।

(ii) ईमेल को व्यक्ति के सम-य का सदुपयोग करना सिखाता है।

(iii) इसमें केवल इंटरनेट से जुड़ा होने का ही खर्चा आता है।

(iv) ई|मेल का उपयोग संचार के साधन के रूप में किया जा सकता है-

(v) शैक्षिक दृष्टि से, प्रवेश के लिए आवेदन करने, परीक्षा परिणाम प्राप्त करने और किसी भी सेवा के प्रस्ताव के लिए ईमेल भेजे जा सकते हैं।-

(vi) यह संचार को सरल बनाने में मदद करता है।

सावधानियाँ-

(i) सबसे पहले मेल को लॉगइन करते हैं-,तो एक नया पेज़ खुलता है। उसमें कम्पोज़ बाईं ओर ऊपर दिखाई देता (+) है।

(ii) कम्पोज़ पर क्लिक करने पर एक नया पेज़ दाईं तरफ खुलता है। (+)

(iii) दाएँ पेज़ पर सबसे ऊपर फ्रॉम)from), फिर to उसके नीचे subject, उसके नीचे सन्देश लिखने का स्थान रहता है।

(iv) एक से अधिक लोगों को मेल भेजने के लिए अल्पविराम),) देकर उसकी आईटाइप करके भेज सकते हैं। .डी.

(v) सब्जेक्ट में ईमेल का विषय संक्षेप में लिखते हैं।-

(vi) ccका अर्थ है कार्बन कॉपी। आप जितने लोगों को ई मेल-भेजेंगे, उनको जब ईमेल प्राप्त होगा-, तब उनमें से किस किस को-वह मेल भेजा गया है उसकी सूची दिखाई देगी।

(vii) Bcc का अर्थ है ब्लाइंड कार्बन कॉपी। इसमें आप एक से अधिक लोगो को मेल भेज सकते हैं, किन्तु Bcc किसे भेजी गई, उनकी लिस्ट नहीं दिखाई देगी।

(viii) मेल सेंड होने पर भेजने वाले को मैसेज सक्सेसफुली सेंड दिखाई देगा।

(ix) अगर आपको मैसज, पीडीऍफ़ फाइल, पावरपॉइंट एवं वीडियो को भेजना है तो उसके लिए अटेचमेंट फाइल पर क्लिक करके भेज सकते हैं।

ईमेल लेखन का प्रारूप-

प्रेषक)From) : मेल भेजने वाले का ईमेल पता।-

प्रेषिती)To) : मेल प्राप्त करने वाले का ईमेल पता।-

CC :कार्बन कॉपी

BCC : Blind Carbon Copy

विषय : यहाँ ईमेल का विषय संक्षेप में लिखते हैं।-

अभिवादन : जिसे ईमेल लिखा जा रहा है उसके आदर स्वरूप शब्द लिखा जाता है। जैसे प्रिय-, महोदय आदि।

मुख्य विषय वस्तु : विषय से संबंधित विस्तार से विषय लिखा जाता है।

समापन : कथन समाप्त करना

अटैचमेंट ज्वाइन करें : पीडीएफ, इमेज जैसी फाइल अटैच करना

हस्ताक्षर : प्रेषक का नाम, संकेत, आदि

प्रेषक : यहाँ आपको अपना ईमेल पता यहाँ -मेल भेजने वाला है उसका ई-मेल पता दर्ज करना होता है। अर्थात जो ई-भरना होता है।

प्रेषिती : यहाँ आपको ई मेल-प्राप्त करने वाले का ईमेल एड्रेस डालना होगा। अगर आप किसी- संस्था को ईमेल -करना चाहते हैं, तो आपको उस संस्था का ईमेल एड्रेस भरना होगा।-

CC (कार्बन कॉपी(:जब आप एक ही ईमेल पते पर भेजना चाहते हैं तो कार्बन कॉपी का -मेल दो या दो से अधिक ई-उपयोग किया जाता है। मतलब आप एक से अधिक रिसीवर को एक ही संदेश भेजने के लिए कार्बन कॉपी का उपयोग कर सकते हैं।

BCC (ब्लाइंड कार्बन कॉपी(: BCC का मतलब होता है - ब्लाइंड कार्बन कॉपी। कार्बन कॉपी की तरह ही इसका भी उपयोग एक से ज्यादा लोगो के मेल भेजने के लिए किया जाता है। लेकिन ब्लाइंड कार्बन कॉपी में लिखा हुआ ईमेल -

एड्रेस, प्रेषिती)to) में और कार्बन कॉपी द्वारा ईमेल एड्रेस नहीं देख -मेल प्राप्त करने वाले ब्लाइंड कार्बन कॉपी का ई-सकते।

साधारण शब्दों में - आप एक साथ तीन ईमेल को छुपाना है तो उसका -मेल भेज रहे है लेकिन किसी एक पर्सन के ई-) मेल ब्लाइंड कार्बन कॉपी बॉक्स में लिखे। ताकि प्रेषिती-ईTo) में और कार्बन कॉपी ईमेल प्राप्तकर्ता ब्लाइंड कार्बन -मेल एड्रेस नहीं देख पाएं-कॉपी का ईगे।

Subject (विषय(:आप ईमेल क्यों लिख रहे हैं-, आपको उसका विषय लिखना होगा। ताकि प्राप्त कर्ता पहले यह समझ लें कि आपने ईमेल क्यों भेजा है।-

संबोधन :उपयोग किया जाता है। अगर आप अपरिचित को ई मेल भेज रहे हैं तो महोदय लिख सकते हैं।

मुख्य विषय : मुख्य विषय में, आपको एक विस्तृत विषय लिखना होगा। परिचय, बात और निष्कर्ष मुख्य विषय में शामिल हैं।

फ़ाइल जोड़ें)Attachment) : यहाँ आप पीडीएफ फाइल, चित्र, या अन्य दस्तावेज संलग्न कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आपने किसी पाठ्यक्रम की पीडीएफ फाइल डाउनलोड की है, तो आप इसे ईमेल में संलग्न कर सकते हैं - और इसे अपने मित्र को भेज सकते हैं।

हस्ताक्षर या स्व निर्देश : आखिरी में आप स्व निर्देश के साथ अपना ना

<u>प्रारूप **ई-मेल लेखन**</u>

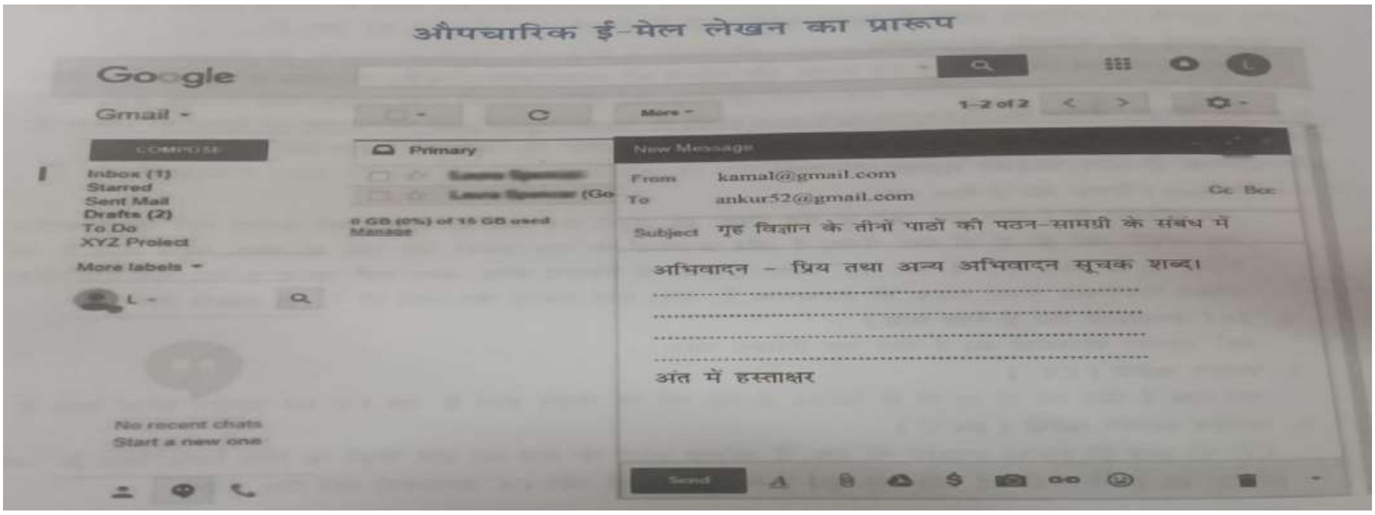

ई मेल लेखन-के कुछ उदाहरण

(1) अपने मित्र को अपनी जन्मदिन की पार्टी के लिए निमंत्रण देने हेतु लगभग 100 शब्दों में ईमेल लिखिए।-

प्रेषक)From) : xyz@abc.com

प्रेषिती) To) : def@gmail.com

CC :आवश्यकतानुसार

BCC :आवश्यकतानुसार

विषय निमंत्रण के सम्बन्ध में

प्रिय जनक ,

मुझे लगता है कि तुम्हें मेरा जन्मदिन याद होगा। इसलिए मुझे तुम्हें यह बताते हुए बहुत खुशी हो रही है कि 10 मईको स्टार हॉल में जन्मदिन की पार्टी है। आप इस अवसर पर सादर आमंत्रित है पार्टी |का समय रात में 10 से 12 बजे तक है।आपको इस बर्थडे पार्टी में जरूर आना है। कृपया शामिल होकर शोभा बढ़ाएंगे ऐसी आशा है |

तुम्हारा मित्र

मुकेश

(2) अपनी सोसाइटी के मुख्य सीवर की मुरम्मत हेतु नगर निगम के सफाई निरीक्षक को लगभग100 शब्दों में ई-मेल लिखिए।

प्रेषक) From) :subhash @gmail.com

प्रेषिती) To) : abc@gmail.com

CC :

BCC :

विषय : सीवर मरम्मत के लिए अनुरोध हेतु

महोदय,

शर्मा सोसाइटी का मुख्य सीवर टूट गया है, जिसके कारण नाले का गंदा पानी सड़क पर आ गया है। बहुत ज्यादा गंदगी और बदबू फैल रही है तथा आने जाने वाले लोगों को परेशानी हो रही हैसबसे ज्यादा परेशानी प |ैदल चलने वाले लोगों को हो रही हैगर्मी के मौसम | एक तरफ गंदगी और दूसरी तरफ वाहनों से बचाव के कारण लोग दुखी हैं | | में इससे बीमारियाँ होने का और खतरा है इसलिए आपसे अनुरोध है कि यथाशीघ्र इसकी मरम्मत करवाने का कष्ट कीजिएगा |

आशा है कि आप इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे |

भवदीय ,

सुभाष

अभ्यास प्रश्न

1. विदयालय में लड़कियों के लिए शौचालय बनाए जाने कि मांग करते हुए अपने प्रधानाचार्य को ई-मेल लिखिए ।
2. पासपोर्ट को रिन्यू कराने के लिए क्या-क्या अपेक्षित है। पासपोर्ट अधिकारी को ईमेल लिखकरपताकीजिए ।
3. बढ़ते हुए अपहरण की घटनाओं पर चिंता व्यक्त करते हुए किसी समाचार पत्र के संपादक को ई-मेल लिखिए ।
4. आप जुबेर आलम / जया मालिक है । हाल ही में अपने एक प्रतिष्ठित वेबसाइट से कुछ कपड़े मंगवाए थे । उन कपड़ों में कई समस्याएं हैं । पर अब वह वेबसाइट उसे वापस नहीं ले रही । इस पूरी समस्या को स्पष्ट करते हुए उसे वेबसाइट के उपभोक्ता संपर्क विभाग को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए ।
5.आप कमलदीप/ पूनम है अपने मोहल्ले में बरसात के बाद होने वाली जल भराव की समस्या को दूर करने के लिए नगर निगम अधिकारी को लगभग 80 शब्दों में ई-मेल लिखिए ।
6.आपका नाम सुनीता/ सुरेश है । आप राजेंद्र नगर के निवासी हैं । इसलिए कुछ दिनों से आपके क्षेत्र में विद्युत आपूर्ति अव्यवस्थित है । अपने क्षेत्र में अनियमित विद्युत आपूर्ति की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए राज्य विद्युत आपूर्ति निगम के महानिदेशक के नाम एक शिकायती ई-मेल लिखिए ।
8.विद्यालय में पीने के पानी की समुचित व्यवस्था के लिए अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को ई-मेल लिखिए ।
9. पिताजी के आकस्मिक निधन के कारण पढ़ाई जारी रखने हेतु विद्यालय से आर्थिक मदद की मांग करते हुए प्रधानाचार्य को ई-मेल लिखिए ।
10.विद्यालय में कंप्यूटर शिक्षा की समुचित व्यवस्था किए जाने का अनुरोध करते हुए प्रधानाचार्य को ई-मेल लिखिए।

<u>स्ववृत्त लेखन</u>

प्र 1. स्ववृत्त क्या है उसमें क्या विशेषताएं होनी चाहिए ?

उ . किसी व्यक्ति विशेष द्वारा अपने बारे में सूचनाओं का सिलसिलेवार संकलन ही स्ववृत्त कहलाता है इसमें व्यक्ति अपने व्यक्तित्व, ज्ञान और अनुभव के सबल पक्ष को इस प्रकार प्रस्तुत करता है जो नियोक्ता के मन में उम्मीदवार के प्रति अच्छी व सकारात्मक छवि प्रस्तुत करता है।

प्र 2. स्ववृत्त में किन? किन बातों का समावेश होना चाहिए-

उ 2 स्ववृत्त में पूरा परिचय, पता, संपर्क सूत्र) टेलीफोन, मोबाइल, ईमेल आदि(शैक्षणिक व व्यावसायिक योग्यताओं के सिलसिलेवार विवरण के साथसाथ अन्य - संबंधित योग्यताओं, विशेष उपलब्धियों,कार्येत्तर गतिविधियों व अभिरुचियों का उल्लेख होना चाहिए |एक दो ऐसे सम्मानित व्यक्तियों के विवरण, जो उम्मीदवार की व्यक्तित्व उपलब्धियों से परिचित हो, का समावेश भी होना चाहिए।

स्ववृत्त लेखन प्रारूप

नाम----------------------------
पिता का नाम--------------------
माता का नाम-------------------
जन्मतिथि-----------------------
वर्तमान पता---------------------
दूरभाष---------------------------
मोबाइल संख्या ----------------
ईमेल ----------------------------
शैक्षणिक योग्यता
अन्य योग्यताएँ
उपलब्धियाँ
कार्येत्तर गतिविधियों व अभिरुचियों -उद्घोषणा
मैं यह लिखित घोषणा करता / करती हूं कि मेरे द्वारा
प्रदत्त सभी उद्घोषणा मेरे ज्ञान और विश्वास के आधार
पर सत्य और पूर्ण है ।

स्थान :
दिनांक :

हस्ताक्षर

स्ववृत्त लेखन किस प्रकार बनता है

नाम-सुरेशठाकुर

पिता का नाम-रामप्रकाशठाकुर

माताकानाम-सुनीताठाकुर

जन्मतिथि -30जुलाई1992

वर्तमानपता-302गोलमार्किट नईदिल्ली 11001

दूरभाष-011-2254565

मोबाइलसंख्या -0000546 ईमेल-sureshthakur@...

शैक्षणिक योग्यताएं

क्रम सं.	कक्षा	वर्ष	विद्यालय /बोर्ड	विषय	उत्तीर्ण प्रतिशत
1	दसवीं	2006	सीबीएसई	हिन्दी, अंग्रेजी, सा. विज्ञान, विज्ञान, गणित	72%
2	बारहवीं	2008	सीबीएसई	हिन्दी, अंग्रेजी,इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र	86%
3	स्नातक	2011	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिन्दी	69%
4	बी.एड	2012	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिन्दी	93%
5	परास्नातक	2014	दिल्ली विश्वविद्यालय	हिन्दी	79%

अन्य योग्यताएं-

कम्प्यूटर में 1 वर्ष का डिप्लोमा

मैकेनिकल इन्जीनियरिंग में 6 माह का डिप्लोमा

हिंदी में प्रवीणता

योग में 6 माह की ट्रेनिंग -

विद्यालय स्तर पर एन .सी.सी.में उच्च प्रशिक्षण

मैं यह लिखित घोषणा करता / करती हूं कि मेरे द्वारा प्रदत सभी उद्घोषणा मेरे ज्ञान और विश्वास के आधार पर सत्य और पूर्ण है ।

स्थान :

दिनांक : हस्ताक्षर

<u>अभ्यास कार्य</u>

1. निदेशालय, दिल्ली को विभिन्नविषयों के प्रशिक्षित स्नातक अध्यापकों की आवश्यकता है इस पद शिक्षा के लिए अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए स्ववृत्त तैयार कीजिए।

2. स्वास्थ्य मंत्रालय ,नई दिल्ली के निदेशक को कंप्यूटर टाइपिस्ट की आवश्यकता है । अत: इस पद के लिए अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए स्ववृत्त तैयार कीजिए।

3. फुल मार्क्स प्राइवेट लिमिटेड,दिल्ली को संपादक की आवश्यकता है इस पद के लिए अपनी योग्यता का विवरण देते हुए स्ववृत्त तैयार कीजिए।

4. भारतीय स्टेट बैंक में कार्यालय सहायक की आवश्यकता है अतः अपनी योग्यताओं का विवरण देते हुए स्ववृत्त तैयार कीजिए।

5. प्रयागराज विश्वविद्यालय के महिला छात्रावास में वार्डन का पद रिक्त है उक्त पद के लिए एक स्ववृत्त तैयार कीजिए।

6. दिल्ली पब्लिक स्कूल में फिजिकल एजूकेशन के अध्यापक का पद रिक्त है उक्त पद के लिए स्ववृत्त तैयार कीजिए।

7. रिलायंस कंपनी के मार्केटिंग विभाग में एक मार्केटिंग मैनेजर का पद रिक्त है उक्त पद के लिए उन्हें किसी अनुभवी एम.बी.ए पास व्यक्ति की आवश्यकता है उक्त पद के लिए स्ववृत्त तैयार कीजिए।
8. दिल्ली में स्थित रामजस विश्वविद्यालय या महाविद्यालय को अंग्रेजी के प्रधानाध्यापक की आवश्यकता है इस पद के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है जिसने कम से कम एम.फिल किया हो और यू.जी.सी की नेट परीक्षा उत्तीर्ण की हो। उक्त योग्यताओं को ध्यान में रखकर स्ववृत्त तैयार कीजिए।
9. बूटियों से दंत-मंजन बनाने वाली कंपनी अ.ब.स को अपने उत्पाद के प्रचार-प्रसार और बिक्री को बढ़ाने हेतु घर-घर जाकर संपर्क करने वाले कुछ नवयुवकों और नवयुवतियों की आवश्यकता है। अपनी शैक्षणिक योग्यता,रुचि और अनुभव का विवरण देते हुए लगभग 80 शब्दों में एक स्ववृत्त तैयार कीजिए।
10. आपका नाम सुनीता /सुरेश है। आप राजेंद्र नगर के निवासी हैं दैनिक समाचार पत्र से पता चला हैं कि स्थानीय राजकीय माध्यमिक विद्यालय में पुस्तकालय अध्यक्ष का पद रिक्त हैं आप उसपद की योग्यता (बी.लिब. पुस्तकालय विज्ञान में स्नातक) को धारण करते हैं। उक्त रिक्त पद हेतु राजकीय माध्यमिक विद्यालय के विद्यालय प्रमुख को आवेदन भेजते हुए लगभग 80 शब्दों में अपना एक संक्षिप्त स्ववृत्त लिखिए।

<u>विज्ञापन लेखन</u>

'वि' उपसर्ग लगने से 'विज्ञापन' शब्द बना है,जिसका अर्थ है -"विशेष जानकारी देना"| यह जानकारी उत्पन्न की गई वस्तुओं, सेवाओं आदि से जुड़ी होती है। विज्ञापन में वस्तुओं के गुणों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है, जिससे उपभोक्ता आकर्षित अथवा प्रभावित हो और उन्हें खरीदने के लिए प्रेरित हो। विज्ञापन द्वारा उत्पादक अपनी वस्तुओं के अच्छे दाम प्राप्त करते हैं और उपभोक्ताओं को वस्तुओं की सही जानकारी, तुलनात्मक मूल्य और विकल्प मिलते हैं। आजकल टीवी, रेडियो, कार्यक्रमों, समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, भवनों की दीवारों आदि पर विज्ञापनों की भरमार दिखाई देती है।"किसी वस्तु आदि को बेचने के लिए जागरूकता और प्रचार-प्रसार करना ही विज्ञापन कहलाता है।"
विज्ञापन के प्रकार -
विज्ञापन के मुख्य प्रकार : 1. स्थानीय विज्ञापन 2. राष्ट्रीय विज्ञापन 3. अंतरराष्ट्रीय विज्ञापन 4. औद्योगिक विज्ञापन 5. व्यापारिक विज्ञापन 6. सूचना प्रदायक विज्ञापन ।
विज्ञापन के उद्देश्य --

- ❖ नवीन वस्तुओं और सेवाओं की सूचना देना।
- ❖ उत्पादों के विक्रय में वृद्धि करना तथा उनका व्यापक प्रचार करना।
- ❖ समाज को आवश्यक संदेश देना।
- ❖ उपभोक्ताओं में वस्तु के प्रति रुचि और विश्वास उत्पन्न करना।
- ❖ विशेष छूट आदि की जानकारी देना।
- ❖ विज्ञापन के माध्यम से मिलने वाले लाभ-
- ❖ विक्रेताओं को विस्तृत बाज़ार मिल जाता है।
- ❖ विक्रेताओं को कम गुणवत्ता वाली वस्तुओं के भी ग्राहक मिल जाते हैं।
- ❖ उपभोक्ताओं को वस्तुओं के विकल्प मिल जाते हैं।
- ❖ त्योहार आदि के दिनों में कुछ वस्तुएँ आकर्षक दामों पर उपलब्ध हो जाती हैं।

विज्ञापन लेखन से संबंधित कुछ महत्वपूर्ण बातें -

- विज्ञापन लिखते समय सबसे पहले ज़रूरी जानकारी एकत्रित कर लें।
- सबसे पहले एक बॉक्स बनाकर उसके ऊपर मध्य में विज्ञापित वस्तु का नाम मोटे अक्षरों में लिखें।
- शीर्षक एवं बॉक्स के किनारों पर "सेल", "धमाका", "खुशखबरी", "खुल गया" जैसे आकर्षक शब्द लिखें।

• बीच में विज्ञापित वस्तु के गुणों का उल्लेख करें।
• ऊपर या नीचे स्थान देखकर कोई छोटी-सी चुटीली टैगलाइन भी जोड़ें जिससे पढ़ने में रुचि बढ़े।
• न्यूनतम शब्दों में विज्ञापन पूरा करें।
• शब्दों में अतिशयोक्ति न करें।
• भाषा सरल, रोचक तथा प्रभावी होनी चाहिए। भाषा व्याकरणिक रूप से भी सही होनी चाहिए।
• बॉक्स के दाएँ किनारे पर विज्ञापित वस्तु का आकर्षक चित्र भी बना सकते हैं।
• विज्ञापन के सबसे नीचे आवश्यकतानुसार पता, मोबाइल नंबर आदि लिखें।
• आकर्षक और प्रभावशाली विज्ञापन बनाने के लिए रंगीन पेंसिलों का प्रयोग करें।

विज्ञापन में प्रयुक्त होने वाले कुछ प्रेरक वाक्य- धमाका सेल!! जल्दी कीजिए! मौके का लाभ उठाइए! पहले आओ! पहले पाओ!सोचिए मत, खरीद लीजिए!!100% सुरक्षा की गारंटी!आपके शहर में पहली बार!ऐसा अवसर फिर नहीं मिलेगा!ऑफर सीमित समय के लिए! स्टॉक सीमित है; जल्दी करें!

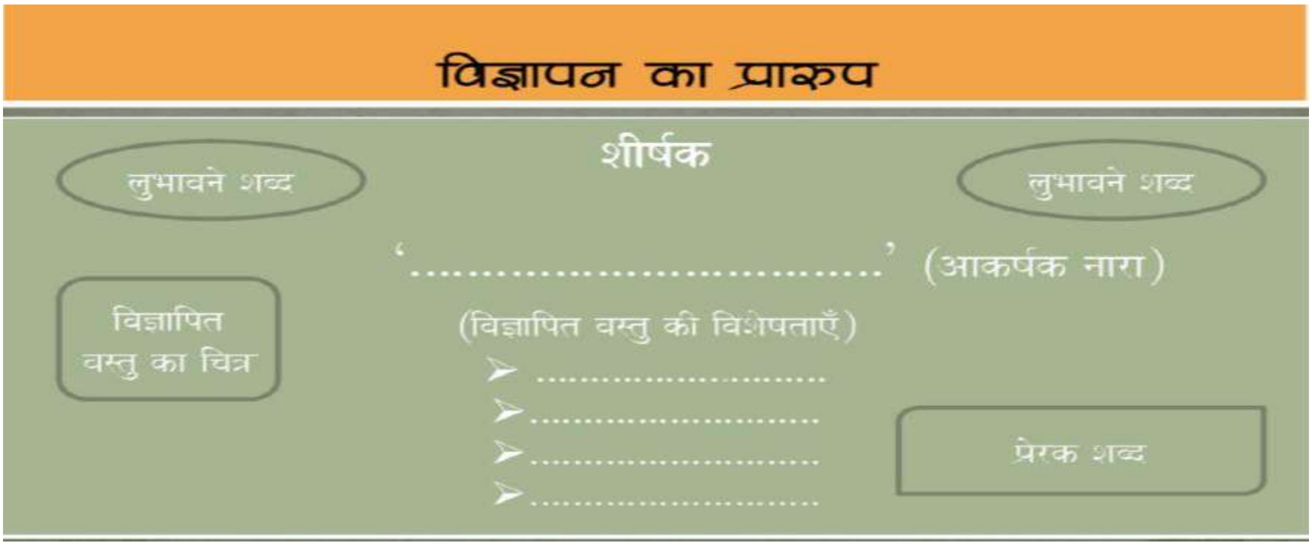

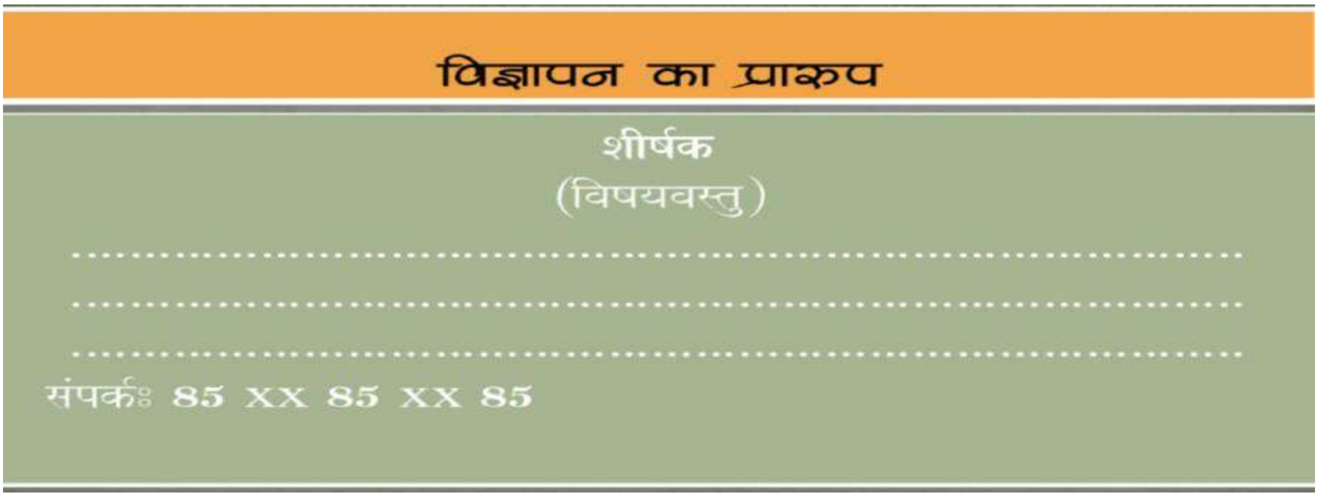

विज्ञापन के उदाहरण

1. हेलमेटने वाली एक कंपनी के लिए विज्ञापन तैयार करें|
2. जल दिवस पर 25-50 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार करें|
3. प्रगति मैदान में एक पुस्तक मेला लगा है जिसकी जानकारी देते हुए एक विज्ञापन तैयार कीजिए|
4. 'उत्सव बैग' बनाने वाली कंपनी के लिए एक आकर्षक विज्ञापन तैयार करें|
5. पंखे की एक नई कंपनी बाजार में आयी है, जिसके लिए आपको आकर्षक विज्ञापन तैयार करना है|

6. आपके मित्र ने साड़ी की एक नयी दुकान खोली है,उसके लिए एक विज्ञापन तैयार कीजिए|

<u>**संदेश लेखन**</u>

सन्देश शब्द की उत्पत्ति संस्कृत भाषा से मानी जाती है। जिसका अर्थ है खबर प्राप्त करना या समाचार प्राप्त करना। **संदेश एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा जानकारी को किसी व्यक्ति विशेष या किसी समूह द्वारा किसी दूसरे व्यक्ति विशेष या समूहों को भेजा जा सकता हैं।**

संदेश लिखित या मौखिक दोनों हीप्रकार के हो सकते हैं। संदेश सुखद या दुखद, व्यक्तिगत या सामूहिक किसीभी प्रकार का हो सकता है। किसी संदेश को भूतकाल, वर्तमान काल व भविष्य काल अर्थात किसी भी काल में लिखा जा सकता है।

किसी व्यक्ति विशेष या समूह द्वारा अन्य व्यक्ति तक पहुँचाए जाने वाले सुखद, दुखद, आवश्यक तथा सामान्य सूचना या समाचार संदेश लेखन कहलाता है।

संदेश लेखन के प्रकार

संदेश लेखन के कई प्रकार होते हैं। कुछ महत्त्वपूर्ण संदेश लेखन के प्रकार निम्नलिखित हैं -

(1) शुभकामना संदेश -

शुभकामना संदेश में वे संदेश आते हैं जिन्हें किसी ख़ुशी के अवसर पर किसी व्यक्ति को शुभाशीष या मंगलकामना देने के लिए लिखा जाता है।जैसे- किसी व्यक्ति के जन्मदिन, वैवाहिकवर्षगांठ, विद्यार्थियों को उनकी परीक्षा में सफलता प्राप्त करने हेतु, कर्मचारियों के पदोन्नति होने पर आदि।

(2) पर्व व त्यौहार संदेश -

ऐसी शुभकामनाएँ जिन्हें विशेष पर्वों व त्यौहार के वक्त लोग एक दूसरे को भेजते हैं। जैसेदीपावली, होली, क्रिसमस, स्वतंत्रता दिवस आदिविशेष अवसरों पर दिए जाने वाले संदेश।

(3) शोक संदेश -

शोक संदेश के अंतर्गत वे संदेश आते हैं जिनमें कोई दुखद समाचार या जानकारी लिखी जाती है। इस तरह के संदेश किसी व्यक्ति की पुण्यतिथि या मृत्यु पर लोगों को भेजे जाते हैं। किसी भी तरह की दुर्धटना की जानकारी भी शोक संदेश के द्वारा ही दी जाती है।

(4) व्यक्तिगत संदेश -

व्यक्तिगत संदेश में वे संदेश आते हैं जिनमें कोई जानकारी केवल अपने नजदीकी व्यक्तियों को ही दी जाती है। इन संदेशों में परिजनों को बधाई व शुभकामना संदेश, कहीं जाने या आने का संदेश या किसी भी अन्य तरह का संदेश जो सिर्फ परिजनों को दियाजानेवालासंदेशआदिआतेहैं।

(5) सामाजिक संदेश -

सामाजिक संदेश में वे सभी सन्देश आते हैं, जोकिसी एक व्यक्ति की नहीं बल्कि समाज में रह रहे सभी व्यक्तियों से जुड़े होते हैं। इन संदेशों में धार्मिक या सामाजिक कार्यक्रमों से जुड़े आयोजनों के संदर्भ में दिए जाने वाले संदेश शामिल होते हैं। इसके अलावा पर्यावरण दिवस पर संदेश, जल बचाओ संदेश, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ आदि अवसरों पर दिए जाने वाले कुछ महत्वपूर्ण संदेश भी सामाजिक सन्देश कहे जाते हैं।

(6) मिश्रित संदेश -

मिश्रित संदेश जैसे- डेंगू, मलेरिया आदि से संबंधित संदेश या बाढ़, भूकंप आदि से संबंधित संदेश या देश से जुड़ा हुआ कोईअन्य संदेश हो सकता हैं।

संदेश लिखते समय ध्यान देने योग्य बातें-किसी भी प्रकार के संदेश को लिखते समय निम्न बातों का ध्यान रखना अति आवश्यक है -

1. सबसे पहले संदेश को किसी सीमा रेखा जैसे बॉक्स या गोले के अंदर लिखा जाना चाहिए।
2. संदेश की शुरुआत में "संदेश" शब्द अवश्य लिखना चाहिए। उसके बाद दिनांकसमय आदि को लिखा जाता है।
3. फिर मुख्य विषय को जितना हो सके कम शब्दों में लिखना चाहिए लेकिन जितने भी शब्दों का प्रयोग किया जाना हो वे प्रभावशाली वआकर्षक होने चाहिए।
4. संदेश अवसर के अनुरूप होना चाहिएतथाउसकी विषयवस्तु में उन्हीं बातों को सम्मिलित किया जाना चाहिए - जो अति आवश्यक हो। संदेश लिखते समय अपनी तरफ से कोई नई बात नहीं जोड़नी चाहिए।
5. विषय के अनुसार सन्देश को सुन्दर बनाने के लिए रंगों का भी प्रयोग किया जा सकता हैऔरये चित्रात्मक भी हो सकते हैं।
6. शायरी श्लोक या कविताओं का प्रयोग कर के भी सन्देश को प्रभावशाली व् आकर्षक बनाया जा सकता ,दोहे ,
7. संदेश में अपनत्व और मौलिकता होनी चाहिए।
8. संदेश में भावों की सहजता होतथाउसकी भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।
9. संदेश संक्षेप में होना चाहिए अर्थात् संदेश लिखते समय शब्दसीमा का ध्यान अवश्य रखें।- इसकी शब्द सीमाशब्दों के बीच में होनी चाहिए। से 30
10. संदेश में संबोधन और अभिवादन का पूरा ध्यान रखना चाहिए।
11. संदेश गद्य में हो अथवा पद्य में होरोचक और प्रेरक होना चाहिए। ,
12. व्याकरणिक एवं वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ नहीं होनी चाहिए। उसमें विराम-चिह्नोंआदि केसाथ ही उचित शब्दों एवं वाक्यों का प्रयोगभी करना चाहिए।
13. संदेशनिर्धारित प्रारूपके अनुसार ही लिखना चाहिए।

संदेश की विशेषताएँ:

1. किसी भी प्रकार का संदेश संक्षिप्त तथा तथ्यपरक होना चाहिए।
2. संदेश औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार का हो सकता है।
3. संदेश लिखते समय कोई भी प्रमुख बात छूटनी नहीं चाहिए।
4. संदेश कम शब्दों में उचित तथा अधिक बात कहने वाला होना चाहिए।

संदेश का प्रारूप

संदेश

समय: ----------------------------

तिथि: ----------------------------

---------------------------- (संबंधित व्यक्ति का नाम)

-- विषय वस्तु (संदेश) --------------------------

प्रेषक का नाम व हस्ताक्षर

या

संदेश
समय: ----------------------------तिथि: ----------------------------
---------------------------- (संबंधित व्यक्ति का नाम)

--- विषय वस्तु (संदेश) ------------------------------------

प्रेषक का नाम व हस्ताक्षर

संदेश लेखन के कुछ उदाहरण

आपके मित्र को वालीबॉलप्रतियोगिता में स्वर्णपदक मिलने पर शुभकामना संदेश लिखिए।-

संदेश

समय:- अपराहन 3.00 बजे

तिथि:- 20/12/2024

प्रियसुमित,

मुझे से तुम्हारी उपलब्धि के विषय में जानकर अपार हर्ष हुआ कि तुम्हें राष्ट्रीय वालीबॉल प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक मिला। इस कामयाबी में तुमने अपने परिवार, समाज और देश का नाम रोशन कर दिया। मेरी ओर से तुम्हें बहुत-बहुत शुभकामनाएँ।

सुजल

शिक्षक दिवस के अवसर पर अपने प्रिय अध्यापक के लिए लगभग 30-शब्दों में एक 40 संदेश लिखिए

संदेश

समय:- पूर्वाह्न 10.00 बजे दिनांक:- 05/09/2024

आदरणीय गुरूदेव,

आप मेरे जीवन की प्रेरणा हैं, मार्गदर्शक हैं, आप ही मेरे प्रकाश-स्तंभ हैं। मैं हृदय की गहराइयों से आपका आभारी हूँ। आपको शिक्षक दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

शिवांगी

आपका मित्र विदेश में रहता है उसे होली की शुभकामनाएँ देते हुए ,लगभग 30-शब्दों में एक 40 संदेश लिखिए।

संदेश

समय:- अपराहन 3.30 बजे दिनांक:- 17/2/2025

प्रिय राजेश,

सतरंगी रंगों और भाईचारे से परिपूर्ण खुशियों और उल्लास का त्योहार होली तुम्हारे जीवन में उत्साह और उमंग का संचार करते हुए खुशियों के रंगों भर दे।

परिवार के सभी सदस्यों को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

रमेश

स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर प्रधानमंत्रीकीओरसेदेशवासियों के लिए लगभग 30-40 शब्दों में एक संदेश लिखें।

संदेश

दिनांक - 15 अगस्त 2024

समय - पूर्वाह्न7:00बजे

मेरे प्यारे देशवासियों

आप सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ। आइए स्वतंत्रता दिवस के शुभ अवसर पर हम सब मिलकर अपने देश को चहुंमुखी विकास के मार्ग पर अग्रसर करने का दृढ़ संकल्प लें और राष्ट्र को सुदृढ़ बनाने में अपना योगदान दें।

प्रधानमंत्री

अपने मित्र के जन्मदिन के शुभ अवसर पर **लगभग 30-40 शब्दों में एक शुभकामना** संदेश लिखें।

संदेश

"तुम जियो हज़ार साल,
हर साल के दिन हो पचास हजार"

दिनांक - 19 नवम्बर 2020

समय - पूर्वाह्न 5:00 बजे

प्रिय अनुज,

आपको आपके जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं भगवान से प्रार्थना करती हूँ कि वह आपको निरोग व लम्बी आयु प्रदान करें और आप आपने जीवन में हर वो मुकाम हासिल करें जो आप चाहते हैं।

गीता

आपकी दादी माँ का देहांत हो गया इस अवसर पर लगभग 30-40 शब्दों में एक शोक संदेश लिखिए।

शोक संदेश

दिनांक - 10 सितम्बर 2024

समय - पूर्वाह्न 9:00बजे

प्रिय स्नेही जनों

अत्यंत दुःख के साथ आप सभी को सूचित किया जा रहा है कि मेरी पूज्य दादी माँ श्रीमती जानकी देवी पत्नी स्वर्गीय श्री राजाराम का दिनांक 06 सितम्बर 2024 को शाम 7:00 बजे स्वर्गवास हो गया है। उनकी आत्मा की शान्ति हेतु दिनांक 17 सितम्बर 2024 को हमारे निवास स्थान पर ब्रह्मभोज का आयोजन किया जाएगा।

अतःआप सभी महानुभावों से निवेदन है कि उक्त तिथि पर पधारकर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु ईश्वर से प्रार्थना करें।

समस्त शोकाकुल परिवार

अपने राज्य के मुख्यमंत्री की तरफ से दीपावली के शुभ अवसर पर एक संदेश लिखें।

संदेश

"दीपावली की रात आई है, खुशियों की सौगात लाई है,
आज लग रहा है कुछ ऐसा, जैसे सितारों की बारात आई है"

दिनांक - 31 अक्टूबर, 2024 समय - पूर्वाह्न 6:00 बजे

सम्मानित नागरिकों,

आप सभी को दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ। इस प्रकाश पर्व दीपावली पर माँ लक्ष्मी आप सभी के घरों में सुख समृद्धि, धन-दौलत, वैभव व शांति लेकर आएँ।आप सभी सदैव स्वस्थ एवं खुशहाल रहें।

मुख्यमंत्री

अपनी कक्षा के प्रतिनिधि के रूप में सभी सहपाठियों को आगामी बोर्ड परीक्षा के लिए लगभग 30-40 शब्दों में एकशुभकामना का संदेश लिखिए।

संदेश

दिनांक: 10/02/2025 समय: पूर्वाह्न 8:00 बजे

प्रिय मित्रों,

जैसा कि आप सभीको पता ही है कि हमारी बोर्ड की परीक्षा आने वाली 15 फरवरी से शुरू हो रही हैं। यह हमारे जीवन केक सबसे महत्त्वपूर्ण क्षणों में से एक है क्योंकि आगे जाकर एक बड़े और सफल जीवन की नीव यही बोर्ड परीक्षा है। अतः आप सभी को मेरी तरफ से ढेर सारी शुभकामनाएँ। आप लोग पूरे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा दें, ईश्वर का आशीर्वाद सदैव आपके साथ है।

सुजल

अभ्यास कार्य

निम्नलिखित विषयों पर लगभग 40 शब्दों में संदेश लिखिए ।

1. प्रतियोगिता में उत्तीर्ण होने पर संदेश लिखिए ।

2. पदोन्नति होने पर माता जी को संदेश लिखिए ।

3. गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएं देते हुए संदेश लिखिए ।

4. होली के पर्व पर आमंत्रित करने हेतु संदेश लिखिए ।

अभ्यास प्रश्नपत्र

कक्षा दसवीं हिन्दी

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक 80**

सामान्य निर्देश :

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए:

- **इस प्रश्नपत्र में कुल 15 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। इस प्रश्नपत्र में कुल चार खंड हैं क, ख, ग, घ ।**
- **खंड क में कुल-2 प्रश्न हैं, जिनमें उप-प्रश्नों की संख्या 10 है।**

- **खंड ख में कुल-4 प्रश्न हैं, जिनमें उप-प्रश्नों की संख्या 20 है।**
- **खंड ग में कुल-5 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 16 उप-प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।**
- **खंड घ में कुल-4 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं।**
- **प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए ।**

प्रश्न	**खंड – (क) अपठितबोध**	अंक
1	निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:	1x5=5
	योग भारतीय संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर है। यह केवल शारीरिक व्यायाम नहीं, बल्कि मन, शरीर और आत्मा के बीच संतुलन स्थापित करने की एक प्रक्रिया है। योग का अर्थ है 'जुड़ना'– आत्मा का परमात्मा से जुड़ना। हजारों वर्षों से हमारे ऋषि-मुनियों ने योग को आत्मानुभूति, स्वास्थ्य और जीवन के विकास का साधन माना है। वर्तमान समय में जब लोग तनाव, चिंता, अवसाद और कई शारीरिक बीमारियों से जूझ रहे हैं, योग एक समाधान के रूप में सामने आया है। नियमित रूप से योगाभ्यास करने से मन शांत रहता है, शरीर लचीला और मजबूत बनता है तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह वैज्ञानिक रूप से सिद्ध हो चुका है कि योग उच्च रक्त चाप, मधुमेह, अनिद्रा, मोटापा और पीठ दर्द जैसी समस्याओं में अत्यंत लाभकारी है। आज दुनिया के अधिकांश देश योग के महत्व को समझ चुके हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून को' अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' घोषित किया है, जो यह दर्शाता है कि योग अब केवल भारत की ही नहीं, विश्व की धरोहर बन चुका है। विद्यालयों में योग को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है ताकि विद्यार्थी बचपन से ही स्वस्थ जीवन शैली को अपनाएं। योग में केवल आसन और प्राणायाम ही नहीं, बल्कि ध्यान) मेडिटेशन यम-नियम, प्रत्याहार, धारणा, समाधि आदि भी आते हैं। ये सब मिलकर जीवन को समग्र रूप से सुधारते हैं। जब व्यक्ति अपने भीतर झाँकता है और आत्म-निरीक्षण करता है, तब वह सच्चे अर्थों में शांत और संतुलित जीवन जीने में सक्षम होता है। लेकिन यह भी देखा गया है कि आज के युवा वर्ग में योग के प्रति उतना उत्साह नहीं है जितना होना चाहिए। वे इसे केवल एक शारीरिक क्रिया समझते हैं, जबकि योग एक जीवन दर्शन है। इसके माध्यम से हम न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों में भी संतुलन ला सकते हैं। सरकार, विभिन्न संस्थाएँ और योग गुरुओं के प्रयासों से अब योग शिविरों, टीवी कार्यक्रमों और ऑनलाइन माध्यमों के द्वारा इसकी जानकारी आम जनता तक पहुँचाई जा रही है। फिर भी यह आवश्यक है कि हम केवल योग दिवस पर ही नहीं, बल्कि प्रतिदिन योग को अपने जीवन में अपनाएँ। अतः यदि हम एक स्वस्थ, सुखी और संतुलित जीवन चाहते हैं, तो योग को अपनी दिनचर्या का अभिन्न अंग बनाना होगा। यह न केवल व्यक्तिगत विकास बल्कि सामाजिक समरसता और वैश्विक शांति का भी मार्ग प्रशस्त कर सकता है।	
क	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन – योग भारतीय संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर है। कारण – विद्यालयों में योग को पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाया जा रहा है 1. कथन तथा कारण दोनों गलत हैं।	1

	2. कथन गलत है ,लेकिन कारण सही है। 3. कथन और कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है। 4. कथन और कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	
ख	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन: योग मानसिक तनाव को कम करने में सहायक है। कारण: योग में ध्यान और प्राणायाम जैसी तकनीकें मन को शांत करती हैं। 1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। 2. कथन सही है लेकिन कारण गलत है। 3. कथन गलत है लेकिन कारण सही है। 4. कथन और कारण दोनों सही हैं लेकिन कारण, कथन की व्याख्या नहीं करता।	1
ग	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन: आजकल विद्यालयों में योग को पाठ्यक्रम में शामिल किया जा रहा है। कारण: योग से बच्चों का शारीरिक व मानसिक विकास होता है। 1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। 2. कथन सही है लेकिन कारण गलत है। 3. कथन गलत है लेकिन कारण सही है। 4. कथन और कारण दोनों गलत हैं।	1
घ	योग को जीवन का अभिन्न अंग क्यों बनाना चाहिए?	2
ड़	युवा वर्ग योग के प्रति उदासीन क्यों है?	2
2	**निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:**	7
	स्वतंत्रता कोई उपहार नहीं, यह अर्जित की जाती है, बलिदानों की मिट्टी से, यह रोपित की जाती है। हर अधिकार के संग जुड़ी होती है एक डोर, जो खींचती है हमें कर्तव्यों की ओर। जो केवल अधिकार मांगे, पर कर्म से मुख मोड़े, वह स्वतंत्र नहीं, वह भीतर से कमजोर होड़े। स्वतंत्र वही जो विचारों से हो विमुक्त, जो सत्य बोले, और अन्याय से हो विमुख। वाणी में विवेक हो, आचरण में नीति, स्वतंत्र वही जिसकी चेतना में हो प्रीति। प्रगति का मार्ग तभी सुस्पष्ट होगा, जब स्वाधीन मन उत्तरदायित्व को भोगा। जिसने अपने भीतर अनुशासन जगाया, उसने ही स्वतंत्रता का अर्थ समझाया। नियमों में बंधकर भी जो रहता निडर, वही कहलाता है सच्चा स्वाधीन पथिक।	

	लोकतंत्र हो या जीवन की राह, हर स्वाधीनता माँगती है एक चाह– उत्तरदायित्व की, आत्म नियंत्रण की, और सेवा-भावना से भरे अंतर्मन की। नदी स्वतंत्र बहती है, पर मर्यादा में, वृक्ष खड़े होते हैं स्वतंत्रता की साधना में। पर जब बाँध टूटते हैं या मर्यादा जाती है, तब स्वतंत्रता भी विनाश बन जाती है। इसलिए हे युवा ! मत मांगो केवल आज़ादी, मांगो विवेक, सेवा, संयम और जिम्मेदारी। यही है वह दीप जो स्वतंत्रता में जलता है, जो मनुष्य को मनुष्य बनाकर पलता है।	
क	कविता के अनुसार सच्ची स्वतंत्रता किस परिस्थिति में विनाश का कारण बन सकती है? 1. जब स्वतंत्रता का उत्सव मनाया जाए 2. जब स्वतंत्रता केवल अधिकार बनकर रह जाए 3. जब स्वतंत्रता मर्यादा और अनुशासन से रहित हो 4. जब लोग स्वतंत्रता को सौभाग्य समझें	1
ख	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन : सच्ची स्वतंत्रता वही है जो उत्तरदायित्व और अनुशासन के साथ जुड़ी हो। कारण : अनुशासन और कर्तव्य बोध से ही समाज में संतुलन और प्रगति आती है। 1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। 2. कथन सही है, कारण गलत है। 3. कथन गलत है, कारण सही है। 4. कथन और कारण दोनों सही हैं, लेकिन कारण, कथन की व्याख्या नहीं करता।	1
ग	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन :केवल अधिकार की माँग करना स्वतंत्रता का सही स्वरूप नहीं है। कारण :स्वतंत्रता के साथ कर्तव्यों का पालन आवश्यक नहीं होता। 1. कथन सही है, कारण गलत है। 2. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है। 3. कथन और कारण दोनों गलत हैं। 4. कथन गलत है, कारण सही है।	1
घ	काव्यांश के अनुसार स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए किन मूल्यों का पालन आवश्यक है?	2
ड़	काव्यांश में नदी और वृक्ष का उदाहरण किस उद्देश्य से दिया गया है?	2
	खंड– ख व्यावहारिक व्याकरण	
3	**निर्देशानुसार "रचना के आधार पर वाक्य भेद" पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लिखिए:**	1x4=4

क	“यह वही लड़का है **जो कल आया था**। रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए	1
ख	“आदतन हालदार साहब ने मूर्ति की ओर देखा और ड्राइवर को गाड़ी रोकने का आदेश दिया। सरल वाक्य में बदलिए	1
ग	"मन्नू जी को भी आज़ादी की आँधी ने अछूता नहीं छोड़ा और उन्होंने बढ़-चढ़कर आज़ादी की लड़ाई में भाग लिया। रचना के आधार पर इस वाक्य का भेद लिखिए	1
घ	“**जब बालगोबिन भगत खेतों में रोपाई कर रहे थे**तब ‘ लोग उन्हें कनखियों से देख रहे थे। **”** रेखांकित उपवाक्य का भेद लिखिए	1
ङ.	“जब मुँह में भर आए पानी का घूँट गले से उतर गया , तब नवाब साहब ने खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया। "संयुक्त वाक्य में बदलिए	1
4	**निर्देशानुसार‘ वाच्य ’पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार के उत्तर लिखिए**	1x4=4
क	कॉलम 1 को कॉलम 2 के साथ सुमेलित कीजिए और सही विकल्प चुनकर लिखिए-	1
	कॉलम1 — कॉलम2	
	(1) कितने कंबल बाँटे गए? — (i) कर्तृवाच्य	
	(2) आइएवहाँ , पर बैठा जाए| — (ii) कर्मवाच्य	
	(3)नेताजी ने देश के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया| — (iii) भाववाच्य	
	विकल्प- 1. i, 2-iii, 3-ii-1 2. ii, 2-iii, 3-i-1 3. i, 2-ii, 3-iii-1 4. ii, 2-i, 3-iii-1	
ख	“बिस्मिल्ला खां जी द्वारा प्रतिदिन बालाजी के मंदिर में शहनाई वादन किया जाता था ”| कर्तृवाच्य में परिवर्तित कर लिखिए	1
ग	मैं एवरेस्ट पर नहीं चढ़ सकता| भाववाच्य में परिवर्तित कर लिखिए	1
घ.	“एक सभ्य व्यक्ति किसी नई चीज की खोज नहीं करता है) कर्मवाच्य में परिवर्तित कर लिखिए	1
ङ.	आओस्नान , किया जाए) वाच्य का भेद लिखिए	1
5	**निर्देशानुसार‘ पद परिचय ’पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद-परिचय दीजिए**	1x4=4
क	नवाब साहब **थककर** लेट गए।	1
ख	**यह** भाषा मध्य भारत में बोली जाती है।	1
ग	वक्त काटने के लिए खीरे **खरीदे** होंगे|	1
घ.	मन की **कोमलता** अक्सर चोट खा जाती है।	1
ङ	अजमेर से पहले **पिताजी** इंदौर में थे जहां उनकी बड़ी प्रतिष्ठा थी।	1
6	**निर्देशानुसार‘ अलंकार ’पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए।**	1x4=4
क	“सुनत जोग लागत है ऐसौ ज्यौं करुई ककरी "	1
ख	“प्रीति-नदी में पाँव न बोरयौ "	1
ग	“तुम्हतौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा "|	1

घ.	'"यह दंतुरित मुसकान ,<u>मृतक में भी डाल देगी जान"</u>	1
ड़	"सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्मकथा? अभी समय भी नहीं, <u>थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।</u> "	1
	खंड-ग पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक	
7	**निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहु विकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।**	1x5=5
	जीप कस्बा छोड़कर आगे बढ़ गई तब भी हालदार साहब इस मूर्ति के बारे में ही सोचते रहे, और अंत में इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि कुल मिलाकर कस्बे के नागरिकों का यह प्रयास सराहनीय ही कहा जाना चाहिए। महत्त्व मूर्ति के रंग-रूप या कद का नहीं, उस भावना का है वरना तो देशभक्ति भी आज कलमजाक की चीज़ होती जा रही है। दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुज़रे तो उन्हें मूर्ति में कुछ अंतर दिखाई दिया। ध्यान से देखा तो पाया कि चश्मा दूसरा है। पहले मोटे फ्रेमवाला चौकोर चश्मा था, अब तार के फ्रेमवाला गोल चश्मा है। हालदार साहब का कौतूहल और बढ़ा। वाह भई ! क्या आइडिया है। मूर्ति कपड़े नहीं बदल सकती लेकिन चश्मा तो बदल ही सकती है।	
क	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन : हालदार साहब को मूर्ति का चश्मा बदलना एक अच्छा आइडिया लगा। कारण: मूर्तियाँ समय के साथ खुद को आधुनिक बनाने की कोशिश करती हैं। विकल्प: 1) कथन और कारण दोनों सहीहैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। 2) कथन और कारण दोनों सही हैं, पर कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता। 3) कथन सही है, पर कारण गलत है। 4) कथन गलत है, पर कारण सही है।	1
ख	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन: हालदार साहब का मानना था कि मूर्ति का महत्त्व उसकी भावना में है। कारण: क्योंकि मूर्ति का रंग-रूप या आकार देशभक्ति की भावना का प्रतिनिधित्व नहीं करता। विकल्प: A) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। B) कथन और कारण दोनों सही हैं, पर कारण कथन की सही व्याख्या नहींकरता। C) कथन सही है, पर कारण गलत है। D) कथन गलत है, पर कारण सही है।	1
ग	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन: हालदार साहब को मूर्ति के बदलाव से कौतूहल हुआ। कारण: क्योंकि मूर्ति में भावनाएँ थीं जो बदल सकती थीं। विकल्प: A) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1

	B) कथन और कारण दोनों सही हैं, पर कारण कथन की सही व्याख्या नहींकरता। C) कथन सही है, पर कारण गलत है। D) कथन गलत है, पर कारण सही है।	
घ.	दूसरी बार जब हालदार साहब उधर से गुजरे तो उन्हें मूर्ति में क्या अंतर दिखाई दिया? .1. मूर्ति पर कोई चश्मा नहीं था .2. मूर्ति पर पुराना चश्मा था। 3. मूर्ति पर एक नया चश्मा था। 4. मूर्ति क्षतिग्रस्त थी।	1
ड़	देशभक्ति आजकल क्या होती जा रही है? कथन के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1. सम्मान की चीज़ 2. मजाक की चीज़ 3. दिखावे की चीज़ 4. सोचने की चीज़ विकल्प - 1. कथन 1 सही है| 2. कथन 1 और 2 सही हैं| 3. कथन 3 सही है| 4. कथन 3 और 4 सही हैं|	1
8	**गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित 4 प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25 30 शब्दों में लिखिए:**	2x3=6
क	बालगोबिन भगत की कबीर पर श्रद्धा किन रूपों में प्रकट हुई है?	2
ख	बिस्मिल्ला खान को वास्तविक अर्थो में सच्चा इंसान क्यों माना गया है? अपने शब्दों में लिखिए|	2
ग	लेखक ने नवाब साहब के सामने की बर्थ पर बैठकर भी आँखे क्यों चुराई' लखनवी अंदाज 'पाठ के आधार पर लिखिए |	2
घ	किन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सुई-धागे का आविष्कार हुआ? स्पष्ट कीजिए।	2
9	**निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहु विकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए ।**	1x5=5
	नाथ संभुधनु भंजनिहारा ,होइहि केउ एक दास तुम्हारा।। आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।। सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरिकरनी करि करिअ लराई।। सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।। सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥ सुनि मुनि वचन लखन मुसुकाने। बोले पर सुधरहि अवमाने॥ बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥ एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू॥ रे नृपबालक कालबस बोलत तोहि न सँभार। धनुही सम त्रिपुरारि धनु बिदित सकल संसार।।	

क	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन : शिव धनुष कोतोड़ने वाला सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। कारण : धनुष को तोड़ने वाले ने परशुराम के गुरु भगवान शिव का धनुष तोड़ा था। विकल्प- A) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है। B) कथन और कारण दोनों सही हैं, पर कारण कथन की सही व्याख्या नहींकरता। C) कथन सही है, पर कारण गलत है। D) कथन गलत है, पर कारण सही है।	1
ख	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन : राम ने कहा शिव धनुष को तोड़ने वाला आपका ही कोई सेवक होगा। कारण : राम ने परशुराम के डर से ऐसा कहा। विकल्प- 1. कथन तथा कारण दोनों गलत हैं। 2. कथन गलत है , लेकिन कारण सही है। 3. कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। 4. कथन सही है ,किंतु कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता है।	1
ग	निम्नलिखित कथन तथा कारण को ध्यानपूर्वक पढ़िए। उसके बाद दिए गए विकल्पों में से कोई एक सही विकल्प चुनकर लिखिए। कथन :इस धनुष से इतना लगाव क्यों है। कारण : यह तीनो लोकों के स्वामी भगवान शिव का धनुष है। विकल्प- 1. कथन तथा कारण दोनों गलत हैं। 2. कथन गलत है , लेकिन कारण सही है। 3. कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है। 4. कथन सही है ,किंतु कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता है।	1
घ	परशुराम के वचन सुनकर लक्ष्मण मुस्कुराते हैं- कथन के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए- 1. परशुराम की चेतावनी सुनकर| 2. परशुराम की बातें सुनकर| 3. परशुराम को देखकर| 4. लोगों को देखकर | विकल्प - 1. कथन 1 सहीहै| 2. कथन 1 और 2 सहीहैं| 3. कथन 3 सहीहै| 4. कथन 3 और 4 सहीहैं|	1

ड.	परशुराम जीने धनुष के टूटने पर सभा में क्या क्या-कहा-? कथन के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- 1. धनुष को तोड़ने वाला सहस्रबाहु के समान मेरा शत्रु है। 2. बचपन में मैंने ऐसे बहुत धनुष तोड़े हैं| 3. धनुष को तोड़ने वाले ने मेरे गुरु का अपमान किया है | 4. यह भगवान शिव का धनुष है इसे सारा संसार जानता है| विकल्प- 1. कथन 1 व 2 सही है | 2. कथन 3 ,1 व 4 सही है| 3. कथन 2 सही है| 4. कथन 2 ,1 व 3 सही है|	1
10	**पद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित 4 प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग 25 30 शब्दों में लिखिए:**	2x3=6
क	कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है?	2
ख	आत्मकथा सुनाने के संदर्भ में' अभी समय भी नहीं' कवि ऐसा क्यों कहता है?	2
ग	कवि ने बच्चे की मुसकान के सौन्दर्य को किन-किन बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है?	2
घ	कविता 'उत्साह'में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?	2
11	**पूरक पाठ्य पुस्तक के पाठों पर आधारित निम्नलिखित 3 प्रश्नों में से किन्हीं दो के उत्तर लगभग 60-50 शब्दों में लिखिए:**	4x2=8
क	'माता का अँचल 'पाठ मे आपके विचार से भोलानाथ अपने साथियों को देखकर सिसकना क्यों भूल जाता है?	4
ख	'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है। इस कथन के पक्ष में अपनी राय व्यक्त कीजिए।	4
ग	कुछ रचनाकारों के लिए आत्मानुभूति /स्वयं के अनुभव के साथ-साथ बाह्य दवाब भी महत्त्वपूर्ण होता है। ये बाह्य दवाब कौन-कौन से हो सकते हैं?	4
	खंड-घ रचनात्मक लेखन	
12	**निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए:**	6x1=6
क	**परीक्षा के कठिन दिन** **संकेत-बिंदु-** • परीक्षा की उपयोगिता • परीक्षा जीवन की कसौटी • परीक्षा में सफलता के उपाय	
ख	**पर्यावरण संरक्षण : समय की मांग** **संकेत-बिंदु** • भूमिका ,मानव और पर्यावरण में संबंध • संरक्षण की आवश्यकता • सुझाव	
ग	**जंक फूड**	

	संकेत-बिंदु ● जंक फूड क्या होता है? ● युवा पीढ़ी और जंक फूड ● जंक फूड खाने के दुष्परिणाम	
13	**किसी एक विषय पर लगभग 100 शब्दों में पत्र लिखिए:**	5x1=5
	आप गौरव/गौरवी हैं। अपने क्षेत्र में बढ़ती आपराधिक घट्नाओं से हो रही असुविधा को दर्शाते हुए किसी दैनिक समाचार पत्र के संपादक को पत्र लिखिए। अथवा आप मोहित/मोहिता हैं। आप के छोटे भाई ने हाल ही में पढाई के लिए मोबाइल लिया है। उसको मोबाइल का सावधानी से उपयोग करने की बात समझाते हुए एक पत्र लिखिए।	
14	आप दीपक / दीपिका हैं| आप बी.टेक .कर चुके है | एक नामी कंपनी में इंजीनियर के पद के लिए आवेदन करना चाहते है | इसके लिए एक स्ववृत लगभग 80 शब्दों में लिखिए। अथवा आप मिहिर / मिहिका हैं | हाल ही में अपनी हवाई यात्रा के दौरान आपका बैग खो गया इसकी , शिकायत करते हुए सेवा प्रदाता कंपनी के प्रबंधक को 80 शब्दों में एक ई मेल लिखिए।	5x1=5
15	"शीतल पेय "के लिए 40 शब्दों में एक विज्ञापन तैयार कीजिए। अथवा 'डेंगू से बचाव 'विषय के संबंध में जागरूक करते हुए क्षेत्र के निवासियों को 40 शब्दों में एक संदेश लिखिए।	4x1=4

अभ्यास प्रश्नपत्र
कक्षा दसवीं हिन्दी

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक 80**

सामान्य निर्देश :

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए:

- **इस प्रश्नपत्र में कुल 15 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। इस प्रश्नपत्र में कुल चार खंड हैं क, ख, ग, घ ।**
- **खंड क में कुल-2 प्रश्न हैं, जिनमें उप-प्रश्नों की संख्या 10 है।**
- **खंड ख में कुल-4 प्रश्न हैं, जिनमें उप-प्रश्नों की संख्या 20 है।**
- **खंड ग में कुल-5 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है। दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए 16 उप-प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।**
- **खंड घ में कुल-4 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं।**
- **प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए ।**

प्रश्न	**खंड - क (अपठित)**	**अंक (14)**
1	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढकर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-	7

क	तुलसी जैसा कवि काव्य की विशुद्ध, मनोमयी, कल्पना-प्रवण तथा श्रृंगारात्मक भावभूमियों के प्रति उत्साही नहीं हो सकता। उनका संत-हृदय परम कारुणिक राम के प्रति ही उन्मुख हो सकता है, जो जीवन के धर्ममय सौंदर्य, मर्यादापूर्ण, शील और आत्मिक शौर्य के प्रतीक हैं। विजय-रथ के रूपक में उन्होंने संत जीवन की रूपरेखा उभारी है और अपनी रामकथा कोइ सी संतत्व की चरितार्थता बना दिया है। उनका काव्य भारतीय जीवन की सबसे बड़ी आकांक्षा मर्यादित जीवन-चर्या अथवा 'संत-जीवन' को वाणी देता है। धर्ममय जीवन की आकांक्षा भारतीय संस्कृतिका वैशिष्टय है। तुलसी के काव्य में धर्म का अनाविल, अनावरण और अक्षुण्ण रूप ही प्रकट हुआ है। मध्य युग की आध्यात्मिकता का प्रतिनिधित्व करते हुए भी उनका काव्य भारतीय आत्मा के चिरंतन सौंदर्य का प्रतिनिधि है, जो सत्य, तप, करुणा और मैत्री में ही आरोहण के देवधर्मी मूल्यों को अनावृत करता है। उनके काव्य में हमें श्रेष्ठ कवित्व ही नहीं मिलता, उसके आधार पर हम संत-कवित्व की रूपरेखा भी निर्धारित कर सकते हैं। भक्ति उनके जीवन कीआंतरिक भाव-साधना है। इस भाव-साधना की वाणी की अप्रतिम क्षमता देकर उन्होंने निष्कंप दीपशिखा की भाँति अपनी काव्य-कला को नि:संग और निर्वैयक्तिक दीप्ति से भरा है।	
क	**निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-** 1) तुलसी मनोमयी, कल्पना-प्रवण तथा श्रृंगारात्मक कवियों में अग्रणी हैं। 2) तुलसी जी एक सच्चे संत हैं। 3) तुलसी जी का काव्य भारतीय आत्मा के चिरंतन सौंदर्यका प्रतीक है। 4) तुलसी जी ने श्रीराम का मर्यादित रूप प्रस्तुत किया है। उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं? (i) 1 और 2 (ii) 2,3 और 4 (iii) 1 और 3 (iv) केवल 4	1
ख	**गद्यांश के आधार पर बताइए कि कवि तुलसी में किसके प्रति उत्साह नहीं है?** (i) भक्ति-भाव को अभिव्यक्त करने के प्रति (ii) धर्ममय जीवन जीने के प्रति (iii) विशुद्ध एवं कल्पनामय काव्य प्रणयन के प्रति (iv) संत कवि के प्रणयन केप्र ति	1
ग	**कथन (A)और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए?** **कथन (A) तुलसी के राम मर्यादा पुरुषोतम है |** **कारण (R) तुलसीं के राम जीवन के धर्ममय सौंदर्य, मर्यादापूर्ण, शील और आत्मिक शौर्य से परिपूर्ण हैं।** (i) कथन (A) गलत है किंतु कारण (R) सही है | (ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं| (iii) कथन (A)सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है| (iv) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है|	1
घ	**तुलसी के काव्य में भारतीय जीवन की कौन-सी सबसे बड़ी अभिलाषा व्यक्त हुई है ?**	2
ड.	**तुलसी के काव्य में धर्म का कैसा रूप प्रकट हुआ है ?**	2

2	नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए-	
	तुम बना सकोगे भूतल का इतिहास नया मैं गिरे हुओ को बढ़कर गले लगाऊँगा क्यों नीच, ऊँच, कुल, जाति, रंग का भेदभाव मैं रूढ़िवाद का कल्मष महल ढहाऊँगा तुम बढा सकोगे कदम ज्वलित अंगारों पर मैं कांटों पर विधते - विधते बढ़ जाऊंगा सागर की विस्तृत छाती पर हो ज्वार नया मैं कूद स्वयं पतवार हाथ में था मूगाँ है अगर तुम्हें यह भूख मुझे भी जीना है तो आओ मेरे साथ नींव मे गढ़ जाओ ऊपर से निर्मित होना है आनंद महल मरते-मरते भी दुनिया में कुछ कर जाओ	
क	नीव में गड़ने का क्या अर्थ है - I आधार बनना Ii नि:स्वार्थ भाव से समर्पण करना Iii स्वयं को नष्ट करना Iv मर जाना केवल विकल्प i सही विकल्प ii सही विकल्प i, ii , iii सही विकल्प i iii iv सही	1
ख	समाज की पुरानी रूढ़ियाँ क्या है? I ऊंच-नीच Ii जातिवाद Iii रंग भेद Iv यह सभी	1
ग	कथन (A) कवि शोषित है जो महल के लिए नींव में गड़ जाना चाहता है| कारण (R) वह और किसी के महल के लिए खुद मर जाना चाहता है| कथन A और कारण R को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए- कथन (A) गलत किंतु कारण (R) सही है| कथन A और कारण R दोनों ही गलत है| कथन A सही है और कारण R कथन A की सही व्याख्या है| कथन A सही है किंतु कारण R कथन A ही सही व्याख्या नहीं है|	1
घ	कवि भूतल का नया इतिहास कैसे बनाएगा?	2

ड	देश और समाज के कल्याण के लिए किन-किन चुनौतियों से लड़ना होगा ?	2
	खंड ख (व्यावहारिक व्याकरण) अतिलघु / लघुप्रश्न)	
3	निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित वाक्य में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए-	4x1=4
क	यह जरूर है कि शहनाई और डुमराँव एक दूसरे के लिए उपयोगी है| (आश्रित उपवाक्य छाँटकर कर भेद भी लिखिए)	1
ख	काशी में संगीत आयोजन की एक प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है| (मिश्र वाक्य में बदलिए)	1
ग	हालदार का प्रश्न सुनकर वह हँसा (संयुक्त वाक्य में बदलिए)	1
घ	कार्तिक आया नहीं कि बालगोविंन भगत की प्रभातियाँ शुरू हुई। (साधारण वाक्य में बदलिए)	1
ड	वह आलसी था, इसलिए विफल हुआ (रचना की दृष्टि से वाक्य भेद लिखिए)	1
4	निर्देशानुसार वाक्य पर आधारित पाँच वाक्य में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए-	4x1=4
क	हालदार साहब ने चश्मे वाले की देशभक्ति का सम्मान किया (कर्म वाच्य में बदलिए)	1
ख	पानवाला नया पान खा रहा था (भाववाचक में बदलिए)	1
ग	नवाब साहब ने जेब से चाकू निकाला और खीरे छीलने शुरू कर दिए (वाच्य पहचान कर भेद बताइए)	1
घ	मीना द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है| (कर्तृवाच्य में बदलिए)	1
ड	वाच्य किसे कहते हैं?	1
5	निर्देशानुसार पद परिचय पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए-	4x1=4
क	जब **हम** रेलवे स्टेशन पहुँचे गाड़ी छूट रही थी।	1
ख	भारतीय सैनिक रण क्षेत्र में **वीरता** दिखाते हैं और शत्रुओं को सबक सिखाते हैं।	1
ग	**अरे !** आप आ गए।	1
घ	ऋषि ने पेड़ लगाए **ताकि** फल और छाया मिले।	1
ड	जयशंकर प्रसाद ने **प्रसिद्ध** कहानियाँ लिखीं।	1

6	निर्देशानुसार अलंकार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों की रेखांकित का पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए-	4x1=4
क	कहती हुई यो उतरा के ,यों नेत्र जल से भर गए हिम कणों से पूर्ण मानों, हो गए पंकज नए|	1
ख	तनकर भाला यह बोल उठा- राणा मुझको विश्राम न दे! मुझको शोणित की प्यास लगी बढ़ने दे, शोणित पीने दे।	1
ग	जिस वीरता से शत्रुओं का सामना उसने किया असमर्थ हो उसके कथन में मौन वाणी ने लिया।	1
घ	बीती विभावरी जाग री! अंबर पनघट में डुबो रही तारा-घट उषा-नागरी	1
ड	मुख बाल-रवि-सम लाल होकर ज्वाल- सा बोधित हुआ|	1
	खण्ड 'ग' (पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) बहुविकल्पीय/वर्णनात्मक प्रश्न)	30
7	निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उतर दीजिए-	5x1=5
	कस्बा बहुत बड़ा नहीं था। जिसे पक्का मकान कहा जा सके वैसे कुछ ही मकान और जिसे बाज़ार कहा जा सके वैसा एक ही बाज़ार था। कस्बे में एक लड़कों का स्कूल, एक लड़कियों का स्कूल, एक सीमेंट का छोटा-सा कारखाना, दो ओपन एयर सिनेमाघर और एकठो नगरपालिका भी थी। नगरपालिका थी तो कुछ-न-कुछ करती भी रहती थी। कभी कोई सड़क पक्की करवा दी, कभी कुछ पेशाबघर बनवा दिए, कभी कबूतरों की छतरी बनवा दी तो कभी कवि सम्मेलन करवा दिया। इसी नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने एक बार 'शहर' के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी।	
क	**नगरपालिका भी तो कुछ न कुछ करती भी रहती थी। कथन के लिए उचित विकल्प का चयन कीजिए-** I. कभी कोई सड़क पक्की करवा दी। II. कबूतरों के लिए छतरी बनवा दी। III. सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा मुख्य चौराहे पर लगवा दी। IV. गाने-बजाने का कार्यक्रम करवाती थी। **विकल्प -** (क) कथन I और II सही हैं। (ख) कथन I, II और III सही हैं। (ग) केवल कथन IV सही है। (घ) कथन I, II और IV सही हैं।	1

ख	**कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए-** **कथन (A): कस्बा बहुत बड़ा नहीं था।** **कारण (R): कस्बे में एक बाज़ार भी था।** (क) कथन (A) गलत है, किन्तुकारण (R) सही है। (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत है । (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है। (घ) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
ग	**कस्बे में क्या-क्या था?** (क) एक लड़कों का स्कूल (ख) एक सीमेंट का छोटा सा कारखाना (ग) दो ओपन एयर सिनेमाघर (घ) उपर्युक्त सभी	1
घ	**नगरपालिका कार्य करती थी-** (क) सड़क पक्की करवाना (ख) पेशाब घर बनवाना (ग) कबूतरों की छतरी बनवाना (घ) उपर्युक्त सभी	1
ड	**शहर के मुख्य बाज़ार में सुभाषचन्द्र बोस की प्रतिमा किस के द्वारा लगाई गई थी? उचित विकल्प का चयन कीजिए -** I. पानवाले ने प्रतिमा लगवाई थी। II. कैप्टन ने प्रतिमा लगवाई थी। III. मास्टर ने प्रतिमा लगवाई थी। IV. नगरपालिका द्वारा प्रतिमा लगवाई गई थी। **विकल्प -** (क) कथन I और II सही हैं। (ख) कथन I, III और IV सही हैं। (ग) केवल कथन IV सही हैं। (घ) कथन I, II और IV सही हैं।	1
8	गद्य खंड के निर्धारित पाठों में से निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 25- 30 शब्दों में दीजिए-	3x2=6
क	मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?	2
ख	बालगोविंन भगत एक समाज सुधारक थे| यह उनके जीवन की किन घटनाओं से सिद्ध होता है?	2
ग	लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?	2
घ	बिस्मिल्ला खा के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया?	2

9	निम्नलिखित पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए- नाथ संभुधनु भंजनिहारा, होइहि केउ एक दास तुम्हारा।। आयेसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही।। सेवकु सो जो करै सेवकाई । अरि करनी करि करिअ लराई।। सुनहु राम जेहि सिव धनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा।। सो बिलगाउ बिहाइ समाजा। न त मारे जैहहिं सब राजा॥ सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अवमाने॥ बहु धनुहीं तोरीं लरिकाईं। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाईं॥ एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतु॥	5x1=5
क	परशुराम के क्रोध का कारण क्या था? I उनका राम ने अपमान किया था| II उनका लक्ष्मण ने अपमान किया था| Iii वह स्वभाव से ही क्रोधी थे | Iv उनके गुरु भगवान शंकर का धनुष किसी ने तोड़ दिया था| दिए गए कथन के लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए| विकल्प i सही है विकल्प i व ii सही है| विकल्प i ii iii सही है | विकल्प iv सही है|	1
ख	शंभुधनु का अर्थ स्पष्ट कीजिए- i शंभूजी का धन ii शंभू रूपी धन iii शंभूजी का धनुष iv शंभूजी की गाय	1
ग	कथन A परशुराम के अनुसार शिव के धनुष को तोड़ने वाला उनका शत्रु है| करण R लक्ष्मण बहुत अधिक वीर व क्रोधी स्वभाव के थे| कथन A और कारण R को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए_ I कथन A गलत किंतु कारण R सही है Ii कथन A और कारण R दोनों ही गलत है Iii कथन A सही है और करण R कथन की सही व्याख्या है iv कथन A सही है किंतु कारण R कथन A ही सही व्याख्या नहीं है	1

घ	भगवान शंकर का पर्यायवाची है- I सहस्रबाहु Ii शिव iii शंभू iv त्रिपुरारी उपरोक्त कथन के लिए सही विकल्प है विकल्प i, व ii सही विकल्प ii व iii सही विकल्प ii, iii, iv सही	1
घ	सभा में लक्ष्मण के मुस्कुराने का कारण था - i धनुष तोड़ने की खुशी में ii परशुराम की शेखी पर iii राम की वीरता दिखाने के लिए iv वहाँ मचे बवाल पर	1
10	निर्धारित काव्य पाठों में से दिए गए निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिए|	3x2=6
क	कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार अभिव्यक्त किया है ?सूरदास के पद के आधार पर बताइए	2
ख	लक्ष्मण ने किन तर्कों से सिद्ध करना चाह कि धनुष टूट जाने में राम का दोष नहीं है|	2
ग	कवि जयशंकर प्रसाद ने आत्मकथा न लिखने के कौन-कौन से कारण गिनाए हैं?	2
घ	उत्साह कविता में कवि बादल को गरजने के लिए क्यों कहता है? बादल से कवि की अन्य अपेक्षाएं क्या है?	2
11	पूरक पाठ्य पुस्तक पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों मे दीजिए	2x4=8
क	माता का अँचल पाठ में आए ऐसे किसी एक प्रसंग का वर्णन कीजिए जो आपके दिल को छू गया हो?	4
ख	लोंग -स्टाक में घूमते हुए चक्र को देखकर लेखिका को पूरे भारत की आत्मा एक सी क्यों दिखाई दी?	4
ग	एक संवेदनशील युवा नागरिक की हैसियत से विज्ञान का दुरुपयोग रोकने में आपकी क्या भूमिका है?	4
	खंड - घ (रचनात्मक लेखन)	

12	निम्नलिखित किन्हीं तीन विषयों में से एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं की सहायता से 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखें **कमजदूरों की समस्याएँ** *उचित मजदूरी नहीं मिलना * कार्य स्थल तथा आवास स्थल पर सुविधाओं का अभाव * दक्षता अनुकूल कार्य नहीं मिलना * संघर्षपूर्ण जीवन **ख स्वच्छ भारत अभियान -एक वरदान** * उद्देश्य * देश के विकास में स्वच्छता का योगदान * अस्वच्छता के कारण रोकने के उपाय * जागरूक नागरिक के रूप में आपकी भूमिका **ग स्वास्थ्य की रक्षा** *आवश्यकता पोषित भोजन लाभदायक सुझाव	1x6=6
13	एक दैनिक समाचार पत्र के संपादक को अपनी कविता प्रकाशित करवाने का अनुरोध करते हुए लगभग 100 शब्दों में एक पत्र लिखिए। अथवा अपने राज्य के ग्रामीण इलाकों में पुस्तकालय स्थापित करने हेतु मुख्य सचिव को पत्र लिखिए|	1x5=5
14	आपका नाम सुधा/अनुपम है| आपके शहर में एक नया विद्यालय खुला है जहाँ कंप्यूटर शिक्षक का पद रिक्त है आप निर्धारित योग्यता को पूर्ण करते है | रिक्त पद के लिए आवेदन करते हुए लगभग 80 शब्दों में एक स्ववृत लेखन तैयार कीजिए| अथवा आपका नाम रक्षा/ रक्षित है| अपने क्षेत्र में जलभराव की समस्या की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए अपने शहर के नगर निगम/ नगरपालिका को 80 शब्दों में एक ई-मेल लिखिए|	1x5=5
15	सौर ऊर्जा के प्रयोग हेतु, जन जागरण के उद्देश्य से बिजली विभाग द्वारा जारी एक विज्ञापन तैयार कीजिए| अथवा अपने प्रिय बहन-जीजा की पहली वैवाहिक वर्षगाँठ के अवसर पर उनके लिए शुभकामना एवं बधाई सन्देश लिखिए|	1x4=4

अभ्यास प्रश्नपत्र

कक्षा दसवीं हिन्दी

निर्धारित समय :3 घंटे **अधिकतम अंक 80**

सामान्य निर्देश :

निम्नलिखित निर्देशों को बहुत सावधानी से पढ़िए और उनका सख्ती से अनुपालन कीजिए:

- **इस प्रश्नपत्र में कुल 15 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। इस प्रश्नपत्र में कुल चार खंड हैं क, ख, ग, घ ।**
- **खंड क में कुल-2 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 10 है।**
- **खंड ख में कुल-4 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है। दिए गए निर्देशों का**
- **पालन करते हुए 16 उपप्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है। खंड ग में कुल-5 प्रश्न हैं, जिनमें उपप्रश्नों की संख्या 20 है**
- **खंड घ में कुल-4 प्रश्न हैं, सभी प्रश्नों के साथ उनके विकल्प भी दिए गए हैं।**
- **प्रश्नों के उत्तर दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लिखिए ।**

प्रश्न	**खंडक**	अंक (14)
.1	निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :	7
	समय निरंतर गतिमान है, इसे रोकना असंभव है। राजा हो या रंक, संत हो या सामान्य प्राणी, अमीर हो या गरीब सभी को समय अपने आगोश में समेट लेता है। समय की कीमत न पहचानने वाले समय बीत जाने पर सिर धुनते रह जाते हैं इसलिए हमें समय का मूल्य समझना चाहिए। साथ ही समयानुसार काम भी करना चाहिए। जीवन की यह कुंजी है। यूनान के दार्शनिक अरस्तू ने कहा है" - प्रत्येक व्यक्ति को उचित समय पर, उचित व्यक्ति से, उचित मात्रा में, उद्देश्य के लिए, उचित ढंग से व्यवहार करना चाहिए।" वास्तव में एकएक क्षण से प्रत्येक प्राणी का संबंध - रहता है, परंतु प्रत्येक व्यक्ति उसका महत्व समझता नहीं है। अधिकतर व्यक्ति सोचते हैं कि कोई अच्छा समय आएगा तो काम करेंगे। इस दुविधा व उधेड़बुन में वे जीवन के अनेक अमूल्य क्षणों को खो देते हैं। वे दिनों, महीनों, वर्षों को किसी शुभ क्षण की प्रतीक्षा में बिता देते हैं किंतु ऐसा क्षण किसी के जीवन में कभी नहीं आया। कभी किसी व्यक्ति को बिना हाथ पाँव हिलाए संसार की बहुत बड़ी संपत्ति छप्पर फाड़ कर नहीं मिलती। समय उन्हीं के रथ के घोड़े को हाँकता है जो भाग्य के भरोसे बैठना पुरुषार्थ का अपमान समझते हैं । वास्तव में मनुष्य जिस समय को चाहे शुभ क्षण बना सकता है। आवश्यकता श्रम और समय की परख की है । जो व्यक्ति श्रम और पारखी होता है लक्ष्मी भी उसी का वरण करती है। जीवन में असफलता का कारण दुर्भाग्य नहीं होता अपितु समय को गलत समझने की भूल होती है।	
(क)	कथन A) और कारण R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए : कथन A) समय को रोकना असंभव है । : कारण R): समय निरंतर गतिमान रहता है । i. कथन A) गलत है, किन्तु कारण R) सही है। ii. कथन A) और कारण R) दोनों गलत हैं। iii. कथन A) सही है और कारण R) कथन A) की सही व्याख्या है। iv. कथन A) सही है और कारण R) कथन A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
(ख)	कथन लिए उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए - जीवन की कुंजी के लिए व्यवहार करना चाहिए । I. प्रत्येक व्यक्ति को उचित समय पर II. उचित व्यक्ति से III. उचित मात्रा में विकल्प -	1

	i. कथन I और II सही हैं। ii. कथन I और III सही हैं। iii. केवल कथन I सही है। iv. कथन I, II और III सही हैं।	
(ग)	नीचे दिए हुए कॉलम - से सुमेलित कर सही विकल्प का चयन कीजिए 2 को कॉलम 1 कॉलम 1 | कॉलम 2 I समय निरंतर | - 1 लक्ष्मी भी उसी का वरण करती है। II जो व्यक्ति श्रम और पारखी होता है | - 2 गतिमान है । III उचित ढंग से | - 3 व्यवहार करना चाहिए i. I(3), II(2), III(1) ii. I(1), II(2), III(3) iii. I(3), II(1), III(2) iv. I(2), II(1), III(3)	1
(घ)	समय का महत्व न समझने वाले अधिकतर व्यक्तियों की क्या दशा होती है?	2
(ङ)	समय किन लोगों के रथ के घोड़ों को हाँकता है ?	2
.2	निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्तरलिखिए	7
	अर्जुन ! देखो, किस तरह कर्ण सारी सेना पर टूट रहा, किस तरह पांडवों का पौरुष होकर अशं वह लूट रहा, देखो जिस तरफ, उधर उसके ही बाण दिखायी पड़ते हैं, बस, जिधर सुनो, केवल उस के हुंकार सुनायी पड़ते हैं। कैसी करालता ! क्या लाघव ! कितना पौरुष ! कैसा प्रहार ! किस गौरव से यह वीरद्विरद कर रहा समर-वन में विहार ! व्यूहों पर व्यूह फटे जाते, संग्राम उजड़ता जाता है, ऐसी तो नहीं कमलवन में भी कुंजर धूम मचाता है। इस पुरुष-सिंह का समर देख मेरे तो हुए निहाल नयन, कुछ बुरा न मानो, कहता हूँ, मैं आज एक चिर-गूढ़ वचन। कर्ण के साथ तेरा बल भी मैं खूब जानता आया हूँ, मन-ही-मन तुझ से बड़ा वीर, पर इसे मानता आया हूँ। "औ" देख चरम वीरता आज तो यही सोचता हूँ मन में, है भी कोई, जो जीत सके, इस अतुल धनुर्धर को रण में ?	
(क)	इस काव्यांश में कौन किसकी प्रशंसा कर रहा है? (i) कृष्ण अर्जुन की। (ii) कृष्ण कर्ण की। (iii) कर्ण कृष्ण की। (iv) अर्जुन कर्ण की।	1
(ख)	कवि ने कर्ण के युद्ध-कौशल की प्रशंसा में क्या कहा है? उचित विकल्प का चयन कीजिए- I. पांडव सेना के पुरुषार्थ को चुनौती दे रहा था। II. पांडव सेना ने उसे चारों ओर से घेर लिया था।	1

	III. समर क्षेत्र में केवल उसके बाण दिखाई दे रहे थे। IV. समर क्षेत्र में केवल उसकी हुंकार सुनाई दे रही थी। **विकल्प** (i) कथन I और II सहीहैं। (ii) कथन I, II और IV सहीहैं। (iii) केवलकथन III सहीहै। (iv) कथन I, III और IV सहीहैं।	
(ग)	कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिएः 1 कथन (A): कर्ण की गर्जना से पाण्डव सेना में भगदड़ मच गई। कथन (R): कर्ण ने पाण्डवों की सेना पर भीषण आक्रमण कर दिया था। (i) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है। (ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं। (iii) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है। (iv) कथन (A) सही है किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
(घ)	श्रीकृष्ण ने अर्जुन को कौन सा गूढ़ वचन बताया?	2
ङ	कर्ण के युद्ध-कौशल को देखकर कृष्ण उसके बारे में क्या सोच रहे थे?	2
	खंड - ख (व्यावहारिक व्याकरण) अतिलघु/लघुप्रश्न	16
3	निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :	4X1=4
(क)	वर्षा हुई और मोर नाचने लगे- (सरल वाक्य में बदलिए	1
(ख)	चौकीदार जाकर डंडा घूमा कर चला गया I - (मिश्रवाक्य में बदलिए)	1
(ग)	'वह परिश्रम करने के कारण सफल हो गया - (संयुक्त वाक्य में बदलिए)	1
घ	खीरे के स्वाद के आनंद में नवाब साहब की पलकें मुँद गईं। - (मिश्र वाक्य में बदलिए)	1
ङ	जैसे ही सूर्य उदय हुआ फूल खिल उठे I - (सरल वाक्य में बदलिए)	1
4	निर्देशानुसार 'वाच्य' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए :	4X1=4
(क)	पंछी बाग छोड़कर नहीं उड़े। (कर्मवाच्य में बदलिए)	1
(ख)	जब क्रिया का सीधा संबंध कर्म से होता है,तब वहाँ कौन -सा वाच्य होता है?	1
(ग)	सोहन से चला नहीं जाता।-वाच्य का भेद लिखिए)	1
घ	राजा द्वारा प्रजा को कष्ट दिए गए । - (कर्तृवाच्य में बदलिए)	1
ङ	लड़की खेल नहीं सकी। (भाववाच्य में बदलिए)	1
5	निर्देशानुसार 'पद परिचय' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद : परिचय लिखिए-	4X1=4
(क)	राजा ने अपने शत्रु पर <u>**चढ़ाई**</u> कर दी।	1
(ख)	वहाँ <u>**अत्यधिक**</u> लोग जमा हो गए थे|	1
(ग)	हिमालय विश्व का सबसे ऊंचा <u>**पर्वत**</u> है|	1
घ	<u>**जब**</u> हम रेलवे स्टेशन पहुंचे गाड़ी छूट रही थी|	1
ङ	हम देश पर सर्वस्व निसार करने को तैयार <u>**हो जाते हैं |**</u>	1
6	निर्देशानुसार 'अलंकार' पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों की रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए :	4X1=4
(क)	<u>बहुत काली सील जरा से, लाल केसर से कि जैसे धुल गयी हो।</u>	1

(ख)	एक दिन बोला यूं पुष्प डाल से ,लगते हैं, कुछ हाल तुम्हारे निडाल से।	1
(ग)	परवल पाक फाट हिय गेहूं ।	1
घ	बढ़त देखि जल सम वचन बोले रघुकुलभानु।	1
ङ	जान पड़ता है नेत्र देख बड़ेबड़े हीरो में गोल नीलम है जड़े-	1
	खण्ड 'ग' (पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक) बहुविकल्पीय / वर्णनात्मकप्रश्न	**30**
.7	निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :	5X1=5
	शहनाई के इसी मंगलध्वनि के नायक बिस्मिल्ला खाँ साहब अस्सी बरस से सुर माँग रहे हैं। सच्चे सुर की नेमत। अस्सी बरस की पाँचों वक्त वाली नमाज इसी सुर को पाने की प्रार्थना में खर्च हो जाती है। लाखों सजदे, इसी एक सच्चे सुर की इबादत में खुदा के आगे झुकते हैं। वे नमाज के बाद सजदे में गिड़गिड़ाते हैं -'मेरे मालिक एक सुर बख्श दे। सुर में वह तासीर पैदा कर कि आँखों से सच्चे मोती की तरह अनगढ़ आँसू निकल आएँ।' उनको यकीन हैकभी खुदा यूँ ही उन पर . मेहरबान होगा और अपनी झोली से सुर का फल निकालकर उनकी ओर उछालेगा, फिर कहेगा, ले जा अमीरुद्दीन इसको खा ले और कर ले अपनी मुराद पूरी। अपने ऊहापोहों से बचने के लिए हम स्वयं किसी शरण, किसी गुफ़ा को खोजते हैं जहाँ अपनी दुश्चिताओं, दुर्बलताओं को छोड़ सकें और वहाँ से फिर अपने लिए एक नया तिलिस्म गढ़ सकें।	
(क)	कथन)A) और कारण)R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए : कथन)A)मंगल कार्यों और विवाह समारोह में शहनाई बजाई जाती है। : कारण)R)शहनाई से मंगल ध्वनि उत्पन्न होती है। : i. कथन)A) गलत है, किन्तु कारण)R) सही है। ii. कथन)A) और कारण)R) दोनों गलत हैं। iii. कथन)A) सही है और कारण)R) कथन)A) की सही व्याख्या है। iv. कथन)A) सही है और कारण)R) कथन)A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
(ख)	बिस्मिल्ला खाँ कितने वर्षों से शहनाई बजा रहे थे? i. बीस वर्षों से ii. तीस वर्षों से iii. पचास वर्षों से iv. अस्सी वर्षों से	1
(ग)	बिस्मिल्ला खाँ सच्चा सुर मांगने के लिए करते हैं। I. खुदा की इबादत करते हैं II. सजदे करते हैं III. स्नान करते हैं विकल्प - i. कथन II और III सही हैं। ii. कथन I और II सही हैं। iii. केवल कथन III सही है। iv. कथन I, II और IV सही हैं।	1
(घ)	अपने ऊहापोहों से बचने के लिए करते हैं -	1

	I. स्वयं किसी शरण में जाना II. किसी गुफ़ा को खोजते हैं III. दुर्बलताओं को छोड़ते हैं विकल्प - i. कथन II और III सही हैं। ii. कथन I, II और III सही हैं। iii. केवल कथन III सही है। iv. कथन II और I सही हैं।	
ङ	बिस्मिल्ला खाँ की इच्छा क्या थी? i. अच्छी से अच्छी शहनाई बजाना ii. अच्छे कपड़े पहनना iii. अच्छे घर में रहना iv. अच्छा खाना खाना	
.8	निर्धारित गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग शब्दों में लिख :30-25	3X2=6
(क)	लेखक को देखकर नवाब साहब असहज क्यों हो गए? 'लखनवी अंदाज़' पाठ के आधार पर लिखिए।	2
(ख)	मन्नू भंडारी के लेखकीय व्यक्तित्व निर्माण में शीला अग्रवाल की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।	2
(ग)	बिस्मिल्ला खाँ जीवनभर ईश्वर से क्या माँगते रहे, और क्यों? इससे उनकी किस विशेषता का पता चलता है?	2
घ	'संस्कृति' पाठ में लेखक ने आग और सुई-धागे के आविष्कारों से क्या स्पष्ट किया है?	2
.9	निम्नलिखित पठित काव्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए :	5X1=5
	या अपने ही सरगम को लाँघकर चला जाता है भटकता हुआ एक अनहद में तब संगतकार की स्थाई को सम्भाले रहता है जैसे समेटता हो मुख्य गायक का पीछे छूटा हुआ सामान जैसे उसे याद दिलाता हो उसका बचपन जब वह नौसिखिया था तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला प्रेरणा साथ छोड़ती हुई उत्साह अस्त होता हुआ आवाज़ से राख जैसा कुछ गिरता हुआ तभी मुख्य गायक को ढाँढ़स बँधाता कहीं से चला आता है संगतकार का स्वर	
(क)	मुख्य गायक अपने ही सरगम को किस कारण लाँघ जाता है? (i) गाने की रौ में भटकने के कारण (ii) संगतकार द्वारा साथ देने के कारण (ii) संगतकार द्वारा साथ न देने के कारण (i) संगतकार नौसिखिया था।	1

(ख)	मुख्य गायक कहाँ भटक जाता है? सही विकल्प का चयन कीजिए- I. समुद्र के भँवर जाल में II. बचपन की स्मृतियों में III. तबले की ताल में IV. अनहद में विकल्प- (क) कथन IV सही है। (ख) कथन I और II सही हैं। (ग) कथन II और III सही हैं। (घ) कथन 1 और IV सही है।	1
(ग)	कथन (A) और कारण (R) को ध्यान पूर्वक पढ़कर सही विकल्प चुनकर लिखिए- कथन (A): मुख्य गायक के भटकने पर संगतकार उसकी सहायता करता है। कारण (R): स्थाई को सम्भालकर संगतकार मुख्य गायक की सहायता करता है। (i) कथन (A) गलत है, किन्तु कारण (R) सही है। (ii) कथन (A) और कारण (R) दोनों ही गलत हैं। (iii) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है। (iv) कथन (A) सही है, किन्तु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।	1
घ	"जब वह नौ सिखिया था" इस वाक्य में 'वह' किसके लिए आया है**?** (i) संगतकार (ii) मुख्यगायक (iii) संयोजक (iv) बाँसुरीवादक	1
ङ	'तारसप्तक में जब बैठने लगता है उसका गला।' यहाँ 'तारसप्तक' से क्या अभिप्राय है**?** सही विकल्प का चयन कीजिए**-** I. धीमा स्वर। II. शुद्ध स्वर III. दुगुना धीमा स्वर IV. दुगुना ऊँचा स्वर **विकल्प-** (i) कथन II सही है। (ii) कथन I और II सही हैं। (iii) कथन II और III सही हैं। (iv) कथन I और IV सही हैं।	1
10	निर्धारित कविताओं के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लगभग : शब्दों में लिखिए 30-25	3X2=6
(क)	(क कृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम को गोपियों ने किस प्रकार (अभिव्यक्त किया है?	2
(ख)	(ख' (अट नहीं रही हैपाट शोभा श्री-पाट....पत्तों से लदी डाल) कविता की अंतिम पंक्तियों ', पट नहीं रही हैरूप -फागुन में कैसे अपना रंग (सुन्दरता) के आधार पर लिखिए कि प्रकृति की शोभा श्री (बदलती है?	2
(ग)	(ग हाथों के स्पर्श' फ़सल को (की गरिमाकहकर के कवि क्या व्यक्त करना चाहता 'महिमा' और ' है?	2
(घ)	(घआत्मकथ्य में कवि आत्मकथा न लिखने के लिए जिन तर्कों का सहारा ले रहा है उनमें से (किन्हीं दो उल्लेख कीजिए|	2
11	पूरक पाठ्य पुस्तक के निर्धारित पाठों पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग : शब्दों में लिखिए 60-50	2X4=8
(क)	देश की सीमा पर बैठे फौजी किस तरह की कठिनाइयों से जूझते हैं ? हमारा उनके प्रति क्या उत्तरदायित्व होना चाहिए ? साना पाठ के आधार पर उत्तर लिखिए........साना हाथ-|	
(ख)	सभी लोग मिलजुलकर रहते हैं तथा प्रकृति के करीब हैं। बच्चे शारीरिक खेल खेलते हैं। अपने -	

	पाठ में ग्रामीण परिवेश के चित्रण को दर्शाते 'माता का अँचल'मिलकर रहते हैं।-परिवार के साथ घुल हुए पाठ के आधार पर शहरी और ग्रामीण जीवन के अंतर को स्पष्ट कीजिए।	
(ग)	हिरोशिमा की घटनाओं के बारे में सुनकर तथा उनके कुप्रभावों को प्रत्यक्ष देखकर भी विस्फोट का भोक्ता नहीं बन पाया। पाठ के आधार पर लेखक ने अपने आप को हिरोशिमा 'मैं क्यों लिखता हूँ' के विस्फोट का भोक्ता कब और कैसे महसूस किया?	
	खंड - घ(रचनात्मक लेखन)	20
12	निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर लगभग 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए- क) **अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम** (संकेत बिंदु - अंतरिक्ष में भारत के कदमों का इतिहास, विदेशी सहायता से उपग्रह भेजना, स्वदेशी उपग्रह अंतरिक्ष में भेजना, निष्कर्ष) ख) **मोबाइल - फोन सुविधा या असुविधा** (संकेत बिंदु -आवश्यक अंग, ढेरों सुविधाएं, हानियाँ, उचित प्रयोग आवश्यक) **ग) अंतरिक्ष में भारत के बढ़ते कदम** (संकेत बिंदु -अंतरिक्ष में भारत के कदमों का इतिहासविदेशी, सहायता से उपग्रह भेजनास्वदेशी , | निष्कर्ष,उपग्रह अंतरिक्ष में भेजना	1X6=6
13	**(क)** आपराधा /मोहन, देहरादून उतराखंड के एक सजग नागरिक है **|** आपके क्षेत्र में लगे पेड़ों को कुछ स्वार्थी तत्व काट रहे हैं **|**अपने क्षेत्र में पेड़ पौधों के अनियंत्रित कटाव को रोकने के लिए जिला अधिकारी को एक पत्र लिखिए **|** **अथवा** (ख)शव्दों में 100 के विषय में बताते हुए अपने मित्र को लगभग 'स्वच्छ भारत अभियान' पत्र लिखिए।	1X5=5
14	**(क)** '.न्यू एजपब्लिकेशंस नई दिल्ली को शैक्षणिक पुस्तकों के प्रचार प्रसार के लिए विक्रय ' कर्मियों की आवश्यकता है| आप आवेदन पत्र लिखते हुए स्ववृत लिखिए |**अथवा** (ख) आपका एटीएम खो गया है इसकी सूचना देते हुए पंजाब नैशनल बैंक के शाखा प्रबंधक को एक ई-मेल लिखिए|	1X5=5
15	कसाइकिल की बिक्री हेतु लगभग शब्दों में एक आकर्षक विज्ञापन तैयार कीजिए 40| **अथवा** खनव वर्ष की वधाई देते हुए अपने मित्र को लगभग शब्दों में 40संदेश लिखिए|	1X4=4

<u>अंक योजना-1</u>

कक्षा -दसवी

निधारितसमय 3: घंटे **अधिकतमअंक 80:**

सामान्य उद्देश्य:

- अंक योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है |
- प्रश्नपत्र मेंबहुविकल्पीय एवं वर्णानात्मक प्रश्न है|
- अंक योजना में दिए गए वर्णनात्मक प्रश्नों के उत्तर बिंदु अंतिम बिंदु नहीं है ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक है|

- यदि परीक्षार्थी इन उत्तर बिन्दुओ से भिन्न | किन्तु उपयुक्त उत्तर दे तो उसे उपयुक्त अंक दिए जाए ,
- मूल्यांकन कार्य अपनी निजी व्याख्याके अनुसार नहीं बल्कि अंक योजना में निर्दिष्ट निर्देशानुसार किया जाए|
- एक ही प्रकार की अशुद्धि पर अंक न काटा जाए |
- मूल्यांकन में सम्पूर्ण पैमाने 0-से | का प्रयोग अभीष्ट है 80

प्रश्न	**खंड - क अपठित बोध**	अंक
1	निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उत्त रदीजिए :	7
	योग भारतीय संस्कृति ....प्रशस्त कर सकता है।	
क	3. कथन और कारण दोनों सही हैं तथा कारण कथन की सही व्याख्या नहीं करता है।	1
ख	1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	1
ग	1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	1
घ	योग को जीवन का अभिन्न अंग इसलिए बनाना चाहिए क्योंकि यह शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन प्रदान करता है। यह न केवल रोगों से बचाता है, बल्कि आत्मविकास और आत्मनिरीक्षण का भी मार्ग है।-	2
ड	युवा वर्ग योग को केवल एक शारीरिक क्रिया समझता है और उसके आध्यात्मिक व मानसिक लाभों की गहराई को नहीं समझता। इसी कारण वे योग के प्रति कम उत्साहित होते हैं।	2
2	स्वतंत्रता कोई उपहार नहीं, ...मनुष्य बना कर पलता है।	7
क	3. जब स्वतंत्रता मर्यादा और अनुशासन से रहित हो।	1
ख	1. कथन और कारण दोनों सही हैं और कारण, कथन की सही व्याख्या करता है।	1
ग	1. कथन सही है, कारण गलत है।	1
घ	काव्यांश के अनुसार स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए अनुशासन, उत्तरदायित्व, सेवाभावना-, संयम और विवेक का पालन आवश्यक है। ये मूल्य स्वतंत्रता को मर्यादित और अर्थपूर्ण बनाते हैं।	2
ड	काव्यांश में नदी और वृक्ष का उदाहरण यह बताने के लिए दिया गया है कि वे स्वतंत्र होते हुए भी मर्यादा में रहते हैं। यह दर्शाता है कि सच्ची स्वतंत्रता वही है जो सीमाओं और ज़िम्मेदारियों के भीतर हो।	2
	खंड- ख व्यावहारिक व्याकरण	16
3	निर्देशानुसार“ रचना के आधार पर वाक्य भेद ”पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए	4
1	विशेषण आश्रित उपवाक्य	1
2	हालदार साहब ने मूर्ति की ओर देखते ही ड्राइवर को गाड़ी रोकने का आदेश दिया।	1
3	संयुक्त वाक्य	1
4	क्रिया विशेषण आश्रित उपवाक्य	1
5	मुँह में भर आए पानी का घूंट गले से उतरा और नवाब साहब ने खीरे की फाँक को खिड़की से बाहर छोड़ दिया।	1
4	निर्देशानुसार“ वाच्य ”पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए-	4
1	2. ii, 2-iii, 3-i-1	1
2	बिस्मिल्ला खां जी प्रतिदिन बालाजी के मंदिर में शहनाई वादन करतेथे|	1
3	मुझसे एवरेस्ट पर नहीं चढ़ा जा सकता		1

4	एक सभ्य व्यक्ति के द्वारा किसी नई चीज की खोज नहीं की जाती है|	1
5	भाववाच्य	1
5	निर्देशानुसार“ पद परिचय ”पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए	4
1	रीतिवाचक क्रिया विशेषणलेट, गए क्रिया की विशेषता	1
2	सार्वनामिक विशेषण, एकवचन, स्त्रीलिंग’भाषा‘ , विशेष्य	1
3	सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, बहुवचन, भूतकाल	1
4	भाववाचक संज्ञा ,एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्मकारक	1
5	जातिवाचक संज्ञा ,एकवचन, पुल्लिंग	1
6	**निर्देशानुसार अलंकार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों की रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए**	4
1	उपमा अलंकार	1
.2	रूपक अलंकार	1
3	उत्प्रेक्षा अलंकार	1
4	अतिशयोक्ति अलंकार	1
5	मानवीकरण अलंकार	1
	खंड- ग पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक	
7	निम्नलिखित पठित गद्यांश पर आधारित बहु विकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए- जीप कस्बा छोड़कर ....चश्मा तो बदल ही सकती है।	5
1	3) कथन सही है, पर कारण गलत है।	1
2	1) कथन और कारण दोनों सही हैं, और कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
3	3) कथन सही है, पर कारण गलत है।	1
4	3. मूर्ति पर एक नया चश्मा था।	1
5	.1 कथन 1 सही है|	1
8	गद्य पाठों के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए-	2X3=6
क	बालगोबिन भगत कबीर को ही अपना साहब मानते थे उनके नियमों का यथासंभव पालन करते थे- • कबीर के बताये आदर्शों पर चलते थे। • भगत कबीर की ही भांति आडम्बरों का विरोध करते थे। • कबीर के रचित पदों को गाते थे। • खेत में जो भी उपज होती है उसे लेकर कबीरपंथी मठ में पहुँच जाते थे तथा प्रसाद के रूप में जो कुछ भी मिल जाता उसी से जीवनयापन करते थे।	2
ख	• बिस्मिल्लाखाँ सच्चे इंसान थे| इतने श्रेष्ठ शहनाई वादक होकर भी उन्हें अहंकार नहीं था | • वे सभी धर्मो का आदर करते थे वे भारतरत्न से सम्मानित हुए, • वे खुदा से सच्चे सुरों की प्रार्थना करते थे • उन्होंने हिन्दू मुसलमानों को एक होने तथा आपस में भाईचारे से रहने की प्रेरणा दी-	2

ग	लेखक ने नवाब साहब के सामने की बर्थ पर बैठकर भी आँखे चुराई| • लेखक का सेकण्ड क्लास के खाली डिब्बे में चढ़ना • एक बर्थ पर नवाब साहब का बैठे होना| • नवाब साहब संगति के लिए कोई उत्साहन दिखाना| • नवाब के व्यवहार से लेखक को अपना अपमान लगना| • नवाब साहब को लेखक द्वारा अनदेखा कर देना|	2
घ	मानव ने सुईधागे का आविष्कार अपने शरीर को ढकने की मूलभूत आवश्यकता के कारण किया होगा। - शीत और गरमी से बचने के लिए मानव को कपड़ों की आवश्यकता अनुभव हुई या शरीर सजाने के लिए उसे कपड़ा सिलने की आवश्यकता अनुभव हुई, जिनके परिणामस्वरूप सुईधागे का आविष्कार हुआ।-	2
9	**निम्नलिखित पठित पद्यांश पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्नों के सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर लिखिए-** नाथ संभुधनु भंजनिहारा **..........................**बिदित सकल संसार।।	5
1	.3 कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
2	4 सही है ,किंतु कारण उसकी सही व्याख्या नहीं करता है।	1
`3	.3 कथन तथा कारण दोनों सही है तथा कारण कथन की सही व्याख्या करता है।	1
4	.2 कथन 1 और 2 सही हैं|	1
5	.2 कथन 3 ,1 व 4 सही है|	1
10	**पद्य पाठो के आधार पर निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए**	6
क	गोपियों ने कृष्ण के प्रति प्रेम को निम्न रूप में अभिव्यक्त किया है- i) गोपियाँ कृष्ण के प्रेम में उसी प्रकार अनुरक्त हैं जैसे गुड़ से चींटी चिपक जाती हैं। ii) गोपियाँ हारिल पक्षी की लकड़ी के समान कृष्ण को थामे हुए हैं और उन्हें ही अपने जीवन का आधार मानती हैं। iii) वे जागते, सोते, सपने में, दिनरात कृष्ण की ही रट लगाती रहती हैं।- iv) वे कृष्ण के प्रति मनकर्म और वचन से समर्पित हैं।-	2
ख	कवि के हृदय में अनेक दुःख और स्मृतियाँ सोई पड़ी हैं, अभी उनको याद करना उचित नहीं है। यदि वे सोई स्मृतियों को जगाएँगे तो हृदय को पीड़ा ही पहुँचेगी इसलिए कवि कहता है कि अभी समय भी नहीं है, उनकी मौन व्यथा सो रही है।	2
ग	कवि ने बच्चे की मुसकान के सौन्दर्य को निम्न बिम्बों के माध्यम से व्यक्त किया है- मृतक में जीवन (1)का संचार करना। कमल का फूल (2) मुसकान से पत्थर पिघलकर झरना फूटना। (3) स्पर्श बिम्ब के माध्यम से बताया है कि बबूल और बाँस के फूल भी शेफालिका के फूल बन जाते (4) हैं।	2
घ	कविता में बादल दो अर्थों की ओर संकेत करता है।)i) पीड़ित तथा प्यासे जन की आकांक्षा को पूर्ण कर उन्हें नवजीवन प्रदान करना।)ii) नई कल्पना को जाग्रत करने के लिए विध्वंस और क्रान्ति चेतना को जगाने वाला।	2
11	**पूरक पाठ्य पुस्तक के पाठो पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लगभग 60-50 शब्दों में दीजिए-**	4X2=8

क	सभी बच्चों में अपनी हम उम्र बच्चों के साथ खेलने की स्वाभाविक आदत है। उन्हें उनके साथ खेलने में बहुत आनंद आता है। बड़ों के साथ खेलने में उन्हें इतना आनंद नहीं आता है। इसके साथ ही बच्चों को अपने साथियों और मित्रों के सामने रोने या सिसकने में शर्मिन्दगी का अनुभव होता है तथा वे हँसी का पात्र भी बन सकते हैं। भोलानाथ भी अपने साथियों के साथ खेलने का मौका नहीं छोड़ना चाहता था इसीलिए वह उन्हें देखकर सिसकना भूल जाता है।	4
ख	अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण ही 'कटाओ' को धरती का स्विटज़रलैंड कहा जाता है। 'कटाओ' पर किसी भी दुकान का न होना उसके लिए वरदान है क्योंकि कटाओ अभी तक टूरिस्ट स्पॉट नहीं बना था इसलिए वहाँ पर कोई भी दुकान नहीं थी। अगर वहाँ दुकानें होतीं टूरिस्ट होते तो कुछकुछ गंदगी -न- अवश्य फैलती और कटाओ के शुद्ध प्राकृतिक स्वरूप में कुछ कमी भी आ जाती है इसलिए वहाँ पर कोई दुकान न होना उसके लिए वरदान है।	4
ग	लेखक के लिए आत्मानुभूति एवं स्वयं के अनुभव तो लिखने के लिए प्रेरित करते हैं पर साथ ही बाहरी दवाब भी महत्त्वपूर्ण होते हैं। ये दवाब विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं; जैसेये दवाब सम्पादकों का - आग्रह हो सकता है या लेखककी आर्थिक स्थिति भी हो सकती है। इसके अलावा सामाजिक परिस्थितियाँ भी रचनाकारों पर दवाब बनाती हैं।	4
12	**खंड - "घ" रचनात्मक लेखन**	20
	निम्नलिखित तीन विषयों में से किसी एक विषय पर संकेत बिन्दुओ के आधार पर 120 शब्दों में अनुच्छेद लिखिए	6
	भूमिका 1 अंक विषयवस्तु 3 अंक निष्कर्ष 1 अंक भाषा शुद्धता 1 अंक	
13	**किसीएकविषयपरलगभग 100 शब्दोंमेंपत्रलिखिए** प्रारूप 1 अंक, विषयवस्तु 3 अंक, भाषा शुद्धता 1अंक	5
14	स्ववृत लेखन प्रारूप 1 अंक, विषयवस्तु 3 अंक, भाषा शुद्धता 1 अंक अथवा ई- मेल लेखन प्रारूप 1 अंक, विषयवस्तु 3 अंक, भाषा शुद्धता 1 अंक	5
15	विज्ञापन लेखन रचनात्मक प्रस्तुति 1 अंक, विषयवस्तु 3 अंक, भाषा शुद्धता 1 अंक अथवा सन्देश लेखन रचनात्मक प्रस्तुति 1 अंक, विषयवस्तु 3 अंक, भाषा शुद्धता 1 अंक	5

अंक योजना प्रतिदर्श प्रश्नपत्र 2

प्रश्न	खंड क (अपठितबोध)	अंक (14)
1	निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढकर उस पर आधारित पूछे गए प्रश्नों के उतर लिखिए।	7
क	(ii) 2, 3 और 4	1
ख	(iii) विशुद्ध एवं कल्पनामय का व्यप्रणयन के प्रति	1
ग	कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है|	1
घ	तुलसी के काव्य में जीवन की सबसे बड़ी अभिलाषा मर्यादित जीवन-चर्या एवं सयंमित जीवन जीना है जो कि भारतीय संस्कृति की विशेषता है।	2
ड.	तुलसी के काव्य में धर्म का अनाविल, अनावरण और अक्षुण्ण रूप ही प्रकट हुआ है।	2
2	नीचे लिखे अपठित काव्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए	
क	निस्वार्थ भाव से समर्पण करना	1
ख	यह सभी	1
ग	उतर - कथन A और कारण R दोनों ही गलत है|	1
घ	कवि दलित पीड़ित लोगों को गले लगाकर उनका उत्थान करेगा इस प्रकार वह एक उन्नत समतावादी समाज की रचना कान या इतिहास रचेगा	1
ड	देश और समाज के कल्याण के लिए ऊँच-नीच, कुल-जाति और रंग भेद की रूढ़ियों से लड़ना होगा	
	खण्ड ख व्यावहारिक व्याकरण	
3	निर्देशानुसार 'रचना के आधार पर वाक्य भेद 'पर आधारित वाक्य में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए -	4x1=4
क	शहनाई और डुमराव एक दूसरे के लिए उपयोगी है - संज्ञा उपवाक्य	1
ख	काशी की यह प्राचीन एवं अद्भुत परंपरा है कि यहाँ संगीत आयोजन होते हैं	1
ग	उसने हालदार का प्रश्न सुना और वह हँस पड़ा	1
घ	कार्तिक आते ही बालगोबिन भगत की प्रभातिया शुरू हो गई	1
ड	उत्तर -संयुक्त वाक्य	1
4	निर्देशानुसार वाच्य पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर लिखिए	4x1=4
क	हलदार साहब द्वारा चश्मे वाले की देशभक्ति का सम्मान किया गया	1

ख	पानवाले द्वारा नयापान खाया जा रहा था	1
ग	कर्तृवाच्य	1
घ	मीना पुस्तक पढ़ती है	1
ड	वाच्य किसे कहते हैं? क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है कर्म है अथवा भाव है उसे वाच्य कहते हैं |	1
5	निर्देशानुसार पद परिचय पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के रेखांकित पदों का पद परिचय लिखिए	4x1=4
क	1) उत्तम पुरुष वाचक सर्वनाम, बहुवचन, पुल्लिंग, कर्ताकारक, पहुँचे क्रिया का कर्ता	1
ख	1) भाववाचक संज्ञा, एकवचन, स्त्रीलिंग, कर्मकारक	1
ग	विस्मयादि बोधक अव्यय, विस्मय का भाव प्रकट हो रहा है	1
घ	अव्यय, समुच्चयबोधक, दो वाक्यों के योजन का कार्य हो रहा है	1
ड	गुणवाचक विशेषण, पुल्लिंग, एकवचन, विशेष्य कहानियाँ	1
6	निर्देशानुसार अलंकार पर आधारित पाँच प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों की रेखांकित काव्य पंक्तियों में अलंकार पहचान कर लिखिए	4x1=4
1	उत्प्रेक्षा अलंकार	1
2	मानवीकरण अलंकार	1
3	अतिशयोक्ति अलंकार	1
4	<u>तारा-घट उषा-नागरी</u> रूपक अलंकार	1
5	उपमा अलंकार	1
6	पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पाठ्य पुस्तक पर आधारित प्रश्न	
7	निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे गए प्रश्नों के उतर दीजिए	5x1=5
क	कथन I, II और III सही है।	1
ख	कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।	1
ग	उपर्युक्त सभी	1

घ	उपर्युक्त सभी	1
ड	केवल कथन (IV) सही है।	1
8	गद्य खंड के निर्धारित पाठों में से निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर 25- 30 शब्दों में दीजिए	3x2=6
क	मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है? * आने वाली पीढ़ी में भी देश-प्रेम की भावना अभी जीवित है * देश के निर्माण में लोग अपने-अपने तरीके से योगदान देते हैं	2
ख	बालगोविंन भगत एक समाज सुधारक थे| कारण बताइए- * पुत्र का दाह संस्कार बहू से करवाना * पुत्रवधू को दूसरी शादी का आदेश देना * गृहस्थ हुए भी साधु जैसा व्यवहार * पाठ में आए अन्य उपयुक्त प्रसंग	2
ग	लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा * दो लोगों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा लेखिका के पिता और उनकी कॉलेज की अध्यापिका शीला अग्रवाल | * पिता के अनजाने अनचाहे व्यवहार से लेखिका के मन में हीनभावना उत्पन्न हुई| * शीला अग्रवाल ने उन्हें साहित्य को समझकर परखने की दृष्टि प्रदान की तथा सक्रिय राजनीतिक गतिविधियों में भागीदारी के लिए प्रेरित करके निडर व साहसी बनाया	2
घ	बिस्मिल्ला खा के व्यक्तित्व की कौन-कौन सी विशेषताओं ने आपको प्रभावित किया * संगीत साधना के प्रतिपूर्ण निष्ठा * सादा जीवन उच्च विचार * भारतीय संस्कृति के प्रति गहरा लगाव * हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक छात्रों द्वारा लिखी गई बिस्मिल्ला खां की अन्य विशेषताएं	2
9	निम्नलिखित पठित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों में से सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए	5x1=5
क	विकल्प iv सही है|	1
ख	शंभूजी का धनुष	1
ग	कथन A सही है किंतु कारण R कथन A ही सही व्याख्या नहीं है	1
घ	विकल्प ii, iii, iv सही	1
ड	परशुराम की शेखी पर	1

10	निर्धारित काव्य पाठों में से दिए गए निम्नलिखित चार प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों का उत्तर 50-60 शब्दों में दीजिए |	3x2=6
क	* हारिल पक्षी से तुलना करके | * योग संदेश की तुलना कड़वी ककड़ी से करके | * स्वयं को कृष्ण रूपी गुड़ पर लिपटी हुई चींटी कहकर | आदि	2
ख	* धनुष पुराना था राम की छूते ही टूट गया * हमारी नजर में सब धनुष एक समान है * श्रीराम ने धनुष को नए के धोखे में देखा	2
ग	* स्वयं के जीवन को बेहद साधारण मानना * मनकी दुर्बलताओं, भूलो और कर्मियों का उल्लेख करने से बचाना * पढ़ने वालों द्वारा मजाक उड़ाने का डर * कविता पर आधारित अन्य कारण	2
घ	गरजना पौरुष का प्रतीक माना गया है जो क्रांति के लिए आवश्यक है कवि तापो और दुखों को दूर करने के लिए क्रांतिकारी शक्ति की अपेक्षा करता है|	2
11	पूरक पाठ्य पुस्तक पर आधारित निम्नलिखित तीन प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर 50-60 शब्दों मे दीजिए	2x4=8
क	पाठ में प्रयुक्त कोई भी हृदय स्पर्शी प्रसंग	4
ख	संपूर्ण भारत में लोगों की आस्थाएं, विश्वास, अंधविश्वास और पाप-पुण्य की अवधारणाएं एक सी है	4
ग	कोई भी उपयुक्त उत्तर	4
	खण्ड घ रचनात्मक लेखन	
12	निम्नलिखित किन्हीं तीन विषयों में से एक विषय पर दिए गए संकेत बिंदुओं की सहायता से 120 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए: अनुछेद लेखन भूमिका 1 अंक विषयवस्तु 3 अंक निष्कर्ष 1 अंक भाषा शुद्धता 1 अंक	1x6=6
13	पत्र लेखन प्रारूप 1 अंक विषय वस्तु 3 अंक भाषा शुद्धता 1 अंक	1x5=5

14	स्ववृत लेखन प्रारूप 1 अंक विषयवस्तु 3 अंक भाषा शुद्धता 1 अंक अथवा ई- मेल लेखन प्रारूप 1 अंक विषयवस्तु 3 अंक भाषा शुद्धता 1 अंक	1x5=5
15	विज्ञापन लेखन रचनात्मक प्रस्तुति- 1 अंक, विषयवस्तु- 3 अंक भाषा शुद्धता- 1 अंक अथवा सन्देश लेखन रचनात्मक प्रस्तुति-1 अंक, विषयवस्तु- 3 अंक, भाषा शुद्धता- 1 अंक	1x4=4